सुरभी

वार्षिकांक
२०१७-२०१८



Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

NAAC Reaccredited Grade - B with CGPA - 2.71
(Certified Minority Institution)

भारतीय सेवा सदन द्वारा संचालित

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय अकोला.

-: श्रद्धास्थान :-

आदरणीय माताजी स्व.श्रीमती राधादेवीजी गोयनका

संस्थापिका अध्यक्षा – भारतीय सेवा सदन, अकोला

संरक्षक
श्रीमान दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष, भारतीय सेवा सदन, अकोला.

मार्गदर्शक
डॉ.देवेन्द्र व्यास
प्राचार्य

मुख्य संपादक
डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक मंडळ
▸ प्रा.डॉ.चारुशिला रुमाले ▸ डॉ.शालिनी बंग ▸ प्रा.प्रमिला बोरकर

संपादकीय विद्यार्थीनी

मराठी विभाग : कु. राधिका सावके, कु.जया मांजरे, कु.अश्विनी हांडे, कु. दिपाली गावंडे
हिंदी विभाग : कु. मेघा गुप्ता, कु. अनामिका पाठक, कु. संध्या प्रजापति, कु. दिव्या चौहान
संस्कृत विभाग : कु. प्राजक्ता देशपांडे, कु.रंजना नोवाल, कु.मिनाक्षी बोरकर, कु. प्रतिभा सोळंके
इंग्रजी विभाग : कु. अश्विनी दामोदर, कु. ज्ञानेश्वरी नरवाडे, कु. विद्या नवलकार, कु. राणी पाली.

प्रकाशक

प्राचार्या, श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.
डिझायनिंग : सुरज एन.भांगे, अकोला. मो. ९९२३१३६४४३

अंतरंग

- मराठी विभाग
- हिंदी विभाग
- इंग्रजी विभाग
- संस्कृत विभाग
- विविध अहवाल

।। हमारे श्रध्दास्थान ।।

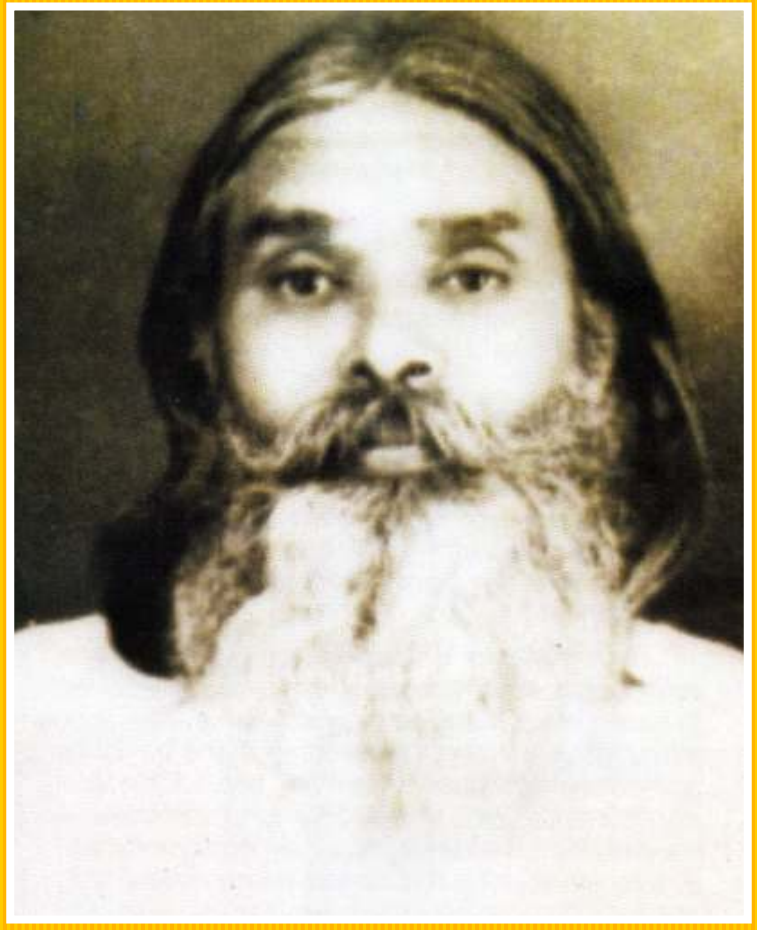

भारतीय सेवा सदन संस्था के आश्रयदाता

सेठ स्व.श्रीमान किसनलालजी गोयनका

।। प्रेरणा पाथेय ।।

श्रध्देय माताजी **स्व.राधादेवीजी गोयनका** के स्वर्गारोहण के पश्चात यद्यपी उनकी भौतिक उपस्थिती आज हमारे बीच नही है, किंतु उनके प्रेरणादायी विचारों का आलोक हमारे विकास पथ को आलोकित करता रहा और सदैव करता रहेगा ।

श्रध्देय माताजी द्वारा **"सुरभि"** २००९-१० में उनके द्वारा लिखे गए सारगर्भित अंतिम आशिर्वचन का अंश प्रस्तुत है ।

"मै चाहती हूँ आप सब खूब पढ़े । केवल पढ़े लिखे ही नहीं बल्कि स्वावलंबी व ज्ञानी और देश, समाज व संस्था का नाम उँचा करें ।"

आप सबको और कितने संदेश मै लिख पाऊंगी मै नही जानती हूँ । जीवन का संध्याकाल है । यात्रा अस्ताचंल की ओर है अतः मै अपने जीवन के अध्ययन तथा अनुभवों का निचोड आप तक पहुंचाना चाहती हूँ । हमारे पास जो भी है, विद्या, शक्ति तथा धन सबका उपयोग परहित में होना चाहिये । यही धर्म है । जो आप सब स्वयं के लिए होना पसंद नही करते वह दुसरों के साथ कभी न करें ।

जीवन सुख दुःख का मिश्रण है । दोनो में तटस्थ रहना चाहिए । कहना आसान है, करना कठिन है लेकिन असाध्य नहीं है । साधना जरुरी है । स्कूल, कॉलेजों की शिक्षा के अलावा संतो की अनूभूती और भी जरुरी है । इसके लिए मै आप सबसे गीता और रामायण नित्य पढ़ने का तथा उन्हे जीवन में उतारने का अनुरोध करती हूँ । अतः सुबह-शाम नियम से प्रतिदिन कम से कम बीस मिनट ध्यान करना चाहिए । यह मेरे अनुभव की बात है । केवल उपदेश नही है । भारतीय सेवा सदन व संस्थाओं में मेरे प्राण बसते है । इन्हे आप सबका सदैव सहयोग और स्नेह मिलता रहे ।

मैं आप सबको अनेकों शुभाशीर्वाद देती हूँ ।

सबका कल्याण एवम् मंगल हो ।

Source of Inspiration



The Founder President of Bharatiya Seva Sadan, Akola
Great Freedom Fighter

Late. Mataji
Smt. Radhadeviji Kisanlalji Goenka

VISION

Empowerment of Women Through Economic Independence for Betterment of Society

MISSION

"To impart holistic Education to the girl students in order to transform them into Empowered, Capable of Self-earning and Efficient Individuals, Family Members and Citizens in their Future Lives"

भारतीय सेवा सदन, अकोला के सन्माननीय पदाधिकारी



श्री. दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



आ.श्री. गोपीकिसनजी बाजोरिया
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



श्री. रविंद्रकुमारजी गोयनका
उपाध्यक्ष



श्री. आलोककुमारजी गोयनका
सचिव



श्री. प्रफुल्लजी संघवी
सह सचिव



श्री. दुर्गाप्रसादजी अग्रवाल
कोषाध्यक्ष



श्रीमती. प्रभादेवीजी गोयनका
सदस्या



श्रीमती. मंजुदेवीजी गोयनका
सदस्या



श्री. संजयकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री. विनीतकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री. तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



श्री. डॉ. एन.के. माहेश्वरी
सदस्य



श्री. हरमिंदरसिंह छटवाल
सदस्य



श्री.ॲड. रमेशचंद्रजी श्रावगी
सदस्य



श्री.ॲड. बी. के. गांधी
सदस्य



श्री. दिपककुमारजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. सुनीलजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. रणजीतबाबु गुप्ता
सदस्य



श्री. शिवप्रकाशजी रुहाटिया
सदस्य



श्री. भरतराजजी गोयनका
सदस्य



श्रीमती इंदुबालाजी चौधरी
सदस्य



श्री. राजकुमारजी रुंगटा
सदस्य



श्री. वंदनजी मोहोड
सदस्य



श्री. बाबासाहेब धाबेकर
सदस्य



श्री. के. के. जोशी
सदस्य

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय,अकोला

शाळा समिती (कनिष्ठ महाविद्यालय)



श्री.दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



श्री.रविंद्रकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.आलोककुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



डॉ.एन.के. माहेश्वरी
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य/पदसिध्द सचिव

President Message



Dear Students,

It is my great pleasure to welcome you to RDG College for Women. The college is unique within the landscape of Vidarbha region of Maharashtra State because it is exclusively the first women college providing education from PG to PG under one campus. What you see in these pages provides only the snapshot and trailer of incredible and excellent work carried out at this college. The college is privileged to have well qualified & experienced staff & administration dedicated to academic excellence, diversity, integrity, community services, social engagement, student success & the environment that foster RDG Culture, critical thinking & self-determination and with the vision of

"EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH ECONOMIC INDEPENDENCE FOR BETTERMENT OF SOCIETY "

We would be delighted to host you for a campus visit to see for yourself the good work of RDG College community, where students thrive & progress towards the realization of their full potential in every field. We provide quality education to the students and take their every possible care.

I am pleased & proud to have the opportunity to lead this institution with earnest cooperation of my colleagues, Principal and all the teaching and non-teaching staff.

Education enables one to differentiate between the good & the bad. We at Bharatiya Seva Sadan believe that "If you make a mind educated automatically all the evils of the society will be taken care of."

Our Moto is "Quality Education at Affordable Cost."

Our endeavor is to create a world class educational facility where lives are shaped as per today's needs, where you learn to meet the challenges of tomorrow.

Being a social organization it is our mission to not only fulfill the educational needs of the population but also contribute towards its upliftment from all social entrapments.

With best wishes

Dilipraj Goenka
President
Bharatiya Seva Sadan, Akola.

प्राचार्य का मनोगत



सुरभि वर्ष २०१७-१८ के अंक का प्रकाशन हो रहा है अत्यंत आनंद का विषय है ।

हमारी प्रेरणा पुंजः स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सफल समाजसेविका, साहित्यकार, श्रध्देय माताजी की प्रेरणा का अभिरंग 'सुरभि' जिसके माध्यम से हमारी छात्राओं मे व्याप्त सुप्त गुणो को मुखरित होने का अवसर प्राप्त होता है ।

साहित्य समाज का मांगलिक बोध है । भारतीय समाज और संस्कृति की विशेषताए हमें साहित्य में दिखाई देती है ।

आज इस बदलते हुए परिवेश में हमें एक ऐसी ही युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारित हो, घर, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो, आर्थिक रुप से सक्षम होकर राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान करने के लिए दृढ संकल्प हो।

महिला सक्षमीकरण के इस दौर में महिलाओं की अहं भूमिका को देखते हुए हमारा महाविद्यालय छात्राओं को पूर्णतः सक्षम बनाने के लिए उनके सर्वांगिण विकास के लिए सदैव प्रयत्नशिल रहा है । छात्राओं को साहित्य अभिमुख बनाने के लिए कहानी, कविता, नाटक, इत्यादि लेखन की प्रेरणा दी जाती है ।

आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग कर उद्योग क्षमता विकसीत करना, पर्यावरण सुरक्षा, मतदान, जनजागृति, रक्तदान, अवयवदान का महत्व, नागरिक संरक्षण, कानुन की जानकारी 'स्वस्थ राष्ट्र सशक्त राष्ट्र' को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सम्बंधि विविध कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है। जिसकी सम्पूर्ण छवि 'सुरभि' में विद्यमान है ।

यह 'सुरभि' हमारे महाविद्यालय के अंतरंग की अभिव्यक्ति है ।

स्वर्णिम युग के सपने संजोये हमारी छात्राये निरंतर आगे बढ़े इसी विश्वास के साथ.....

डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य

संपादकीय



'सुरभि' आपके हाथ सौपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है ।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, हर युग में ज्ञान-विज्ञान के सत्य को साहित्य ने उजागर किया है । हृदय और बुध्दि दोनो में समन्वय साधने की कला हमें साहित्य देता है ऐसे में आज की युवा पिढ़ी को साहित्य से जोडना आवश्यक है क्योकि वे ही महान देश का भविष्य है अतः इस बार हम किसी विशेषांक से जुडे नहीं है बल्कि छात्राओं को लेखन की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है, जिससे वे अपने पसंद के विषय पर लिख सके और हुआ भी वैसा ही कि उन्हे जो अच्छा लगा उस पर उन्होने लिखा कहीं दोस्ती की यादे तो कहीं माता-पिता का स्नेह, कहीं परिवार की जिम्मेदारिया तो कहीं हास्य-व्यंग, कहीं देश भक्ति के स्वर तो कहीं सामाजिक-राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह तो, कहीं जीवन आनंद की रंगीन छटा इस 'सुरभि' में समाहित है ।

अपने नाम के अनूरुप यह पत्रिका विविध रंगी फुलों की सुगंध अपने आप में समेटे परिसर को सुवासित करने का प्रयास कर रही है । इस सन्दर्भ में कवि सुमित्रानंदन पंत की ये पंक्तियाँ याद आती है -

"सुन्दर है विहंग, सुमन सुन्दर
मानव! तुम सबसे सुन्दरतम्
निर्मित सबकी तिल-सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम ।"

'सुरभि' में जहाँ एक ओर सप्तरंगी सुनहरी छटा है वहि दूसरी ओर अभ्यास पूरक कार्यो के अहवालो में महाविद्यालय की 'सुरभि' रच बस गयी है ।

विगत वर्ष हमने कैसे नियोजनबध्द कार्य किया है यह जानना हो तो पढ़िये हमारे विविध समितियों के अहवाल और जान लिजिए हमारी छात्राओ की निष्ठा और प्राध्यापको की कर्तव्य निष्ठा । राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक सशक्त पीढ़ी को तराशने में कोई कसर नहीं छोडी है । यह प्रेरणा हमें श्रध्देय माताजी के आशिष, वचनो से मिली है ।

माताजी के सपनो को साकार करने व छात्राओं के सर्वांगिण विकास के लिए अनमोल मार्गदर्शन हमारे संस्था के अध्यक्ष महोदय मा.दिलीपराजजी गोयनका सदैव करते है ।

इसके साथ ही समय-समय पर भा.से.सदन कार्यकारिणी सदस्यो के अनमोल मार्गदर्शन भी हमें मिलता रहता है । जिससे उनके बताये मार्गपर मा.प्राचार्य डॉ.देवेंद्रजी व्यास के साथ-साथ हम सभी एक जुट होकर कार्य करते है । जिससे सशक्त भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके । मा.प्राचार्य महोदय के प्रति श्रध्दा व्यक्त करते हुए, संपादक मंडल के सहयोगी प्राध्यापक जिन्होने मेरा बखुबी साथ निभाया अनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । मै उन सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण जिन्होने मुझे सहयोग दिया उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ । प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष सभी सहयोगी के प्रति कृतज्ञ हूँ एवं छात्राओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होने अपने लेखो से इस 'सुरभि' को सँवारा है । जीवन के विकासात्मक परिदृश्य को समावेशित 'सुरभि' को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए प्रकाशक सुरज एन. भांगे के अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देती हूँ।

सतरंगिनी भाव लहरी 'सुरभि' को सौप कर प्रसन्न हूँ, अगर कोई कमी रह गयी है तो उदार पाठक उसे सह लेंगे इस विश्वास के साथ.....

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक

महाविद्यालयातील एन.सी.सी.विभागाची उत्कृष्ट कामगिरी व उपक्रमांची क्षणचित्रे...



शुभेच्छा संदेश

SANJAY DHOTRE
Member of Parliament (Lok Sabha)
AKOLA, MAHARASHTRA

Member:
- Estimates Committee
- Committee on Railways
- Consultative Committee: Agriculture
- Indian Council of Agricultural Research

सत्यमेव जयते

AB-95, Shahjahan Road
New Delhi - 110011
Phone : 011-23078281
Mobile : 9868180257
E-mail: sanjay.dhotre@sansad.nic.in

Ranpise Nagar, Akola
Maharashtra - 444 005
Phone: 0724-2457214
0724-2452000

MESSAGE

I am delighted to know that Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola is going to bring out college magazine "Surbhi" having contents contributed by the students of the college. It is a good initiative as the students get an ideal platform to showcase their writing abilities and also their understanding on various subjects and issues. I am sure the student community guided by faculty members will make this magazine rich in content.

With My Best Wishes,

Sanjayji Dhotre
SANJAY DHOTRE
Member of Parliament
(Lok Sabha)
AKOLA (Maharashtra)

शुभेच्छा संदेश

महाराष्ट्र विधानसभा

गोवर्धन शर्मा
विधानसभा सदस्य
अकोला पश्चिम विधानसभा

निवास : आळशी प्लॉट, गोरक्षण रोड, अकोला फोन नं.: (0724) 2437058 मो.: 9403113504

MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola is going to publish annual college magazine "Surbhi" having contents of which are contributed by the students of your college. I am sure that, by this activity, the skills and hidden potential of your students will be exhibited and a concise picture of the activities and achievement of your college will be projected.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

(Govardhan Sharma)

DR. MURLIDHAR CHANDEKAR
M.COM., M.Phil., Ph.D
VICE-CHANCELLOR

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI - 444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

NAAC Accredited at the 'A' level

Date : 31 JUL 2018

MESSAGE

At the outset I would like to congratulate Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola for its keen and sustained interest in initiating this magazine 'Surabhi'. This magazine in a true sense exhibits the vision of the founders. It is a matter of great pride for me as well for this Vidarbha region that your college has been imparting education to women from last so many years. This proves the intimacy and dedication of your team.

The students should always get a chance to express their views apart from their curricular activities. It is anticipated that the magazine will serve as a continuous flow of thoughts for its readers. This is a very important step towards making the organization prestigious and offering valuable opportunities to get exposed to cutting edge topics in the various fields. The organization has put up an excellent effort that should benefit the young and open up new vistas of knowledge.

I congratulate all those whose efforts have made the magazine won the distinct honour. I wish the Editorial Board a success of all sorts.

(Dr.Murlidhar Chandekar)

Dr.D.N.Vyas,
Principal,
Radhadevi Goenka College for Women,
Akola.

Phone : Office - 0721 - 2662373, **Resi.** 0721 - 2662108, 2662093, **Fax No.** 0721 - 2662135, **Gram** : sgbamuni
E-mail : vc@sgbau.ac.in **Website** : www.sgbau.ac.in

DR. RAJESH S. JAIPURKAR
M.Sc. (Tech.), Ph.D.
PRO-VICE- CHANCELLOR

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI-444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

Accredited by NAAC at level 'A'

No..SGBAU/PVC/ 73 /2018
Date : 30 JUL 2018

MESSAGE

I am happy to know that the Radhadevi Goenka College For Women, Akola is going to release College Magazine "Surubhi".

Overall development of the student is the goal of education and in addition to develop excellent scientific skills, the students are needed to be motivated to think unconventionally to face the challenges of the future. I am sure that the College Magazine "Surubhi" will provide a platform to the students to sharpen their writing talent and will strengthen the academic activities of the College.

I congratulate the Principal and Editorial Board of this magazine for their untiring efforts in accomplishing the task in record time.

I wish the college magazine "Surubhi" a grand success.

(Dr.Rajesh Jaipurkar)

Dr.Devendra N.Vyas,
Principal,
Radhadevi Goenka College
for Women, Akola.

Phone : Office - 0721-2551961 Resi. - 0721-2672702 Fax No. 0721-2662135 Gram : SGBAMUNI
Website : www.sgbau.ac.in E-mail : provc@sgbau.ac.in

भेदभाव

भेदभाव... कुठून उत्पन्न झाली ही भावना ? आणखी कुठून न होता ती मानव जातीपासूनच उत्पन्न झाली. मानवापासूनच भेदभावना उत्पन्न झाली. मानवापासूनच भेदभावनेचे रोपटे वाढायला सुरुवात झाली. ते रोपटे आज मोठे होवून माणसांच्या मनात घर करुन बसले आहे. भेदभाव असल्यामुळे किंवा लिंग भेदामुळेच आज स्त्री-भृणहत्या होत आहेत. आपल्याला आज लिंगभेद फार मोठ्या प्रमाणात दिसून येतो.

मुलांच्या बाबत ही धारणा आहे की, तो कुटूंबाची आर्थिक सहाय्यता करेल. आई-बापांचा आधार बनेल, त्यांची सेवा करेल तर मुलींच्या बाबतीत ती दुसऱ्याचे धन आहे, ती आईबापाची सेवा करण्या करिता नाही. ती आधार नव्हे तर उलट ओझे आहे. ही धारणा सर्वत्र आढळते, अशा धारणांमुळेच भेदभाव वाढत चाललाय. मुलगी जर असली तर तिला गर्भातच मारल्या जाते किंवा तिला जर जन्म दिला तर सुखाने जगु देत नाहीत. तिची अवस्था जीवंतपणी मेल्यागत होऊन जाते. स्वतःचे वडील जरी असले तरी ते आपल्या मुला-मुलींमध्ये भेदभाव करतात. मुलाने जे मागितले ते लगेच त्याला मिळून जाते, पण मुलीने कोणती वस्तु बाबांकडे मागितली तर तिला कितीतरी दिवस वाट बघून सुध्दा ती मिळत नाही. शेवटी तिला कळून येते की, ही वस्तू आपल्याला मिळू शकत नाही. एखादे उदाहरण घेऊ या : "मुलीने जर बाबांना मोबाईल मागितला तर तिला मोबाईल ऐवजी कितीतरी बोलनेच ऐकून घ्यावे लागतात. अशा प्रकारच्या धारणा खेड्यांमध्ये जास्त प्रमाणात दिसून येतात."

वस्तुंचे जाऊ द्या, पण तिला कुठं फिरायला जावेसे वाटत असेल तर त्याचीही परवानगी मिळत नाही. मुलांनी रात्री कितीही वाजेपर्यंत फिरले तर चालून जाते पण मुलींनी रात्री सातच्या आधी घरात हजेरी लागलीच पाहीजे. मुलींना शिकायला बाहेर गावी तर पाठवतात पण त्यातही त्यांचे आडवे पाय. रस्त्याने जोरात हसायचे नाही, जोरात ओरडायचे नाही, खाली मान घालूनच चालायचे, अशा कितीतरी प्रकारच्या सुचनांचे पालन मुलींना करावयाचे असते. मी विचारते, असे कोणते पाप स्त्री जातीने केले आहेत, की जे त्यांना अजूनही फेडावे लागत आहे. अरे माणसा ! जगू दे नं तिला तिच्या मनाप्रमाणे. तिला असे अनावश्यक भावनांच्या दोराने बांधून मागे ओढू का पाहता ? असे तिचे पाप तरी काय ? फक्त स्त्री जातीत जन्म मिळाला म्हणून. तिला फक्त तुमच्या भावनांच्या पिंजऱ्यातून सोडून द्या. मग पहा किती उंच भरारी घेते ती. उडू दे नं तिला तिच्या मनाप्रमाणे तिच्या पंखात बळ असेपर्यत ती उडू शकते.

अरे तुला तिने जन्म दिला ती सुध्दा एक स्त्रीच होती. हे विसरु नको. जो पर्यंत स्त्रीचे अस्तित्व या जगात आहे. तो पर्यंत पुरुष ही या अस्तित्वात आहे. नाहीतर तुझी सुध्दा राख झाल्याशिवाय राहणार नाही. या जगात जर स्त्रीच नसली तर हे जग टिकून रहायचा काही प्रश्नच उरत नाही. तुम्ही जर तिला जगू दिले तर तुम्हालाही जगण्यापासून दूर करण्याची कोणीही हिंमत करु शकणार नाही. स्त्री आणि पुरुष दोघांचेही जीवन एकमेकांवर अवलंबून आहे. पुरुषांनी जर स्त्रियांना जगू दिले तर स्त्रिया ही पुरुषांना जगवतील, हे मात्र नक्की ! स्त्री आणि पुरुष दोघेही समानतेने वागले तर जीवन किती सुंदर होऊ शकतं, अगदी हर्षमय, आनंदमय, भरभरुन प्रेम देणारं....

कु. विद्या गजानन नवलकार
बी.ए.प्रथम वर्ष

गंमत जंमत

शिक्षक : पप्पू खालील अंक इंग्रजीमध्ये वाचून दाखव.
(७०, ८२, ९८, ९९)

पप्पू : शेवंती, येती तु, नाय् येत, नाय् त् नाय.

जीवन.....

जीवन.... म्हणजे काय असतं ?

हे असतं दुसऱ्याला जीवन देण्यासाठी, म्हणजेच जीवन म्हणजे जन्म व मृत्यू यामधील अंतर. "जन्माला आल्यापासून मृत्यूपर्यंत त्याच्या मध्यभागचा काळ म्हणजे जीवन होय".

जीवनाचा अर्थ दूसऱ्यासाठी जगणं, पण ते कसं. सुर्यासारखे असणे, कारण सूर्य कसा दूसऱ्यांना प्रकाश देण्यासाठी स्वतः जळतो. तसं आपण जीवन जगलं पाहीजे. जीवन जगताना आपल्या जीवनात दोन महत्त्वाचे पैलू येतात हे पैलू म्हणजेच सुख आणि दुःख हे पैलू म्हणजेच आपल्या जीवनाचे दोन किनारे असतात. जे जीवनाचा प्रवास करीत असतांना पहिले दुःखात जीवन जगतात, ते पुढे सुखात जीवन जगतात कारण त्यांनी आपल्या सामर्थ्याच्या बळावर दुःखाचा पराजय केलेला असतो.

जीवन तर सर्वच जगतात. पणं ते कसं जगतात, याला फार किंमत आहे. जीवन जगतांना काही व्यक्ती मेल्यावर लोक त्याच नाव सुध्दा काढत नाही आणि काही व्यक्ति मेल्यावर सुध्दा लोक त्यांना आपला आदर्श म्हणून डोळ्यापुढे ठेवतात.

जीवन हे खुलते संस्कारांच्या कळ्यांनी, जीवनात महत्त्वाचा असतो तो म्हणजे विश्वास कारण जीवन असते दुसऱ्याचा विश्वास जिंकण्यासाठी जीवनात विश्वासाला खुप महत्त्व आहे. कुणाचाही विश्वास मिळवायला खुप वेळ लागतो. परंतु तोच विश्वास गमवायला एक सेकंदही लागत नाही. विश्वास शब्द म्हणायला सेकंदही लागत नाही पण समजला नाही तर सर्व जीवन व्यर्थ जाते.

जीवन असते स्वतःला सिध्द करण्यासाठी त्यामुळे जीवन हे जगलेच पाहिजे.

जीवनाचा हा सुंदर प्रवास करीत असतांना जर आपण या जीवनाला म्हणजेच स्वतःला सिध्द केले, तरच जीवनाला खरा अर्थ प्राप्त होईल. एवढ्या सुंदर जीवनाच्या प्रवासात आपण स्वतःला सिध्द केले नाही तर या जीवनाला अर्थच राहणार नाही.

जीवन फुलते कधी आई-बाबा, भाऊ - बहिण आणि शिक्षक यांच्या संस्कारांनी, जसे संस्कार आपल्यावर होतात त्यानुसार आपण घडतो जीवनात कोणालाही घाबरायचे नसते. पुढे आणि पुढे जायचे असते. कारण एकदा जर आपण थांबलो व आपल्या जीवनाला चुकीचा मार्ग भेटला तर आपले सुंदर व अनमोल जीवन व्यर्थ जाते.

जीवनात सर्वात महत्त्वाचा मुद्दा म्हणजे जिच्यामुळे आपले जीवन खऱ्या अर्थाने योग्य वळणावर व योग्य वेळी वळण घेते. जीवनात जिने आपल्याला हे जग दाखवलं, श्रमाच महत्त्व, मेहनतीच फळं चाखायला लावल व प्रेमळ मनाने हसायला व बोलायला शिकवल त्या माऊलीला म्हणजेच आपल्या आईला कधीच विसरायचे नसते.

कारण तिचे आपल्यावर अनंत उपकार असतात ते आपण काही केल्या तिचे ऋण जीवनभर फेडू शकत नाही.

जीवन असतं कधी रडण्यासाठी तर कधी हसण्यासाठी त्यासाठी सर्वांनी रडण्यापेक्षा हसण्यासाठी जगलं पाहिजे. कारण सुखाचे क्षण हे आपल्याला जीवनात पुढे जाण्यासाठी प्रेरणा देत असतात. म्हणून हे क्षण मनात कायम ठेवायला पाहिजे. जीवन हे आपल्याला मिळालेलं एक वरदान आहे. या वरदानात स्वतःला सिध्द करण्याची तयारी असावी.

आपण सुध्दा असलं दान देवू शकू का ? जेणेकरुन जीवन कृतार्थ होईल. कारण शेवटी आपण त्या जीवनाकडून काहीच नेणार नाही, खाली हात आपण जन्माला आलेलो असतो. अन् खाली हाताने आपल्याला जायचं असतं. त्यासाठी जीवनात आपण मेल्यानंतरही जीवंत राहिलो पाहिजे. असे जीवन जगले पाहिजे.

जीवनात प्रत्येक दिवस हा अपेक्षा घेवून सुरु होतो, तर अनुभव घेवून संपतो.

कु. शारदा दामोधर ठाकरे
बी.ए. भाग १

स्पर्धा परीक्षा काळाची गरज.....

आजच्या या स्पर्धात्मक युगात स्पर्धेचे वारे वाहत आहे. स्पर्धा परीक्षा म्हणजे उपलब्ध असलेल्या अफाट मनुष्यबळातून निरपेक्षपणे योग्य उमेदवाराची निवड आणि आजच्या काळाची तर गरजच आहे. गुणवत्ता असलेले गुणवंत परिक्षार्थी.

गरज ही शोधाची जननी आहे.

केल्याने होत आहे रे... म्हणून आपण केलेच पाहिजे, म्हणून असं सुध्दा म्हणावसं वाटतं की शोधल्याने होत आहे रे आधी शोधलेच पाहीजे आणि स्पर्धात्मक परिक्षेची गरज भागवलीच पाहिजे.

स्पर्धा स्पर्धा म्हणून वावरतो
जिकंड तिकडे सामावितो
या स्पर्धांना जाऊन सामोरं
आपणच आव्हानांना साकारतो...

चिंतन करुन अभ्यास केल्यावरच हे सर्व शक्य आहे. तेव्हा स्पर्धा परिक्षेचा हा ऑलिव्ह आपण जीवनात उतरवू तेव्हाच आपण आपलं वेगळेपण सिध्द करण्यास पात्र ठरु कारण यशाची व्याख्या ही शब्दांत नसते तर जगण्यात असते.

प्रत्येक युवकाला स्पर्धा परिक्षेला सामोर जाताना कित्येक आव्हानांना पेलाव लागतं अनेक अभ्यासार्थी खुप मेहनत घेतात आणि नाव झळकवतात परंतु काही असेही आढळतात ज्यांचा निकाल दोन किंवा तीन प्रयत्नानंतर सुध्दा येत नाही, मात्र ते कधीच खचत नाही, कारण स्पर्धा परिक्षेला आत्मसात करणाऱ्यांना कळून चूकल असत की अपयश ही यशाची पहिली पायरी होय, आणि हेच सिध्द करण्यासाठी प्रत्यक्ष स्पर्धात्मक अभ्यासार्थी या यशाच्या पायरीपर्यंत पोहचण्याचा प्रयत्न करत असतात.

महत्त्वाकांक्षी असलेल्यांनी तरी गुणवत्तापूर्ण शिक्षणाच महत्त्व जाणावं त्यासाठी एकूणच शिक्षणाला व्यापक दृष्टीने पाहण्याची गरज आहे केवळ पदवीधर होणे किंवा पदव्यूत्तर होणे म्हणजे आपली उर्मी संपली असे नसून ते शिक्षण आपल्याला आत्मनिर्भर बनवण्यास सक्षम आहे का? याचाच विचार करायची गरज आहे.

स्पर्धा परीक्षा ही संकल्पना MPSC, UPSC एवढी मर्यादीत नसून जिथे तिथे Parameter based Selection Phenomenon दिसून येतो त्या सर्वांना सामावून घेणारं हे तंत्र आहे.

आता या सर्व गोष्टींच गांभीर्य आपण सारे जेवढ्या लवकर समजू तेवढं आपल्या साठीच उत्तम ठरेल.

Opportunities are like sunrise
If you wait too long,
You will miss it .....
So Now,
No argument Just Do It.....

कु. राधिका ग. सावके
बी.ए. भाग २

पाऊस

अरे पाऊस पाऊस नको उदास होवूस
माझ्या धरतीचा जीव असा नको रे जाळूस
तुझ्या डोळ्यातले अश्रू माझ्या अंगावर पडू दे
माझ्या लेकरांच्या चेहऱ्यावर असा आनंद खेळू दे

घरातली संकटे दूर तू पडू दे
तुझ्या आशिर्वादाने घर संपन्न होवू दे
कर्जाचे ते ओझे आता फिटू तरी दे रे
आम्हा सर्वांना पोटभर भाकरी मिळू दे

सन सुगीच्या दिवसात हास्य चेहऱ्यावर खेळू दे
धनधान्याच्या भरभराट माझ्या घरात होवू दे
तुझी वाट पाहून माझे डोळे थकले रे
तुझी कृपा आमच्यावर बरसू तर दे रे

कु. अश्विनी गौतम वानखडे
बी.ए. भाग १

मैत्री

आपल्या आयुष्याच्या प्रत्येक सुखः दुखःच्या क्षणात साथ देणारे. आपल्याला समजुन घेणारे मित्र प्रत्येकाला हवेहवेसे वाटत असतात.

लहानपणापासून तर अगदी शेवटच्या क्षणापर्यंत आपल्या जीवनात नातं हे असतात. परंतु यामधील सर्वात अमोल असं एक नांत म्हणजे मैत्री. मैत्री ही लहानपणापासून असते. लहानपणी तर खरी निस्वार्थी मैत्री असते. मैत्री ही एकमेकांचे विचार-आचार मिळते जुळते असलेत तर त्यांच्यामध्ये मैत्री ही होते.

मैत्री ही कळत-नकळत जुळणार नातं आहे. आयुष्याच्या एखाद्या वाटेवर कोणीतरी मिळतो आणि कधी जिवलग मित्र बनते हे कळतच नाही. परंतु जिवलग मित्र हे क्वचितच असतात. मैत्री ही अशी असते की मित्र जवळ असल्यावर आनंद होतो व दूर गेल्यावर विसरणे कठीण होते तीच खरी मैत्री असते.

आपल्या आयुष्यात मित्र हे नविन काही शिकवून जातात. मैत्री हे अतिशय प्रेमळ असं नातं असते. ज्याप्रमाणे पहिल्या पावसानंतर आलेल्या मातीच्या सुवासाप्रमाणे त्याचा गंध असतो.

मैत्रीला कोणतीही सिमा नसते. मैत्री की फक्त समवयस्कामध्ये नव्हे तर कधी आई सुध्दा आपली मैत्रीणच बनते. बाहेर फिरायला गेल्यावर बहिण, दारातील लोक हे सुध्दा मित्राप्रमानेच वाटतात. हे नातं सागर ज्याप्रमाणे नेहमी पाण्याने भरलेला असतो. त्याप्रमाणेच मैत्री हे नांत सुध्दा आनंदाने भरलेलं असतं.

जीवनाची वाट चूकल्यावर रस्ता दाखवणारी.... ठेच लागून पडल्यावर मदतीचा हात देणारी.... ती फक्त मैत्रीच असते. मैत्री ही नेहमी साथ देणारी असते. ज्याप्रमाणे चंद्र हा फक्त रात्रीच असतो व सुर्य हा दिवसा त्याप्रमाणे मैत्री नसावी. मैत्री ही सतत सुख दुःखात साथ देणारी, आपलेसे वाटणारी असते.

Friendship like a garden of flowers,
beautiful & rare
It cannot reach perfection
except through loving care.

कारण शेवटी मैत्री ही मैत्रीच असते. मैत्रीचे नाते कधी जुने होत नाही म्हणून ते पिंपळाच्या पानाप्रमाणे असते. कितीही त्याची जाळी झाली तरीही जीवनाच्या पुस्तकात ते नेहमी जपून ठेवावे.

कु. वैष्णवी वसंता मोरे
बी.ए. भाग १

काय वाटते तुम्हाला...

काय वाटते तुम्हाला
जीवनात आनंद आहे ?
हसणारं सुःख आहे
रडणारी व्यथा आहे
आणि हीच जीवनाची कथा आहे.

काय वाटते तुम्हाला
सगळेच शिक्षित आहेत ?
आज जरी सगळे ज्ञानी असेल
तरी उद्याचे ते अज्ञानी आहेत.

काय वाटते तुम्हाला
संपूर्ण जीवनभर आयुष्य आहे ?
आज जरी जगत असेल
तरी उद्या सगळयांनाच मरण आहे.

काय वाटते तुम्हाला
पैसा हा तुमचा मित्र आहे ?
आज जरी मित्र असला
तरी तो उद्याचा तुमचा शत्रु आहे.

काय वाटते तुम्हाला
आज दुःखच दुःख आहे ?
पण लक्षात ठेवा
आज जरी दुःख असल
तर उद्या सुवर्ण सुखाची पहाट आहे.

कु. कल्याणी दिलीप बेंडे
बी.ए. भाग १

जाण्या आधी एकदा

छोटाशा त्या डोळ्यांमध्ये हरवून मला जायचं होतं
काळ्याक्षार केसांमध्ये आनंदाने वावरायचं होतं
जाण्याआधी एकदा मला भेटून तरी जायचं होतं ।
नाजुकशा तुझ्या ओठांवरुन नाव माझ ऐकायचं होत
तुझ खिळखिळणार हास्य मला एकदा तरी बघायचे होतं
जाण्याआधी एकदा मला भेटून तरी जायचं होतं ।
तुझ्या बनवलेल्या जेवणाचा आस्वाद मला घ्यायचा होता
जेवणा आधी रसाळ असे श्लोक तुझे ऐकायचे होते
जाण्याआधी एकदा मला भेटून तरी जायचं होतं ।
तुझ्या मुखातून दोन शब्द प्रेमाचे मला ऐकायचे होते
तुझं अप्रतीम नृत्य मला एकदा तरी बघायचं होतं
जाण्याआधी एकदा मला भेटून तरी जायचं होतं ।
माझ्या प्रश्नांच उत्तर एकदा तरी सांगायच होतं
माझ्याकडे पाहून तरी हसायचं होतं
जाण्याआधी एकदा मला भेटून तरी जायचं होतं ।

कु. समिक्षा अशोक चव्हाटे
बी. कॉम. द्वितीय वर्ष

पहिल पाऊल

प्रयत्नांना माझ्या यश मिळाले
आकाशही आता ठेंगणे वाटू लागले
दुःख दूर पळून सुखाचे आगमन झाले
हे पाहून माझ्या डोळ्यात सुखाचे अश्रू आले
प्रयत्न केले तर सर्व काही शक्य होऊ शकते
अपयश हे यशात बदलू शकते, हे आता लक्षात आले
गरज असते आत्मविश्वासाची
जीवतोड मेहनतीची, थोड्या परिश्रमाची
आणि इच्छा व धाडस असावे लागते
स्वप्नांची पुर्तता करण्यासाठी
या काही गोष्टी जीवनात असल्यातर.....
फक्त गरज असते पहिल पाऊल उचलण्याची
सत्कर्माकडे वळण्याची

कु. अश्विनी गौतम वानखडे
बी.ए. भाग १

आठवण

आज तुझी खूप आठवण आली
डोळ्यांची पापणं अलगद ओली झाली...
कधी रुसवे, कधी फुगवे
मैत्री आपली होतीच खूप भारी...
नकळत दिवस उडून गेले
आणि दुरावलो आपण सारी...
स्मृती... आठवणींचा पाऊस आज
अलगद बरसत होता
जुन्या स्मृतीचा ओला गंध
मनाला सुखावत होता
वाऱ्याची झुळूक येताच
मन शहारुन गेले
स्मृतींच्या वादळाने मनी
काहूर दाटून आले.

कु. अश्विनी वि. हांडे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

परिवार

घर आहे आमचे कुडाचे
घरामधील माणसे चांगल्या मनाचे
घराला आमच्या नाही कोणत्या काच
घरामध्ये माणसे आहे फक्त पाच
जशी जोडी विठ्ठल-रुखमिनीची
तशी जोडी आशा-संजयची
माय माझी खुपच मायाळू
बाप माझा खुपच कष्टाळू
बहिन माझी खुपच दयाळू
आम्ही दोघे बहिन-भाऊ खुपच खादाळू
आईला माझ्या असतो सोमवार
बापाला माझ्या असतो शनिवार
आनंदीत असतो नेहमी आमचा परिवार
आम्ही भावंड राहो आई-वडिलांच्या प्रेमाच्या कुशीत
आई-वडिल राहो आमचे नेहमी खुशीत.

कु. कोमल संजय घोसे
बी.ए. प्रथम वर्ष

बाप

उदय गुलाब त्याच्या घामाच्या थेबांना हिऱ्या मोत्यांच्या रुबाब
बाप तलवार ढाल, बाप पेटती मशाल
बाप जागतो म्हणून, घर झोपते खुशाल
बाप घराचा तो पाया, आई कळस त्यावर
जेव्हा खचतोना पाया, तेव्हा कोसळ ते घर
उला-ढाली करतो, हा बाप फक्त घरासाठी
शिव्या शाप या जगाचे बाप घेतो सारे
माय घर, बायको मुले यांना जगवण्यासाठी
बाप होतो, वेडा पिसा एका-एका पैशासाठी
बाप म्हणजे जणु की वाल्याकोळ्याची जमात
ज्याच्या पापामध्ये कोणी नाही वाटे करी होत.
बाप म्हणजे रे कसा जसा पाण्यातला मासा
त्याच्या डोक्यातला थेंब कोणा दिसणार कसा ?
बाप आपल्याला रडतांना कधीच दिसत नाही,
पण तो त्याचे सगळे अश्रु फक्त एका क्षणासाठी
राखुण ठेवतो तो क्षण म्हणजे
बाप साठवतो अश्रु वाट पाहिल्या क्षणाची
जन्म भरचे रडते लेक जातांना सासरी
ज्याने जपले मुलाना आणि पाळल्यात तत्त्वे आशा
बापासाठी हवी थोडी आसवे डोळ्यात
बाप थकल्यावरती त्याच्या बनावे आधार
नाही उपयोग पुन्हा किती घातले पितर
बाप म्हणजे जसे की एक झाडच अबोली
बाप म्हणजे मुलाची जणु अव्यक्त माऊली

कु. पुजा शंकर गिरी
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

तुझीच तु...

तेजोमय दीपवाणी कुणाची, तर कधी हास्यतरंग
इवल्याशात गुंतलेली, तर कधी मनातच हरवणारी
आदयतेच्या मांगल्यात रमणारी, तुझ्या तालामधेच तू भिजणारी
स्वर-स्वरांनी नटणारी, जणु शब्द तुझे फुलवाणी
तरुणतेने कासावी सावली तू, श्रेष्ठतेने मनातच गहीवरली तू
आत्म्याच्या प्रांगणात डूबणारी तू, समाविष्ठलेले ध्येय जपणारी तू
दिपोमयाच्या प्रांगणात, तर उजळणाऱ्या स्वप्नात
मग्न झाली तू तुझ्यात हरवलेल्या भानात

कु. राधिका ग. सावके
बी. ए. द्वितीय वर्ष

पावसाची व्यथा

पावसाची व्यथा कशी सांगु रे पुन्हा
शेतकरी रडतोय पाण्याविना
पावसाची वाट किती ? पाहु कळेणा त्याला
म्हणून रडून मागतोय विषाचा प्याला ।।धृ।।

मदत कोणी करेना, कळेना मला
शेतकरी म्हणतोया माझा हा गुन्हा
त्याची ही सजा,
म्हणून रडून मागतोया विषाचा प्याला ।।१।।

म्हणे पीक येऊन फायदा नाही,
भाव मिळेना
हाल सोसून सोसून,
खाण्या-पिण्या पैका मिळेना ।।२।।

कर्ज घेऊन घेऊन
गेला खांदा माझा खाली
म्हणे आता माझी
कशी मान करु वरी ।।३।।

मदतीची वाट आता
पुन्हा तो पाही
म्हणे आत्महत्या केल्याविणा
आता काहि नाही ।।४।।

धीर असा सोडू नको
पाऊस उद्या येईल
तुझ्या संकटावरी
मात तो देईल ।।५।।

झाडा विणा पाऊस नाही
पाऊसा विणा पीक
आता तरी शेतकऱ्या
जाण तुझी चूक ।।६।।

कु. कल्याणी दिलीप बेंडे
बी.ए. भाग १

संगीत एक अनोखे विश्व...

जीवनातल्या घडीचा रंग आहे आगळा,
जगण्यातल्या कलेचा मंत्र आहे वेगळा

सृष्टीतून उत्पन्न तो आघाती नादखुळा,
पक्ष्यांच्या किलबीलातून ऐकु येतो सूर सारा.

अबोल होते या जगाशी, खंत होती हिच मनाशी,
कळत होते पण वळत नव्हते, सुरांशी घट्ट नाते बनवायचे होते.

निसर्गाशी नाते जुळवून गाते मेघमल्हार नवा,
उजळूनी प्रकाश ज्योती, वातावरणास गंध हवा.

यमन करी डोके शांत, करुन रस सावरुनी,
भैरव करी गंभीर ते, प्रातःकाली बावरुनी

भक्तीरसमय श्रृंगार असे, अनेक रस साठवून,
मन प्रसन्न होते त्या बंदीशी आठवून

सप्तसुरांनी वेढलेल्या प्रसन्न जीवनात नेहमी सुखी रहा...
संगीत एक संजीवन आहे त्याची मजा घेऊन पहा...

संगीत हाच ध्यास आहे, हाच आहे मंत्र
हाताशी तर घ्या जरा, बिघडणार नाही जीवनाचे तंत्र...

ऋणानुबंध जुळवा संगीताशी अनेक अन बांधा मनाशी गाठ...
छंद एक श्वास एक, सुर एक ध्यास एक ते म्हणजे
सप्तसुरांचे संगीत, संगीत, संगीत.

कु. अर्पिता अ. काळकोंडे
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

कदापि हे आयुष्या

कदापि हे आयुष्य पुर्ण बदलता आले तर
मी स्वतःला बदलले असते.
कदापि हे आयुष्याचे कोडे बदलता आले तर
मी स्वतःला बदलले असते.
कदापि हे स्वतः दुसऱ्यावर ओझे झालेले बदलता आले तर
मी स्वतः ला दुसऱ्यावर ओझे झाले नसते.
कदापि हे आयुष्यात सर्वांची प्रेम व आपुलकीचे असते तर
मी स्वतःला एकट समजल नसते.
कदापि आज मी जर जिवंत नसले तर
कोणाला माझ्यामुळे त्रास/हानी झाली नसती.

कु. पुजा शंकर गिरी
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

आई

आई म्हणजे माऊली
जशी प्रेमाची सावली
आई म्हणजे माया
जसा घराचा पाया

आईच्या स्तुतीला शब्द नाहीत
जसे लाखो चांदण्या मोजता येत नाहीत

आई म्हणजे प्रेम
सगळ्याच आंईचे प्रेम आहे 'सेम'

या जगात आई सारखी माऊली नाही
तिची कोणी पारख करु शकत नाही

आई हा शब्द आहे गोड
मम्मी शब्द वापरुन करु नका त्याची तोड

आई म्हणजे प्रेम, भावना
आई म्हणजे वात्सल्य, करुणा

कु. कोमल भोजराज जळमकार
बी.ए. भाग १

मुलगी

मुलीचा जन्म मिळाला म्हणून होऊ नका नाराज
सगळ्या जगावर करु आपण राज

जसे माणसे खातात सुपारी, पान
तशाच मुली आहेत जगाची शान

मुलापेक्षा मुलगी बरी आहे
सदैव ती दोन्ही घरात प्रकाश देत आहे

चूल आणि मूल हीच तिची ओळख नाही
आता ती कोणत्याही क्षेत्रामध्ये खंबीरपणे उभी राही

९० टक्के मुली आहेत फार हुशार
अशी म्हणते कोमल जळमकार

कु. कोमल भोजराज जळमकार
बी.ए. भाग १

विश्वास आई-बाबांचा

जन्म देते ती आई असते
आणि हात पकडून चालणे शिकवतात ते बाबा असतात.
आई-बाबा हे दोघेही आपल्या जीवनाचा आधारस्तंभ असतात.

पण आपल्याला हे कळत नाही.
कष्ट करुन घाम गाळून ते आपल्याला शिकवतात, मोठे करतात.
मोठ मोठ्या कॉलेजमध्ये पैसे भरुन शिकायला पाठवतात.

पण त्यांना हे माहित नसते की
आपल्या घामाचा मोबदला म्हणून आपले मूल
आपली इज्जत उतरवायच्या नादात लागलेले असतात.

रोज आई-बाबांच्या घामाचे पैसे घेवून सकाळी कॉलेजमध्ये जातात.
लेक्चर न करता कॉलेजच्या परिसरात फोनवर दुसरेच कारनामे करतात.
व आई-बाबांची इज्जत मातीत मिळवतात.

आई-बाबांचे जीव घेणाऱ्या अशाच कॉलेजच्या
मुला-मुलींसाठी खास हे शब्द

मान ठेव तू त्यांचा तुला जिव-जन्म देणाऱ्यांचा
नऊ महिने जी तुझा सांभाळ करते,
तिच्या तळहाताचा पाळणा करुन जी जीवापार जपते तीचा,

तुला जीव-जन्म देणाऱ्या तुझ्या बाबांचा
ज्यांच्या तू अंगा-खांद्यावर खेळलेला असतो.
त्यांचा तुझ्या एका फी साठी त्यांनी घामाचे थेंब गाळले.

कशी लाज नाही रे वाटत तुला ?
ज्यांनी आयुष्याचे क्षण-क्षण तुझ्यासाठी वेचले
तू थोड्या क्षणभराच्या सुखासाठी
विसरत आहे त्यांना, आपल्या मुलांचे मोठे होण्याची काहीतरी
बनण्याची स्वप्ने बघत असतात.
बिचारे, त्यांचे स्वप्ने चूरचूर करण्याचा जसा निर्धारच केलेला असतो तू.

एकदा तरी विचार कर रे तू त्यांचा, त्यांच्या स्वप्नांचा
त्यांचा जो विश्वास आहे ना, तुझ्यावर तो कायम राहू दे
त्यांचे स्वप्न पूर्ण कर. त्यांना सुखी करण्यात जो आनंद आहे ना
तो कुठेच शोधूनही तुला मिळणार नाही.

कु.अश्विनी नाजुकराव दामोदर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मित्र

मित्र म्हणजे नदीची न तुटणारी धार
आणि सकाळची थंड-मऊ हवेची गार

मित्र म्हणजे आनंदाने भरलेला जार
आणि क्वचितच विदेशी दारुचा बार

मित्र म्हणजे मदतीसाठी नेहमी उघड असलेलं दार
आणि सर्वांना कनेक्ट करणारी तार

मित्र म्हणजे दुखावर साचलेला खार
आणि चुक झाल्यास केलेला घणाघाती वार

मित्र म्हणजे चमचमत्या तलवारीची धार
आणि शत्रुंना पडणारा मार

मित्र म्हणजे सर्व दुःख सामावून घेणारा फुलांचा हार
आणि मदतीला नेहमी धावून येणारा यार

मित्र म्हणजे श्वास
जो बनवतो सामान्याला खास

मित्र म्हणजे शिखर गाठण्याचा ध्यास
आणि दगडात त्राण फुंकणारा श्वास

कु. समिक्षा अशोक चव्हाटे
बी. कॉम. द्वितीय वर्ष

नारीर नारीते वृध्दी ।
नारीर नारीते सिध्दी ।
नारीत्वातच नारीचे मोठेपण आहे,
स्त्रीने थोर स्त्री बनावे,
थोर पुरुष होण्याचा प्रयत्न करु नये ।।

– श्री रामकृष्ण परमहंस

आज की युवा पीढ़ी

आज की युवा पीढ़ी हर बात में आगे है । चाहे पढ़ाई में हो, कलाक्षेत्र हो व्यवसाय हो या फिर नई तंत्रज्ञान हो आज की युवा पीढ़ी में हर काम, कर गुजर जाने का जज्बा है । कामयाबी के शिखर पर चढ़ने की जल्दी आज की युवा पीढ़ी में बहुत देखी जाती है । आज के युवक इतने समझदार और होशियार है की पढ़ाई नौकरी और ख्वाहिश तीनों बातों का संतुलन करके अपनीं जिंदगी बेहतर बनाते है। आज की युवा डॉक्टर है, टिचर, नर्स, पुलिस, इस क्षेत्र में लड़कों के साथ लड़कीयां भी आगे है ।

आज का एक उदाहरण है राज ठाकरे, राहुल गांधी ऐसी प्रतीभाशली व्यक्ति है । आज की युवा पीढ़ी एवम् हमारा समाज सभी को सबसे पहले सादर प्रणाम । मेरी समझ में ये नही आता है की, एक तरफ हमारा युवा वर्ग देश की समस्याओं को सही करने के लिए अन्ना हजारे जी के साथ जुड़ रहे है या अपने अपने स्तरपर जागरुक हो रहा है । सभी देश के हित की बात करते है लेकिन दूसरी तरफ हमारे समाज में फैली गंभीर समस्याओं पर सभी युवाओ को ध्यान देना चाहिए ।

आजकल की अधिकतर युवा पीढ़ी बड़ो का सम्मान करना भूल सी गई है । संस्कारों का अभाव देखने को कही भी मिल सकता है । युवाओं की आम बोलचाल की भाषा में गाली-गलोच घुलमिल गयी है । युवा पीढ़ी की गांजा, शराब, जुआ, सिगरेट जैसे नशे के आदी होकर जिंदगी बर्बाद हो जाती है एवं अधिकतर बडे बुजुर्ग लोगों की जिंदगी घर के एक कोने में बेबस सी होकर रह गयी है । क्योकिं बिना संस्कारित बेटे आप अपने ही बाप के बाप बन रहे है । कुछ तो इतने निर्लज्ज बेटे है जो अपने माँ-बाप को घर में रखना पसंद नही करते है । उनको आश्रम में जिंदगी के आखरी पल काटने को मजबूर कर दिया है । मैं भी यूवा हूँ हर समाज में फैली जो बुराइया है हमें नष्ट करना आवश्यक है ।

मेरी नजर में हमारे समाज के बुध्दिजीवी वर्ग एवं युवाओ को इन के साथ सही और ईमानदारी से बहस करना चाहिए । युवाओं को हमेशा सही राह पर चलना चाहिए ।

हमें समाज सुधार की बहुत जरुरत है । वरना वो दिन दूर नही जब माँ-बाप को अपने नालायक बच्चों के ही पैर छूना पडे । युवा पीढ़ी और देश के भविष्य एक दूसरे पर निर्भर है । हमें हमारे समाज के लिए अपने पैरो पर खड़ा रहना आवश्यक है । युवा पीढ़ीको अगर इस उम्र में सब कुछ अच्छा लगता है । युवाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण है हमें पढ़ाई बहुत जरुरी है । जब शिक्षा लेते है तभी हमें अच्छी नौकरी प्राप्त होती वह खुद तो आगे बढ सकते जो लोगो को अपने देश में शिक्षा प्राप्त नही वह लोगोको हमें शिक्षा देकर हमें हमारा समाज और देश फिर विकसीत करना होगा । जब हम शिक्षा नही ले सकते फिर हमारी जिंदगी कमजोर और हमारा युवा पीढ़ी भी खराब हो जाती है ।

जब भी आज के युवाओं के विषयपर चर्चा चलती है । सभी एकमत बोल उठते है जोशीले गर्वीले व ऊर्जा से भरपूर है, यह सच भी है ।

हमें हमेशा हमारे समाज के प्रती निष्ठा रखनी चाहिए और हमारे समाज में स्वच्छता रखनी चाहिए तभी हमारा समाज आगे बढेंगा और हमेशा हमें गरीब लोग जो अशिक्षीत है । हमें उनको पढ़ा लिखाकर अपने पैरो पर निर्भर कराना आवश्यक है । हमें शिक्षित होने के साथ संस्कारित होना आवश्यक है ।

कु. प्रिया मिश्रा
बी.ए.भाग १

फूल चुनने के लिए ठहरो मत, आगे बढे
चलो तुम्हारे रास्ते पर फूल खिलते रहेंगे ।

– रविंद्रनाथ टैगोर

एक लड़की की आत्मकथा

लड़कियाँ क्या आपको पता है ; आजकल के इस युग में इस समय लड़कियों की क्या स्थिती है और कैसे हो रही है ? ये न आप जानते है हम लड़कियाँ, अभी तक जान पाई है । भेदभाव तो पहले से होता चला आ रहा है । जब लड़के का जन्म होता है तो मिठाई में पेढे और रसगुल्ले बाटे जाते है और जब लड़की का जन्म होता है तो साधारणसी जलेबी बाटी जाती ।

इसी भेदभाव को बदलने के लिए कुछ ऐसा करीए के उस जलेबी में भी प्यार और सम्मान, गर्व की मिठास हो । आजकल की पीढ़ी में लड़कियाँ दब सी गई है । जो हँसने को भी एक डर सा बना लेती है । क्या इतनी भी आजादी नही ? दुनिया भर में आज जो भी घटनाएँ हो रही है, उसमें लड़कियों का मान-सम्मान और आत्मविश्वास नीचे की और खीचा चला जा रहा है, जो की जिंदगी में सबसे अनमोल हिरा सिर्फ लड़कियाँ है ।

माँ से जनम लेते ही घर में लक्ष्मी बनकर आती अपने परिवार को अनमोल धागे में बांध लेती है । अपने साथ-साथ अपने परिवार का भी खयाल रखती है । पापा और भैया की लाड़ली बनकर उनके सपनों को अपना बनाती है । माँ के आँचल में सर रखकर आराम की नींद सो जाती है । भाभी की दोस्त बनकर उनका साथ देती है । तो फिर लड़कियाँ घर से बाहर निकलने से क्यो डरती है । इस सोच को आगे बढाने के बजाये लोग पीछे की और खीच रहे है । कुछ लड़कियों को आजादी मिले तो बाकी लड़किया अपने अधिकार से आगे बढकर कुछ बनकर दिखायेंगी ।

कही-कही लड़कियों की शादी १८ साल के होते ही हो जाती है । क्यो क्या लड़किया पैदा होते ही ठान लेती है के उन्हे चुल्हा चौका, बरतन कपडा ही करना है । हाथ में बेलन और सरपर पल्लु रखकर सबको इज्जत देकर ही गुजारना है । जब लड़किया इज्जत दे सकती है तो उनको इज्जत मान सम्मान, अधिकार देने से भी कोई रोक नही सकता । माता-पिता का गर्व है बेटियाँ, जो हक बेटियों को मिलता है वही हक बहुओं को भी मिलना चाहिए । क्योकिं हम एक बेटी भेजते है तो दुसरी बेटी बहू के रुप में लक्ष्मी बनकर हमारे घर आति है ।

अपना घर परिवार छोडकर किसी अनजान परिवार से रिश्ता जोडती है । क्या बहुओं का हम सिर्फ खाना पकाना, रसोई सभालना, या परिवार की देखभाल करना हि है ? जैसे हम अपने बेटियों को आगे बढने की, पढने की सलाह देते है, वैसे ही हमारे राष्ट्र की हर बहुओं को भी पढने की सलाह मिलनी चाहिए । क्या पता जो काम बेटे नं कर पाए वो काम बेटीयाँ या बहुए कर दिखाए ।

जिंदगी में लड़कियाँ ही आगे होती है और पीछे भी वही होती है, क्यो न हम एक नई सोच के साथ आगे का आने वाला कल सुधारे लड़कियों को आगे बढाए उन्हे पढाए उनसे जबरदस्ती से कोई काम न करे जिससे उनकी जिंदगी पर असर पडें । अब ये आपके हाथ में है के बेटी, बहुओं को आगे बढाना है या घर में रखकर उनकी इच्छाओ को मारना है ।

कु. चंचल आर. ठाकूर
बी.कॉम.भाग २

ऐसा कुछ करो...

बात ऐसी करो, कि दिल किसी का ना जले
काम ऐसा करो, किसी को भी ना खले ।
जिन्दगी ऐसी बनाओ, सदा नेकी की राह चले
इरादे इस तरह रखों,
कि हर अच्छे काम में कामयाबी मिले ।
इंसानी रिश्ते ऐसे बनाओं,
जहा बस प्यार ही प्यार पले ।

कु. आरती किसन अग्रवाल
बी.ए. भाग १

आत्मविश्वास एक शक्ति

आत्मविश्वास एक ऐसा मंत्र है जिसमें हर मुश्किल काम आसानी से करके अपने मंजिल तक पहुँचा जा सकता है । इसलिए प्रत्येक व्यक्ती को अपनी सफलता की ऊंची सिढ़ी तक पहुँचने के लिए उसमें आत्मविश्वास होना बहुत आवश्यक है । इस दुनिया में घसीटने और धकेलनेवालों की भी कमी नहीं है । हमें खुद समझना चाहिए अपनी मदद स्वयं करे तो कोई हमें अपने उद्देश हासिल करने से नही रोक सकता ।

आत्मविश्वास के बिना मनुष्य प्रगति के किसी भी पथ पर एक पग भी नही बढ सकता । मनुष्य की सफलता उसके आत्मविश्वास के प्रभाव से ही जन्म लेती है । जो उसकी असीम शक्ति को सीमा में बांध देते है ।

आपने देखा होगा चाहे जितना ही प्रख्यात पहलवान क्यों न हो उसकी संपूर्ण शक्ति उसके सुदृढ शरीर पर निर्भर नही करती । यदि उसमें मनोबल न हो तो उसका शरीर कितना भी बलवान क्यों न हो वह साधारण से व्यक्ति से भी पराजित हो जायेगा और यदि उसमें विश्वास है तो वह बलशाली को भी धराशायी कर देगा । आत्मविश्वास के साथ कार्यशक्ति भी बढती जाती है ।

लोग आपके विषय में क्या कहते है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण यह है की आप अपने विषय में क्या सोचते है । यदि आपके भीतर आत्मविश्वास है तो लोग आपके विषय में कुछ भी कहे आपको इसकी परवाह नही करनी चाहिए । यदि आपने सफल होने की ठान ही ली है तो लोग कुछ भी कहे आप असफल नहीं हो सकते । संसार उनके लिए स्वंय रास्ते छोड देता है । जिन्हे आत्मविश्वास है । इतिहास के पन्नों पर वही व्यक्ति अपना नाम अमर कर गये, जिनको अपने साहसपर अटुट विश्वास था । आत्मविश्वास एक किसी भी बहादुर सैनिक कि वह शक्ति है । जो असंभव को संभव कर देती है और किसी भी टास्क में जीत हासिल कर लेती है । मैं दुबारा कहुँगी एक छोटासा शब्द है 'आत्मविश्वास' जो हर एक गम को ठुकराता है । हर दर्द का इलाज है, एक ताकत है और चिराग है ।

कु. राणी आर. पाली
बी.ए. भाग १

पिता (अंजान)

माँ तो सब कहते है ।
फिर पिता से हि क्यों अंजान रहते है ।।

माँ तो महान है
वो तो बेटे कि जान है ।
फिर पिता हि क्यो अंजान है ?

पिता भी दिन रात काटों की
राह मे चलकर काम करते है ।
और सब जमा पुंजी
अपने बेटे के हाथ में रखते है ।
फिर बेटा माँ को हि क्यो महान
कहे पिता को हि क्यो अंजान कहे ?

पिता तो संसार की सीडी है ।
उसके बाद माँ है ।
माँ के बाद बेटा है ।
फिर भी लोक माँ को हि बेटे कि जान कहे ।
पिता को हि अंजान कहे ?

फिर मै सोचु !
माँ तो महान है ।
बेटे कि जान है ।
देश कि शान है ।
हम सब कि पहचान है ।
फिर खयाल आए – पिता हि क्यु अंजान है ?

कु. कल्याणी दिलीप बेंडे
बी.ए. भाग १

स्वच्छ भारत, सशक्त भारत

स्वच्छ भारत का जन अभियान,
जाग रहा है हिन्दुस्थान ।
गल्ली मोहल्ला और मकान,
जन-जन तक पहुँचे यह पैगाम ।

स्वच्छ भारत अभियान के यह पोस्टर हमें कई दिवारों पर दिखाई देते है । स्वच्छ भारत अभियान माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाया गया भारत का एक सफाई अभियान है । इसे स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है । इस अभियान को राजघाट, नई दिल्ली में २ अक्तुबर, २०१४ को महात्मा गांधी की १४५ वी जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरु किया गया था ।

विश्व बैंक ने लगभग १,५००,०००,००० डॉलर का ऋण भारत स्वच्छता अभियान के लिए मंजूर किया है । स्वच्छ भारत अभियान को सन् २०१९ तक पूरा करने का लक्ष्य है । इस तथ्य को ध्यान में रखकर भारत सरकार महात्मा गांधी के इस सपने को पूरा करना चाहती है और देश को सन् २०१९ में गांधीजी की १५० वी जयंती तक साफ करना चाहती है । क्योंकि सब जानते है,

'विकसित राष्ट्र की हो कल्पना,
स्वच्छता को होगा अपनाना'

महात्मा गांधी ने कहा था कि स्वतंत्रता से ज्यादा स्वच्छता कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है । भारत के राष्ट्रपति, प्रणव मुखर्जी ने जून २०१४ में, संसद को संबोधित करते हुए कहा था कि स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए देश भर में कचरा प्रबंधन और अस्वच्छता के लिए स्वच्छ भारत अभियान को शुरु किया गया है । ये महात्मा गांधी के लिए, २०१९ में उनकी १५० वी वर्षगांठ को मनाते समय हमारी तरफ से श्रध्दांजलि होगी । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी और पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादूर शास्त्री को उनके जन्मदिन पर श्रध्दांजलि देने के बाद स्वयं वाल्मिकी बस्ती के रास्ते को झाडू से साफ किया था । उन्होंने कहा था कि स्वच्छ भारत अभियान का प्रतीक चिन्ह नहीं है, इसके माध्यम से गांधीजी हमें देख रहे है और हम सभी को भारत को साफ करना चाहिए । मैं ये दावा नही करता कि नवनिर्वाचित सरकार सब कुछ कर रही है । ये मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों या किसी भी जगह, हमें अपने आसपास साफ-सफाई रखने के प्रयास करने चाहिए । स्वच्छता केवल सफाई कर्मचारियो की जिम्मेदारी नहीं है, ये १२५ अरब भारतीयों की जिम्मेदारी है । यदि भारतीय मंगल ग्रह पर सबसे कम लागत पर पहुँच सकते है, तो क्या हम अपने चारों और के वातावरण को भी साफ नहीं कर सकते ?

स्वच्छ भारत का जन अभियान,
जाग रहा है हिन्दुस्थान ।

क्योंकि हर तरफ लोगों में जागरुकता और बदलाव दिखाई दे रहे हैं । स्वच्छ भारत अभियान के मुख्य उद्देश है : व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण करना, स्वच्छता के लिए लोगों में जागरुकता लाना, आम जनता में व्यवहारिक बदलाव को बढ़ावा देना, गाँवो को स्वच्छ रखना, ठोस और द्रव्य उपशिष्टों के निराकरण की उचित व्यवस्था, गाँवो में उचित पाईप लाईन की व्यवस्था, पानी की पूर्ति को सुनिश्चित करना आदि । इस मिशन का एकमात्र उद्देश अपने देश को हमेशा के लिए स्वच्छ और खुश नागरिंको के साथ साफ और विकसीत देश बनाना है ।

उज्ज्वल भारत का सपना
स्वच्छ वातावरण हो अपना
स्वच्छ विचारों का प्रतिपादन
तभी होता है
जब हम स्वच्छ वातावरण
में विचरण करते हैं ।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि -

'Cleanliness is next Godliness'

किसीने सच ही कहा है क्योंकि जहाँ स्वच्छता होती है, वही भगवान का वास होता है । गन्दगी फैकने से वातावरण ही नहीं, आत्मा भी मैली होती है । यदि हर कोई खुद अपने दरवाजे के साथ अपने पड़ोसी के दरवाजे की सफाई कर दे तो ये दुनिया जीवन फलने -फूलने के लिए एक स्वच्छ, शुध्द और स्वस्थ जगह बन जाएगी । स्वच्छता और साफ सफाई में अमीरी गरीबी की कोई बात नहीं बल्कि यह तो व्यक्ति की मानसिकता और सिध्दांत की बात है । ॲरोन हिल कहते है -

दुनिया को गंदा मत कहो क्योंकि आप
अपना चश्मा साफ करना भूल गए हो ।

साफ सुथरा मेरा मन ।
देश मेरा सुन्दर हो ।।
प्यार फैले सड़को पर ।
कचरा डिब्बे के अन्दर हो ।।

जिन्दगी में जितना जल और भोजन का महत्त्व है उतना ही स्वच्छता का है । स्वच्छता के बिना हम निरोगी नहीं रह सकते हैं । और कहा जाता हैं कि पहला सुख निरोगी काया होती है । स्वास्थ धन ही सबसे बड़ा धन माना जाता है । क्यों कि यदि व्यक्ति स्वस्थ नहीं रहता तो चाहे उसके पास करोड़ो की दौलत हो वो बेकार है । विवेकानंद कहते है -

जो सभ्यता अपना अपने समाज में सफाई न रख सके, व अपने को कैसे आगे बढ़ाएगी,

गांधीजी ने कहा था - जहाँ स्वच्छता हैं वहीं भगवान का वास होता है । स्वच्छता की सबसे पहली शुरुवात हमारे घरपरिवार से करनी चाहिए , फिर मोहल्ला और शहर और इस तरह सभी यह ठान ले कि अपना घर साफ रखा जाए तो किसी के घर में गंदगी नहीं होगी । पूरा राष्ट्र स्वच्छता के इस अभियान में खुद ब खुद सफल हो जाएगा और इसकी शुरुवात हमें अपने घर और मोहल्ले से करनी होगी । स्वच्छता भक्ति से भी बढ़कर है और इसको हमें हलके में न लेकर इसकी शुरुवात अपने घर से ही करनी चाहिए ।

अब घर गलियारें होंगे स्वच्छ,
तनमन में नहीं होगा दव्दं
शुध्द विचारों की होगी झडी,
बाग-बगीचें, बेल लताओं की होगी लडी ।

ऐसा होगा, अनोखा भारत
स्वच्छ भारत, स्वच्छ भारत ।
न ही होगा घर-घर में बिमारियों का दिखावा,
नही होगा चलते-चलते पान की पीक का फव्वारा
अब तो होगा मंगल गृह जैसा मंगल विचारों का हुँकारा।

ऐसा होगा, अनोखा भारत
स्वच्छ भारत, सशक्त भारत ।

कु. शिवानी चव्हाण
बी.कॉम. भाग १

कलयुगी दोहा

रहिमन जमाना उल्टा है । मांगे मिले ना भिख ।
बिना मांगे नोट मिले, चमचागिरी तो सिख।।

रहिमन राशन राखिये, बिन राशन सब सून ।
जनवरी की चीनी मिले, जब बीत जाये जून ।।

रहिमन जनसंख्या यो बढ़े, ज्यो द्रौपदी का चीर ।
एक-एक सेनापति के हिस्से, आते दस-दस वीर ।।

कबीरा जुआ ऐसी बला, जो खेले सो कंगाल ।
जूते पड़े सर पे तो, बचे न एक ही बाल ।।

चलती टयूशनखोरी देख कबीरा दिया रोय ।
इस ब्रम्हास्त्र के बिना पास हुआ न कोय ।।

कबीरा देख स्टूडेन्ट की, बदल गई है जात ।
गुटखा, बीडी, सिनेमा के पिछे, पढ़ाई को मारी लात ।।

चलती रिश्वतखोरी देख, कबीरा दिया रोय ।
इस काजल की कोठरी में, अकेला रहा न कोय ।।

कु. नेहा शुक्ला
बी.ए. भाग १

साहित्य कृतियों को संगीतबध्द करनेवाले संगीतकार : जयदेव

१) हरिवंशराय बच्चन की मधुशाला को मन्ना डे से गवाने वाले जयदेव ही थे. उनकेद्वारा संगीतबध्द मधुशाला का वह कैसेट आजभी श्रोताओ के बीच बेहद लोकप्रिय है ।

२) छायावादी कवियों की छंद, लययुक्त और काव्यात्मक धुनो में जयदेव ने ढाला था । जयशंकर प्रसाद की 'तु मुल कोलाहल कलह में', 'मै हृदय की बात रे मन' आशा से उन्होंने इतने सुंदर तरीके से गवाया कि तारीफ के शब्द नही मिलते । आशा ने इस रचना को एच.एम.व्ही. द्वारा रिलीज माय फेवरिट्स कैसेट में शामिल किया है ।

महादेवी वर्मा की 'कैसे उनको पाऊं आली' और अन्य रचनाओं को भी आशा के स्वर में अमर बनाने का श्रेय उन्हें ही जाता है ।

मीरा की 'आली रे मेरे नैना', 'कैसी लगन', 'फागुन के दिन' और 'बना ले नंदलाला '

गालिब की गजले 'कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाए मुझसे', 'शौक हर रंग रकीब'.

जिगर का कलाम 'कभी शाख-ओ-सब्ज-ओ-बाग' फानी बदायूंनी का 'कारवा गुजरा किया'

नरेन्द्र शर्मा का 'जो समर मे हो गए अमर'

महादेवी वर्गा रचित 'जो तुम आ जाते एक बार', 'मुखर पिक हौले बोल', 'मोरे नैना जागे सारी रैना' (जो अप्रदर्शित फिल्म फुटपाथ के लिए मूलतः रेकार्ड हुआ था), मधुर मधुर मेरे दीपक, महादेवी वर्मा का ही रचित 'तुम सो जाओ मै गाऊं', 'महलों में आई', (यह भी फुटपाथ के लिए ही रेकॉर्ड किया गया था) 'नगरिया', 'ना मैं लड़ी थी'.

बिस्मिल की अमर रचना सरफरोशी की तमन्ना',

३) दिनकर की उर्वशी को भी संगीत से सजाने का काम जयदेव ने ही किया था । उर्वशी को गवाने के लिए उन्होने दक्षिण भारत की महशूर गायिका एस.पाल्ली की आवाज ली थी । सितार और तबले की विलक्षण ताल के साथ यह रचना आज भी अभिभूत करती है । यू टयूब पर आप इस रचना को गुनगुनाते हुए जयदेव को भी देख सकते है ।

आशा के स्वर में कबीर की रचना 'कौनो उगवा नगरिया लुटल हो को' एक बहुती दिलकश धुन में जयदेव ने ढाला था और बाद में फिल्म अनकहीं में शामिल किया था ।

गैर फिल्मी गीत 'ये दिल और उनकी निगाहों के साये बाद' में निर्देशक वेद राही ने फिल्म प्रेमपर्वत १९७३ में लिया था । जिसका आरंभ शुध्द गांधार से होता है, जिसकी धुन पहाडी पर आधारित है ।

छाया गांगुली के स्वर में सूरदास का भजन 'मोहे अब के बेर उबारो', भी जयदेव की एक चर्चित रचना रही है ।

गीत 'सत्यमेव जयते' को संगीतबध्द कर हिंदुस्तान - पाकिस्तान युध्द के समय १२ दिसम्बर १९७१ को लता से रामलीला मैदान, दिल्ली में गवाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने का श्रेय भी जयदेव को ही है ।

चंदनदास की गाई मशहुर गजल 'शबो रोज मौसम बदलते रहे' स्वरकार जयदेव ही थे, यह तथ्य कम लोग जानते है ।

पीनाज मसानी और हरिहरन की कई आरंभिक रचनाओं के कंपोजर जयदेव ही थे । पीनाज की गाई 'तुमको हम दिल में, 'वादा-ए-शाम-ए-फर्दा-पे' आदि कई गेलों के कंपोजर जयदेव रहे ।

दूरदर्शन के आरोही कार्यक्रम में जयदेव द्वारा संगीतबध्द पीनाज मसानी द्वारा गाया 'मोरा अंग अंग नवरंग' तथा हरिहरन का गाया 'दाता ओ दाता' आज भी कई सुधी श्रोताओ को याद है ।

भूपेंद्र के गाए 'वो दिन कितने सुंदर थे', गीत की राग बागेश्री में जयदेव ने अद्‌भूत सी सौम्य धून बनाई थी, हरिहरन ने लेस्ली लुइस के साथ निकाले अपने एलबम कोलोनियल कंजिस - आत्म की रचना गाइडिंग स्टार की

मूलधून की प्रेरणा जयदेव की बनाई धून से ही ली है ।

उनकी अंतिम रेकॉर्डिंग फिराक गोरखपुरी की गजलों की थी, 'हम भी फिराक इंसान थे आखिर तर्के मुहब्बत से क्या होता' को रेकॉर्ड करते समय वे अभिभूत हो गए थे और बोल उठे थे कि जिस काम को मैं वर्षो से पूरा करना चाहता था, अब वह पूरा हो गया... अब मौत बेशक मुझे ले जाए । उस समय क्या पता था कि हप्तेभर के भीतर सचमुच मौत उन्हें ले जाएगी ।

कु. रसिका पालकर

बी.ए. भाग ३

मीरा

छोड़ सब सखियाँ सहेली ।
साँवल गुड्डे से खेली ।
साँवरे के रग राची ।
प्रीति की सच्ची कहानी हो गई ।
दुनिया से मीरा बेगानी हो गई ।
सब राज रंगो से परे वो प्रेम की बाते करें ।
माने न जग की रीत को ढुंढे वो मन के मीत को ।
रिश्ता नया रचने लगी ।
छोड सब सखियाँ सहेली ।
सॉवले गुड्डे से खेली ।
बालपन की प्रीत साची ।
सावरे के रंग राचे ।

कु. वर्षा आर. जोशी

बी.ए. भाग १

पढ़ाई और गरीबी

क्यो होता है हमें यह सोचकर एहसास
क्यों गरीबों के पूरे नहीं होते हे, ख्वाब

पढ़ते है हम उम्र के कई साल
फिर खड़ा होता है जिंदगी का सवाल?

नौकरी के लिए अब कितना हम फिरें
सोचती हूँ क्यूँ गवांए हमने पढ़ाई में इतने साल
पढ़ाते-पढ़ाते माँ-बाप के हो गये बुरे हाल

हर माँ-बाप की आखों में होते है यह सपने
पढ़ लिखकर लड़का एक अफसर बने
गरीबी के आगे कैसे हम पढ़े

कु. आरती किसन अग्रवाल

बी.ए. भाग १

बदनाम गलियों से निकली आह

कितनी बार मरी हूँ, फिर मरकर उठी हूँ,
अपने मन को मारकर, तिल, तिल मे जली हूँ ।
क्या कर सकती हूँ मै मगर, इससे और ज्यादा,
दिन में ख्वाब देखकर, रातो में फिर ढली हूँ ।
छोड जाता कोई मजबूरी में, तो कोई बेच जाता है,
कोई उठा लाता कही से
तो किसी पिता से नही पली हूँ ।

खत्म हो जाता अस्तीत्त्व, मेरा यहाँ आकार,
और रह जाती हूँ बस, बेनाम ठप्पा लगाकर ।
निकलू भी अगर यहाँ से, तो भी कौन अपनाये,
गिध्द बैठे है दुनिया में, बाहर भी तो घात लगाये ।
शायद उनसे तो यही सुरक्षित भली हूँ
भले सफेद पोश समाज की कहलाती गंदी कली हूँ ।

कु. नेहा शुक्ला

बी.ए. भाग १

देश-धरती-माँ

इस जग में सबसे अच्छा रिश्ता कोनसा है ? तो वो है काँ और बच्चे का ! हर माँ अपने बच्चों को पुरी दिल और जानसे चाहती है । क्यो कि माँ होती ही ऐसी है । इस जग में माँ शब्द सिर्फ तीन लोगों के लिए निकालते यानी के पुकारते है । एक माँ अपनी भारत माता और दुसरी माँ अपनी धरती माँ और तिसरी भावविश्वपुर्ण माता, जो नौ महिने अपनी कोख में पालती और अपने को इस नये जग में लाती है । एक माँ वो हे जो संपुर्ण जीवन का विद्याज्ञान देती है । जब की जीवन जिना आसान होतो है । और दुसरी मॉ की जो अपना सारा बोझ तो सभांलती और तो और धनधान्य मोतीयो की निर्मिती करती ज्योंकि हर इन्सान की अन्न याने भोजन प्राथमिक आवश्यकता है । और तिसरी मॉ अपने को जन्म देकर इस राष्ट्र और देश की संपत्ती बनाती है । ये तीन शब्द हि तो अपना पुरा जीवन बनाता है । अपने को कुछ भी कही भी चोट लगी तो अपने मुहँ में से पहला शब्द निकलता माँ । कोई व्यक्ती ऐसे होते है समाज में ज्योंकि सुबह-सुबह माँ का चेहरा न देखो तो काम की शुरुआत नही करते और कोई लोग ऐसे होते है जो माँ-बाप को नही पुछते । इस जग में अगर कोई खुश है तो वो है माँ-बाप को खुश रखने वाला और प्यार और सम्मान देने वाला है । सबसे ज्यादा खुश है इसिलिए मुझे माँ के प्यार पर दो शब्द अच्छे लगें -

ममता का सागर है माँ
स्नेह का झरता झरना है माँ
माँ, माँ ही होती है माँ की जगह
कोई नही ले सकता

I Love You माँ

कु. स्वाती भानुदास वाडकर
बी.ए.भाग १

गांधीजी का सपना

महात्मा गांधीजी ने देखा था एक सपना,
स्वच्छ और सुंदर, भारत देश हो अपना ।
लगता है गांधीजी का सपना होगा साकार
भारत देश को मिलेगा, एक नया आकार ।
सब मिलकर लेंगे आज ये प्रण
साकार करेंगे अपना, आनेवाला कल ।
मोंदीजी ने शुरु किया, स्वच्छता अभियान,
भारत देश है, हम लोंगो का अभिमान ।
गांधीजी का यही एक सपना,
बेहतर बनायेंगा कल अपना ।
स्वच्छ भारत, सुंदर भारत, बनायेंगे देश अपना,
साकार करेंगे गांधीजी का सपना ।
बेहतर बनायेंगे कल अपना ।

कु. शिल्पा रा. ब्राम्हणकर
बी.ए.भाग १

अपने...

खुशी में शामिल होते है
झगडे में खुदको शामिल कर लेते है
बत्तमिजीयों पर नाराज होते है
पर हर बात में हमारे साथ होते है
जो हमारी खामियों को दुर करते है
और हमारी खुबिया हमे बताते है
हम जैसे है वेसेही हमे अपनाते है
हमे डाँटते है, प्यार करते है, सराहते है
गुस्सा हम जिनपर होते है पर .....
उनके बिना रह नही पाते
वो अपने होते है ।

कु. अश्विनी गौतम वानखडे
बी.ए.भाग १

अच्छे और बुरे को कैसे जाँचे ?

एक बार की बात है के दो मित्र एक साथ काम की तलाश में रेगिस्तान से गुजर रहे थे । रस्ते में चलते-चलते अचानक उनका किसी बात को लेकर आपस में झगडा हो गया । झगडे में बात इतनी ज्यादा बढ़ गई के एक मित्र ने दुसरे मित्र को थप्पड मार दिया, जिस मित्र को थप्पड पडा था, उसे दुःख तो बहुत हुआ फिर भी उसने उसे कुछ नहीं कहा । लेकिन वह रुका और उसने रेतपर लिखा 'आज मेरे प्यारे मित्र ने मुझे थप्पड मारा' । इसके बाद दोनो मित्र आगे चलते रहे और चलते-चलते वह एक तालाब के पास पहुँचे और दोनो मित्रों ने नहाने का निश्चय किया । जिस मित्र को थप्पड पडा था, वह नहाते-नहाते दल-दल में फस गया और वह मित्र चिल्लाने लगा. उसके मित्र ने उसे दल-दल से बाहर निकाल लिया । इस तरह जब वह मित्र बाहर आया और उसने एक पत्थर पर लिखा 'आज मेरे सबसे प्यारे मित्र ने मेरी जान बचाई है ' ।

जिस मित्र ने उसे थप्पड मारा था, और बाद में उसकी जान बचाई थी उससे अब रहा ना गया और उसने उससे पुछा - 'जब मैने तुमको थप्पड़ मारा था तब तुमने रेत पर लिखा । जब मैने तुम्हारी जान बचाई तो पत्थर लिखा' ।

इसपर दूसरे मित्र ने जवाब दिया - 'जब कोई दिल दुखाए तो हमें उसे रेत पर लिखना चाहिए जिससे क्षमा रुपी वायु (हवा का तेज झोंका) उसे शीघ्र ही उसे मिटा दे और जब कोई हमारे साथ अच्छा करे तो उसे पत्थर पर लिखना चाहिए जिससे कोई भी वायु उसे मिटा न सके' ।

कु. संध्या रा. प्रजापति
बी.ए. भाग १

जिच्या हाती पाळण्याची दोरी । तीच जगाते उध्दारी ।
ऐसी वर्णिली मातेची थोरी । शेकडो गुरुहुनिहि ।।

- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

फेसबुक

आज Facebook का बढता युवाओं में क्रेझ है
यारों यह है तो अपना पर Concept थोडा अंग्रेज है
सभी लोगो को लग चुका है, इसका शौक
होड लगी रहती है कि
किसने, किसको क्यो किया Poke
Student हो अफसर
करते अपना Status update है
कोई करता उसे Like
तो कोई करता उसे Hate है
घरवालों को क्यों नही देते हम Time है
जवाब काफी आसान है
Because we are always online है
जोकींग, पीकिंग तो ठीक है भाई
आज कल इस पर इश्क हुआ करते है
जोडी बनाने का काम आजकल पंडीत नही
FB महाराज किया करते है ।
इसपर किताबों से ज्यादा पढ़ रहे
लड़कियों का Profile Sheet है
जिस चक्कर में केवल
शुन्य से भरी Marks की sheet है
FB के communication का
है बोल बाला पर
भाई सोच के देखो इसने
हमें अपने आप से कितने दूर कर फेका
ये फ्रेन्ड वो फ्रेन्ड, ये फ्रेन्ड वो फ्रेन्ड
मानो हर फ्रेन्ड जैसे जरुरी होता है
इस चक्कर में भाई
आदमी क्यों सच्ची Friendship खो देता है
जय हो FB देवता की
जिससे लगता छोटा सा यह जहाँ
पर आज दिल से दिल को
जोडने वाल Network है कहाँ ?

कु. आरती किसन अग्रवाल
बी.ए. भाग १

Inspiration

A YOUNG man applied for a job as a farmhand. When the farmer asked for his qualification, he said, I can sleep peacefully through a storm. This puzzled the farmer... but he liked the young man, so he hired him.

A few weeks later, the farmer and his wife were awakened in the night by a violent storm ripping through the valley. He jumped out of bed and called out for his new hired man, but found him sleeping soundly in his room in the midst of the tumultuous storm.

He quickly began to check things to see if all was secure. The farmer and his wife found that the shutters of the farmhouse had been securely fastened. A good supply of logs had been set next to the fireplace.

The farmer and his wife then inspected their property. They found that the farm tools had been placed in the storage shed. Safe from raging elements and wheat bales had been bound and wrapped in traps.

The tractor had been moved into its garage. The barn was property locked tight. Even the animals were calm and had plenty of feed. All was well the farmer then understood the meaning of the young man's words, " I can sleep peacefully through a storm."

Because the farmhand did his work loyally and faithfully when the skies were clear, he was prepared for any storm. So when the storm did actually break, he was not concerned or afraid. He could sleep comfortably in peace.

Thus, we too need to do our jobs with utmost sincerity and with a calculated preparedness for unforeseen mishaps. If we do this, then no matter what storm life doles out to us, we can keep our peace of mind.

- Ku. Ashwini Najukrao Damodar
B.A. II Year

Nature

Trees are called man's best friends. They are the most important part of nature. Nature is the most precious gift which has been given to man by God.

It is a treasure which is full of many valuable things. Trees reduce sound pollution, psychologically we feel happy and relaxed in place that is green and full of trees.

Above all we can say that each and every part of nature is beneficial but the human beings are unable to realise its importance.

The steps to save Nature :

Cutting forest should be stopped.

Planting trees and giving life to trees is important.

Stop pollution of rivers.

We live happly in the world because of 'Nature' so SAVE Trees Save Life.

- Anamika K. Phatak
B.A. I Year

Need for Female Education

Woman is the mother of mankind. Mankind will always remain indebted to her for her love and sacrifice. In ancient India, woman held high and honoured place according to the Rigveda.

In Manusmriti woman was subject to her father before her marriage, subject to her husband after marriage and thereafter subject to her eldest son after the husband's death. She was nothing more than a mere commodity a piece of merchandise. Besides this she was subject to numerous atrocities. She was forced to undergo early child marriage and had to perform Sati after her husband's death. Widow remarriage was considered a taboo. The kitchen was her only heaven.

But with the passage of time the status of woman underwent substantial change. In the west there was struggle for women's emancipation. Mahatma Phule worked for educating woman in spite of the opposition from the then society. Education is equally necessary for males as well as females. An educated housewife will be able to perform her household duties more efficiently. Educated woman can be a true helpmate to her husband.

Education of girls in last 23 years have proved that it enables them to participate in political moves and business too. Educated mother can better understand value of sanitation, health, regularity and recreation while looking after house. The necessity of female education is of paramount importance today.

- Ku. Dnyaneshwari Rajaram Narwade
B.A. III Year



My Mother

I love so much my mother
She is always in my heart,.
Even though we argue,
We'll never be apart.

She can tell when I have problems,
She knows when I am down,
She is always there to cheer me up,
and take away my frowns.

At times when I get mad at her
It's hard to stay that way.
Only because she makes me laugh
every passing day.

I love my mother with all my heart,
but this she does not know.
Sometimes I want to tell her
But I'm afraid to let it show.

- Ku. Dnyaneshwari Rajaram Narwade
B.A. III Year

My Idea of Happiness And Success

Everyone wants to be happy and successful in life. But very few people know the meaning of this. People try so many things to be happy and successful in life.

In fact success and happiness should go together. A happy man is always successful but one can not say that a successful man is really happy. Can success bring satisfaction ? If it brings satisfaction, then only it is real success.

Real happiness lies in making others happy. If one achieves everything for self only, it is selfishness and not success. One should try to help the needy. By helping others we get satisfaction. It is said that service to man is service to God. We derive happiness by being kind and generous to others. Success begins with becoming free from lust for money and fame. It is an attitude to be successful.

Both happiness and success require positive thinking. Steve Jobs, the CEO of Apple, lived and died successfully because he tried to become happy.

Success is being satisfied with what we have. It is contentment that give us peace in life. Noted actor Danny Key called his father a successful human being because his father was always happy. A happy person only can make others happy and successful. Subroto Bagachi's mother could make her son successful because she was happy at heart. Thus happiness is necessary for success. We know of great saints. We call them successful, not because they earned name but because they lived a satisfied life.

Both happiness and success are easy to achieve but difficult to keep up. They mean overcoming the difficulties that come in our way. These are not the things that we can buy or sell. It is attitude of winning over again and again.

- Ku. Vidya Gajanan Nawalkar
B.A. III Year



Hard Work

The bees work hard to get honey,
The poor people work hard to get money,
The ants work hard to get food,
The artists work hard to
make art piece good,
The birds work hard to build their nest,
And I work hard to become the best

Ku. Aarti Kishan Agrawal
B.Com III (English)

Smart Studying

How did you LEARN to RIDE BIKE ?

Someone probably gare you a few lessons and then you practice a lot. You can learn to study much in the same manner. No one is born knowing how to study. You need to learn few skills and then practice them.

Why do you work on your studying skills ? It will make it easier for your to learn and improve yourself. Especially as you move to higher education and to your job carrier.

Here are the six steps to smarter studying.

1] Pay Attention : When you pay attention in class and take a good notes you have started the process of learning and studying.

Sometimes it is difficult to pay attention then must ask the difficulties about that portion to the teacher.

2] Good Notes : Easier Studying : D o n ' t know how to take notes ? Start by writing down facts that your teacher mentions. It's good to keep your notes organised by the subject.

3] Be Practical : Relate the notes with your surroundings, practical experience about the subject is very necessary, as it improves the knowledge about subject. One method to get the practical knowledge is to relate your notes with your surrounding things.

This method helps you to increase examples about the subjects.

4] Plan & Break it up !

Waiting up to last month to the exams will make for a homework night that's no fun ! It also makes it hard to do your best. This also makes guilty of patting things off sometimes. One of the best ways to avoid this is to plan from starting day of the session. You can plan according to the nos. of total chapters and the days in a session. Studying from starting day will reduce the work later and helps to study more deeply.

One important part of planning is to break the work into chunks. It will help to manage your planned programme properly. Break the work into parts such that each and every topic get proper time and must be completed in that time. If the topic is difficult to study then should get extra time.

5] Clear the confusion : Ask for help if you can't study effectively. Be sure to ask you all difficulties and confusions, you can also clear them by referring the books.

6] Eat well, Sleep Tight, Stay Fit : A busy scheduled plan can make your brain and body tired, so that you can't follow it properly. Eating habits, sometimes it seems to be bored by the routine to avoid such there should be a time for refreshing. Such time may spend by enjoying your hobbies, with friends, enjoying movies, music or anyting else that make you happy

- Ku. Rani R. Pali
B.A. I Year

Importance of English Language

Language is important because it's one of the main ways to communicate and interact with other people around us. It keeps us in contact with other people. English language is an example for the importance of a language because it is the international language and has become the most important language to people in many parts of world. It is most widely used in communicating around the world. Also it is spoken as the first language in many countries. English is playing a major role in many sections like education, medicine, engineering and business. There are many reason that makes English as the most important language in the world.

The study of English language in this age of globalization is essential. It is the most important language of communication between different countries. In India, people of different states have their own language but English language has come us as a connecting link among various states of India.

U N has recognized five languages as its official languages and of them English takes the first position because of its background. If we go back to historical facts, we see British imperialism. Those countries coming directly under British rule had by necessity or under compulsion to learn English and the rest either being influenced by the English culture or to keep pace with modern trend had but to opt for learning it .

Why learning English is so important ?

English is the language of science, aviation, computers, diplomacy and tourism. Knowing English increases your chances of getting a good job in multinational company within your home country or of finding work abroad.

English is the official language of 53 countries. It is spoken as a first language by around 400 million people around the world. It is also the language of the internet. Many website are written in English.

English is based on simple alphabet and it is fairly quick and easy to learn compared to other languages.

Apart from our mother tongue "Let's learn English and make our future bright".

- Ku. Komal Shankar Tale
B.A. III Year

An investment in KNOWLEDGE always pay the best INTEREST
-Pen Franklin

How to Achieve The Best

If we have to achieve test in our life so, firstly we have to follow some rules and regulations :-

1] Make a list : In order to achieve your goals, firstly you will have to determine exactly what they are ? And then set a time of 3 min and get all your goals down on a paper without worrying about how difficult achieving them will be. After that, you will have to adjust and reset your lifestyle in order to make your goals a reality.

2] Wake up super early : Sometimes, no matter how much you try to sequester yourself from day time distractions it is hard to be focused on one thing at a time. But it can really be achieved by waking up early in the morning. If we wake up early our body becomes programmed to wake up at the same time every day. It will be difficult to adjust at the very first day, but you will soon get habit of it. It takes preparation, patience and peace of mind to become an early riser.

3] Find people to help you : You might be benefitted from a sidekick or motivator to keep you motivated and hold you accountable. Find specific people who can help you to bridge the gaps.

4] Motivate yourself with rewards : you might treat yourself to your favorite desserts, a spa treatment, new recreational gear or just a lazy day off. We cannot achieve these big goals very easily but we should never give up, we must keep motivating our self, as a result we will definitely achieve the best and become a successful person.

If you seriously follow these four points, I am dam sure that you are definitely going to achieve the best.

Just go for it without wasting your time.

- Ku. Smita. Gore
B.A. I Year

Every Drop Counts !

A time will come when ...
Water, the live saving agent
will be stored and
Locked as we keep
Precious things in lockers.

We have to think very seriously.....
About saving water
About reusing waste water
About water harvesting

Water is precious natural resource. We are fast losing it because of our unnecessary laziness, luxuries and weariness towards nature and it destruction will prove fatal for our future generations.

Naziya
B.A. - Part I

FEMINISM : Why It Matters and What It Really Stands For

The Feminist Movement is divided in to three waves. The First wave was in 19th and early 20th Century for political equality. The second wave was in 1960s and 70s for legal and professional equality. The third wave was in the past couple decades for social equality.

The current Feminist movement is a protest against people's unconscious biases, norms and heritage that disadvantage women.

Now a days, it is so easy to dismiss the need for Feminism, because some people might say that the 'Big Issues' have been dealt with or some might say that the status of women today has been improved and been better as compared to how it was years ago. But has it really ? Because, there's still so much discrimination against women out there.

For instance, even though almost half of the working population are Women, in some areas they are still getting paid less than Men. The number of women facing sexual assaults are much higher than men. Then there's also the unrealistic expectations for women's physical appearance and behaviour.

Many people often mistake Feminism as "Man-Hating', Which is completely false. Being a Feminist is simply believing that Men and Women should be treated equally and deserve equal rights.

What Feminism is meant to be :

1] The advocacy of Women's rights on the basis of the equality of the genders.

2] Belief that Men and Women should have equal rights and opportunities.

3] Political, Economic and Social euqlity and all others rights of Women equal to those of Men.

Ain't we all born equal ? So why shouldn't we treat women equally as men ? Why do some people still think of women as inferior to men.

In our society, boys are asked not to 'cry like girls'. Little girls are handed over toy kitchen sets and boys are mocked if they show interest in pots and pans. Why don't we give little girls a toy airplane or a car ? Is it because of the stereotype that a woman belongs in the kitchen and only the men run a household ?

If we really want to make a change we must start teaching children that equality of genders is a reality. We need to repose our faith for a better tomorrow in the young. We need to introduce Feminism in schools, both in terms of curriculum and practice. We need to tell girls that they are not weaker than boys. They are just as strong too. We need to destroy the stereotype, like a girls must know how to cook, how to do all the house chores. Why don't we teach all that to boys too ? Because, what kind of work a person does or what kind of interests a

person should have shouldn't be based on their gender.

These kinds of simple and minor issues may not seem that big of a problem but they are still gender-biased. It's all of these kinds of issues that we've got to resolve.

It's true that 'The Feminist Movement' still has to overcome, but with every small success we get closer to our goals of equality.

- Ku. Isha N. Pradhan
B.A. I Year

"Makeup should never be used to hid yourself. It should be used to enhance your natural beauty."

Be bold when you "lose" & be calm when you "win". Changing the face can change nothing but facing the change can change everything.... !!!!

Ku. Aarti Kishan Agrawal
B.Com III (English)

The World's Best Dad

I may not always show it,
But I think it just the same,
You are the best dad in the world
You will never hear me complain
You were always there to listen,
To understand, and share
In all of my hopes and dreams,
With patience and with care
I did not always understand,
When you thought of me wrong
But looking back, I see it now,
Your were so kind and strong
Although life brings many changes,
Through the good and the bad.
I would not change you for the world,
Your are such a special dad !!!!!

स्वमानरक्षणं चिन्तनीयम्

शासकपक्षीयाः विरोधीपक्षीयान् दूषयन्ति, विरोधिपक्षीयाः च शासकपक्षीयान् दूषयन्ति । एतं व्यवहारं प्रतिदिन पश्यामः पढामःच वयम् दषगस्य आधार कः अथवा क्वचित् भवति कोडपि दुष्यणस्य आधारः कः ? बहुत्र न कोडपि । अथवा क्वचित् भवति कोडपि दुर्बलः आधारः । दोषारोपेण अन्यस्य तेजोवधः करणीयः इत्येतस्य एव प्रामुख्यम् अत्र । सार्वजनिक सभासु परनिन्दनं कृतं चेदेव भाषणस्य रोचकता सिदध्यति इत्यतः एषा परनिन्दा प्रवृत्तिः दिने दिने वर्धते । पत्रिकाकाराः दूरदर्शनीयाः च एतस्य प्रसारम् आधिक्येन कुर्वन्ति । परनिन्दा श्रवणा दिषु मानवमात्रस्य प्रवृत्ति सहजा इत्यतः एतादृशीनां वार्तानां प्रसारः एव पत्रिकादीनां जनप्रियतायाः (धनसम्पादनस्या) आधारः । यत् श्रुतं तस्य प्रसारे न करणीयः भवति विशेषप्रयासः । कार्यक्रमे उपस्थाय श्रुतम् अधिकृत्य लिखितं चेत् (दृष्टं चित्ररुपेण सङ्गृहीतं चेत्त् वा) कर्तव्यं समाजं इति भावः पत्रकाराणाम् । वस्तुस्थितेः अवगमनाय प्रयासः न क्रियते एव प्रायः ।

अन्यस्य निन्दा कृता चेत् स्वस्य श्रेष्ठता सिद्ध्यति इति चिन्तयन्ति बहवः । स्वस्य योग्यता विशदी करणीया इत्यत्र न कस्यापि आस्था । क्वचित् तु वक्तृणां विशिष्टयोग्यता कापि न भवति । अतः अनन्यगतिकतया परनिन्दायां प्रवर्तन्ते ते । यस्य परनिन्दा प्राविण्यम् अधिकं स्यात् तस्यैव जनप्रियता अधिका इति चिन्तयान्ति राजनीतिनेतारः । तत्रापि निर्वाचनादिषु आसन्नेषु एषा परानिन्दा प्रवृतितिः पराकाष्ठां गच्छति । परनिन्दार्थम् उपयुज्यमानाः शब्दाः कीदृशाः भवेयुः इत्यापि न चिन्त्यते निन्दकैः । निराधार शुल्लकैः शब्दैः अन्ये निन्द्यन्ते यत् तत्र कोडपि नेता अशिष्टताम्, अननुचिततां वा न पश्यति । श्रोतृ – दृष्ट्र–पठितलोकः अपि एतादृशीषु वार्तासु अरुचिं न दर्शयति । अहो विसङ्गतिः एषा !!

एषा परनिन्दाप्रवृत्तिः वैयक्तिकस्तरे, स्थानीयस्तरे, राज्यस्तरे, राष्ट्रस्तरे अपि निर्बाधं प्रचलति एव । सर्वपक्षीयाः नायकाः अवि एतादृशीं प्रवृत्तिं प्रदर्शयन्ति सर्वत्र । नायकेषु एतादृशीं प्रवृत्ति प्रदर्शयत्सु अनुयायिनः स्थानीयनायकाः वा किमर्थ तत्र अप्रवृत्तिं दर्शयेयुः ? केषाञ्चित् राष्ट्रनायकानां कथनानि जागतिकस्तरे अपि महत्वम् आवहन्ति । तैः क्रियमाणाः अन्यस्य निन्दा निन्दामात्रे न पर्यवस्यति, अपि तु देशस्य गौरवस्य हानिमपि परिकल्पयति । तैः उक्तानि वाक्यानि सर्वत्र प्रसार्यन्ते पत्रिका दूरदर्शनादिभिः जालपुटादिमाध्यमैः च । अतः अल्पे एव काले तत्सम्बध्दा वार्ता सर्वत्र प्रसृता भवति, देशस्य विषये अभिप्रायं रुपयति च । ततः अस्मददेशस्य एव अगौरवं वर्धिष्यते । क्वचित् तु जागतिकस्तरीयासु वेदिकासु अपि परनिन्दा प्रवर्तते लीलया । तस्माद् देशस्य गौरवं किं क्षतिग्रस्तं न भवेत् ? एतद्विषये चिन्तनम् अकुर्वन्तः राष्ट्रनायकाः स्वच्छन्दतया परनिन्दायां प्रवर्तन्ते यत् यत् कथं वा औचित्यम् आवहेत् ?

कराङ्गणस्थं जगदेव सर्वम् । संवहनव्यवस्थायाः विकासस्य कारणतः कस्यचित् देशस्य कोणे क्वचित् प्रवृत्ता लघ्वी अपि घटना अद्यत्वे समग्रेण जगता ज्ञाता भवति । मार्गाः भवनानि च दृष्टियुक्तानि अपि भवन्ति । एषा व्यवस्था क्वचित् व्यक्ततया परिकल्पयते, पुनः क्वचित् अव्यक्ततया । एकान्ते प्रवर्तमानस्य सम्भाणस्यापि ध्वन्यङ्क नादिकं क्रियमाणं भवति बहुत्र । अतः आचारविचार कथनादिषु स्वस्य, समाजस्य, शासन व्यवस्थायाः देशस्य च मानस्य रक्षाविषये विशेषजागरुकता वोढव्या भवति अद्यत्वे ।

कु. प्राजक्ता भास्करराव देशपांडे
एम.ए. प्रथम वर्ष (संस्कृत)

पिन् कोड् प्रवर्तकः - महान संस्कृतज्ञः ।

अयि मित्राणि, भारत सहृददेशे सुदूर प्रान्तेभ्यः अन्येषाम् प्रति प्रेषितानि पत्राणि विना विलम्बे विनां प्रमादं कथं प्राप्यन्ते ? वयं अस्माकं निवास विभाने पत्रपेटिकायां पत्रं क्षिपामः । ततः तत पत्रालयं प्रति गच्छति । ततःच निर्दिष्य, स्थानं प्रति प्राप्नोति । कथं शक्या भवति, एषा वितरण व्यवस्था. एतत् तु केवल पिनकोड् प्रणालिः इत्येव अस्य समाधानम् । पिनकोड क्रमाङ्क नाम पत्रसङ्केतस्य अन्ते लिखिता षट् सङ्ख्याः । पिनकोड् नाम स्थान सङ्केताङ्क (PIN-Postal Index Number) ऑगस्ट १९७२ तमे ख्रिस्ताब्दे स्वातन्त्र दिन समारोहे प्रधानमन्त्रि इन्दिरा गान्धी महोदयायै, उपहारिकृता एषा महत्त्वपूर्ण प्रणालिः। केन खलु प्रवर्तिता इयं सङ्केत प्रणालिः । सः पत्रालय अधिकारी आसीत संस्कृत पण्डितः गणितज्ञः श्रीराम भिकाजी वेलणकर महोदयः ।

सः कोलकत्तानगरे डाकतार विभागस्य निर्देशकरुपेण कार्यरतः आसीत् । तस्य कार्यकाले एकास्मिन दिने कोडपि सः स्मि दुःखितः केरल प्रदेशीयः सैनिकः महोदयंः आगतः तस्य पित्रोः स्वास्थ विषये किञ्चिदपि ज्ञातुम् असमर्थ यतः तदा पत्रस्य प्रवासकालः केरलतः, अरुणाचल प्रदेशपर्यन्तम् चित् मासोधिकोऽपि आसीत् । तेन पं वेलणकर महोदयस्य चिन्तनम् आरब्धम कथं पत्रस्य प्राप्तिकालं न्यूनं कर्तुम् शक्नोमि ? दुर्बोध हस्ताक्षराणि, भिन्नाः प्रान्तीयाः भाषाः अपूर्णः पत्रसङ्केतः इति नैके प्रत्यूहः । अतः गणितज्ञेन तेन अङ्कानाम् उपयोगः कृतः । तेन देशस्य अष्ट विभागाःकृताः । तेषाच उपविभाग जनपदाधारेण क्रमाङ्कनं कृतम् । तेन अधुनापि वयं विनासायायं शीघ्रं पत्रं लभामहे ।

अनुशासन प्रियस्य वेलणकर महोदयस्य सङ्गीतम् अपि प्रियः विषयः । सः व्हायोलिन वादने तथा तबलावादने ऽपि अतीव निपुणः । अतः एव सः गीतगीर्वाणम् इतिसंङ्गीत विषयकं शास्त्रीयग्रन्थ संस्कृतेन रचितवान् । कथाः गीतानि बालगीतामि नृत्यनाट्यम् इति बहूविधाः रचनाः तेनकृताः तथापि नाट्यलेखनं तस्य अभिमतः साहित्य प्रकारः । लेखनम्, दिग्दर्शन, नाट्यनिर्मितिः व्यवस्थापनं सङ्गीतसयोजनम् इति सर्वमेव कर्तुम् सः समर्थः अतः 'सबकुछ श्री भिः' इति तस्य नाटकानाम् ख्यातिः आसीत् । धन्यः सः विद्वद्वरेण्यः येन वयं पिन् कोड् प्रणाल्याः उपकृताः ।

कु. रंजना नोवाल
एम.ए. द्वितीय वर्ष

। मनोराज्यस्य फलम् ।

कस्मिच्छित नगरे कश्वित् स्वभावकृपणो नाम कोऽ पि भिक्षुकः प्रतिवसति स्म तेन भिक्षया प्राप्तेन स्कतुपिष्टेन कलशः सम्पूरितः । तं च घटं नागदन्ते रज्ज्वा बदध्वा तस्याधस्तात् कटं प्रसार्य सततं तद्विषये चिन्तयन् सः सुम्तः । सः अचिन्तयत् -

यत्परिपूणोऽय घटस्तावत् सक्तुपिष्टेन वर्तते । यदि दुर्भिक्ष भवति तर्हि अस्य विक्रयणेन रुप्यकाणां शतं प्राप्स्यामि । ततस्तेन अहम अजाहयं क्रेष्यामि । ततः षाण्मासिक - प्रसववशात् ताभ्यां यूथः भविष्याति । ततोऽजाभिः प्रभूताः धेनूः अश्वाः भविष्यन्ति । तेषां विक्रयणेन सुवर्णं प्राप्स्यामि । सुवर्णेन चतुःशाल गृह सम्पत्स्यते । ततः कश्चित् धनिक रुपाढयां कन्यां महया वास्याति । आवयोः पुत्रः भविष्यति । तस्याहं सोमशर्मेति नाम दहाति ततः सः जानुचलनयोगः भविष्यति । एकदा सोमशर्मा मां दृष्ट्वाा मत्समीपम आगेच्छा ततोऽहं कोपाविष्ट अभिधास्यामि भार्याम, 'गृहाण बालकम' इति । साऽपि मम वचतं न श्रृणोणि तावत्काले कश्चन कुक्कुर तत्र आगमिष्यति । सोमशर्मा तस्यात् भीतः भविष्यति । ततोः लगुडेन तं कुक्कर ताडमिष्यामि । एवं स्वप्नमग्तः ध्यानस्थितः सः तथैव लगुड्प्रहार तेन लगुऽप्रहारेण सक्तुपिष्टेन पूर्णः सः घटः भगृः अभवत् । स्वभावकृपणाः सः पाण्डुरत अतः ब्रवीमि - भग्नः

अनागवर्ती चिन्तामस्म्भाच्यां करोति यः ।
स एव पाण्डूरः शेते सोमशर्मपिता यथा ।।

कु. श्रध्दा राजेश यादव
बी.ए. द्वितीय वर्ष

नवरस वर्णनम्

शृंगाररस :–

शुन्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय किञ्चत् –
निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वण्य पत्युर्मुखम् ।
विस्त्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलिं
लज्जानम्रखी प्रियेण हसता बाला चिरं चुम्बिता ।।१।।

हास्य रसः –

आकुञ्च पाणिमशुचिं मम मुर्ध्नि वेश्या
मान्त्राम्भसां प्रतिपदं पृषतैः पवित्रे ।
तारस्वनं प्रथितथूत्कमादात् प्रहार
हा हा हतोऽहमिति रोदिति विष्णूशर्मा ।।२।।

करुण रस :

हा मातस्त्वरिताऽसि कुत्र किमिदं हा देवताः कवऽऽशीषः
धिक्प्राणान् पतितोऽशनिर्हुतवहस्तेऽङ्गेषु दुग्धे दृशौ ।
इत्थं घर्घरमध्यरुध्दकरुणाः पौराङ्नानां गिर–
शिवत्रस्थानपि रोदयन्ति शतधा कुर्दन्ति भित्तीरपी ।।३।।

वीर रसः

चञ्चद्भुजभ्रमितचण्डगदाभिघात –
संचुर्णितोरुगलस्य सुयोधनस्य ।
सत्यानावनध्द घनशोणितशोनपाणि –
रुन्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः ।।४।।

भयानकरसः –

ग्रीवाभङ् गाभिराम मुहुरनुतति स्पन्दने बध्ददृष्टि
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् ।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योद ग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमूर्व्यां प्रयाति ।।५।।

बीभत्स रसः –

उत्कृत्योकृत्य कृतिं प्रथममथ पृथुत्सेधभूयांसि मांसा
न्यसस्फिक्पृष्ठ पिष्टया घवयव सुलभान्युग्रपूतीनि जग्धवा ।
आर्त पर्यस्तनेत्रः प्रकटितदशनः प्रेतरङ् कः करङ् का
दङ् कस्थदास्थिसंस्थं स्यपुटगतमपि क्रब्यमव्यग्रमत्ति ।।६।।

चराचरजगज्जालसदां वदनं तव ।
गलद्गगनगाम्भीर्य वीक्ष्यास्मि हृतचेतना ।।७।।

रौद्र रसः –

नवोच्छलित यौवनस्फुरदवर्वगर्वज्वरे
गदीयगुरुकार्मुकं गलितासाध्वसं वृश्चति ।
अयं पतत्तु निर्दयं दलितदृप्तभूभृदगल –
स्थलद्रुधिरघस्मरो मम परश्वधो भैरवः ।।८।।

शान्त रसः –

मलयानिलकालकूटको रमणीकुन्तल भोगिभोगयोः
श्वचापयात्मभूवोर्निरन्तरा मम जाता
परमात्मनि स्थितिः ।।९।।

कु. मिनाषी वि. बोरकर
बी. ए. तृतीय वर्ष



विद्यर्थमाला

सुखार्थी चेत् त्यजे द्विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत्सुखम् ।
सुखार्थीनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम् ।।

सुखाची इच्छा असणाऱ्याने विद्येचा त्याग करावा. विद्येची इच्छा असणाऱ्याने सुखाचा त्याग करावा. सुखाची इच्छा असणाऱ्याला विद्या कुठून मिळणार ? विद्येची इच्छा असणाऱ्यास सुख कुठून मिळणार ?

दृष्टिपूतं, न्यसेत् पादं, वस्त्रपूतं पिबेत् जलम् ।
सत्यपूतां वदेत् वाणीं मनःपूतं समाचरेत् ।।

योग्यरित्या पाहून पाय ठेवावा. वस्त्राने गाळून घेतलेले पाणी प्यावे सत्याने पवित्र झालेली भाषा बोलावी आणि योग्य रितीने विचार करुन वर्तन करावे.

धनलब्धं काङक्षेत, लब्धं रक्षेत प्रयत्नतः ।
रक्षितं वर्धयेत् सम्यक्, वद्धं तीर्थेप्पु निक्षिपेत ।।

न मिळालेल्या धनाची इच्छा करावी. प्राप्त झालेल्या धनाचे प्रयत्नपूर्वक रक्षण करावे. रक्षण केलेले धन चांगल्या रितीने वाढवावे. अधिक धन तीर्थक्षेत्री दान करावे.

अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत् ।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ।।

क्रोधाला क्षमेने जिंकावे, सज्जनाने दृष्टाला जिंकावे. कंजुषपणाला दानाने जिंकावं आणि सत्याने असत्याला जिंकावे.

अयं निःपरो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

हे माझे, हे तुझे असे कोत्यामनाचे लोक मानतात. उदारवृत्तीच्या लोकांसाठी तर संपूर्ण पृथ्वीच कुटूम्ब असते.

कु. रंजना नोवाल
एम.ए. द्वितीय वर्ष

वातावरणम् (हवामान)

घर्मो घर्म ।	खूप गर्मी आहे.
किं भोः ! क्लिन्नः अस्ति ।	
प्रातः आरभ्य एवमेव वृष्टिः ।	संध्याकाळ पासून अशाच पाऊस पडत आहे.
किम् अद्य वर्षा भवेत् ?	काय आज पाऊस येणार ?
किम् एषा उष्णता भोः !	कशी जास्त गर्मी आहे.
शैत्यम् अहो शैत्यम् !	खूप जाडा आहे.
महती वृष्टिः !	खूप पाऊस आहे.
वृष्टेः एव भयम् ।	पावसाचीच भिती वाटत होती.
दिने-दिने शैत्यम् अधिकं भवति ।	दिवसेंदिवस ठंडी वाढत आहे.
यद्वा-तद्वा वर्षा ।	जेव्हा-तेव्हा पाऊस आहे.
वायुरहो वायुः ।	कशी जास्त हवा आहे.
अत्र वायुः सुष्ठु वाति ।	इथे छान हवा येत आहे.
बहु औष्व्यं खलु ?	खूप गर्मी आहे न ?
अद्य किञ्चित् शैत्यम् अधिकम् ।	आज थोडी जास्त ठंडी आहे.
भवतः प्रदेशे वर्षा कथम् ?	तुमच्या इथे पाऊस कसा आहे ?
कुत्रापि वर्षा नास्ति ।	काही पाऊसाचे नाव नाही.

कु. मिनाषी वि. बोरकर
बी. ए. तृतीय वर्ष

यात्रा वर्णनम्

चिटिकां कुत्र क्रीणामि ?	तिकीटे कुठे घ्यायचे ?
शीघ्रम् आगच्छतु, यानं गच्छेत् ?	लवकर या, गाडी निघून जाईल.
इदानीम् एव एकं यानं गतम् ।	आत्ता एक गाडी गेली.
अहं भवतः पार्श्वे उपविशामि ।	मी तुमच्या जवळ बसतो.
किञ्चित् समज्जनं कुर्मः ।	थोडी तडजोड करु या.
महान् जनसम्मर्दः ।	खुप गर्दी आहे.
परीवर्तं ददातु ।	चिल्लर द्या.
अग्रे चलतु ।	समोर चला.
यानं कदा वा निर्गच्छति ?	गाडी केव्हा सुटेल.
शीघ्रम् अवतरतु ।	लवकर उतरा.
किम् अग्रिम स्थानम् अस्माकम् ?	काय, पुढील ठिकाण आपला आहे ?
यानस्य का संख्या ?	गाडीचा नंबर काय आहे ?
फलकमपि नास्ति, किमपि नास्ति ।	फलक पण नाही आणि दूसरे काहीच नाही.
यानं न लब्धम् ।	बस नाही भेटली.
यानं दशवादने आगच्छति ।	दहा वाजता बस येते.
यानस्य निर्गमनाय इतेऽपि अर्धघण्टा अस्ति ।	बस निघायला अजून अर्धा तास आहे.
पञ्चवादने अपि एकं यानम् अस्ति ।	पाच वाजता पण एक बस आहे.
यानं तदानीम् एव आगत्य स्थितम् ।	बस तर किती वेळची येवून उभी आहे.
आरक्षणं नास्ति ।	आरक्षण नाही झाले.
एवमेव अग्रे गच्छतु ।	असेच समोर चला.
अत्रैव कुत्रचित स्यात्, अन्वेषणं कुर्म : ।	इथेच कुठेतरी असेल, शोधूया.
तत्रेव अस्ति । तत्रैव स्यात् ।	तिथेच आहे / तिथेच असेल.
अहं न जानामि, अन्यं पृच्छतु ।	मला नाही माहित, आणि कोणाला तरी विचारा.
भवान् शीघ्रं न गच्छति चेत् यानं न लभ्यते ।	तुम्ही लवकर नाही गेले तर गाडी मिळणार नाही.
अयं मार्गः कुत्र गच्छति ?	हा रस्ता कुठे जातो ?
भवान् आरक्षणं कृतवान् किम् ?	काय तुमच आरक्षण झालेल आहे ?
सर्व स्वीकृतवान् खलु ?	सगळं घेतलय ना ?
कृपया सर्वबन्धकं स्वीकरोतु ।	कृपया होल्ड – आल ला सांभाळा.
धनविषये जागरुको भवतु ।	पैसे सांभाळून ठेवा.
ततः आगन्तुम् एतावान् विलम्बः किमर्थ ?	तिथून यायला इतका वेळ का ?
एकम अपि यानं न आगतम् ।	एकही गाडी आली नाही.
षष्टिसंख्याकं यानं गतं किम् ।	काय, साठ नंबरची वस निघून गेली ?
अहम् इदानीम् एव आगतवान् ।	मी आत्ताच आलो.
कीदृशः मार्गः एषः ?	कसा रस्ता आहे हा ?

कु. प्रतिभा सहदेव सोळंके
बी.ए.

महिल्लोनतिः

गुरुः पूज्यतमो लोके गुरोर्विद्या गरीयसी ।
गुरोरपि च विदयायाः गरिष्ठा मातृदेवता ।।१।।
दोला दोलयते याऽसौ जगदुग्धारिणी मता ।
यथा लालयते बालं स तथैव गुणाऽगुणी ।।२।।
अतिथ्यभ्यागतादीनाम् आत्मनिनयता सदा ।
परिचर्या श्रमक्लैशैः स्त्रीणां नैसर्गिको गुणः ।।३।।
भावसंवेदना पैसा हृदये थावती भवेत ।
ततो दशगुणा स्त्रीणां निसर्गाद् एव वर्तते ।।४।।
सहजाः सिध्दयाः स्त्रीणां, दुढा कर्तव्यनिष्ठता ।
ममतैकात्मताऽन्येषु सर्वागीणैकतानता ।।५।।
पुमान् प्रकृत्या तेजस्वी स्त्री दक्षा करुणामयी ।
यत्रोभयोः स्यात सौहार्द तत्त स्वर्गसुखं ध्रुवम् ।।६।।
भक्ति्र, भर्तरि, वात्सल्यं शिशौ, स्नेहश्च सज्जने ।
धैर्यम्, अपादि, नारिणां गुणा एते स्वभावजाः ।।७।।
महिला-गुण-शक्तीनां प्रात्कृतानां विकासनम् ।
सुशिक्षणैः सुसंस्कारैः भूयो भवतु भारता ।।८।।
अबला प्रमदा भोग्या गृहदासीति पुरुषैः ।
पाक-कक्षेऽथवा शय्या- कक्षे स्त्री कुंठिता चिरम् ।।९।।
स्त्रीजातिः पाकनिष्पत्यै प्रजोत्पत्यै च निर्मिता ।
ब्रम्हणेति महामूढो रुढो मतिभ्रम ।।१०।।
स्त्रीसमा मोहिनी नास्ति स्त्रीसमा न विरगिणी ।
स्त्रीसमा सदया नास्ति, नाऽदया रणचण्डिका ।।११।।
सुंसगतिः सुनीतिश्च सुरीतिः कृति-सन्मतिः ।
सुकन्यकाभ्यो ग्रामेषु दया, सम्यक् सुशिक्षणैः ।।१२।।
व्यवहरेषु सर्वत्र पुरुषांणा च आदरः ।
स एवाऽस्तु सदा स्त्रीणां मा कदाचिद् अनादरः ।।१३।।
पुरुषाणाम् इव स्त्रीणां, सर्वांगीणा समुन्नति, ।
यत्र स्यात् तत्र, राष्ट्रे हि स्वर्गः प्रावतरिष्यति ।।१४।।
द्विचक्रस्य रथस्येव समाजस्य प्रवर्तनम् ।
द्वयोर भवति तुल्यत्वे स्त्रियश्च पुरुषस्य च ।।१५।।

कु. हेमांगी चौधरी
बी.ए. तृतीय वर्ष

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय, अकोला सांस्कृतिक व दिनविशेष कार्यक्रम समिती अहवाल

महाविद्यालयात विद्यार्थीनींचा सर्वांगिण विकास व्हावा याकरिता शिक्षणाबरोबरच सांस्कृतिक व दिनविशेष कार्यक्रम राबविले जातात. या सत्रातही विविध स्पर्धा जसे गायन, नाटक, नृत्य, पथनाट्य यांचेद्वारा सुप्त गुणांना वाव व उद्‌बोधन केले गेले. थोर पुढारी व राष्ट्रीय नेत्यांची पुण्यतिथी व जयंती साजरी करुन त्यांच्या जीवनावरील माहिती विद्यार्थीनींना दिली गेली. शिक्षकदिन सारख्या कार्यक्रमातून विद्यार्थीनींना स्वयंशासन राबवून शिक्षकांप्रती आदरभाव व्यक्त केला व अनुभव सांगितले. गुरुपौर्णिमा, शारदोत्सव या अंतर्गत सामुहिक गरबा, नृत्य, गायन, हार, पूजाथाली, मेहंदी इत्यादी स्पर्धा घेवून विद्यार्थीनींच्या कला, नेतृत्व, सहिष्णुता आदी गुणांना वाव दिला गेला आणि आनंद घेतला गेला. लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, महात्मा फुले, बसवेश्वर, भगतसिंग, राजगुरु व सुखदेव यांच्या सारख्या क्रांतीकारकांच्या जीवनावरील प्रसंग, त्यांचे कार्य व त्यापासून घ्यायची प्रेरणा, राष्ट्रप्रेम या सर्वांकरिता कार्यक्रम आयोजित केले गेले.

स्नेहसंमेलनात नाटक, सिनेनृत्य, समूह व एकल नृत्य, चुटकुले, गायन, ऑकेस्ट्रा यामध्ये विद्यार्थीनी त्याचप्रमाणे प्राध्यापकांनीही सहभाग घेतला. प्रसिध्द सिनेकलाकार अश्विनी राजेश यांच्या बरोबरही नृत्य करुन विद्यार्थीनींनी आनंद घेतला. यामध्ये विद्यार्थीनींनी केलेले उत्तम नाटक, समूह व एकल नृत्य, गायन आदी निवडून त्या विद्यार्थीनींचा प्राचार्यांच्या हस्ते सन्मान व बक्षिसे देण्यात आली.

या सर्व कार्यक्रमांचे आयोजन व नियोजन संस्थेचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका व महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.देवेंद्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनाखाली झाले. या विविध कार्यक्रमांकरिता महाविद्यालयाची सांस्कृतिक व दिनविशेष कार्यक्रम समिती, शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारीवर्गाने अथक परिश्रम घेतले.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयात रा.से.यो. पथकाचे विशेष शिबीर



रुस्तमाबाद (आळंदा) ता. बार्शिटाकळी या ठिकाणी रा.से.यो.पथकाचे विशेष शिबीर दि. १ जानेवारी ते १७ जानेवारी २०१८ या दरम्यान घेण्यात आले. या शिबीराचे उद्‌घाटन संस्थेचे सचिव मा. आलोककुमारजी गोयनका यांच्या हस्ते झाले. यावेळी संस्थेचे सदस्य मा.विनीतजी गोयनका उपस्थित होते.

यामध्ये बंधारा निर्मिती, स्वच्छता अभियान, भव्य रोग निदान शिबीर, माती परिक्षण, जनजागृती दिंडी, वृक्षदिंडी यासारखे कार्यक्रम घेण्यात आले. शिबीराला विद्यापीठ समन्वयक प्रा.डॉ. राजेश मिरगे, क्षेत्रीय समन्वयक डॉ.सुधीर कोहचाळे, जिल्हा समन्वयक प्रा.डॉ.संजय तिडके यांनी सदिच्छा भेट दिली. या शिबीराच्या यशस्वी आयोजनाकरिता संस्थेचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका, सचिव मा.आलोककुमारजी गोयनका, उपाध्यक्ष मा.रविबाबुजी गोयनका, प्राचार्य डॉ.देवेंद्र व्यास यांनी या शिबीराचे आयोजक डॉ.उमेश पाटील व प्रा.सोनल कामे या कार्यक्रम अधिकाऱ्यांचे विशेष कौतुक केले.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – रा.से.यो. चा वार्षिक अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाचा सत्र २०१७-१८ चा वार्षिक अहवाल पुढील प्रमाणे –

राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाने सत्र २०१७-१८ मध्ये विविध कार्यक्रम घेतेले. यामध्ये प्रामुख्याने आंतरराष्ट्रीय योग दिवस, वन महोत्सव, राष्ट्रीय सेवा योजना उद्‌बोधन वर्ग, दि. १ ऑगस्ट ते १५ ऑगस्ट दरम्यान स्वच्छता पंधरवाडा, विविध सरकारी संस्थांमध्ये साफसफाईचे काम, अवयवदान कार्यशाळा, भव्य रक्तदान शिबीर या शिबीरात ८ लोकांनी रक्तदान देखील केले. राष्ट्रीय सेवा योजना दिन साजरा करण्यात आला. तसेच महात्मा गांधी जयंती, विद्यार्थी दिवस, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विचार साहित्य संमेलन, महापरिनिर्वाण दिन, संत गाडगेबाबा यांची जयंती, सावित्रीबाई फुले यांची पुण्यतिथी, राष्ट्रीय मतदार दिवस, दैनिक सकाळच्या माध्यमातून स्वच्छ अकोला, सुंदर अकोला हे अभियान, मोर्णा नदी स्वच्छता अभियान, सायकल रॅली आदी महत्वाचे कार्यक्रम घेण्यात आले.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – गृहविज्ञान विभागाचा वार्षिक अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाचा गृहविज्ञान विभाग हा अभ्यासाबरोबर सामाजिक कार्यामध्ये सदैव अग्रेसर असतो. या विभागाने २०१७-१८ मध्ये विविध कार्यक्रमाचे आयोजन केले त्या कार्यक्रमांचा अहवाल पुढील प्रमाणे –

- १ ते ७ ऑगस्ट 'स्तनपान सप्ताह' या अंतर्गत स्तनपानाचे महत्व व त्या दरम्यानचे आहार या विषयावर विविध व्याख्यान व प्रदर्शनाद्वारे सादरीकरण करण्यात आले.
- १ ते ७ सप्टेंबर 'पोषण सप्ताह' या अंतर्गत पोषणाचे महत्त्व विशद करुन पोषण साक्षरतेच्या प्रदर्शनींचे आयोजन करण्यात आले.
- आय.एम.ए. अकोला व ड्रगिस्ट असोसिएशन, अकोट द्वारा आयोजित कार्यक्रमात मधुमेह जनजागरण मोहिमेत गृहविज्ञान विभागाच्या विद्यार्थीनींनद्वारे आहार प्रदर्शनी व आहार समुपदेशनाच्या माध्यमातून जनजागृती करण्यात आली तसेच गृहविज्ञान प्रमुख डॉ.अंजली राजवाडे यांच्या व्याख्यानास विशेष प्रतिसाद मिळाला.
- इको-फ्रेन्डली गणपती व दिवाळी करिता माती पासून सुंदर दिवे तयार करण्याची कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली.
- जागतिक महिला दिनाच्या औचित्याने स्त्रियांचे स्वास्थ्य व त्वचेची विशेष निगा ह्यावर एकदिवसीय कार्यशाळेचे आयोजन. तसेच मानसिक आरोग्य व अवयव दानाचे महत्त्व सांगणारे विशेष व्याख्यानाचे आयोजन.
- विद्यार्थीनींन मधील स्वत्व ओळखविणारे 'मै' या कार्यशाळेत संस्थेचे अध्यक्ष मा.दिलीपराजजी गोयनका यांचे विशेष मार्गदर्शन.
- बेटी बचाओ-बेटी पढाओं या सामाजिक उपक्रमात गृहविज्ञान विभागाचे प्रत्यक्ष योगदान.
- गृहविज्ञान विभागातील कु. रिया ताराम हिची राष्ट्रीय पातळीवर बॉक्सींग स्पर्धेकरिता निवड.
- गृहविज्ञान विभागातील कु. शिवानी ठाकूर 'स्टुडंट ऑफ द ईयर' तसेच कु. नेहा पलहाडे 'आरडीजी आयडॉल' या पुरस्काराने सन्मानित तसेच कु. मनीषा केतखेडे 'आरडीजी आयडॉल' स्पर्धेत तिसऱ्या क्रमांकावर राहिली.

एम.एस.सी. न्युट्रीशनच्या कु. झीनत शेख व कु. मनिषा गिरी मेरीटने सन्मानित.

डॉ. अंजली राजवाडे National Seminar - 'Occupational Health Hazards & Its Holistic Management' Organized by National Institute of Miners Health, Nagpur येथे Resource Person म्हणून आमंत्रित व उत्कृष्ट सादरीकरणाकरिता सन्मानित.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – वाणिज्य विभागाचा वार्षिक अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या वाणिज्य विभागाने सत्र २०१७-१८ मध्ये विविध कार्यक्रम राबविले त्याचा आढावा देणारा वार्षिक अहवाल पुढील प्रमाणे –

- दि. ९ ऑक्टोबर २०१७ रोजी वाणिज्य मंचाचे उद्घाटन संपन्न झाले या कार्यक्रमात प्रमुख अतिथी म्हणून जयश्री बजाज, चार्टड अकाउंटन्ट, खामगांव यांची उपस्थिती होती. त्यांनी जी.एस.टी. (GST) या विषयावर विशेष मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमाकरिता महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.देवेंद्र व्यास, वाणिज्य विभाग प्रमुख प्रा.आर.जी.पवार, प्रा.डॉ.ए.बी.पांडे, प्रा.डॉ.विनोद चव्हाण, प्रा.अनुप शर्मा व वाणिज्य मंचाच्या समन्वयक प्रा.सौ.हर्षदा वाधोने व वाणिज्य विभागाच्या विद्यार्थीनी उपस्थित होत्या.
- दि. १८ डिसेंबर २०१७ रोजी भारतीय सेवा सदनचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका यांचे 'Self Determination' वर व्याख्यान झाले. तसेच श्रेयस खंडेलवाल यांनी Career & Investment in Mutual Fund and Shares या विषयावर आपले विचार वाणिज्य विभागाच्या विद्यार्थीनींन समोर मांडले.
- वाणिज्य विभागा अंतर्गत 'निर्भय बनो' चे आयोजन करण्यात आले व या आयोजनकरिता अकोला पोलिस विभागातर्फे घेण्यात आला होता.
- श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयात दि. १९ डिसेंबर २०१७ रोजी वाणिज्या शाखेच्या वतीने 'E-Commerce' या विषयावर मार्गदर्शन करण्यात आले. यावेळी मार्गदर्शक म्हणून एल.आर.टी महाविद्यालयाचे प्रा.योगेश अग्रवाल हे होते.

विद्यार्थी सहायता समिती

श्रीमती रा.दे.गो. महाविद्यालयाचे ब्रीदवाक्य महिला सक्षमीकरण व सबलीकरण असल्याने शिक्षण घेतांना विद्यार्थीनींना अनेक अडचणी येतात. ह्या अडचणीतून मार्ग काढत शिक्षणपूर्ण करता यावे. ह्यासाठी महाविद्यालयात विद्यार्थी सहायता समितीची स्थापना करण्यात आली. समितीतर्फे विद्यार्थीनींना वह्या, पुस्तके, फी, वैद्यकीय मदत, सायकली व इतर साहित्यांचे वाटप करण्यात येते.

विद्यार्थीनींच्या मदतीसाठी समाजातील प्रतिष्ठीत व्यक्तींना व संस्थाना आवाहन करण्यात येते. त्याला प्रतिसाद देखील मिळाला. इरव्हील क्लब अकोला व राधामंडळ अकोला तर्फे १६ गरजु विद्यार्थीनींना सायकल वाटप करण्यात आले.

इरव्हील क्लबच्या अध्यक्षा मा.श्रीमती. आशाजी मोरवाल व त्यांचे सहकारी कार्यक्रमाला हजर होते. राधा मंडळाच्या श्रीमती मंजुदेवीजी गोयनका व त्यांचे सहकारी सुध्दा कार्यक्रमाला उपस्थित होते.

संस्थेचे अध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका व महाविद्यालयाचे प्राचार्य मा.डॉ.देवेंद्र व्यास सर ह्यांचे मोलाचे मार्गदर्शन समितीस लाभले.

सौ. सुषमा गोखले
समन्वयक, विद्यार्थी सहायता समिती,
रा.दे.गो.महिला महाविद्यालय, अकोला

निर्भय बनो समिती

श्रीमती रा.दे.गो. महाविद्यालयाचे ब्रीदवाक्य महिला सक्षमीकरण व सबलीकरण असल्याने शिक्षण घेतांना विद्यार्थीनींना येणाऱ्या अडचणी सोडविण्यासाठी महाविद्यालयात निर्भय बनो समितीची स्थापना करण्यात आली.

मागील ३ वर्षापासून या समितीद्वारे विद्यार्थीनींचे प्रश्न समुपदेशनाद्वारे सोडविण्यात येतात. समाजात व घरात वावरतांना त्यांना येणाऱ्या अडचणी व शैक्षणिक अडचणींबाबत विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले जाते.

ह्यावर्षी समितीद्वारे अकोला जिल्हा पोलीस विभागाद्वारे महिलांच्या सुरक्षीतेसाठी कार्यरत असलेल्या दामिनी पथकाद्वारे विद्यार्थीनींची सुरक्षा व सुरक्षात्मक उपाय योजना ह्यावर मार्गदर्शनाचा कार्यक्रम महाविद्यालयाच्या तर्फे आयोजन करण्यात आला होता. पोलिस विभागाद्वारे राबविण्यात येणाऱ्या विविध उपाय योजना व कायदे ह्याबाबत संपूर्ण माहिती देण्यात आली. तसेच पी.पी.टी द्वारे मार्गदर्शन करण्यात आले. महिलांच्या सुरक्षीततेसाठी पोलीस विभागातर्फे तयार केलेल्या ॲपची माहिती सुध्दा देण्यात येवून ॲप कसे डाऊन लोड करावे ह्याचे प्रात्यक्षिक पोलिस उपनिरीक्षक अनिता इंगळे, विशाल मोरे, गोपाल मुंकदे यांनी दिले.

महाविद्यालयाचे प्राचार्य मा.डॉ.व्याससर व समन्वयक सौ. सुषमा गोखले ह्यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – कला विभागाचा वार्षिक अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या कला विभागाने सत्र २०१७-१८ मध्ये विविध कार्यक्रम राबविले त्याचा आढावा देणारा वार्षिक अहवाल पुढील प्रमाणे –

- कला विभागातील प्रत्येक विभागाच्या अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन करुन, अभ्यास मंडळाची कार्यकारिणी स्थापन करण्यात आली.

कला विभागाद्वारे अभ्यासक्रमांबरोबर विविध अभ्यास पुरक कार्यक्रम राबविण्यात येतात.

- महाविद्यालयाच्या गृहअर्थशास्त्र विभागातर्फे १ ते ७ सप्टेंबर २०१७ मध्ये राष्ट्रीय पोषण सप्ताहाचे आयोजन करुन त्याअंतर्गत, व्याख्यान व विविध उपक्रम राबविण्यात आले.
- मराठी विभागाद्वारा १ ते १५ जानेवारी २०१८ मराठी भाषा पंधरवाडा अंतर्गत विविध कार्यक्रम घेण्यात आले व २७ फेब्रुवारी २०१८ रोजी मराठी भाषा दिवस संपन्न झाला.
- हिंदी विभागातर्फे हिंदी सप्ताहा अंतर्गत विविध स्पर्धा घेण्यात आल्या व मा. कृष्णकुमार शर्मा यांचे व्याख्यान देखील झाले.
- संगीत विभागाद्वारे, सेमिनार, कार्यशाळा, संगीत सभाचें आयोजन करण्यात आले. तसेच प.पू.माताजींच्या स्मृती दिन, स्व.सेठ किसनलालजी गोयनका स्मृती दिन व दिवाळी स्नेहमिलन सोहळ्या दिवशी संगीत रजनीचे आयोजन देखील करण्यात आले.

डॉ. चंद्रकिरण घाटे, डॉ.किशोर देशमुख यांची व्याख्याने झालीत.

- अकोला येथील मोर्णा नदी स्वच्छता प्रकल्पामध्ये महाविद्यालयामधील संध्या प्रजापती यांनी साहित्यीक योगदान दिले.
- इंग्रजी विभागाद्वारे दि. ३ ते ९ फेब्रुवारी या कालावधी मध्ये ऐडयूटेन्मेट सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. या कालावधीत विविध उपक्रम राबविण्यात आले. त्याचबरोबर इंग्रजी ग्रामरवर कार्यशाळा घेण्यात आली. डॉ. सीमा राठी यांच्या व्याख्यानाचे आयोजन देखील करण्यात आले.
- महाविद्यालयामधे कला विभागाने संपूर्ण वर्षभरात विविध सेमीनार, कार्यशाळा घेण्यात आल्या तसेच विविध विषयांवर विविध वक्त्यांची व्याख्याने व शैक्षणिक सहल काढून विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन करण्यात आले.
- सामाजिक शास्त्र मंडळा अंतर्गत समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, तत्त्वज्ञान या विषयांचा समावेश होता. सामाजिक शास्त्र अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन ७ सप्टेंबर २०१७ रोजी संपन्न झाले.

सामाजिक शास्त्र अभ्यास मंडळाद्वारे 'समाज विज्ञान सप्ताह' आयोजित करण्यात आला. या सप्ताहा अंतर्गत वक्तृत्व स्पर्धा, वादविवाद स्पर्धा, निबंध स्पर्धा, समाज विज्ञान, चित्रफित – 'जैत रे जैत', 'पिस्तुल्या'. इत्यादी उपक्रम राबविण्यात आले.

डॉ. रविन्द्र मुन्द्रे, प्रा. नरेंद्र मानमोठे, प्रा.अजय शिंगाडे, डॉ.विनोद खैरे यांच्या मार्गदर्शनात या अभ्यास मंडळाच्या अंतिम वर्षाला शिकणाऱ्या विद्यार्थीनींना 'निरोप समारंभ' देण्यात आला.

महिला सक्षमीकरण समिती

महिला सक्षमीकरण समिती के सदस्यों के साथ मिलकर वर्ष २०१७-१८ में लिए जानेवाले कार्यक्रमोंपर चर्चा हुई, इसके तहत यह निर्णय लिया गया की, कार्यक्रम इस तरह के हो की जिसमें आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, कानून व स्वास्थ सम्बंधित उपक्रम सम्मिलीत हो इसके साथ ही उनमें व्याप्त गुणों का प्रकटीकरण हो एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हो जिससे ज्ञानार्जन व मनोरंजन साथ-साथ हो सके ।

इस प्रकार छात्राओं के सर्वांगिण विकास का दृष्टीकोण रखते हुए इस वर्ष विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये ।

१) स्वास्थ सम्बंधित कार्यक्रम । २) सामाजिक जनजागृती सम्बंधित कार्यक्रम ३) सुप्त गुणों के विकास एवं कलाकृति से सम्बंधित कार्यक्रम । ४) सांस्कृतिक कार्यक्रम । ५) जीवन सुरक्षा की दृष्टि से, पुलिस प्रशासन एवं कानुनी जानकारी से जुडे कार्यक्रम । ६) संस्कारीत जीवन के लिए जीवन मूल्यों से जुडे कार्यक्रम ।

उपरोक्त कार्यक्रमों का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य महोदय डॉ.देवेंद्र व्यास व महिला सक्षमीकरण समिती के समन्वयक डॉ.निभा उपाध्याय, समिती सदस्य डॉ.चारुशिला रुमाले, डॉ.उज्वला वाजपेयी, प्रा.किरण मुळे, प्रा.श्वेता मेंढे, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण एवं छात्राओं के सहयोग से संपन्न हुआ ।

डॉ.सौ.एन.एस.उपाध्याय

समन्वयक, महिला सक्षमीकरण समिती
श्रीमती रा.दे.गो.महिला महाविद्यालय, अकोला.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – क्रीडा विभागाचा वार्षिक अहवाल

सत्र २०१७-१८ मध्ये संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठस्तरीय आतंर महाविद्यालयीन विविध स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या. ज्यामध्ये श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी आंतर महाविद्यालयीन कबड्डी स्पर्धा, खो-खो स्पर्धा, व्हॉलीबॉल स्पर्धा, क्रॉस कंट्री, बॉक्सींग, तायकांडो, हैन्डबॉल खेळामध्ये उत्कृष्ट सहभाग घेतला. यावर्षी कु. रिया प्रकाश ताराम हिने अमरावती विद्यापीठ स्तरीय बॉक्सींग स्पर्धेत सुवर्ण पदक मिळवून महाविद्यालयाचे प्रतिनिधीत्व केले. तसेच चंदीगड विद्यापीठ येथे ऑल इंडिया बॉक्सींग स्पर्धेत सहभाग घेवून महाविद्यालयाचे नाव प्रकाशात आणले.

राज्यस्तरीय बॉक्सींग स्पर्धेत नागपूर विद्यापीठ येथे कांस्यपदक प्राप्त केले. त्याबद्दल महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा.श्री.दिलीपराजजी गोयनका, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांनी तिचे विशेष अभिनंदन केले.

वरिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींची शारिरीक क्षमता चाचणी घेण्यात आली. चाचणीकरीता बाह्य परिक्षक म्हणून प्रा.चंद्रशेखर कडू (खंडेलवाल महाविद्यालय,अकोला) व आंतरिक परिक्षक म्हणून प्रा.बाहेती, प्रा.विठे, प्रा.मेन्ढे व श्री.अशोक दिक्षीत यांचे सहकार्य लाभले. तसेच विद्यार्थीनींची शारिरीक परिक्षा घेण्यात आली.

दरवर्षीप्रमाणे यावर्षी ही स्नेहसंम्मेलन निमित्त क्रिडा दिवस साजरा करण्यात आला. त्यामध्ये विद्यार्थीनीं व प्राध्यापकांनी उस्त्फुर्त सहभाग घेतला. क्रिडा दिवस अंतर्गत मॅराथॉन, स्लो सायकल , निंबू चमचा, तेजचाल, संगीत खूर्ची, कबड्डी, खो-खो आदी स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. या स्पर्धाकरिता प्रथम, द्वितीय व तृतीय पारितोषिके प्राचार्य डॉ.देवेंद्र व्यास यांच्या हस्ते देण्यात आले व त्यांचे अमूल्य मार्गदर्शन मूलींना लाभले.

त्याप्रमाणे ज्या मुलींनी आंतर महाविद्यालयीन विविध खेळामध्ये सहभाग घेतला त्यांचे इन्सेंटीव मार्क विद्यापीठात पाठविण्यात आले. हे सर्व उपक्रम प्रा.श्री.गजेंद्र वाकडे व लेफ्टनंट प्रा. शेव्ता मेन्ढे यांच्या मार्गदर्शनाखाली झाले.

जागरण लेकसीटी विद्यापीठ, भोपाल येथे राष्ट्रीय आंतर विद्यापीठ (पश्चिम झोन) टेबल टेनिस स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. ज्यामध्ये प्रा.श्वेता मेन्ढे यांनी अमरावती विद्यापीठाची टेबल टेनिस चमू व्यवस्थापक म्हणून कार्य केले.

ग्रंथालय विभागाचा वार्षिक अहवाल

उच्च शिक्षणाचा महत्वाचा कणा म्हणजे ग्रंथालय होय. आमच्या महाविद्यालयाचे ग्रंथालय समृध्द व संगणकीकृत असून ग्रंथालयात विविध ३३२३७ पुस्तके वाचनासाठी उपलब्ध आहेत. संशोधन वृत्ती वाचकांमध्ये निर्माण व्हावी या दृष्टिकोनातून विविध विषयावरील नियतकालिके उपलब्ध करुन दिले जातात. वाचकांच्या सोयीसाठी सुसज्ज असे वाचनकक्ष उपलब्ध असून याचा उपयोग विद्यार्थीनींनी भरपूर प्रमाणात घेत असतात. विद्यार्थीनींना ग्रंथालयातील साहित्याची माहिती व्हावी या करिता ग्रंथालयाची ओळख हा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. ग्रंथालय आणि माहिती शास्त्राचे जनक डॉ.एस.आर.रंगनाथन यांची जयंती व पुण्यतिथी उत्साहात साजरी करण्यात आली. यावर्षी ग्रंथालयाद्वारे पुस्तक प्रदर्शनीचे आयोजन करण्यात आले. भारताचे माजी राष्ट्रपती 'मिसाईल मॅन' डॉ.ए.पी.जे.अब्दूल कलाम यांची जयंती, वाचन प्रेरणा दिवस म्हणून साजरी करण्यात आली. यामध्ये विद्यार्थीनी व प्राध्यापकांचा सक्रीय सहभाग होता. ग्रंथालयाद्वारे देवाण-घेवाण, रोजगार मार्गदर्शन, संदर्भ सेवा, इंटरनेट सेवा, झेरॉक्स सेवा विद्यार्थीनींना देण्यात आल्या. विद्यार्थीनींना वादविवाद स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा, निबंध स्पर्धा या सारख्या विविध स्पर्धासाठी वेळोवेळी मार्गदर्शन व पुस्तके उपलब्ध करुन देण्यात आले. या सर्व सेवा व कार्यक्रमांमध्ये महाविद्यालयातील शिक्षक ग्रंथालय कर्मचारी व शिक्षकेत्तर कर्मचारी यांचे विशेष योगदान लाभले.

प्रा.राम बाहेती
समन्वयक

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – स्पर्धा समिती अहवाल

सध्याच्या स्पर्धेच्या युगात पुढे जाण्याकरीता विद्यार्थीनींमध्ये असलेल्या सुप्त गुणांना वाव देण्याकरीता स्पर्धा समितीची स्थापना करण्यात आली. ह्या समितीने यावर्षी देखील विविध स्पर्धांचे आयोजन केले त्यामध्ये महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी उत्साहाने सहभाग घेतला. समितीने घेतलेल्या स्पर्धा पुढील प्रमाणे होत्या. पोस्टर, पेंटीग, रांगोळी, पुष्प सजावट, निबंध लेखन, स्वरचित कविता, उखानी, लेखन इत्यादीचे आयोजन करण्यात आले.

स्पर्धा समितीद्वारे या विविध स्पर्धांनमध्ये प्रथम, द्वितीय व तृतीय क्रमांक प्राप्त झालेल्या विद्यार्थीनींना प्रमाणपत्र देवून गौरविण्यात आले.

दि. १६/०१/२०१८ रोजी मा.जिल्हाधिकारी व जिल्हा निवडणूक अधिकारी, अकोला व श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय अकोला यांच्या संयुक्त विद्यमाने मतदान जनजागृती अभियाना अंतर्गत विविध स्पर्धा संपन्न झाल्या. बहुसंख्य विद्यार्थीनींनी या स्पर्धांमध्ये सहभाग घेतला. रांगोळी स्पर्धेमध्ये प्रथम कु. संध्या प्रजापती, द्वितीय कु. प्राची बानोरकर, तृतीय कु. मोहिनी फड यांनी प्राप्त केले. घोषवाक्य (पोस्टर) स्पर्धेमध्ये प्रथम क्रमांक कु. नेहा शुक्ला, द्वितीय कु.शिवानी गौड, तृतीय कु. पौर्णिमा इंगळे यांनी प्राप्त केले. निबंध स्पर्धेमध्ये प्रथम कु. कल्याणी निमकर, द्वितीय कु. संध्या प्रजापती, तृतीय कु. शिवाणी देशमुख व प्राची बानोरकर यांनी प्राप्त केले. वादविवाद स्पर्धेत प्रथम कु. कोमल ताले, द्वितीय कु. जया माजरे यांनी प्राप्त केले. तसेच एन.एस.एस. विभागातर्फे डॉ. उमेश पाटील, प्रा.सोनल कामे यांच्या मार्गदर्शनाखाली दि. १६/०१/२०१८ या दिवशी आळंदाग्राम येथे मतदान जनजागृती रैली काढण्यात आली होती. वरील स्पर्धा यशस्वी करण्याकरीता समिती समन्वयक डॉ.निभा उपाध्याय, सदस्य प्रा. किरण मुळे, डॉ.चारुशिला रुमाले, डॉ.विनोद खैरे व महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी सहकार्य केले. या स्पर्धांमध्ये परीक्षक म्हणून डॉ. अंजली राजवाडे, डॉ.अंबादास पांडे, प्रा.बी.एस. इंगळे, डॉ. राजेश नितनवरे, डॉ.संध्या कांबळे, सौ. सुषमा गोखले यांनी कार्य केले. ह्या संपूर्ण कार्यक्रमाच्या यशस्वीतेसाठी प्राचार्य डॉ.देवेंद्र व्यास यांचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच कु. प्रिती लुटे नायब तहसिलदार व पर्यवेक्षण अधिकारी यांचे सहकार्य लाभले.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय – राष्ट्रीय छात्र सेना (NCC) अहवाल

सत्र २०१७-१८ मध्ये राष्ट्रीय छात्र सेनेत महाविद्यालयातील ९४ विद्यार्थीनींचा सहभाग होता. महाविद्यालयातील एन.सी.सी. चे कैडेटस दरवर्षी रिपब्लिक डे कॅम्प (RDC) व थलसेना कॅम्प (TSC) येथे निवडल्या जातात. यावर्षी कु. भाग्यश्री दिलीप इंगळे हिला दिल्ली येथे आयोजित प्रजासत्ताक दिाच्या परेडमध्ये महाराष्ट्राची मुख्य गायीका पूरस्कार मिळाला.

तसेच CAT (RDC) कॅम्प अमरावती ते औरंगाबाद येथे सतत ३ महीने आयोजित कॅम्प मध्ये महाविद्यालयातील एन.सी.सी. ची विद्यार्थीनी डणज कोमल वानखेडे, गणज निकिता मालगन, CPL प्रिया वानखडे, विद्या तायडे, रेशमा मोरे, पल्लवी हिवराळे, चंचल इंगळे (RDC) रिपब्लिक डे कॅम्प मध्ये उत्कृष्ट कामगिरी केली.

विद्यार्थीनींच्या सूप्त गुणांचा विकास व्हावा या दृष्टीकोणातून एन.सी.सी. अंतर्गत दरवर्षी विविध कॅम्प राबविले जातात. यामध्ये एकून ५० विद्यार्थीनींनी कॅम्प मध्ये सहभाग घेतला. आंध्रप्रदेश येथील वारंगल येथे आयोजित ४१ व्या राष्ट्रीय एकात्मता शिबिरात (NIC) विद्यार्थीनींनी महाराष्ट्राचे प्रतिनिधित्व करीत लोकनृत्य सादर केले. तसेच कल्याणी इंगळेला, प्रतिक्षा चव्हाण व रिना तायडे या विद्यार्थीनींना एकल नृत्य स्पर्धेत रजत पदक मिळाले. याकरिता एन.सी.सी. ऑफिसर कर्नल सी.इलावर्सन यांनी त्यांचे अभिनंदन केले.

विद्यार्थीनींच्या या यशस्वी कामगिरी करिता महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांनी विद्यार्थीनींचे तसेच त्यांच्या

एन.सी.सी अधिकारी व समन्वयक लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेन्ढे यांचे अभिनंदन केले.

राष्ट्रीय छात्रसेने अंतर्गत विविध सामाजिक उपक्रम देखील राबविण्यात आले.

- आंतराष्ट्रीय योगा दिनी PDKV महाविद्यालयाच्या हॉल मध्ये संपन्न कार्यक्रमात ५० विद्यार्थीनींचा सहभाग घेतला.
- राष्ट्रीय छात्र सेना रासेयो व डॉ.हेगडेवार रक्तपेढी यांच्या संयुक्त विद्यमाने रक्तदान शिबीर घेण्यात आले.
- स्वच्छ भारत अभियाना अंतर्गत एन.सी.सी कॅडेटस्नी जिल्हा शासकीय रुग्णालय, अकोला येथे स्वच्छता मोहीम व जनजागरण रॅलीचे आयोजन केले. या करिता दंतविभागाचे प्रमुख डॉ.नैताम यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले.
- आंतरराष्ट्रीय महिला दिनाच्या निमित्ताने एन.सी.सी कैडेटस्नी सिव्हिल लाईन पोलिस स्टेशन अकोला येथे एक दिवसाकरिता पोलिस स्टेशनचा संपूर्ण प्रभार सांभाळला या करिता पोलिस निरिक्षक श्री. शेळके यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले.
- वृक्षारोपन दिनाच्या औचित्याने महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका यांच्या हस्ते वृक्षारोपन करण्यात आले. वृक्षाचे संगोपन करण्याकरिता दहा-दहा एन.सी.सी. कैडेटस्चा समूह करण्यात आला.
- एड्स जनजागृती व बेटी बचाओ, बेटी पढाओ अंतर्गत कलेक्टर मा.श्री. आस्तिककूमार पाण्डेय यांच्या मार्गदर्शनाखाली एन.सी.सी कैडेटस्नी सायकल रॅली काढून नागरिकांना संदेश दिला.
- स्वच्छता पंधरवाडा अंतर्गत एन.सी.सी कैडेटस् व रासेयोच्या सर्व विद्यार्थीनींनी महाविद्यालयाचा संपूर्ण परिसर स्वच्छ केला. याकरिता महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.देवेंद्र व्यास यांचे मार्गदर्शन लाभले.
- कैशलेस प्रणाली अंतर्गत स्टेट बँक ऑफ इंडिया अकोलाचे विपनन प्रबंधक श्री. शशिकांत फरकाडे यांनी विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले व एन.सी.सी कैडेटस्नी शहरातील मध्यवर्ती बसस्थानकावर प्रवासी व कर्मचाऱ्यांना कैशलेस पेमेंटची संपूर्ण माहिती दिली.
- मोर्णा नदी स्वच्छता अभियाना अंतर्गत सर्व एन.सी.सी च्या विद्यार्थीनींनी १० दिवस स्वयंम सेवा दिली. या अभियानाची दखल प्रधानमंत्री मा.नरेन्द्र मोदी यांनी घेतली व कौतूक देखील केले.
- रस्ता सूरक्षा दिवस अंतर्गत शहर वाहतूक शाखा अकोला येथील पोलिस निरिक्षक श्री. विलास पाटील यांचे उपयुक्त मार्गदर्शन मिळाले व कैडेटस्नी रॅली काढून नागरिकांना ट्रफिक नियमांचे पालन करण्याचे आव्हान केले.
- पल्स पोलिओ अभियाना अंतर्गत विविध पोलिओ बूथवर लहान मुलांना पोलिओ लस पाजून महाविद्यालयाच्या एन.सी.सी.च्या विद्यार्थीनींनी स्वयं सेवा दिली.
- एन.सी.सी. विद्यार्थीनींची स्वच्छ भारत या मध्ये माझे योगदान या विषयावर निबंध स्पर्धा घेण्यात आली. त्याकरिता पूरस्कार देखील देण्यात आले.
- महाविद्यालयाच्या स्नेह संम्मेलन सोहळ्यात राष्ट्रीय छात्र सेनेच्या कैडेटस्नी प्रमुख पाहूणे मा.श्री. सुभाषजी देसाई, उद्योग मंत्री, महाराष्ट्र राज्य यांना गार्ड ऑफ ऑनर व पायलेटींग करुन पाहूण्यांना मानवंदना दिली. त्याचबरोबर एन.सी.सी तर्फे नृत्य देखील सादर करण्यात आले.
- १५ ऑगस्ट २०१७ व २६ जानेवारी २०१८ रोजी ध्वजारोहण सोहळ्यात महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा.दिलीपराजजी गोयनका यांच्या समक्ष पायलेटींग करुन त्यांचे स्वागत करण्यात आले व राष्ट्रध्वजाला मानवंदना देण्यात आली.

एन.सी.सी.च्या कैडेटस्नी वर्षभरात केलेल्या विविध उपक्रमातील सहभाग व कामगिरी करीता महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका व प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांनी सर्व कैडेटस्चे तसेच त्यांच्या एन.सी.सी अधिकारी व समन्वयक लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेन्ढे यांचे अभिनंदन केले.

लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेन्ढे

एन.सी.सी अधिकारी व समन्वयक

क्रिडाक्षेत्रात उल्लेखनीय कामगिरी



नाव : **सौ. वंदना हेमंत पिंपळखरे**

अ) जागतिक स्तरावर जीतकुनीदो, मिक्स बॉक्सिंग या दोन्ही खेळामध्ये भारतीय महिला तांत्रिक अधिकारी, म्युझिकल चेअर या खेळामध्ये आंतरराष्ट्रीय स्तरावर महिला तांत्रिक अधिकारी, कॉमनवेल्थ गेम्स बॉक्सिंग खेळामध्ये भारतीय महिला तांत्रिक अधिकारी, थाई बॉक्सिंग या खेळामध्ये एशियन स्तरावर (दोनदा) भारतीय महिला तांत्रिक अधिकारी म्हणून काम पाहिले.

ब) जागतिक, आंतरराष्ट्रीय, एशियन (भारतीय महिला तांत्रिक अधिकारी) राष्ट्रीय, राज्य स्तरावरील मिक्स बॉक्सिंग, थाई बॉक्सिंग, जीतकुनीदो, म्युझिकल चेअर, बेल्ट रेसलिंग, नॉन चॉक (वेपन) या खेळांतील महिला तांत्रिक अधिकारी व चीफ ज्यूरी म्हणून कार्यरत आहे.

क) महाराष्ट्र राज्य स्तरावरील टेबल सॉकर या खेळाची उपसचिव.

ड) जिल्हास्तरावरील ज्युडो, बॉक्सिंग, महिला सदस्य.

ई) पुरस्कार :

१) महाराष्ट्र शासनाचा कला व क्रिडा क्षेत्रातील पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर पुरस्कार.

२) स्त्रीरत्न पुरस्कार. ३) राष्ट्रीय स्तरावरील (फेडरेशन) ब्रुसलीज एक्सलन्स पुरस्कार.

४) संत गाडगेबाबा सोशल सर्व्हिस क्रिडा पुरस्कार.

५) क्रिडाभारती जीवन गौरव क्रिडा पुरस्कार.

६) रोटरी ईलाबेन चौधरी पुरस्कार.

७) बॉक्सिंग, थाई बॉक्सिंग या खेळांमध्ये फेडरेशनचा व स्कूल गेम ऑफ इंडिया चे अनेकदा बेस्ट ज्यूरी, रेफ्री, जज पुरस्कार.

शैक्षणिक सत्र २०१७-२०१८ मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी



नाव : **प्रा.डॉ.धनश्री पांडे**

विषय : संगीत विभाग.

१) सं.गा.बा. अमरावती विद्यापीठ, अमरावती द्वारा आचार्य पदवीसाठी संगीत विषयाकरीता मार्गदर्शक म्हणून नियुक्ती.

२) 'वसंतसुधा' स्वरचित बंदिशसंग्रहास संगीत विषयाकरीता सं.गा.बा. अमरावती विद्यापीठाच्या बी.ए. - १ (सेमिस्टर पध्दत) व एम.ए - १ (सेमिस्टर पध्दत) अभ्यासक्रमाकरिता संदर्भग्रंथ म्हणून मान्यता प्राप्त झाली.

३) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदोर (म.प्र.) येथे झालेल्या आंतरराष्ट्रीय संगीत परिषदेत 'अनुभूती-२०१८' विषय - Scientific Impact of Music & Environment on Sustainable Development, 7 to 9 January 2018 यामध्ये 'वसंतसुधा' या स्वरचित बंदिश संग्रहातील पर्यावरण विषयावरील बंदिशीचे प्रस्तुतीकरण करण्यात आले.

शैक्षणिक सत्र २०१७-२०१८ मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी



नाव : **प्रा.डॉ.चारुशिला रुमाले**

पद : मराठी विभाग प्रमुख.

विषय : संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ अमरावती द्वारा मराठी विषयाच्या आचार्य पदवीकरिता मार्गदर्शक म्हणून नियुक्ती.



नाव : **प्रा. संध्या वि. कांबळे**

संशोधनाचा विषय : दत्ता भगत आणि प्रेमानंद गज्वी यांच्या नाटकांचा तुलनात्मक अभ्यास.

मार्गदर्शक : प्राचार्य डॉ. श्रीकांत तिडके, मुर्तिजापूर.



Name : **Dr. Anjali Rajwade**
Professor & HOD Home Science

Elected Member - Board of Studies.
Faculty of Interdisciplinary Studies (Home Science),
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.



Name : **Dr. Rajesh S. Nitnaware**
Department of English.

Topic :- "A Cross - Cultural Paradigm of Human Relationship in the Novels of Salman Rushdie : A Study."
Supervisor : Dr. Ulka S. Wadekar, K.L. College, Amravati.



Name : **Dr. U. P. Patil**

Title of Topic :- J.M. Coetzee : A Thematic study of his select Novels.
Guide : Dr. V.J. Reddy.
Date of Award 23/02/2017

शैक्षणिक सत्र २०१७-२०१८ मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी



नाव : **प्रा.डॉ. रविन्द्र मुन्द्रे**
सहयोगी प्राध्यापक व इतिहास विभाग प्रमुख

१) सिनेट सदस्य म्हणून संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठात निवडून आले.

२) उपाध्यक्ष, विदर्भ इतिहास परिषदेवर एकमताने निवड झाली.

शैक्षणिक सत्र २०१६-२०१७ मधील विद्यार्थीनींची उल्लेखनीय कामगिरी

१) कु. अपूर्वा गणेश चऱ्हाटे - बी. कॉम. भाग ३ मध्ये ४ थी मेरीट.

२) कु. दिपाली बापुराव चिरंगे - बी. कॉम. भाग ३ मध्ये ८ वी मेरीट.

३) कु. प्राजक्ता विलासराव काटीकर - एम. ए. गृहअर्थशास्त्र भाग - २ मध्ये ३ री मेरीट.

४) कु. आर्शी डोकडीया - बी.ए. इंग्रजी भाग ३ मध्ये गोल्ड मेडल.

५) कु. पुजा डहाके - बी. ए. मराठी भाग ३ मध्ये गोल्ड मेडल

Our Laurels.....



Shivani Thakur • Dipali Chirange • Apurva Charhate • Bhagyashree D. Ingle
Isha P. Kothari • Riya Taram • Jaya C. Manjare • Aarshi Dokdiya • Prajakta Katikar

प्रसार माध्यमांच्या नजरेतून श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय....





Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

NAAC Reaccredited Grade - B with CGPA - 2.71 (Certified Minority Institution)

Near Nehru Park, Murtizapur Road, Akola - 444 001(M.S.)

Phone & Fax : 0724-2450905 Website : www.rdgeducation.org

E-mail : rdgcollege@rdgeducation.org, info@rdgeducation.org

Design By : B.Suraj : 9923136443

सुरभि

महिला विशेषांक

२०१८-२०१९



Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

NAAC Reaccredited Grade - B^{+} with CGPA - 2.71

(Certified Minority Institution)

भारतीय सेवा सदन द्वारा संचालित

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय अकोला.

-: श्रद्धास्थान :-

आदरणीय माताजी स्व.श्रीमती राधादेवीजी गोयनका

संस्थापिका अध्यक्ष – भारतीय सेवा सदन, अकोला

संरक्षक
श्रीमान दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष, भारतीय सेवा सदन, अकोला.

मार्गदर्शक
डॉ.देवेन्द्र व्यास
प्राचार्य

मुख्य संपादक
डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक मंडळ
▸ प्रा.डॉ.चारुशिला रुमाले ▸ डॉ.शालिनी बंग ▸ प्रा.प्रमिला बोरकर

संपादकीय विद्यार्थीनी
मराठी विभाग : कु. पल्लवी वाकोडे, कु.समिक्षा चन्हाटे, कु.धनश्री लुंगे, कु. राधिका सावके, कु. सुवार्ता खरात.
हिंदी विभाग : कु. रिना यादव, कु. महिमा ठाकूर, कु.संध्या प्रजापति, कु. अनामिका पाठक, कु. दिव्या चव्हाण.
संस्कृत विभाग : कु. दिक्षा शामस्कर, कु. रितु वाघमारे, कु. ममता अग्रवाल, कु. प्राजक्ता देशपांडे, कु.जान्हवी ठाकरे, कु. सुकेशनि सदांशिव, कु. चैताली धनागरे, कु.चित्रा कोल्हे, कु. वैष्णवी नरिंगे, कु. कांचन तायडे
इंग्रजी विभाग : कु. कंचन यादव, कु. रोहिनी जाधव, कु. रानी पाली, कु. स्मिता गोरे, कु. ईशा प्रधान, कु. नम्रता लोध

प्रकाशक
प्राचार्य, श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.
रुपरेखा : सुरज एन.भांगे, अकोला. मो. ९९२३१३६४४३

अंतरंग

- मराठी विभाग
- हिंदी विभाग
- इंग्रजी विभाग
- संस्कृत विभाग
- विविध अहवाल

।। हमारे श्रध्दास्थान ।।

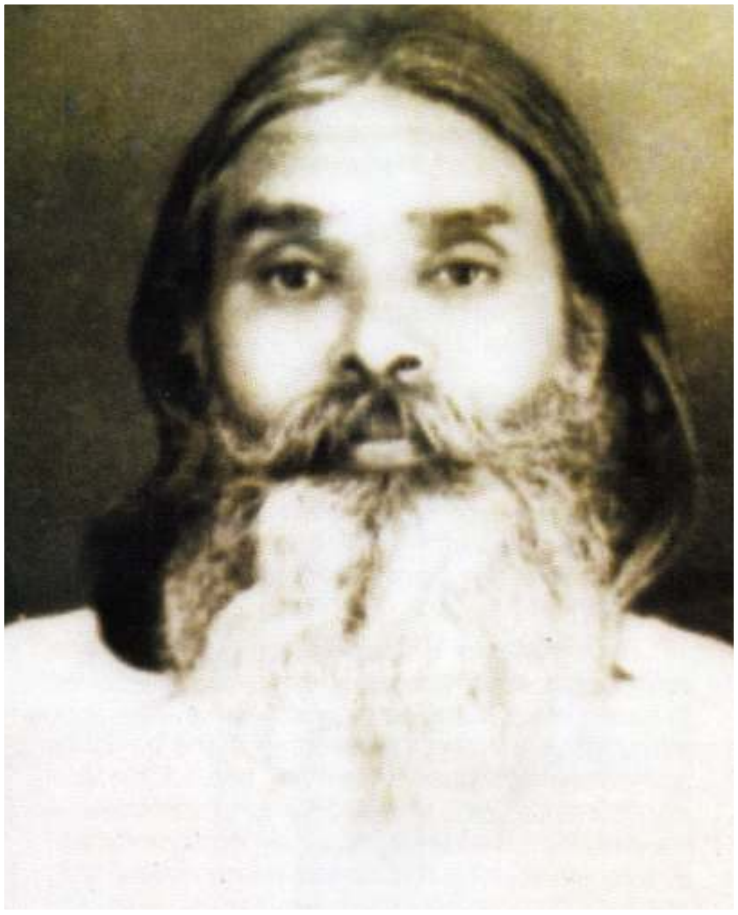

भारतीय सेवा सदन संस्था के आश्रयदाता

सेठ स्व.श्रीमान किसनलालजी गोयनका

।। प्रेरणा पाथेय ।।

श्रध्देय माताजी **स्व.राधादेवीजी गोयनका** के स्वर्गारोहण के पश्चात यद्यपी उनकी भौतिक उपस्थिती आज हमारे बीच नही है, किंतु उनके प्रेरणादायी विचारों का आलोक हमारे विकास पथ को आलोकित करता रहा और सदैव करता रहेगा ।

श्रध्देय माताजी द्वारा "**सुरभि**" २००९-१० में उनके द्वारा लिखे गए सारगर्भित अंतिम आशिर्वचन का अंश प्रस्तुत है ।

"मै चाहती हूँ आप सब खूब पढ़े । केवल पढ़े लिखे ही नहीं बल्कि स्वावलंबी व ज्ञानी और देश, समाज व संस्था का नाम उँचा करें ।"

आप सबको और कितने संदेश मै लिख पाऊंगी मै नही जानती हूँ । जीवन का संध्याकाल है । यात्रा अस्ताचंल की ओर है अतः मै अपने जीवन के अध्ययन तथा अनुभवों का निचोड आप तक पहुंचाना चाहती हूँ । हमारे पास जो भी है, विद्या, शक्ति तथा धन सबका उपयोग परहित में होना चाहिये । यही धर्म है । जो आप सब स्वयं के लिए होना पसंद नही करते वह दुसरों के साथ कभी न करें ।

जीवन सुख दुःख का मिश्रण है । दोनो में तटस्थ रहना चाहिए । कहना आसान है, करना कठिन है लेकिन असाध्य नहीं है । साधना जरुरी है । स्कूल, कॉलेजों की शिक्षा के अलावा संतो की अनूभूती और भी जरुरी है । इसके लिए मै आप सबसे गीता और रामायण नित्य पढ़ने का तथा उन्हे जीवन में उतारने का अनुरोध करती हूँ । अतः सुबह-शाम नियम से प्रतिदिन कम से कम बीस मिनट ध्यान करना चाहिए । यह मेरे अनुभव की बात है । केवल उपदेश नही है । भारतीय सेवा सदन व संस्थाओं में मेरे प्राण बसते है । इन्हे आप सबका सदैव सहयोग और स्नेह मिलता रहे ।

मैं आप सबको अनेकों शुभाशीर्वाद देती हूँ ।

सबका कल्याण एवम् मंगल हो ।

Source of Inspiration



The Founder President of Bharatiya Seva Sadan, Akola
Great Freedom Fighter

Late. Mataji
Smt. Radhadeviji Kisanlalji Goenka

VISION

Empowerment of Women Through Economic Independence for Betterment of Society

MISSION

"To impart holistic Education to the girl students in order to transform them into Empowered, Capable of Self-earning and Efficient Individuals, Family Members and Citizens in their Future Lives"

भारतीय सेवा सदन, अकोला के सम्माननीय पदाधिकारी



श्री. दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



आ.श्री. गोपीकिसनजी बाजोरिया
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



श्री. रविंद्रकुमारजी गोयनका
उपाध्यक्ष



श्री. आलोककुमारजी गोयनका
सचिव



श्री. प्रफुल्लजी संघवी
सह सचिव



श्री. दुर्गाप्रसादजी अग्रवाल
कोषाध्यक्ष



श्रीमती. मंजुदेवीजी गोयनका
सदस्या



श्री. संजयकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री. विनीतकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री. तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



श्री. हरमिंदरसिंह छटवाल
सदस्य



श्री.ॲड. रमेशचंद्रजी श्रावगी
सदस्य



श्री.ॲड. बी. के. गांधी
सदस्य



श्री. दिपककुमारजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. सुनीलजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. रणजीतबाबु गुप्ता
सदस्य



श्री. शिवप्रकाशजी रुहाटिया
सदस्य



श्री. भरतराजजी गोयनका
सदस्य



श्रीमती इंदुबालाजी चौधरी
सदस्य



श्री. राजकुमारजी रुंगटा
सदस्य



श्री. घनश्यामजी गोयनका
सदस्य



श्री. पवनजी माहेश्वरी
सदस्य



श्री. बाबासाहेब धाबेकर
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



श्री. के. के. जोशी
सदस्य

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय,अकोला

शाळा समिती (कनिष्ठ महाविद्यालय)



श्री.दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



श्री.रविंद्रकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.आलोककुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य/पदसिध्द सचिव

President's Message



Dear Students,

It is my great pleasure to welcome you to RDG College for Women. The college is unique within the landscape of Vidarbha region of Maharashtra State because it is exclusively the first women college providing education from PG to PG under one campus. What you see in these pages provides only the snapshot and trailer of incredible and excellent work carried out at this college. The college is privileged to have well qualified & experienced staff & administration dedicated to academic excellence, diversity, integrity, community services, social engagement, student success & the environment that foster RDG Culture, critical thinking & self-determination and with the vision of

"EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH ECONOMIC INDEPENDENCE FOR BETTERMENT OF SOCIETY "

We would be delighted to host you for a campus visit to see for yourself the good work of RDG College community, where students thrive & progress towards the realization of their full potential in every field. We provide quality education to the students and take their every possible care.

I am pleased & proud to have the opportunity to lead this institution with earnest cooperation of my colleagues, Principal and all the teaching and non-teaching staff.

Education enables one to differentiate between the good & the bad. We at Bharatiya Seva Sadan believe that "If you make a mind educated automatically all the evils of the society will be taken care of."

Our Moto is "Quality Education at Affordable Cost."

Our endeavor is to create a world class educational facility where lives are shaped as per today's needs, where you learn to meet the challenges of tomorrow.

Being a social organization it is our mission to not only fulfill the educational needs of the population but also contribute towards its upliftment from all social entrapments.

With best wishes

DN Goenka

Dilipraj Goenka
President
Bharatiya Seva Sadan, Akola.

प्राचार्य का मनोगत



सुरभि वर्ष २०१८-१९ के महिला विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है अत्यंत आनंद का विषय है ।

हमारी प्रेरणा पुंज स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सफल समाजसेविका, साहित्यकार, श्रध्देय माताजी की प्रेरणा का अभिरंग 'सुरभि' जिसके माध्यम से हमारी छात्राओं मे व्याप्त सुप्त गुणो को मुखरित होने का अवसर प्राप्त होता है ।

साहित्य समाज का मांगलिक बोध है । भारतीय समाज और संस्कृति की विशेषताए हमें साहित्य में दिखाई देती है ।

महाविद्यालयीन जीवन यह विद्यार्थी जीवन का स्वर्णकाल कहा जाता है । इसी समय विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ जीवन के सर्वांगिण विकास का ध्येय लिये आगे बढ़ता है । अतः महाविद्यालयकी छात्राओं को निरंतर आगे बढ़ाने की दृष्टि से उनके पंखो को नई उर्जा देने के लिए एवं उनके सपनों को साकार करने के लिए महाविद्यालय सदैव उनके साथ है ।

आज इस बदलते हुए परिवेश में हमें एक ऐसी ही युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारित हो, घर, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो, आर्थिक रुप से सक्षम होकर राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान करने के लिए दृढ संकल्प हो।

महिला सक्षमीकरण के इस दौर में महिलाओं की अहं भूमिका को देखते हुए हमारे महाविद्यालय में छात्राओं को साहित्य अभिमुख बनाने के लिए कहानी, कविता, नाटक, इत्यादि लेखन की प्रेरणा दी जाती है ।

आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग कर उद्योग क्षमता विकसीत करना, पर्यावरण सुरक्षा, मतदान जनजागृति, रक्तदान, अवयवदान का महत्व, नागरिक संरक्षण, स्वयंम रक्षण कार्यशाला, कानुन की जानकारी 'स्वस्थ राष्ट्र सशक्त राष्ट्र' को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सम्बंधि विविध कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है और प्रतीवर्ष महाविद्यालय से सभी क्षेत्र में प्रतिभावान छात्राओं में से स्टूडंट ऑफ द इयर, आर.डि.जी. ऑयडॉल का चयन किया जाता है एवं खेल जगत में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है । जिसकी सम्पूर्ण छवि 'सुरभि' में विद्यमान है ।

यह 'सुरभि' हमारे महाविद्यालय के अंतरंग की अभिव्यक्ति है ।

स्वर्णिम युग के सपने संजोये हमारी छात्राये निरंतर आगे बढ़े इसी विश्वास के साथ.....

डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य

संपादकीय



'सुरभि' महिला विशेषांक आपके हाथ सौपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है ।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, हर युग में ज्ञान-विज्ञान के सत्य को साहित्य ने उजागर किया है । हृदय और बुध्दि दोनो में समन्वय साधने की कला हमें साहित्य देता है ऐसे में आज की युवा पिढ़ी को साहित्य से जोडना आवश्यक है क्योकि वे ही महान देश का भविष्य है अतः इस बार हम महिला विशेषांक से जुडे है । छात्राओं को इसकी सूचना मिलते ही उनके आनंद का कोई ठिकाना न रहा । मन का विषय जो मिल गया था । आज दुनिया के हर क्षेत्र में महिलाओं का परचम लहरा रहा है । आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक हर क्षेत्र में महिलाओं की अहं भूमिका दिखाई दे रही है । ऐसे में सफल महिलाओं के व्यक्तित्व व कृतित्व से प्रभावित होकर हमारी छात्राओ ने लेख तयार किया उससे उनमें व्याप्त सुप्त गुणों को मुखरित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है तथा उनमें सामाजिक, राष्ट्रीय कर्तव्यदक्षता का बोध भी जागृत हो रहा है । जो वर्तमान समय की मांग है । हमारे छात्राओं ने ऐसी सफल महिलाओं के जीवन के कुछ अंशो को शब्दबध्द करने का लघुत्तम प्रयास किया है । इस अंक में जीवन के सुख-दुख, रिश्ते-नाते, प्रेम, त्याग, समर्पण, राष्ट्रभक्ति के स्वर भी सुनाई देते है । हमारी संस्कृति में नारी को विशेष स्थान दिया गया है । हमारी संस्कृति में जो कुछ भी सुंदर है, शुभ है, कल्याणकारी है, मंगलकारी है, उसकी कल्पना नारी रुप में की गई है । ऐसे में मुझे प्रसादजी की ये पंक्तियाँ याद आती है -

"नारी ! तुम केवल श्रध्दा हो
विश्वास-रजत नग-पगतल में
पीयूष-श्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में....."

'सुरभि' में जहाँ एक ओर सप्तरंगी सुनहरी छटा है वहि दूसरी ओर अभ्यास पूरक कार्यो के अहवालो में महाविद्यालय की 'सुरभि' रच बस गयी है ।

विगत वर्ष हमने कैसे नियोजनबध्द कार्य किया है यह जानना हो तो पढ़िये हमारे विविध समितियों के अहवाल और जान लिजिए हमारी छात्राओ की निष्ठा और प्राध्यापको की कर्तव्य निष्ठा । राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक सशक्त पीढ़ी को तराशने में कोई कसर नहीं छोडी है । यह प्रेरणा हमें श्रध्देय माताजी के आशिष, वचनो से मिली है ।

माताजी के सपनो को साकार करने व छात्राओं के सर्वांगिण विकास के लिए अनमोल मार्गदर्शन हमारे संस्था के अध्यक्ष महोदय मा.दिलीपराजजी गोयनका सदैव करते है ।

इसके साथ ही समय-समय पर भा.से.सदन कार्यकारिणी सदस्यो के अनमोल मार्गदर्शन भी हमें मिलता रहता है । जिससे उनके बताये मार्गपर मा.प्राचार्य डॉ.देवेंद्रजी व्यास के साथ-साथ हम सभी एक जुट होकर कार्य करते है । जिससे सशक्त भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके । मा.प्राचार्य महोदय के प्रति श्रध्दा व्यक्त करते हुए, संपादक मंडल के सहयोगी प्राध्यापक जिन्होने मेरा बखुबी साथ निभाया अनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । मै उन सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण जिन्होने मुझे सहयोग दिया उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ । प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष सभी सहयोगी के प्रति कृतज्ञ हूँ एवं छात्राओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होने अपने लेखो से इस 'सुरभि' को सँवारा है । जीवन के विकासात्मक परिदृश्य को समावेशित 'सुरभि' को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए प्रकाशक सुरज एन. भांगे के अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देती हूँ।

सतरंगिनी भाव लहरी 'सुरभि' को सौप कर प्रसन्न हूँ, अगर कोई कमी रह गयी है तो उदार पाठक उसे सह लेंगे इस विश्वास के साथ.....

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक

महाविद्यालय मे हुए विविध उपक्रमों के क्षणचित्र....











संजय धोत्रे
SANJAY DHOTRE



सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी, संचार एवं
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार
Minister of State
Electronics & Information Technology,
Communiataions and
Human Resource Development
Government of India

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाच्या वार्षिकांक 'सुरभि' यंदा महिला विशेषांक स्वरूपात प्रकाशित होत आहे. हे ऐकून मला आनंद वाटत आहे. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पीत वृत्तीने पूर्ण करता. या अंकामध्ये सुद्धा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौद्धिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचाराला विकासाचे पंख कसे फुटतील हे बघणे व त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अंकात आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या कला गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत सामर्थपणे विकसित कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकिक वाढवाल अशी खात्री आहे.त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास शुभेच्छा देतो.

दिनांक-28.06.2019

(संजय धोत्रे)

Digital India
Power To Empower

कार्यालय : इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, 6, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली–110003, दूरभाष : 011.24368757.58 फैक्स : 011.24360958
Office : Electronics Niketan , 6, C.G.O. Complex, New Delhi-110003, Tel. : 011-24368757-58, Fax : 011-24360958
Website : www.meity.gov.in

राज्यमंत्री
गृह (शहरे)
विधि व न्याय विभाग व संसदीय कार्य
माजी सैनिकांचे कल्याण
कौशल्य विकास आणि उद्योजकता
महाराष्ट्र राज्य
मंत्रालय, मुंबई ४०० ०३२
www.maharashtra.gov.in



दिनांक :

Message

I am very happy to learn that Radhadevi Goenka College for Women, Akola annually release college magazine **"Surbhi"**. The college has rendered great service to the girl students providing excellent education with great zeal and dedication.

The college after its 54 years of foundation has achieved reputation as one of the best educational Institution in the region. Hundred of girl students have passed from this college in flying colours and have settled down as successful women.

On the joyous occasion of the release of annual college magazine **"Surbhi"**, I extend my hearty congratulations and best wishes to the Management, Principal, Teaching & Non-teaching Staff and Students of the college and wish them good luck in their future endeavors.

Best wishes for **"Surbhi"**.

(डॉ रणजीत पाटील)

-: जनसंपर्क कार्यालय :-
गोलीकरा कॉम्प्लेट समोर, अकोला फोन [illegible] फॅक्स [illegible]
Email:- ministerofficeakl@gmail.com



गोपीकिशन राधाकिसन बाजोरीया
(बी.एससी.,एल.एल.बी)
विधान परिषद सदस्य, महाराष्ट्र राज्य
विद्यापीठ कार्यकारी परिषद सदस्य : डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषी विद्यापीठ, अकोला ॥ संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाच्या वार्षिकांक 'सुरभि' यंदा महिला विशेषांक स्वरुपात प्रकाशित होत आहे. हे ऐकून मला अत्यंत आनंद वाटत आहे. श्रध्देय माताजी स्व. राधादेवीजी गोयनका यांनी सुरु केलेल्या या महाविद्यालयाची होणारी उत्तरोत्तर प्रगती पाहून मला अत्यंत अभिमान वाटतो. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पीत वृत्तीने पूर्ण करता या अंकामध्ये सुध्दा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौध्दिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचारांना विकासाचे पंख कसे फुटतील यावर लक्ष केंद्रीत करुन त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अंकात आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसीत कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकीक वाढवाल अशी खात्री आहे. त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास अनेक शुभेच्छा देतो.

दिनांक– २९/०६/२०१९

(गोपीकिशन बाजोरीया)

कार्यालय : बाजोरीया चेम्बर्स, गांधी रोड, अकोला. फोन : ०७२४-२४३०७५७ • फॅक्स : २४२११००-२४३०७५७ • मुंबई : ०२२-२२८७४५४५
E-mail : amdarbajoria@gmail.com

शुभेच्छा संदेश

महाराष्ट्र विधानसभा

गोवर्धन शर्मा
विधानसभा सदस्य
अकोला पश्चिम विधानसभा

निवास : आळशी प्लॉट, गोरक्षण रोड, अकोला फोन नं.: (0724) 2437058 मो.: 9403113504



MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola is going to publish annual college magazine "Surbhi" having contents of which are contributed by the students of your college. I am sure that, by this activity, the skills and hidden potential of your students will be exhibited and a concise picture of the activities and achievement of your college will be projected.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

(Govardhan Sharma)

महाराष्ट्र विधानसभा

विधानसभा
महाराष्ट्र

रणधीर सावरकर
विधानसभा सदस्य
अकोला (पूर्व)



MESSAGE

I am delighted to know that your well known education institution run by the Bhartiya Seva Sadan used to bring out hidden talents of the students every year, through its magazine "Surabhi".

First of all my heartiest Congratulations and Best Wishes to the students for their success in the recently held exams. for their brightest future.

The hard work and the dedication, honesty and integrity, confidence and self determination with which your institution has achieved the desired results since last so many decades, will be able to achieve success in all the phases of its life only by retaining these qualities.

I wish that all of you get lots of fame and achieve a greater distinction than what you have achieved today. and I hope that you all will make Akola and our country proud with your achievements in future too.

रणधीर सावरकर
विधानसभा सदस्य
अकोला (पूर्व)

पत्ता : राऊतवाडी, अकोला - ४४४ ००५ ⋆ दूरध्वनी : (०७२४) २४५६६०० (ऑ.), २४५०१८९ (नि.)
E-mail akolaemla@gmail.com

DR. MURLIDHAR CHANDEKAR
M.COM., M.Phil., Ph.D
VICE-CHANCELLOR

NAAC Accredited at the 'A' level

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI - 444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

SGBAU/P-100/ 56 /2019

Date:- / /20

Date : 31 MAY 2019

MESSAGE

I am extremely happy to know that Smt.Radhadevi Goenka College For Women, Akola is publishing its college magazine ***"Surbhi"*** this year with the dedicated efforts of the faculty as well as the students. In addition to the numerous achievements of the college, this is yet another milestone in their curricular and co-curricular activities. I congratulate whole-heartedly the editorial team for their determined efforts in bringing out this magazine.

The college magazine has been a forum which could aptly be used for recording events, fond memories and creative writing. I am sure that this magazine will be informative and resourceful. On this occasion, I convey my good wishes to the principal, students, faculty and staff of the college in their endeavours. I hope the magazine will bring creative talents of the students of the college.

(Dr.Murlidhar Chandekar)

Dr.Devendra Vyas,
Principal,
Smt.Radhadevi Goenka College for Women,
Akola.

Phone : Office - 0721 - 2662373, **Resi.** 0721 - 2662108, 2662093, **Fax No.** 0721 - 2662135, **Gram :** sgbamuni
E-mail : vc@sgbau.ac.in **Website :** www.sgbau.ac.in

DR. RAJESH S. JAIPURKAR
M.Sc. (Tech.), Ph.D.
PRO-VICE- CHANCELLOR

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI-444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

Accredited by NAAC at level 'A'

No..SGBAU/PVC/ 124/2019
Date : 17/6/19

Message

It gives me immense pleasure to know of **'SURABHI'**, a college magazine being published by **Radhadevi Goyanka College for Women, Akola**, this year. The title amply resonates philosophy of **'SURABHI'**, which means fragrance – an integral and holistic vision of realities of human life. Each and every student who has contributed creatively to this magazine has showed such seeds of creativity and academic acumen which, in the years to come, shall blossom wonderfully in their career – path.

The editorial team is worthy of appreciation and applause for the tedious, yet entertaining and self-educating task of inviting, selecting and editing the varied contribution revealing myriad thoughts, emotions and dreams of students and faculty into the coveted pages of this magazine. I feel privileged to congratulate the editorial team for bringing out this magazine in such an attractive form. Kudos to the Principal and the editorial team and all behind the curtain, who persevered for showing this magazine the golden Light of the Day.

My heartfelt good-wishes....

Dr. Rajesh Jaipurkar,

Pro-Vice-Chancellor

Phone : Office - 0721-2551961 Resi. - 0721-2672702 Fax No. 0721-2662135 Gram : SGBAMUNI
Website : www.sgbau.ac.in E-mail : provc@sgbau.ac.in

आजची स्त्री

'ती चंद्राची चांदणी,
जसा हिरा तो कोंदणी,
तिचा उजेड हा अंगणी,
तशी चमके ती गगणी'

'आजची स्त्री' या विषयावर काही लिहायचे अथवा बोलायचे झाले तर द्विधा मनस्थितीच. पुरुषांच्या बरोबरीने पुढे जाणारी की समाजात घाबरुन वावरतांना अंधारात जाणारी. ह्यापैकी नेमके कोणाचे उदाहरण द्यायचे याचा विचारच पडतो. आज समाजाला बहुतांश समस्यांची किड लागली आहे. त्यातील निम्याहून अधिक प्रश्न तर स्त्रीयां संबंधीतच आहे. स्त्रीभ्रृण हत्या, हुंडा बळी, पुरुषप्रधान संस्कृतीमध्ये महिलावर्गाचे दुय्यम स्थान, स्त्रीशिक्षणा विषयी संकुचित मानसिकता, स्त्रीयांच्या विकासाविषयीचा मागसलेपणा इत्यादी असे बरेच प्रश्न दैनंदिन जीवनात म्हणा की वाचनात, व्याख्यानामध्ये म्हणा कानावर पडतातच. या ज्वलंत प्रश्नांची सर्वांना जाण आहे, तरीपण समाजात गुन्हे घडतांना आपल्याला दिसतात, व स्त्रीभ्रुण हत्येसारख महापाप होत. हुंड्यासारख्या अनिष्ट प्रथेला मान समजला जाऊ न स्त्रीजातीचा अपमान होतो. तिची सक्षमता पुरुषप्रधान संस्कृतीच्या भाराखाली दडपली जाते. ती अबला आहे म्हणून तिच्यातल्या कार्यक्षमतेला डावलल्या जाते. अगदी लहानसहान गोष्टींपासून स्त्री-पुरुष भेदाभेद दिसून पडतो. 'तू पोरीची जात' हे एकच उत्तर तिच्या प्रश्नांना मिळत.

का ? तर ती स्त्री आहे. स्त्री म्हणून जन्म घेतल्याची चूक ती समजु लागते. कधीपर्यंत जपणार आपण ही मागास मानसिकता ? कधीपर्यंत रुढी-परंपरांच्या नावावरचे जीवघेणे खेळ खेळणार ? ती सक्षम आहे सगळ काही करण्यास, मग तीला अबला केव्हापर्यंत समजणार ?

अगदी जन्मापासून संघर्षाचा जिचा प्रवास असते. घरातीलच नव्हे तर समाजातील जगण्याचा जी कणा असते आज तीच स्त्री काही ठिकाणी स्वतःच्याच अस्तित्वासाठी झगडतांना दिसते. नेहमीच थोडीथोडकी भाषणे देऊ न, व्याख्याने देऊन, लेख लिहून, घोषणा देवून आपण मात्र मोकळे होतो. पण तिला सन्मानाने जगता याव यासाठी खरंच काही करतो ? आज हा प्रश्न प्रत्येकाने स्वतःस विचारणे गरजेचे आहे. मानसिकता बदलणे गरजेचे आहे.

ती या शब्दाबरोबर जर या प्रेम, वात्सल्य, स्नेह, ममता या भावना समोर येतात. त्याचबरोबर शक्तीसंपन्न स्त्रीही समोर उभी राहते. म्हणूनच कतृत्वाचा सन्मान झालाच पाहिजे. तिच्या पाठीवर कौतुकाची थाप दिल्या गेलीच पाहिजे. कारण आज या आधुनिक विश्वात तीने बरीच मजल मारली आहे. म्हणून प्रत्येक ठिकाणी तिचा आदर झालाच पाहीजे.

''घे भरारी तू उडण्यासाठी
घे भरारी तू जगण्यासाठी
घे भरारी परत सावरण्यासाठी
घे भरारी स्वच्छंद मना जपण्यासाठी
घे भरारी उंच गगणास भिडण्यासाठी
घे भरारी तुझ्या स्वप्नांसाठी
घे भरारी आज तू फक्त तुझ्यासाठी
घे भरारी''

कु. पल्लवी वाकोडे
बी.ए. तृतीय वर्ष

'स्त्री चे हृदय हे जगातील सर्व तत्वज्ञानाचे माहेरघर आहे' – श्रीमती रुझवेल्ट

भारतातील मुलींचे घटते प्रमाण कारणे व उपाय

'भारत' हा कृषीप्रधान आणि पुरुषप्रधान असलेला देश भारत हा अनेक नानाविविध रहस्यांनी, इतिहासाच्या खुनांनी, निसर्गाच्या सौंदर्याने आणि वीर हुताम्त्यांच्या पराक्रमांनी धन्य झालेला असा हा माझा महान देश. भारत देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यात अनेक वीर हुताम्यांचा सिंहाचा वाटा आहे, आणि यामध्ये उल्लेखनीय बाब म्हणजे, ती ही की स्त्रीयांचा सहभाग.

राजमाता जिजाऊ , राणी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होळकर, सावित्रीबाई फुले, रमाई आंबेडकर, रमाबाई रानडे अशा अनेक धाडसी स्त्रीयांमुळे आपण आज समृध्द जीवन जगत आहो आणि आजच्या या आधुनिक युगातही मा. इंदिरा गांधी, मा. प्रतिभाताई पाटील, लता मंगेशकर, पी.व्ही.सिंधु अशा अनेक स्त्रीयांच्या धाडसी निर्णयामुळे त्यांच्या गुणांमुळे 'भारत' एक महाशक्ती म्हणून जगासमोर येत आहे.

परंतु अत्यंत खेदाची बाब म्हणजे ज्या स्त्री जातीमुळे हा देश समृध्द झाला. तीच स्त्री जात, आज भ्रृणहत्येला बळी पडत आहे आणि भ्रृणहत्याच नाही, तर हुंडाबळी, सासुरवास, कौटूंबिक छळ इत्यादीमुळे स्त्री जातीवर अतोनात अन्याय होत आहे. आज भ्रृणहत्येमुळै मुलींचे प्रमाण इतके खालावले की अनेक जातीमध्ये लग्नासाठी मुलीच नाहीत आणि त्यामुळे देह-विक्री सारखे घाणेरडे प्रकार घडत आहेत.

'भारत' सरकारने स्त्री भ्रृणहत्येविरुध्द कायदे बनविले त्यावर अंमलबजावणीही होत आहे, परंतु आजही अनेक भागामध्ये हा गैरप्रकार सुरुच आहे. याचचं एक ताजं उदाहरण द्यायच झालचं तर ते हे की, महाराष्ट्राच्या सांगली जिल्ह्यातील सिवर या गावी मार्च २०१७ ला १९ भ्रृण गाडलेल्या अवस्थेत सापडले. यात काही शंकाच नाही की ते मुलींचे भ्रृण होते.

महाराष्ट्रासारख्या समृध्दीने नटलेल्या वीर मातांचा आशीर्वाद लाभलेल्या, अभंगाच्या माध्यमातून अनेक कृप्रथांचा नायनाट करणाऱ्या स्त्रीयांचे मोलाचे योगदान असणाऱ्या राज्यात असा प्रकार घडावा, ही खरच लाजीरवाणी आणि एक पाऊल पुढे म्हणणाऱ्या आणि फक्त जातीचे राजकारण करणाऱ्या पुढाऱ्यांच्या नामर्दगीच उदाहरण आहे.

जरी सरकारने कायदा बनवलेला आहे, तरीसुध्दा याची अंमलबजावणी होत नाही, आणि यामध्ये शिक्षीत लोकांचा सुध्दा सहभाग आहे. कारण जेवढा जास्त शिकलेला मुलगा तेवढांच जास्त हुंडा आणि शिक्षीत लोकं असे करत असतील तर काय फायदा त्यांच्या अशा शिक्षणाचा ? सरकारला 'बेटी बचाव, बेटी पढ़ाओ' आणि 'Save Girl Child' या सारख्या योजना सुरु कराव्या लागतात हीच आपण करत असलेल्या गुन्ह्यांची पावती आहे. कारण गुन्हा करणारा तर गुन्हेगार असतोच परंतु सर्व माहित असूनसुध्दा शांत बसणारा त्यापेक्षा मोठा गुन्हेगार असतो. बसं शेवटी एवढचं सांगेल की जागे व्हा आणि कृतीतून दाखवून द्या की, Save Girl, Go Girl.

कु. समिक्षा अशोक चव्हाटे
बी.कॉम. (इंग्लिश), तृतीय वर्ष

जगाला शांतीची कला शिकविणे हे स्त्रियांचे दैवी कार्य आहे – हंट

महिला दिनाचा इतिहास (मराठी)

मार्च महिना उजाडताच वेध लागतात जागतिक महिला दिनाचे, ८ मार्च हा 'जागतिक महिला दिन' यामागे स्त्रियांची जोरदार चळवळ आहे ती जाणून घेऊया.

स्त्री-पुरुष विषमता फक्त भारतातच नव्हे, तर संपुर्ण जगात अनेक वेळा जाणवते. त्यांच सर्वात मोठं उदाहरण म्हणजे स्त्रियांना नाकारण्याचा मतदानाचा हक्क. विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीपासूनच अमेरिका - युरोपसह जगभरातल्या स्त्रियांना मतदानाचा हक्क मिळाला नव्हता. त्या विरोधात स्त्रिया आपल्या परीने संघर्ष करीत होत्या. या पार्श्वभुमीवर ८ मार्च १९०८ रोजी न्युयॉर्कमध्ये हजारोच्या संख्येने महिला कामगार रुट्सगार्ड चौकात जमा झाल्या. तिथे त्यांनी निर्दशने केली. दहा तासांचा दिवस, कामाच्या जागी सुरक्षितता आणि मतदानाच्या ऐतिहासिक घटनेमुळे लढाऊ बाण्याच्या झुंजार कम्युनिस्ट कार्यकर्त्या क्लाश झेटकीन या प्रभावित झाल्या. १९१० मध्ये दुसऱ्या आंतरराष्ट्रीय समाजवादी महिला परिषदेत कोवनहेगन येथे ठराव मांडला की महिलांच्या या ऐतिहासिक कामगिरीची नोंद म्हणून ८ मार्च हा 'जागतिक महिला दिन' म्हणून साजरा होत आहे.

हा इतिहास वाचून आपल्या लक्षात येईल की आज महिलांना ज्या सोयी मिळत आहेत किंवा ज्या नवीन संधी मिळत आहेत किंवा ज्या नवीन संधी मिळत आहेत त्या सर्व महिलांना सहज मिळवण्यासाठी सावित्रीबाई फुले, राणी लक्ष्मीबाई, जिजाऊ माता, मदर टेरेसा, अहिल्याबाई होळकर, आंनदीबाई जोशी अशा अनेक महान स्त्रियांनी अतोनात प्रयत्न केले. समाजातील रुढी, परंपरा ज्या फक्त स्त्रियांसाठीच बनल्या होत्या त्या जुन्या स्त्रीचं जीवन फक्त चुल आणि मुल इथपर्यंत होते. या सर्व गोष्टींचा या महिलांनी विरोध केला म्हणूनच आजच्या काळात प्रत्येक स्त्री ही पुरुषाप्रमाणे काम करते किंवा आज असे कोणतेही क्षेत्र नाही की जिथे स्त्री पोहोचलेली नाही.

पण, आज दुःखाची गोष्ट एवढीच, स्त्री ही समोर जात आपले भविष्य घडवत आहे, पण ती आपल्याला ज्यांच्यामुळे स्वातंत्र्य मिळाले त्यांना विसरत चालली आहे. ज्यांच्यामुळे आपण आज या पदावर आहोत त्यांना विसरुन कसे चालेल ? प्रत्येक स्त्रीने हे लक्षात घेतले पाहीजे की आज आपण जो महिला दिन साजरा करतो. त्यासाठी किती कष्ट या स्त्रियांनी घेतले आहे. आपल्याला हे विसरता कामा नये.

मला अभिमान वाटतो या स्त्रीयांचा, कारण त्यांनी हे ठराव मांडून, ही मेहनत करुन आणि आपल्या पायावर उभे राहून काहीतरी नविन करण्याचे सामर्थ्य प्राप्त करुन दिले. ज्यांनी आजच्या स्त्रियांसाठी खुप मोठे बलिदान दिले त्या सर्व स्त्रियांना माझे मनापासून कोटी कोटी प्रणाम.

कु. राणी रामलखन पाली
बी.ए.प्रथम वर्ष

चारोळी...

अथांग दिसणाऱ्या सागराला
कुठेतरी किनारा असतो
तेजस्वी सुर्यालाही
अंधाराचा निवारा असतो.

'जिच्या हाती पाळण्याची दोरी । तीच जगाते उध्दारी ।
ऐसी वर्णिली मातेची थोरी । शेकडो गुरुहुनिहि ।।'

- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

हिसांचारामध्ये तरुणांचे वाढते प्रमाण

भारत हा जगातील सर्वात जास्त तरुणांची संख्या असणारा देश, सुजलाम आणि सुफलाम याच तरुणांमुळे जगाला मागे टाकत नाही, तर संपूर्ण जगाला सोबत घेवून चालणारा हा माझा भारत देश. तरुण उद्योजकांमुळे 'भारत' जगासाठी एका मोठी व्यापाराची संधी म्हणून समोर येत आहे. पर्यटन, व्यापार, अशा अनेक माध्यमातून आजचा तरुण यशाच्या पायऱ्या भराभर चढत आहे.

परंतू याच तारुण्याची दुसरी बाजू अत्यंत मलीन होतांना आज आपल्याला दिसतेय. व्यसन, बेरोजगारी इत्यादी अनेक गोष्टींमुळे आजचा तरुण हिंसेच्या मार्गाने जात आहे. आधुनिक म्हणत-म्हणत आम्ही कधी चुकीच्या मार्गाने गेलो हे आम्हालाच कळले नाही असे ऑनलाईन सांगणारे मित्र आज खुप भेटत आहेत आणि यामुळे अक्षरशा जीवनाचे कसे वाटोळे झाले हे अनुभव ही ते सर्व जगाला सांगत आहे.

तरुण युवकांना मस्ती करायची एवढी आहे कि ती आवड केव्हा त्यांच्यासाठी 'सवय' बनून जाते हे त्यांनाही कळत नाही. तरुणांनी 'मजा' करु नये असं माझं मुळीच म्हणनं नाही परंतू या 'Enjoyment' साठी अनेक गैर गोष्टीपासून तरुणांनी सावध राहावे ऐवढचं 'थोडा चिल मारते है' असं म्हणत मस्ती करणाऱ्या तरुणांचे आयुष्य कधी 'विषमय' होवून जाते हे त्यांना ही कळत नाही.

एका चित्रपटाचा एक डायलॉग ऐकला होता कि 'इश्क और जंग में सबकुछ जायच है', बहुतेक आज व्यसनाधीन व हिंसाचारी झालेल्या तरुणांनी याच वाक्याचा जीवनात सर्वात जास्त वापर केलेला दिसतो. आज जग आधुनिक जगातल्या तरुणांचे आदर्श, विवेकानंद, शिवाजी महाराज, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम हे असून सुध्दा आज बुऱ्हान वानी सारख्या आतंकवाद्याकरीता जेव्हा 'आझादी' चे नारे लावतात तेव्हा तरुण युवकांचा मार्ग स्पष्ट दिसतोय.

परंतू तरुण युवक हिंसेच्या मार्गाचा अवलंब का करताहेत ? हे सर्व चित्रपटांमुळे होतेय की सरकार, युवकांना रोजगार देण्यास अपयशी ठरतय, म्हणून हा तरुण वर्ग पोटाची भुक भागविण्यासाठी हिंसेचा व चुकीचा मार्ग अवलंबतोय, याचे कारण अनेक असू शकतात.

आज यावर कारणे नाही तर उपाय शोधण्याचं काम आपल्या तरुण वर्गाला करायचं आहे. सरकार नेहमी बदलत राहतात त्यांना दोषी धरुन चालणार नाही, तर आपणच स्वतःचे मार्ग शोधायला हवा.

तरुण वर्ग हा चौकातल्या टपरीवर नाही तर स्वतःचा व्यवसाय करतांना दिसायला हवा, तरुण युवक हा कॉलेजच्या कट्यावर नाही तर, वाचनालयात दिसायला हवा आणि असे जेव्हा घडेल, तेव्हा आपण गर्वाने म्हणू शकू की 'मेरा भारत महान'.

कु. समिक्षा अशोक चऱ्हाटे
बी.कॉम. (इंग्लिश) तृतीय वर्ष

चारोळी...

तुझं पत्र माझ्यासाठी
न उलगडणारं कोडं होतं
सोईचा अर्थ लावणारं
मन माझं वेडं होतं

मन शांत असेल तर आतला आवाज ऐकू येतो.

'.... आणि क्षणात ती एकटी'

दोन अनोळखी असलेल्या नेरां एकमेकांस भिडल्यावर त्यांची कशी मैत्री होते आणि ती मैत्रीच्या पलीकडे जाऊन प्रेमरंगात रंगुन जाते याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे स्वयं आणि सृष्टी. स्वयंमचे आपल्या आधीच्या प्रेमभंगाबद्दल सृष्टीला सांगणे, सृष्टीने त्याला धीर देत सावरणे हळूहळू हे सगळं येवढ रंगत जातं की, ते दोघे नकळत एकमेकात कसे गुंतत जातात आणि एकमेकांना कसे आवडायला लागतात त्यांनाही कळत नाही. एकदा प्रेमभंग पचवून सुध्दा पुन्हा नव्याने स्वयं सृष्टीच्या प्रेमात पडतो जी त्यास निश्चित असा विश्वास देत सावरत आहे.

एकदा का कुणास ठाऊक पण स्वयंसोबत बोलतांना सृष्टीचे शब्द अडखळतात आणि तिच्या मनात कसलीशी रुखरुख असते. मेघना परत येण्याची आणि स्वयंला गमाविण्याची भिती तिच्या डोळ्यात दाटून येते. स्वयं तिला बोलकं करण्याचा प्रयत्न करतो. मनातच जणू काही शब्द बांधून म्हणतो. 'भावनांना शब्दात बांध अन् सांग ना मला... नेमकं काय वाटते तुला...' सृष्टी तिच्या मनात दडलेल्या भितीला शब्दात व्यक्त करत त्याला सांगते. स्वयं तिला विश्वासात घेत तिची समजूत काढतो. सृष्टी मात्र खालमानेने आपले अश्रु लपवित त्याच्याशी नेर चोरत गप्पच असते. तिचा तो अबोला तोडण्यासाठी स्वयं कायम सोबत राहण्याचे वचन देऊन तिला तीची साथ मागतो आणि त्याची १ ते १० counting संपायच्या आत तिला उत्तर देण्यास भाग पाडतो. त्यासोबतच सृष्टीच्या काळजाचा ठोका चुकायला लागतो आणि स्वयं १० म्हणून निघणार तोच ती त्याचा हात पकडून त्याला अडविते आणि अबोल, तिच्या त्या नजरेतून पाणावलेल्या पापण्या अलगद झुकवून त्याला होकार देते. तिचा तो शब्दांपलीकडील आशय त्याला प्रतीत होऊन लगेच तो गुडघ्यावर बसून आपले प्रेम व्यक्त करतो. आणि लाडीक गोड हसतांना तिच्याही गालावरच्या त्या छोट्याश्या खळीत तिला झालेल्या आनंदाच्या छठा उमटतात.

एकदा दोघे सहज भेटतात आणि ज्या गोष्टीची भीती आधी तिला वाटायची ती आता दिड वर्षानंतर पुन्हा नव्याने डोकाविते अन् वादळाने जसा प्रवेश करुन वाळुचा बांधलेला किल्ला पडावा तसाच तिने रंगविलेल्या स्वप्नमहाल क्षणात ढासळून जातो. मेघना खरचं स्वयंच्या आयुष्यात परत येत असल्याचे तिला कळते. सृष्टी आपल्या प्रेमाच्या संदर्भात खात्री करण्यासाठी विषयचर्चेला घेत त्याच्या दुराव्याची काळजी व्यक्त करते. स्वयं तिला त्याच्यावर विश्वास ठेवायला सांगतो आणि तिला सोडून न जाण्याचे वचन देतो कारण तेव्हा त्याच्यामते मेघना सोडून गेली असता सृष्टीनेच त्याला सावरल होत. स्वयंच्या दिलाश्यानंतर तिची अस्वस्थता थोडी कमी होते. तरीसुध्दा आपल्या प्रश्नांचे, गोंधळाचे निरसन करण्यासाठी व मन मोकळे करण्यासाठी ती या विषयावर आपल्या जिवलग सखीशी म्हणजेच नमिताशी बोलते. तिच्यासमोर स्वयंला गमविण्याची भीती व्यक्त करते. नमिता तिची समजूत घालत तिला शांत करते.

पुढे साधारण १०-१५ दिवसांच्या दिवाळीच्या सुट्ट्यांमध्ये सगळे आपआपल्या घरी जातात. सृष्टी आणि स्वयंचा त्यामुळे संपर्क तात्पुरता दुरावतो. त्याच दरम्यान स्वंय आणि मेघनाची भेट होते. त्यानंतर स्वंय परत येवून सृष्टीला भेटतो. पण मेघनाच्या 'तु असशील तर माझे आयुष्य आहे, नाही तर नाही...' या शब्दांनी गोंधळात पडलेला असतो. स्वयंचा हा बदलता स्वभाव सृष्टीच्या

रक्ताची नाती जन्माने मिळतात मानलेली नाती मनाने जुळतात पण नाती नसतांना जी बंधन जुळतात, त्या प्रेमळ बंधनांना 'मैत्री' असे म्हणतात.

लक्षात येत जातो. तरीपण ती स्थिती सावरुन धरण्याचा प्रयत्न करते. पण स्वयंचे 'माझा अर्धा जीव तुझ्यात आणि अर्धा जीव अजूनही तिच्यात गुंतलाय' हे बोल ऐकून मात्र हादरुन जाते. स्वयंला सृष्टीला सोडायचे नसते परंतू एकीकडे त्याला मेघना पण परत हवी असते. हा गुंता सोडविण्यासाठी तो तिला वेळ मागतो व तिथून निघून जातो.

स्वयंच्या या बदलत्या स्वभावाने साहजिकच सृष्टी आणखी विचारात पडते. तिच्या मनातील भीतीने वाढते स्वरुप घेतलेले असते. सृष्टी परत नमिता जवळ मन मोकळ करत यातून बाहेर पडण्यास मदत मागते. सृष्टीच्या बोलण्यावरुन नमिताला स्वयंच्या वागण्याचा पुर्ण अंदाज येवून जातो आणि ती सृष्टीला समजावित स्वयंचा नाद सोडून वेळीच स्वतःला सावरण्याचा सल्ला देते. कारण मनाने हळवी असलेली सृष्टी ही त्याचा नंतर नकार पचवू शकणार नाही हे तिला चांगलच ठावूक असते. नमिता वारंवार वास्तवाची जाणीव करुन देवूनही सृष्टीचे अश्रु ढाळीत गप्प राहणे हे तिचे त्यावरील आंधळे प्रेम (नमिताच्या दृष्टीने) व्यक्त करत असते.

मध्येच सृष्टी आणि मेघनाचा फोनवर संपर्क होतो 'आणि समजा तो कायमचा माझ्याकडेच परत आला तर...' या मेघनाच्या वाक्याने सृष्टीची झोपच उडते जणू तिच्या डोळ्यांसमोर खेळणाऱ्या लिहिलेल्या पानांवरची शब्दच मिटून ती कोरी होत होती आणि अबोल अशी ती शब्दच व्रूक्त करु शकत नव्हती. दिवसें दिवस सृष्टीची ढासळत चाललेली मनस्थिती नमिताला मात्र पाहवत नाही. ती वारंवार तिची समजूत घालण्याचा प्रयत्न करते. नमिताच्या मते 'कुठलाही माणूस' आपल्या आयुष्याच्या कोणत्याही दोन क्षणी तो तोच असू शकत नाही. थोडक्यात सांगायचे म्हणजे माणस बदलतात, वेळ बदलली म्हणजे' या सत्याची जाण करुन दिल्यावरही सृष्टी एकही शब्द न बोलता भरले डोळे चोरीत स्तब्ध बसून असते.

सृष्टी आणि नमिता सोबत जात असता सृष्टीला स्वयंचा फोन येतो, त्याचे शब्द अडखळतात तिच्या मनात भिती दाटून येते जणू त्याने काही सांगायच्या अगोदरच त्याचे अबोल शब्द तिला कळून चुकतात. आणि चालता – चालता अचानक ती थांबते. स्वयं सृष्टीस म्हणतो 'तुझा स्वयं आता तुझा राहिलेला नसून तो मेघनाकडे परत जातोय'हे ऐकल्यानंतर तिला स्वतःला सावरुण धरणे शक्य होत नाही. काही क्षण ती स्तब्ध उभी असलेली सृष्टी एकदम खाली कोसळते. तिच्या सोबत असलेली पण नेमक काय झालयं याची काहीच कल्पना नसलेली नमिता तिला सावरते व 'काय झाले ?' विचारते काही क्षणांसाठी सृष्टीला काहीच कळत नाही. 'खरंच स्वयं असा बोलू शकतो ?' पण तिने ऐकलेले ते खरे असते. त्याच्यावर विश्वास ठेवला म्हणून तिचा स्वतःवरचाच विश्वास उठून जातो. तेव्हा स्वयं तिच्या आयुष्यातून निघून जातो परतून न येण्यासाठी तिच्या आयुष्याच्या पुस्तकातील ती एक गोष्ट नेमक्या त्या वळणावर अर्धवटच राहिली. संपूर्ण पुस्तकातील ती एक गोष्ट नेमक्या त्या वळणावर अर्धवटच राहिली. संपूर्ण पुस्तकातील गाहाळलेल्या त्या पानांची खंत आजही तिच्या मनात अस्वस्थतेच्या वादळी रुपात थैमान घालते अन् वास्तवाची जाणीव असूनही तिची नेर सैरवैर होऊन आभासी चाहूलीच्या शोधात असते.

कु. पल्लवी वाकोडे,
बी.ए. तृतीय वर्ष

चारोळी...

गळा

येथे कुठे कुणाला
कुणाचा लळा होता ?
कापणारा माणूसच अन् कटणारा
माणसाचा गळा होता.

आई म्हणजे मंहगल मंदीरांनी गजबलेले तिर्थस्थान..... – कर्ण

अशक्याला शक्य करणारी महिला - अरुणिमा सिन्हा

अरुणिमा सिन्हा एक असे व्यक्तिमत्त्व जीने सहनशिलतेची पायरी ओलांडून आपल्या स्वप्नांचे शिखर गाठले. ती लढली दुसऱ्यांशी नाही तर स्वतःशी, अपघातामुळे झालेल्या अपंगत्वाशी आणि ती ठरली जगातील सर्वोच्च उचं शिखर माऊंट एव्हरेस्ट पादाक्रांत करणारी जगातील पहिली अपंग महिला. ती भारतीय आहे. उत्तरप्रदेशाची रहिवाशी असलेली अरुणिमा १२ एप्रिल २०११ रोजी लखनौ येथून दिल्लीला जात असतांना काही गुंडानी तिला पद्मावती एक्सप्रेसमधून बाहेर फेकले होते. या घटनेत गंभीर जखमी झालेल्या अरुणिमाच्या डाव्या पायावर शस्त्रक्रिया करुन डाक्टरांनी तिचा डावा पाय गुडघ्यापासून काढून टाकला.

ही घटना तिच्या जीवनाला कलाटणी देणारी :- २३ वर्षीय राष्ट्रीय स्तरावरील हॉलीबॉल खेळाडू असलेली अरुणिमा १२ एप्रिल २०११ ला दिल्लीला नोकरीच्या मुलाखतीसाठी निघाली होती. लखनौ येथून ती पद्मावती एक्सप्रेसमध्ये साध्या डब्यात चढली. रात्री काही चोर तरुण हातात चाकू घेवून डब्यात घुसले. सगळ्यांना धमकावून जे मिळेल ते लुटू लागले. कोणत्याही प्रवाशांनी विरोध केला, अरुणिमाच्या गळ्यात सोन्याची साखळी होती चोरांनी तिला तिच्याकडे गळ्यात असलेली सोन्याची साखळी देण्यास धमकावले. दुसऱ्याने तिच्या गळ्याजवळ हात नेण्याचा प्रयत्न केला तेव्हा तिने विरोध केला. एकाने तिच्या पोटावर लाथ मारली तिच्या गळ्यातील साखळी ओढून घेतली. कोणीही विरोध करत नसतांना एक मुलगी आपल्याला विरोध करत आहे हे पाहून त्या चोरांनी भरधाव रेल्वे गाडीमधून तिला ओढत दरवाज्याजवळ नेले आणि तिला बाहेर ढकलून दिले.

या घटनेत तीच्या कंबरेपासून पायाचे हाड मोडले. चेहऱ्यावर जखमा झाल्या. ती जिथे आदळली त्याला लागून दुसरा रेल्वे मार्ग होता. दुसऱ्या ट्रॅकवरील रुळांवर तिचा पाय होता. तिने तो उठवायचा प्रयत्न केला. पण ती उठू शकली नाही. पाय हलत नव्हता. समोरुन एक रेल्वे त्या ट्रॅक वरुन येत होती ती तिच्या पायावरुन गेली रात्रभर रेल्वे येत-जात होत्या. रुळांखालील उंदीर तिचे पाय, केस कुरतडत होते. रेल्वेतील मल-मुत्र तिच्य संपूर्ण शरीरावर पडत होते बऱ्याच वेळानंतर तिची शुध्द हरवली होती. सकाळी कुणाला तरी ती दयनीय अवस्थेत पडलेली दिसली. एका प्राथमिक रुग्णालयात तिला भरती करण्यात आले हे तिला जाणवले. तिचा पाय कापण्याचा निर्णय घेण्यात आला. त्यामुळे तिची हॉलीबॉल मधील कारकिर्द संपुष्ठात येणार होती. भूल देण्याची सुविधा त्या रुग्णालयात नसल्याने तशाच परिस्थितीत तिचा पाय कापण्यात आला. त्यानंतर तिला दिल्लीतील एम्स् रुग्णालयात दाखल करण्यात आले. तिच्याकडे अधिकृत तिकिट नसल्याने तिने बाहेर उडी मारण्याचा दावा विविध प्रसारमाध्यंमांनी केला. या सर्व घटनाक्रमात तिला शारीरिक आणि मानसिक आघातांना समोर जावे लागले. तिला कृत्रीम पाय बसवण्यात आला.

या घटनेत अरुणिमाने आपले मनोधैर्य गमावले नाही. या उलट तिने आपल्या कृत्रीम पायाच्या आधारे सर्वोच्च शिखर माऊंट एव्हरेस्ट चढायचे ठरवले. ती रुग्णालयातून भावासोबत बचेंद्रीपाल यांना बिहारमध्ये भेटायला गेली. बचेंद्री पाल या पहिल्या भारतीय स्त्री आहेत ज्यांनी एव्हरेस्ट सर केले. पाल यांनी अरुणिमाला प्रथम विरोध केला, पण अरुणिमाची जिद्द पाहून शेवटी तिला पुर्ण पाठिंबा दिला.

ज्याच्या जवळ उमेद आहे तो कधीही हरु शकत नाही.

भारत केंद्र सरकार आणि संरक्षण मत्रांलयाच्या नियंत्रणाखाली येणारी एकून चार पर्वतारोहण केंद्र आहेत येथील प्रशिक्षण कस लावणारे असते. अरुणिमा उत्तर काशीच्या केंद्रात दाखल झाली. अत्यंत कठीण, कडक प्रशिक्षण सुरु झाले. चालतांना ती सगळ्यांच्या मागे राहायची कारण मध्येच तिचा पाय मांडीतून निघून जायचा तिला इतरांपेक्षा चार तास उशीर व्हायचा तिच्या पायातून रक्त निघायचे.

या केंद्रात नियम असतो, सायंकाळी प्रशिक्षण आटोपल्यावर प्रत्येकाला स्वतःच्या पायाचे निरिक्षण करायचे सांगितले जाते. कारण पायाला बारीक फोड येतात व ते पायाला असतील तर प्रशिक्षण बंद करावे लागते. कारण हे फोड खूप धोक्याचे असून त्यापासून जंतू संसर्ग होवू शकतो. अरुणिमाने तिच्या कृत्रीम पायामुळे हा सर्व त्रास सहन केला. आपल्या सर्व वेदनांवर मात करुन तीने यशसाठी प्रयत्न करु लागली. अरुणिमाने एक महिन्याचे प्रशिक्षण पुर्ण केले व ती 'ए' ग्रेड मध्ये पास झाली.

प्रशिक्षण पुर्ण झाल्यानंतर तिने आपल्या अंतिम ध्येयाकडे लक्ष केंद्रीत केले. 'टाटा स्टील' कडून तिला प्रायोजकत्व मिळाले ती नेपाळकडे निघाली. तिची दुसऱ्या दिवशीपासून चढाई सुरु झाली. शेर्पा तिच्या मदतीला होता. पण त्याला जेव्हा कळले की अरुणिमा अपंग आहे तेव्हा त्याने तिच्या बरोबर जाण्यास नकार दिला. अरुणिमाने त्यांना विनवनी करुन सोबत येण्यास राजी केले.

काही दिवसांच्या चालण्यानंतर संकटे झेलीत मृत्युच्या दाढेतून वाचत ती शिखरापासून काही मिनिटांवर येवून पोहचली. रस्त्यात अनेक प्रेत दिसली. तेव्हा तिच्यासमोर एक जर्मन पर्वतारोही पाय घसरुन मृत्युमुखी पडतांना दिसला. एका ठिकाणी बर्फावर रक्त सांडलेले दिसले. पुन्हा काही प्रेत दिसली. त्यासर्व प्रेतांना ओलांडून ती पुढे गेली आणि तीने शेवटी एव्हरेस्ट सर केले. एप्रिल २०११ ला तीचा अपघात झाला आणि २१ मे २०१३ ला सकाळी १० वाजून ५५ मिनिटाला ती पृथ्वीवरील सर्वात उंच जागेवर उभी होती.

पण अजूनही एक फार मोठे संकट बाकी होते. तिचा प्राणवायू संपत आला होता. तिला जाणीव झाली होती की ती जीवंत परत जाऊ शकणार नाही, म्हणून निदान जगाला आपले चित्रीकरण दिसावे म्हणून शेर्पाला आपले चित्रण करायला सांगितले तो तिच्यावर प्रचंड चिडला कारण शिखरावर प्रचंड वारे सुरु होते. आणि सगळ्यात मोठे संकट म्हणजे प्राणवायू संपत होता. पण अरुणिमाची जिद्द बघून शेर्पाही नतमस्तक झाला. तो म्हणाला, अरुणिमा आता मी मेलो तरीही चालेल पण तुला एकटे सोडणार नाही, तुला जीवंत खाली नेणार. वेगाने ते परतिला निघाले, पण तीचा कृत्रीम पाय सतत मांडीतून निघत होता. तिच्या डोळ्यातून अश्रु निघत होते. उंचावर असल्यामुळे तोंडातील लाळ बर्फावर खाली पडून त्या लाळीचा बर्फ बनून टन कन असा आवाज येत होता. तिचे हात पाय निळे काळे पडले होते. तीचा हात देखील कापावा लागणार होता. तिच्या हाताला बर्फ बाधा झाली होती. तीने शेवटी एक निर्णय घेतला व आपला कृत्रीम पाय काडून हातात घेतला व ती स्वतःला घासत चालू लागली. त्या क्षणी अरुणिमाकडे काही मिनीटांचा प्राणवायु शिल्लक होता. दोघांना माहित होते आता मृत्यु अटळ आहे. आणि योगायोगाने एक ब्रिटीश पर्वतवीर जास्तीचा प्राणवायु सिलेंडर सोबत दिसला. त्याला त्या सिलेंडरचे आझे होत असल्यामुळे त्याने ते तेथेच ठेवून दिले. शेर्पा धावत गेला आणि ते सिलेंडर आणून ते अरुणिमाच्या प्राणवायू पाईपला जोडले आणि अरुणिमाला पुर्नजीवन मिळाले.

या साहसी महिलेला २०१५ मध्ये भारत सरकारच्या वतीने पद्मश्री पुरस्काराने गौरवीत करण्यात आले. तीला वुमन ट्रान्सफॉर्मिंग इंडिया अवार्ड देण्यात आला. प्रयत्न केले तर सर्व काही शक्य असते.

कु. अश्विनी गौतम वानखडे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

'एकमेका सहाय्य करुन अवघे धरु सुपंथ'

समाज, राजकारण यांच्या कात्रीत सापडलेला युवक

दोन थोड बोलायचचं होतं हो,
तुमच्या आमच्याबद्दल,
थोडं बोलायचच होतं हो,
आमच्या मनस्थितीबद्दल
थोडं बोलायचचं होत हो,
राजकारणाबद्दल.

राज्यघटनेने घालून दिलेल्या नियमांप्रमाणे १८ वर्ष पुर्ण केलेली मुलं 'प्रौढ' असतात म्हणजेच स्वतःचे निर्णय स्वतः घेऊ शकतात. पण तरिही का, कुणास ठाऊक ? मुलांनी निर्णय घेणे म्हणजे मुर्खपणा, व्यर्थता... असे आमच्या डोक्यात नेहमीकरताच फिट झालेले आहे.

मग एक सांगा त्याने तर १८ वर्ष पुर्ण केली तरीही निर्णय घेण्यास मोकळीक का नाही ? असे केल्याने त्याच्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्यावर गदा आल्याशिवाय राहणार नाही.

आपण उगाच राजकारणी लोकांना किंवा संपुर्ण राजकारणाला व शासनाला दोष देत फिरत असतो. की शासन उगाच आहे. अस करायला पाहिजे होतं वगैर.... आणि राजकरणाबद्दलची गम्मत तर काही वेगळीच आहे. लोकांना 'राजकारण' मुळातच नकारार्थी वाटतो. मात्र कुठल्याही नाण्याला/ गोष्टीला दोन बाजू असतात. हे मात्र आपण विसरतो. असही असू शकते की आपण विचार करत असू तो बहूतांशी चूकिचा असू शकतो.

आपल्या भारतात अडचण ही आहे की, सगळे आपल्या इच्छेप्रमाणे काम व्हावे अशीच इच्छा मनी धरुन जगतात जे कधीच शक्य नाही. मग याचा सगळा ताण काढतात इतरांवर (विशेषतः मुले) तू अस नको करु, तस कर, असं कर, कशाला हो ? करु द्या ना त्याला मनासारख, तो करले न, लावेल जितका जोर लावायचा तितका कसून, झगडले की... पण त्याची इच्छा तर जाणून घ्या.

आणखी एक गम्मत म्हणजे प्रत्येक पालक हे मुलांना काहितरी चांगल सांगतात की बघ किती महान पुरुष होऊन गेलेत, काय चांगले विचार आहेत त्यांचे त्यांच्यामध्ये इतरांना बदलण्याची शक्ती आहे.

मात्र आपल्या मुलाने काही करायचं म्हटलं की मात्र त्यांचा सरळ सरळ नकारच असतो. मला हेच समजत नाही जेही लोकं आज महान कार्य करुन आज एक आदर्श आहेत. त्यांनी जगावेगळ केलं. जगाच्या विरुध्द निर्णय घेतले म्हणूनच आज ते आदर्शवादी व्यक्तिमत्व बनले.

पण येथे राजकारणात पाऊल टाकण्याची गोष्ट ही ओठांवर आणली तर कोणतं संकट कोसळते हे कळायला मार्ग नाही, ही गोष्ट तर अशीच झाली की,

शिवाजी जन्माला यावा पण, शेजारच्या घरात
त्यातही आपण जिजाऊ व्हायला तयार नाही
सगळा भार शिवबावर...

अस नसतं...

माणसाला 'जिजाऊ' मातेसारखा खंबीर हात पाठीवर हवा असतो जो की खंबीरपणे उभं राहायला मदत करेल.

बस्स.... एवढच होत मनात

कल्पनेच्या भानात...

कु. धनश्री गो. लुंगे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

चारोळी...

कुठलाही संदर्भ नसताना
आम्ही आयुष्य जगत असतो
असे अर्थहीन जगताना मात्र
प्रत्येक टप्प्यावर संदर्भ शोधत असतो.

आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

मोगरा

कोमल तुझ्या पाकळ्या
कुणी तुला रे गंध दिला
सांग कधी निसर्गाने शुभ्र मोहक रंग दिला
फुलण्या आधी तुझ्या कळीला अति सुगंध दिला
सांग मोगऱ्या कधी तुलारे
मृगाने हा गंध दिला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे मृगाने हा गंध दिला

सुंदर नाजूक फुल तुझे
तळव्यावर घ्यावे नयनांच्या
मिटवून पापण्या गंधात न्हावून जावे
मंद मंद तुझा गंध
लळा मला लावून गेला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे
मृगाने हा गंध दिला.

प्राजक्ता आणि मधुमालती
रातराणीचा तू सखा सोबती
रजनीने तुम्हा एकाच प्रहरी
काजवा माखुन गेला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे
मृगाने हा गंध दिला.
शुभ्र ज्योत्स्ना अवनी वरती
जनुभासे ही तया किर्ती
अहंकार हा मानवी मी पणाचा
तुझ्या पुष्प मालेत गुंफून गेला
सांग मोगऱ्या कधी तुला रे
मृगाने हा गंध दिला
सांग मोगऱ्या कधी तुलारे
मृगाने हा गंध दिला.

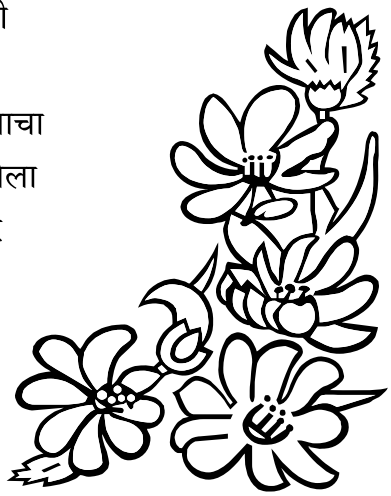

सुमना परी तुझ्या मम वाटे
मी व्हावे सळसळनाऱ्या
केसावरती चांदणे टिपावे
भ्रमरही तुझ्या पुष्पगंधात विलीन झाला
सांग मोगऱ्या कधी तुलारे
मृगाने हा गंध दिला...

कु. सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. प्रथम वर्ष



संगती

विसर पडावा त्या शब्दांचा
असो द्वेष संकोचाला
बहरलेल्या मिळती जुळती
भेटाव्या क्षणातच आतुरतेला

का संगतीला दोष द्यावा
लहर शब्द आहोटी व्हावा
पटवून द्यावे प्रसंगाला
असावी मान अचुकतेला

सृजनतेचा प्रहार व्हावा
कल्पनेचा आभास व्हावा
प्रक्रीया असे जरी कृत्याला
त्या शब्दांचा उगम व्हावा

भेटती पुन्हा ते विचार एकत्र
संगती होऊन जावी छान
त्या शब्दांचे मोल व्हावे
जपावे पुन्हा असे भास व्हावे.

कु. राधिका सावके
बी.ए. तृतीय वर्ष

सेवा जग फुलविते, पण प्रीती मन फुलविते.

मी पाहिलाय तो बाप...

मी पाहिलाय तो बाप
जो मुलीसाठी रडतो
जो मुलासाठी झडतो
जो स्वतः हा उपाशी राहून
लेकराला जेवु घालतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो स्वतःहा फाटके कपडे घालून
मुलांची फॅशन पुर्ण करतो
जो वर्षभर एकच ड्रेस घालून
नवीन कपडे मुलांना घेऊन देतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो रात्री उठून स्वतःचे
पांघरुन मुलांच्या अंगावर देतो
जो स्वतःची चप्पल शिवून
मुलाला बुट घेऊन देतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो स्वतःच्या वाढदिवसाची तारीख न
सांगता मुलाचा वाढदिवस साजरा करतो
जो मुलीच्या लग्नात हात जोडून उभा असतो.

मी पाहिलाय तो बाप
जो साधा मोबाईल घेऊन
मुलीला महाग मोबाईल देतो
घरी यायला रात्री उशीर झाला
तर दारात उभा राहतो
तीची जेवणासाठी वाट पाहतो

मी पाहिलाय तो बाप
जो सर्व घाम शेतात गाळून
मुलांच्या शिक्षणासाठी खर्च करतो
मुलीच्या लग्नासाठी पैसे जमवतो.

मी पाहिलाय तो बाप
मी पाहिलाय तो बाप

कु. वैष्णवी गजानन राऊत
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

मोर्णा

मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती
मानवी विकृती तिला विद्रुप करीत होती
मोर्णेला घानीचे गटार मानत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती.

वरुणाच्या आगमनी ती दुथडी वाहत होती.
घानेचे गटार पोटाशी वाहत होती
जन्मते मरणाची घान मानव तिच्यात ओतत होती
नदी नसून ती घानेच गटार भासत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती

ग्रीष्म मासी भस्म लावून अंगाशी
ती तांडव करीत होती
वैशाखेत ती निर्जल होऊनी
विधवेपरी भासत होती
शंभू पिंडातून उगम पावणारी
मोर्णा प्रदूषित होऊन वाहत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती

अमृतारुपी जल तीचे विषरुपी भासत होती
युगे-युगे वाहणारी सरिता लयास जात होती
स्तब्ध निःशब्द होऊन मोर्णा कर जोडत होती
मानवी चुका अबोल भावनेने व्यक्त करत होती
संथ वाहणारी सरिता कधी खंत करत नव्हती
कलेक्टरांच्या जनजागृतीमुळे ती हसत-खेळत
आता सृजना परी भासत होती
मोर्णा स्वच्छते अगोदर आक्रांत करीत होती...

कु. सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. प्रथम वर्ष



जीवन हे विचार, अनुभव आणि श्रध्दा यांचे घनफळ आहे.

स्त्री काय आहेस तू...

जिवाश्मांची वसूंधरा तू,
यौवनाची कामिनी तू,
हिमतीची वाघिनी तू,
कुळाची स्वामिनी तू,

आकाशी धगधगती सौदामिनी तू,
ओलावून बरसणारी श्रावणी तू,
उन्हात गारव्याची सौमिनी तू,
थंडीच्या शहाऱ्यात उबेची दुलई तू,

पतीची अर्धांगिनी तू,
लेकराची माऊली तू,
भावाची पाठराखीण बहीन तू,
मैत्री जपणारी सखीण तू,

ज्ञानाचा प्रसार करणारी विद्या तू,
स्वरांची सुरेल सरस्वती तू,
शब्दातून जिवंत अशी कविता तू,
साहित्याचे जल वाहणारी सरीता तू,

चंद्राच्या अस्तित्वाला जागणारी पोर्णिमा तू,
चांदणाच्या सहवासाला भावणारी अमावस्या तू,
वर आकाशी अस्तित्वातली नक्षत्र वैभवी तू,
आम्हास स्वप्नात घेवून जाणारी निद्राणी तू,

वस्त्रहरणातली पांडववधू द्रौपदी तू,
दृष्ट रावण लंका विध्वंस कारणी सिता तू,
सावळ्या कान्ह्याची यशोदा माय तू,
शुर्पणकेच्या अवतारतली एक हाय तू...

शिवबाची जिजाऊ तू,
राणी झाशीची बळकट बाहू तू,
पेशव्यांची आवड मस्तानी तू,
ताजमहालाची प्रेमळ निशानी तू,

पौराणातली आदिशक्ति तू,
प्रभुची नितांत भक्ति तू,
सळसळत्या मावळ्यांची जय भवानी तू,
राक्षसांना बधणारी काली माता तू,

आजच्या युगाची प्रगती तू,
प्रयत्नांना लाभलेली उन्नती तू,
कलेच्या क्षेत्रात नटराजाची मुर्ती तू,
खरचं साऱ्यांच्या यशाची किर्ती तू,

तुज वाचून न कुठला जीव,
तुज वाचून ना कुठली नीव,
वदितो तुला हे स्त्री शक्ति,
कारणी आजही तुजवाचूनी,
ना कुठला इंद्र ना कुठलाच शिव...

ना संपणार तुझे अस्तित्व,
ना तू विरळ होणार,
तुझ वाचून हे विश्व आपुले,
किती काळ ठिकणार...

कु. संध्या रा. प्रजापति
बी.ए. द्वितीय वर्ष

शेतकरी जीवन

कसं रे हे जीवन देवा
दिले तु मला
पाहतो रे वाट पावसाची
पण तोही येणे विसरला
उपाशी रे माझी पोरं, बायको
आणि गुरढोर.

आली शेतातली पेरणी
आणि सावकाराची देणी
सांग कसी रे करु मी फेडणी
ना पिक, ना पाणी
ना पैसा, ना ज्वारी



कसं रे हे जीवन देवा
दिले तु मला
आला शिक्षणाचा खर्च
आहे रे हुंडा डोक्यावरी
राहिली रे मुलगी पाठवणे सासरी
सांग कशी रे करु मी सांभाळणी

नको रे हे जीवन देवा
दिले तु जे मला
दुसरा जन्म हा शेतकरी
म्हणून न द्यावा...

कु. वैष्णवी गजानन राऊत
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

आईची शिकवण हजार धर्मग्रंथांच्या शिकवणीपेक्षा श्रेष्ठ असते.

शिवरायांची आई जिजाऊ

शिवरायांची आई जिजाऊ कर्तबगार महान,
तुझ्याच कर्तृत्वाने लिहिल्या गेले इतिहासाचे पान ।।धृ।।

अन्यायी, अत्याचारी निजाम शाहिला तुच पाजिले पाणी,
आया बहिणीच्या अत्याचाराची होती करुन कहानी,
अन्यायी वैऱ्यांची केली तू दानादान ।।१।।

तुझ्याच पोटी जन्माला आला छत्रपती शिवराय,
आनदांत नांदत होती सर्व जाती प्रजाती,
परस्त्रीला माता समजे असा हा शिलवान ।।२।।

धन्य-धन्य ती जिजाऊ माता जीने घडविला राजा छत्रपती,
शिवबावर संस्कार घातले, रयतेने सिंहासनी बसविला,
रयत, साधु आणि संताना छत्रपतींनी सन्मानिले ।।३।।

सर्व ठिकाणी बांधून प्रार्थना स्थळे,
गरीब व श्रीमंत असा केला नाही कधी भेदभाव,
सर्वांसाठी आणला कायदा एक समान ।।४।।

जिजाऊच्या माहेरचा गाणारा शाहीर,
तुझी थोरवी गातांना शाहीर पवार झाला जग जाहीर,
तुझी किर्ती गातांना मिळे त्या शाहिरास आत्मसन्मान।।५।।

कु. किर्ती डिगांबर ताले
बी.ए., द्वितीय वर्ष

गर्भपात

येथे गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे
वंशाच्या दिव्यासाठीच का
मुलींचा घात होत आहे
केवळ पैशासाठीच वैद्यांची साथ आहे
गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे

मायेच्या ममतेचा गेला कुठे जिव्हाळा
पुरुषांच्या सत्तेपुढे ममतेचा घात झाला
निष्पाप मुक्या बालिकेवर प्रहार होत आहे
येथे गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे.

जन्म देण्याआधीच कूस खाली होत आहे
मातेच्या भावना उध्वस्त होत आहेत
श्वासाशी जुळणारी नाळ आधीच तोडली जात आहे
गर्भातील अर्भक आता टाहो फोडत आहे
की, गर्भात मातेच्या गर्भपात होत आहे.

पित्याच्या क्रुरतेला मातेची साथ आहे
मुली साठीच का ? मातेचा काळीच गोठत आहे
स्त्री जातीचा स्त्री वरच प्रहार होत आहे
म्हणून गर्भात मातेच्या स्त्री भ्रणहत्या होत आहे.

कु. सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. प्रथम वर्ष

अस्तित्व

स्वतःच अस्तित्व स्वतःच
स्वातंत्र्य अस व्यक्तिमत्व असत
अस्तित्वासाठी जिद्दीने उभ राहायच
स्वतःला सिध्द करायच असते ।।१।।

अस्तित्वासाठी वेळेला महत्व द्यायच,
दिप होऊनी उजळायच,
काट्यांना तुडवायच, खंबीरपणे उभ
राहायच असत ।।२।।

अस्तित्वासाठी मनाला बांधायच,
सद्गुणांनी जगाला जिंकायच,
कतृत्वाने फुलायच,
स्वतःला कधितरी शोधायच असत ।।३।।

अस्तित्व म्हणजे जीवनाचा आत्मा कारण,
जोपर्यंत आत्मा असते तेथपर्यंतच,
शरीर असते म्हणून
जोपर्यंत आपल अस्तित्व असते,
तेथपर्यंतच आपलं जीवन असते ।।४।।

कु. शारदा तेल्हारकर
बी.ए., द्वितीय वर्ष

जीवनाला आकार द्यायचा असेल तर अहंकार बाजूला ठेवावा लागेल.

'ती' एक शापित अस्तित्व...

कृति' चं अस्तित्व जरी असेल
'ति' च्य गर्भात
आतपासूनच नियोजन तिला
कसं पाठवायच स्वर्गात ?

जलचिकीत्सा गर्भाची आणि
कुठल्याशा किरणांचा मारा
गर्भातसुध्दा बिचारीला नसे
सुखाचा थारा

अस्तित्वाची चाहूल तिच्या
सर्वांच्या डोक्यावर आठ्या
उभे सरसावून सारे
घेऊन हाती लाठ्या काठ्या

मरणावर आज तिच्या
जगणारे ही आहेत भरपूर
जगलीच तर उद्या तिला
मारणारे ही आहेत भरपूर

मारण्यासाठी तिला
सर्वांनी कंबर कसलीच
विज्ञानाच्या युगात या
हि विषमता हो कसली ?

'ती' आणि 'तो' समानतेच्या
पोकळ बोंबा
त्याच्यासाठी तिच्या
नरड्यामध्ये बोळे कोंबा

'तो' दिपक म्हणे स्वकुळाचे
टाकती जरी घर जाळूनी
स्वागताची जंगी तयारी
निपजती नरी अवलक्षणी

दुरी दोघांमधली मला
माझ्यापासूनच बदलायचीय
म्हणूनच माझ्या 'ती' ला
मला त्याच्याप्रमाणेच वाढवायचीच.

कु. कोमल प्रकाश बकाल
एम.ए. (मराठी), प्रथम वर्ष

नको हा जन्म स्त्रीचा

नको हा जन्म स्त्रीचा
जो कापी पंख आकांक्षेचा
जो देई बालपणीच स्पर्श मातृत्वाचा
जो न कळू देई अर्थ स्वातंत्राचा
न देई हक्क शिक्षणाचा

नको हा जन्म स्त्रीचा
जो करी अर्थ स्पष्ट
'चूल आणि मुल' या म्हणीचा
न देई हक्क स्वातंत्राचा
न देई हक्क बोलण्याचा

नको हा जन्म स्त्रीचा
जो घेई जीव पैशासाठी तीचा
न देई हक्क संरक्षणाचा
जो गळा दाबी तीच्या गर्भाचा
न देई हक्क जन्माला यायचा

नको हा जन्म स्त्रीचा
जो लपवी चेहरा पदराखाली तीचा
न देई हक्क जक्षासमोर यायचा
न देई हक्क कला, कौशल्याचा
जो हिरावतो हक्क ओळख बनवायचा...

नको हा जन्म स्त्रीचा....
नको हा जन्म स्त्रीचा....

कु. वैष्णवी गजानन राऊत
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

तडजोड कशी करावी हे जाणणाराच, जगावे कसे हे जाणत असतो.

जगणं मात्र शिकवून गेली

विचार मनमोहक तिचे हास्य देऊन
हृदय माझे जिंकून गेली
वावरतांना सर्वांमध्ये बिज प्रेमाचे पेरुन गेली

वाळवंटात हरवलेल्या माझ्या मनाला
सावली ती देऊन गेली
ति जरी नसली येथे,
मात्र आठवण तिची राहून गेली.

खुप काही घडलं आमच्यात,
परंतु विश्वास माझा जिंकून गेली
नेहमीच हसायची ती मात्र,
शेवटी मला रडवून गेली

चुकलेलं सर्वकाही फक्त
माझ्यासाठीच विसरुन गेली
सर्वकाही द्वेषाचे अनुभव
चुपचाप अशी गिळून गेली

आठवणीत राहील सर्वांच्या
मात्र मन माझ दुखवून गेली
एकट मला सोडून जातांना
जगण मात्र शिकवून गेली.

कु. समिक्षा चव्हाटे
बी.कॉम. तृतीय वर्ष



ति सध्या काय करते

विचार आला तिचा कि हृदय अजूनही धडधडते
म्हणनूच विचारतोय, ति सध्या काय करते

हळूच जुण्या आठवणीत रमलो की मन मात्र घाबरतेय
म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

प्रत्येक क्षणा-क्षणात आजही ती मला आठवते
म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

वास्तवात हरलो मी परंतु स्वप्नात माझ्या ती पैज हरते
म्हणनूच विचारतो, ति सध्या काय करते

वाटतं आजही मला ति माझ्यावर प्रेम करते
म्हणूनच विचारतोय, ति सध्या काय करते

वेळ गेली निघून ती आणि प्रेमाची वाटही आज सरतेय
परंतु मन अजुनही विचारतेय कि, ति सध्या काय करते

कु. समिक्षा चव्हाटे
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

उठो जागो और लक्ष्य तक मत रुको । – स्वामी विवेकानंद

अपंगता से ओलम्पिक गोल्ड मैडल तक... विल्मा रुडोल्फ

यह कहानी है उस लड़की की जिसे ढाई साल की उम्र में पोलियो हुआ, जो ११ साल की उम्र तक बिना ब्रेस के चल नहीं पाई पर जिसने २१ साल की उम्र में १९६० के ओलम्पिक में दौड़ में ३ गोल्ड मैडल जीते...

यह कहानी है उस लड़की की जिसका जन्म बेहद गरीब परिवार में हुआ, पर गरिबी जिसके हौसलो को नहीं तोड़ पाई...

यह कहानी है विल्मा रुडोल्फ की जिसका जन्म अमेरिका के टेनेसी प्रान्त के एक गरीब घर में हुआ था । चार साल की उम्र में विल्मा रुडोल्फ को पोलियो हो गया और वह विकलांग हो गई । विल्मा रुडोल्फ केलिपर्स के सहारे चलती थी । डॉक्टरों ने हार मान ली और कह दिया की वह कभी भी जमीनपर चल नहीं पायेंगी ।

विल्मा रुडोल्फ की माँ सकारात्मक विचारो महिला थी और उन्होंने ही विल्मा को प्रेरीत किया और कहा की तुम कुछ भी कर सकती हो इस संसार में नामुनकिन कुछ भी नहीं ।

विल्मा ने अपनी माँ से कहा 'क्या मैं दुनिया की सबसे तेज धावक बन सकती हूं ?'

माँ ने विल्मा से कहा की ईश्वर पर विश्वास, मेहनत और लगन से तुम जो चाहो वह प्राप्त कर सकती हो ।

नौ साल की उम्र में उसने जीद करके अपने केलिपर्स उतार दिए और चलना प्रारम्भ किया । इस प्रयास में वह कई बार धराशायी हुई एवं दर्द सहन करती रही लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी एवं लगातार कोशिश करती गयी । आखिर में जीत उसी की हुई और एक-दो वर्ष बाद वह बिना किसी सहारे चलने में कामयाब हो गई ।

उसने १३ वर्ष की उम्र में अपनी पहली दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और सबसे अंतिम स्थान पर आई । इस प्रकार कई बार दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लेने और कई बार हारने के बावजूद वह पिछे नहीं हटी और कोशिश करती गई । और आखिरकार एक ऐसा दिन भी आया जब उसने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया ।

१५ वर्ष की अवस्था में उसने टेनेसी राज्य विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ उसे कोच एड टेम्पल मिले । कोच ने उससे कहा - 'तुम्हारी इसी इच्छाशक्ति की वजह से कोई भी तुम्हे रोक नहीं सकता और मैं इसमें तुम्हारी मदद करुँगा ।फ

विल्मा ने लगातार कडी मेहनत की एवं आखिरकार उसे ओलम्पिक में भाग लेने का मौका मिल ही गया । विल्मा का सामना एक ऐसी धाविका (जुत्ता हेन) से हुआ जिसे अभी तक कोई हरा नहीं सका था । विल्मा ने पहली रेस (१०० मीटर) तथा दुसरी रेस (२०० मीटर) में जुत्ता को हराकर अपने दो स्वर्णपदक जीत लिये ।

तिसरी दौड (४०० मीटर) की रिले रेस थी और विल्मा का सामना एक बार फिर जुत्ता से ही था । जब विल्मा के दौड़ने की बारी आई, उससे बेटन छूट गयी लेकीन विल्मा ने देख लिया की दुसरे छोर पर जुत्ता हेन तेजी से दौड़ी चली आ रही है । विल्मा ने गिरी हुई बेटन उठायी और मशीन की तरह तेजी से दौड़ी तथा जुत्ता हेन को तिसरी बार भी हराया और अपना तिसरा गोल्ड मैडल जिता।

इस तरह एक विकलांग महिला (जिसे डॉक्टरों ने कह दिया था कि वह कभी चल नहीं पायेंगी) वह विश्व की सबसे तेज धाविका बन गयी और यह साबित कर दिया की इस दुनिया में नामुनकीन कुछ भी नहीं ।

(Nothing is Impossible) ।

कु. समिक्षा हरिदास दांदळे
बी.कॉम. इंग्लिश मिडीयम, तृतीय वर्ष

'नारी की उन्नती या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है । - अरस्तू

फर्क बेटा-बेटी का

कोई मुझे इतना बतलाये, फर्क है क्या इन दोनो में ।
एकही रंग है खुन का, एकही मज्जा हड्डी में ।
दोनों ही पैदा होते है अपनी माँ की कोख से ।
दर्द बराबर होता है माँ को दोनो की पैदाईश में ।
कोख से बाहर आते ही, फर्क समझ में आता है ।
बेटा हे तो बटे बधाई, बेटी है तो आफत है ।
शुरु होता है पहले दिन से, अजीब सौतेला व्यवहार है ।
दुध बचा तो मिला बेटी को, बेटे का पहिला अधिकार है ।
बेटा तो परिवारजनों का आँखो का तारा बनता है ।
हाथों हाथ लिया जाता है, पालने में पलता है ।
बेटी जुझे परिस्थितियो से, खुद बड़ी हो जाती है ।
फिर बनती है माँ का सहारा पर प्यार से दूर रहती है ।
समझ नही आता है मुझको, माँ भी तो एक बेटी थी ।
हर पल तिरस्कार की पिडा उसने सही थी ।
फिर कैसे कर सकती है वो बेटी पर ये अत्याचार है ।
याद नही क्या आता उसको बचपन में जो थी लाचार है ।

कु. राणी रामलखन पाली
बी.ए. द्वितीय वर्ष

दोस्ती

आँखो से मुस्कुराना दोस्ती नही होती
जज्बातो को अलफास देना दोस्ती नहीं होती
यहाँ हर कदम पर दोस्ती के मायने बदलते है
बस दोस्त कहने पर से दोस्ती नही होती
खैर, दोस्त हजारो मिल जाते है कोई यार नही मिलता
यारी पर हो कुर्बान ऐसा प्यार नही मिलता
अब तो दोस्ती एक व्यापार है
कलाई पर बँड हो तो ही मेरा यार है, क्या कयामत है,
दोस्ती अब बाजारो में बिकती है,
दोस्त हो ना हो फिर भी दोस्ती दिखती है,
फिर भी दोस्ती दिखती है ।

कु. दिव्या राजेश चव्हाण
बी.ए. द्वितीय वर्ष

ऐ जिंदगी

अपनो से ही हम खफा नही
तो गैरों से बचकर क्या करु
जिंदगी तो भरी पड़ी है
इन मुश्किल हालातो में
सोचा था अच्छा वक्त निकालु
पर झुंठी ग्वाही देकर भी क्या करु
पाबंदी नही मेरे जज्बातो में
इन उँचे खयालो के सपनों मे
खुलकर सबको बताके क्या करु
छिपना हमें आता नही
दिखाकर भी लोग समझते नहीं
कमजोर नहीं हम इन हालातो पर
तो मजबुरी दिखाकर क्या करु
नाराजगी तो पता है हमें
कभी कोशिशे होती है
दुर हॅटाने के लिए
मगर ऐ जिंदगी तुझे बताकर क्या करु
उस वक्त तो हम छोटे थे
बात समझने के लिए
ऐ मेरी जिंगदी
अब समझकर भी समझाके क्या करु

कु. राधिका सावके
बी.ए. तृतीय वर्ष

मनुष्य का अनुमान कभी उसकी
त्रुटियों से नहीं लगाना चाहिए,
मनुष्य में जो महान
सद्गुण होते है, वे उसके हैं,
किन्तु उसकी त्रुटियां मानवता
की सामान्य दुर्बलताएँ है,
अतः उसके चरित्र के मूल्यांकन में उनका
कोई महत्व नहीं होना चाहिए ।

- स्वामी विवेकानन्द

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है – महात्मा गांधी

मेरी कोम की दुनिया

जीवन परिचय – मेरी कोम का पुरा नाम 'मांगते चुंगने जंग मेरी कोम' इनका जन्म १ मार्च १९८३ कन्गथेइ, मनिपुर, भारत में हुआ। माता-पिता का नाम मांगते अक्हम को – मांगते तोंपा कोम है। पति का नाम करुँग ओंखोलर कोम है।

मेरी कोम एक ऐसी महिला खिलाडी जिन्होने अपनी महान उपलब्धियों से भारत को गौरवान्वित किया है, जो एक अकेली भारतीय महिला बॉक्सर है। मेरी ने २०१२ में हुए ओलम्पिक में क्वालीफाई किया था, और ब्राँझ मैडल हासिल किया था। पहली बार कोई भारतीय बॉक्सर महिला यहाँ तक पहुँची थी, इसके अलावा वे ५ बार वर्ल्ड बॉक्सर चैम्पियनशीप जीत चुकी है। मेरी ने अपने बॉक्सिंग करिअर की शुरुवात १८ साल की उम्र में ही कर दी थी।

मेरी कोम मेरे लिए एक प्रेरणास्त्रोत महिला है। इनका जीवन कई उतार चढ़ाव से भरा हुआ रहा। बॉक्सिंग में करियर बनाने के लिए उन्होने बहुत मेहनत की और अपने परिवार तक से लड बैठी थी। इनके पिता एक गरीब किसान थे। ये चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। कम उम्र से ही मेरी बहुत मेहनती रही है, अपने माता-पिता की मदद करने के लिए वे भी उनके साथ काम करती थी, साथ वे अपने भाई-बहनों की देखभाल करती थी। मेरी ने इन सब के बाद भी पढ़ाई जारी रखी वे ९ वी एवं१० वी के लिए आदिमजाति हाई स्कूल में चली गई किन्तु वे परीक्षा में पास नहीं हो पाई। स्कूल की पढ़ाई मेरी ने बीच में ही छोड दि और आगे उन्होने NIOS की परीक्षा दि और अपना ग्रॅज्युएशन चुराचांदपूर कॉलेज इम्फाल से किया।

मेरी कॉम का कार्यक्षेत्र – मेरी को बचपन से ही एथलीट बनने को शौक रहा, स्कूल के समय में वे फुटबॉल जैसे खेलो में हिस्सा लेती थी। लेकिन मजाक कि बात यह है कि उन्होने बॉक्सिंग में कभी भाग नहीं लिया था। सन १९९८ में बॉक्सर 'डिंगको सिंह' ने एशियन गेम्स में गोल्ड मैडल जीता, वे मणिपूर के थे। यहा मेरी ने बॉक्सिंग करते हुए डिंगको को देखा, और इसे अपना करियर बनाने की ठान ली। इसके बाद उनके सामने पहली चुनौती थी, अपने घरवालों को इसके लिए राजी करना, छोटी जगह के साधारण से लोक, बॉक्सिंग को पुरुषो का खेल समझते थे, और उन्हे लगता था इस तरह के गेम में बहुत ताकत मेहनत लगती है, जो इस कम उम्र की लड़की के लिए ठिक नहीं है।

मेरी ने मन मे ठान लिया था कि वे अपने लक्ष्य तक जरुर जायेंगी, चाहे इसके लिए उन्हे कुछ भी क्यों न करना पडे। मेरी ने अपने मॉ-बाप को बिना बताये इसके लिए ट्रेनिंग शुरु कर दी। एक बार इन्होने खुमान लम्पक स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स में लड़कीयों को लड़को से बॉक्सिंग करते देखा, जिसे देख वे स्तब्ध रह गई और यहाँ से अपने सपने को लेकर वे परिपक्व हो गई। मणिपूर राज्य के बॉक्सिंग कोच एक नरजीत सिंह से मिली और उन्हे ट्रेनिंग देने के लिए निवेदन किया वे इस खेल के लिए देर रात तक प्रॅक्टिस करती रहती थी।

बॉक्सिंग शुरु करने के बाद उन्हे पता था कि उनका परिवार उनके बॉक्सिंग में करियर बनाने के विचार को कभी नहीं मानेगा, इस वजह से उन्होंने इस बात को छुपाकर रखा था। १९९८ से २००० तक वे अपने घर बिना बताये इसकी ट्रेनिंग लेती रही सन २००० में जब मेरी ने 'वुमन बॉक्सिंग' चैम्पियनशीप में जीत हासिल की और उसे

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोता है।

बॉक्सर का अवार्ड मिला और यह न्युज वहा के हर एक समाचार पत्र में भी उनके बॉक्सर होने का पता चला । इस जीत के बाद उनके घरवालों ने भी उनकी इस जीत को सेलिब्रेट किया । इसके बात मेरी ने पश्चिम बंगाल में आयोजित वुमन्स बॉक्सिंग चॅम्पियनशीप में गोल्ड मैडल जीत, अपने राज्य का नाम उँचा किया ।

इतनी कठिन परिश्रम करने के बाद आज मेरी आंतरराष्ट्रीय स्तरपर बॉक्सिग महिला के नाम से जानी जाती है । मेरी कोम द्वारा बोली गई पंक्तियाँ मुझे सदा प्रेरित करती है :-

अगर मैं दो बच्चों की मॉ होकर एक मेडल जीत सकती हूँ, तो आप सब भी ऐसा कर सकते है । मुझे एक उदाहरण के तौर पर लें और कभी हार ना मानें ।

कु. संध्या रा. प्रजापति
बी.ए., द्वितीय वर्ष

कब तक रोकोगे

अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है ।
अनाथो की बनी माई वो सिंधूताई महान नारी है ।
सभ्यता की मुरत होकर भी
माता सीता को यहा अग्नीपरीक्षा देनी है ।
फिरोज गांधी को त्याग के ही यहा इंदिरा प्रधानमंत्री बनी है ।
मर्दो से लढ़कर मनु यहाँ 'झाँसी की राणी' बनी है ।
अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है ।
तोडी रिती की जंजीरे तो यहाँ रजिया सुल्तान बनी है ।
नारी अस्तित्व के लिए यहाँ खाई सावित्री फुले ने गाली है ।
कब तक रोकोगे नारी को उसे भी आजादी प्यारी है ।
दिपक बनके जली वो केवल नारी है ।
अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है ।
याद करो 'कल्पना चावला' को गगन छु के
वो मौत को गले लगी है ।



अपाहिज होकर भी अरुणिमा ने एव्हरेस्टपर तिरंगा लहराया है ।
छिन के लाई पती का प्राण वो सत्यवान सावित्री नारी है ।
युगो युगो से यहा लढ रही महान नारी है ।
अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है ।
पति को दि जिसने प्रेरण वो आंबेडकर रमाई है ।
दुःखी यो के लगी गले वो मदर टेरेसा सबकी माई है ।
आय.पी.एस. किरण बेदी आज हमारी आयडल है ।
समझ सकी जो नारी की भावना को धन्य वो
राधादेवी गोयनका महान नारी है ।
समझो अभी भी नारी को वो हारी बाजी भी जीती है ।
अटल रही हिमालय जैसी वो केवल नारी है ।

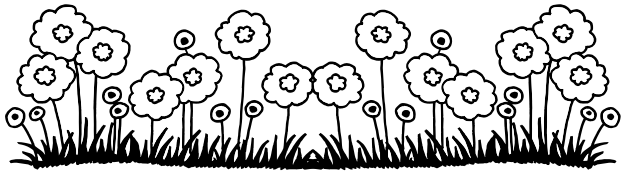

कु. सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. प्रथम वर्ष

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है । – कमलापति त्रिपाठी

भारतीय रक्षा मंत्रालय की कमान - निर्मला सीतारमण

जीवन निर्मला सीतारमण भारतीय राजनिती का एक परिचीत नाम है । यह दक्षिण पंथी विचारधारा की नेत्री है और एक लम्बे समय से भारतीय जनता पार्टी में अंतर्गत कार्य कर रही है । २०१४ के लोकसभा मे राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन के जीतने के बाद इन्हे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने कैबिनेट में स्थान दिया । देश के कैबिनेट में शामिल होने के साथ ही ये भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता के पद पर भी है, जिस वजह से इन्हे कई चैनलो पर डिबेट में पार्टी के पक्ष से बोलते हुए देखा जाता है । भारतीय जनता पार्टी में ये तामिलनाडू के तिरुचिरापल्ली से है । तात्कालिक समय में इन्हे देश के रक्षा मंत्रालय की कमान सौपी गयी थी, जो बहुत ही अहम मंत्रालय है । यहाँ पर इनके जीवन सम्बधित विशेष बातों का वर्णन किया जा रहा है ।

निर्मला सीतारमन का जन्म १८ अगस्त १९५९ (आयु ५९) तिरुचिरपल्ली, तामिलनाडू, भारत में हुआ । शिक्षा उन्होने भारत विद्या अर्जन जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से एम.फिल में किया है । उनके जीवन संगी का नाम डॉ. परकाल प्रभाकर और उन्हे संतान एक पुत्री है । आवास नई दिल्ली ।

उनका पुर्व जीवन और करियर - निर्मला सीतारमण ने १९८० सीतालक्ष्मी रामास्वामि कॉलेज, तिरुचिरापल्ली, तामिलनाडू से स्नातक कि शिक्षा पुर्ण की । उसके बाद उन्होने भारत विद्या अर्जन जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से आंतरराष्ट्रीय अध्ययन विषय में एम.फिल में किया । निर्मला सीतारमण प्राइस वॉटरहाउस कूपर्स के साथ वरिष्ठ प्रबंधक (शोध एवं विश्लेषण) के तौर पर भी कार्य कर चुकी है । उन्होने कुछ समय के लिए बीबीसी विश्व सेवा के लिए भी कार्य किया । निर्मला सीतारमण हैद्राबाद में स्थित प्रणव स्कूल के संस्थापको में से एक है ।

उनका राजनितीक जीवन - निर्मला सीतारमण २००३ से २००५ तक राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्या रह चुकी है । वे सितंबर २००३ ते २०१७ तक भाारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता के साथ-साथ भारत की वाणिज्य और उद्योग (स्वतंत्र प्रभार) एवं वित्त व कार्पोरेट मामलो की राज्यमंत्री रही है । और सितंबर २०१७ को श्री. नरेन्द्र मोदी की सरकार में उन्हे रक्षा मंत्री बनाया गया वे श्रीमती इंदिरा गांधी के बाद भारत के रक्ष मंत्रालय की कमान संभालने वाली स्वतंत्र भारत की दूसरी महिला और स्वंतत्र रुप से पहली पूर्णकालिक महिला रक्षामंत्री रह चुकी है ।

उनका व्यक्तिगत जीवन - निर्मला सीतारमन का विवाह डॉ. परकाल प्रभाकर से हुआ जो जनेवि और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के पूर्व छात्र है । वो एक राजनितीज्ञ, राजनितीक टिकाकार, लोकप्रिय टि व्ही एकंर और एक बुध्दिजीवी है । वर्तमान में डॉ. परकाल प्रभाकर, राईटफोलियो (www.rightfolio.co.in) में एम.डी है ।

यह है हमारे पुर्व रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण जी की जीवन की कथा जीसमें पूर्वजीवन, करियर, राजनितिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन को थोडे शब्दों में ही विश्लेषण किया गया है ।

कु. चंचल आर. ठाकूर
बी.कॉम., तृतीय वर्ष

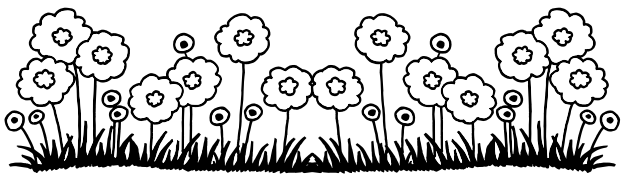

**हजार योध्दाओंपर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने उपर विजय पाता है,
वही सच्चा विजयी है । - गौतम बुध्द**

भारतीय कल्पना चावला की अंतरिक्ष उड़ान

कल्पना चावला का निधन १ फरवरी २००३ को हुआ, वह अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थी । कल्पना ने न सिर्फ अंतरिक्ष की दुनिया में उपलब्धिया हासिल की, बल्कि तमाम छात्र-छात्राओं को सपनों को जीना सिखाया, भले ही १ फरवरी २००३ को अंतरिक्ष से आते समय कोलंबिया स्पेस शटल के दुर्घटनाग्रस्त होने के साथ कल्पना की उड़ान रुक गई लेकिन आज भी वह दुनिया के लिए एक मिसाल है । उनके वे शब्द सत्य हो गए जिसमें उन्होंने कहा था कि मे अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ ।

नासा वैज्ञानिक और अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल में हुआ था । कल्पना अंतरिक्ष में जानेवाली प्रथम भारतीय (उन्होंने अमेरिका की नागरिकता ले ली थी) महिला थी । उनके पिता का नाम बनारसी लाल चावला और माँ का नाम संज्योती था । कल्पना ने फ्रांस के जान पियर से शादी की जो एक फ्लाईंग इंस्ट्रक्टर थे ।

कल्पना की पढ़ाई करनाल के टैगोर बाल निकेतन में हुई, जब वह ८ वी क्लास में पहुंची तो उन्होंने अपने पिता से इंजिनियर बनने की इच्छा जाहिर की, पर कल्पना के पिता उन्हें डॉक्टर या टिचर बनाना चाहते थे । बचपन से ही कल्पना की दिलचस्पी अंतरिक्ष और खगोलीय परिवर्तन में थी । कल्पना फिर अपने सपनों को साकार करने १९८२ में अंतरिक्ष विज्ञान की पढ़ाई के लिए अमेरिका रवाना हुई । फिर साल १९८८ में वो नासा अनुसंधान के साथ जुडी, जिसके बाद १९९५ में नासा ने अंतरिक्ष यात्रा के लिए कल्पना चावला का चयन किया ।

अंतरिक्ष की प्रथम उड़ान उन्होंने एस टी एस ८७ कोलंबिया शटल से संपन्न कि । इसकी अवधि १९ नवंबर १९९७ से ५ दिसंबर १९९७ थी । अंतरिक्ष की पहली यात्रा के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में ३७२ घंटे बिताए और पृथ्वी की २५२ परिक्रमा पुरी की इस सफल मिशन के बाद कल्पना ने अंतरिक्ष के लिए दुसरी उड़ान कोलंबिया शटल २००३ से भरी । कल्पना की दूसरी और आखरी उड़ान १६ जनवरी, २००३ को स्पेस शटल कोलंबिया से शुरु हुई । यह १६ दिन का अंतरिक्ष मिशन था, जो पुरी तरह से विज्ञान और अनुसंधान पर आधारीत था ।

१ फरवरी २००३ को धरती पर आने के क्रम में यह यान पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही टूटकर बिखर गया । मिडिया रिपोर्ट के मुताबिक कोलंबिया स्पेस शटल के उड़ान भरते ही पता चल गया था कि ये सुरक्षित जमीन पर नहीं उतरेगा । तय हो गया था कि सातों अंतरिक्ष यात्री मौत के मुँह में समायेंगे फिर भी उन्हें इसकी जानकारी नही दि गई । बात हैरान करने वाली है, लेकिन यही सच है इसका खुलासा मिशन कोलंबिया के प्रोग्राम मैनेजर ने किया था । कल्पना में कभी आलस नहीं था । असफलता से घबराना उसके मन में नही था । वह जो ठान लेती उसे बस करके छोडती थी । आज कल्पना भले ही हमारे बीच नहीं, लेकिन वह हम सबके लिए एक मिसाल है ।

कु. मोहिनी दिनेश टावरी
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है ।
- रवीन्द्रनाथ ठाकूर

बेटी-बेटी

अटल एक नन्हीं सी परी मेरे जीवन में है आयी
मेरे जीवन को महकाती मेरे घर में हे चली आयी,
कोई कहता लक्ष्मी, कोई कहता दुर्गा, तेरे घर में है आयी ।

मैने ना सोचा ये सब बस यही जाना
जब से है आयी मेरी जिंदगी में तब्दीली है ले आयी ।

अब तक तो आझाद था
पर यह मेरे जीवन में जिम्मेदारी है ले आयी
दिन हो या रात बस तेरी याद है हमें आयी
जब जब तु रोती तेरी माँ की आँख है भर आयी

बाबुल को रहता जिस दिन का इंतजार
वह घडी भी है अब आयी,
नाजों से पली गुडिया की बिहाने, बारात है अब आयी

यह कैसी रसम, यह कैसी जुदाई मेरे हिस्से में आयी
पर दिल खुश है मेरी बेटी तेरे जीवन में नई सौगात है आयी
कभी कहीं जीवन में जो तुझे तेरे बाबुल की याद अगर आयी
बस इतनी ही होगी मेरी बेटी
तेरे बाबुल की जीवन भर की कमाई

कु. दिव्या राजेश चव्हाण
बी.ए. द्वितीय वर्ष

ऐ जिंदगी

अपनो से ही हम खफा नही
तो गैरों से बचकर क्या करु
जिंदगी तो भरी पड़ी है
इन मुश्किल हालातो में
सोचा थ अच्छा वक्त निकालु
पर झुंठी ग्वाही देकर भी क्या करु
पाबंदी नही मेरे जज्बातो में
इन उँचे खयालो के सपनों मे
खुलकर सबको बताके क्या करु
छिपना हमें आता नही
दिखाकर भी लोग समझते नहीं
कमजोर नहीं हम इन हालातो पर
तो मजबुरी दिखाकर क्या करु
नाराजगी तो पता हे हमें
कभी कोशिशे होती है
दुर हॅटाने के लिए
मगर ऐ जिंदगी तुझे बताकर क्या करु
उस वक्त तो हम छोटे थे
बात समझने के लिए
ऐ मेरी जिंगदी
अब समझकर भी समझाके क्या करु

कु. राधिका सावके
बी.ए. तृतीय वर्ष

मनुष्य का सबसे बड़ा यदि कोई शत्रु है तो वह है उसका अज्ञान । – चाणक्य

पद्मश्री मालती जोशी

मालती जोशी जी का जन्म एक मध्यमवर्गीय ब्राम्हण परिवार में मराठवाडा प्रदेश की राजधानी औरंगाबाद में ४ जून १९३४ को हुआ । इनका जन्म उनके नानाजी के घर में हुआ था । मालती जोशी का नामकरण भी वहीं पर हुआ । उनके नानाजी रेल विभाग में मॅजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे । महाराष्ट्र को संतो की भूमि कहा जाता है । मालती जोशी जी को आज भी अपनी जन्मभूमि के प्रति लगाव है । मालती जोशी के माता का नाम सौ. सरलाबाई दिघे था वह एक साधारण घरेलू किस्म की महिला थी, उनकी पढ़ाई घर पर ही सम्पन्न हुई । उनके मन में साहित्य और संगीत के प्रति गहरी रुचि थी । उन्ही की काव्यरुची का प्रभाव मालती जोशी पर पडा है । अपनी माता के संबन्ध में मालती जोशी जी ने लिखा है मॉ संगीत की जानकार थी बहुत अच्छा गाती थी । उन्ही से यह संगीत संस्कार मिले । मालती जोशी जी के पिता का नाम कृष्णराव दिघे है वे एक कर्तव्यनिष्ठ जज रहे है । उनका जीवन संघर्षरत रहा है । उन्होंने अपने परिवार के लिए अपने मृत्यु तक संघर्ष किया । उनके पिता गांधीवादी विचारधारा के थे ।

मालती जोशी जी का प्रारम्भिक शिक्षण कई जगहो पर हुआ । उनके पिता सिव्हिल जज थे अतः उनका स्थानातंरण होता रहता था उस वजह से उनके प्रारम्भिक शिक्षण मुंगावली, अम्बाह, सॉवेर में हुआ । उन्होने इंदौर के मालव कन्या विद्यालय से १९५० में दसवी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर इंटर की परिक्षा के बाद उन्होने होलकर कॉलेज से बी.ए. तथा वही पर सन १९५६ में एम.ए. हिंदी किया ।

मालती जोशी जी को बचपन से ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में गहरी रुची थी । स्कूली शिक्षा के साथ-साथ परिवार, समाज एवं वातावरण से उन्होने बहुत कुछ सिखा है । वे अपनी शिक्षा को लेकर अपने लघु उपन्यास पाषाण युक की समर्पण पंक्तियों में लिखती है बाई-पाप को लिखने -पढ़ने का यह रोग उनको विरासत में मिला ।

मालती जोशी जी ने विवाहपूर्व कुछ दिनों के लिए अध्यापन कार्य किया था । यह उनका अध्यापन कार्य केवल अनुभव के तौर पर केवल तीन महिने का रहा था । साथ ही उन्होने कमला नेहरु स्कूल इंदौर में एक वर्ष तक अध्यापक का कार्य किया था ।

मालती जोशी का विवाह ३१ मई १९५९ में श्री सोमनाथ जोशी के साथ हुआ । इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनका दाम्पत्य जीवन सुखी था । उन्हे दो संताने थी, किन्तु २ फरवरी २००१ में उनके पति का हृदगती रुक जाने के वजह से देहांत हुआ और मालती जोशी जी अपने दो संतानो के साथ अकेली पड गई । उनके एक बेटे का नाम ऋषिकेश और दुसरे बेटे का नाम सच्चिदानंद है । ऋषिकेश इंजिनिअर है और लार्सन एण्ड टुर्बो कंपनी मुम्बई में जनरल मॅनेजर के पद पर कार्यरत है । और संच्चिदानंद ने बी.एस.सी., एम.ए और पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन का डिप्लोमा कर कुछ दिन माखनलाल चर्तुवेदी राष्ट्रीय पत्रकारीता विश्वविद्यालय, भोपाल में रजिस्टार का कार्य किया और अब वे कुशाभाऊ विश्वविद्यालय रायपूर में कुलपति के पद पर कार्यरत है ।

मालती जोशी जी हिंदी कथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण कथाकार है । साथ ही व्यंगकार, नाटककार, उपन्यासकार, गीतकार, संगीतज्ञ, बाल कहानीकार के साथ-साथ एक अनुवादिका के रुप में विख्यात है । मालती जोशी जी का व्यक्तित्व का आंतरिक पक्ष भी हमारे सामने आ जाता है । समग्र साहित्य के पठन के बाद उनके व्यक्तित्व के निम्न बिंदु सामने आ जाता है । अपनी

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते है । - कौटिल्य

साहित्यिक यात्रा के बारे में वे लिखती है मेरे साहित्यिक जीवन की शुरुवात गीतों से हुई । फिर बच्चों के लिए कहानियाँ लिखि । कुछ ललित निबन्ध लिखे फिर कहानियाँ का जो दौर शुरु हुआ तो अब तक जारी है ।

उनकी प्रमुख कृतियों मे कहानी संग्रह जैसे – पाषाण युग, मध्यांतर, समर्पण का सुख, मन न हुए दस बीस, मालती जोशी की कहानियाँ, एक घर हो सपनों का, विश्वास गाथा, आखरी शर्त, मोरी रंग दी चुनरिया, अंतिम संक्षेप, एक सार्थक दिन, शापित शैशव, महकते रिश्ते, पिया न जानी, बाबुल का घर, और एक अरात है, मिलियन डालर नोट । बालकथा संग्रह – दादी की घडी, जीने की राह, परीक्षा और पुरस्कार, स्नेह के स्वर, सच्चा सिंगार । उपन्यास संग्रह – पटाक्षेप, सहचारिणी, शोभा यात्रा, राग विराग । व्यंग – हार्ले स्ट्रीट । गीत संग्रह – मेरा छोटा सा अपनापन एवं अन्य संकलन – मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ – आनंदी, परख, ये तेरा घर ये मेरा घर, दर्द का रिश्ता, दस प्रतिनिधी कहानियाँ, अपने आँगन के छोटे, रहिमन धागा प्रेम का ।

उनको मिले पुरस्कार, सन्मान – साहित्यिक शिखर सन्मान, भवभूति, 'अहिंदी भाषी' लेखिक के रुप में सन्मान, अक्षर आदिव्य सन्मान, कला मंदिर सन्मान, गुरुवंदना सन्मान, महिला वर्ष सन्मान एवं अन्य सन्मान इसके साहित्य पर विश्व विद्यालयों में एम.फिल, एवं पी.एच.डी, के लिए कई शोध हुए है ।

उनकी ३४ पुस्तके प्रकाशित जिनमें दो मराठी कथासंग्रह दो उपन्यास पाँच बाल कथाएँ, एक गीत संग्रह और शेष कथासंग्रह सम्मिलीत और उसके साथ हिंदी की लगभग सभी लब्धप्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ एवं लघु उपन्यास प्रकाशित । करीब दो दर्जन कहानियों के रेडियो नाट्य रुपांतर, जया बच्चन द्वारा सात कहानियों पर 'सात फेरे' सिरियल, गुलजार द्वारा निर्देशित सिरियल 'किरदार' में कहानियों का समावेश है ।

'इस प्यार को क्या नाम दू' शीर्षक अपने संस्मरण में पद्मश्री से सन्मानित । प्रसिध्द कथा लेखिका मालती जोशी लिखती है कि एक अभूतपुर्व घटना मेरे लिए बहुत खास है। लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व की बात । उस को क्या नाम दू । समझ में नहीं आता पर कुछ ऐसे क्षण होते है, जब अपने लेखक होने पर गर्व होता है । मालती जी की कहानियाँ हर किसी के मन को छू लेती है ।

मालती जोशी को अनेक पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है । उन्हे २६ जनवरी २०१८ को पद्मश्री पुरस्कार से सन्मानित भी किया गया है । मालती जोशी देश की स्वतंत्रता के बाद अग्रणी कहानीकार है । इन्होनें अपनी सुक्ष्म दृष्टि से जीवन और जगत की अनुभूतियों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है । साठोत्तरी हिंदी तथा लेखिकाओं में एक महत्त्वपुर्ण नाम मालती जोशी का है । इस काल में अनेक लेखिकाओं ने हिंदी कथा साहित्य को समृध्द किया है किन्तू मालती जोशी का स्थान सर्वोपरी है । मालती जोशी इस युग की एक सर्वश्रेष्ठ कथाकार के रुप में उभरती नजर आती है ।

कु. रिना यादव
बी.ए. प्रथम वर्ष

हर पल में प्यार है,
हर लम्हे में खुशी है,
खो दो तो याद,
जी लो तो जिन्दगी ।

सफलता की खुशिया मनाना ठीक है लेकिन असफलताओ से सबक सीखना अधिक महत्वपूर्ण हो ।
– बिल गेट्स

अनाथ बच्चों की माई - सिंधूताई सपकाळ

सिन्धुताई का जन्म १४ नवम्बर १९४७ को महाराष्ट्र के वर्धा जिल्हे में पिंपरी मेघे गाँव में हुआ था । उनके पिताजी का नाम 'अभिमान साठे' था जो एक चर्वाह (जानवरों को चरानेवाला) थे । बेटी होने की वजह से सिंधुताई को घर में सभी लोग नापसंद करते (क्योंकी वे एक बेटी थी, बेटा नहीं) इसलिए उन्हे घर में चिंधी कहकर (कपडे का फटा टुकडा) बुलाते थे । परंतु उनके पिताजी सिंधु को पढ़ाना चाहते थे । इसलिए वे सिंधु कि माँ के खिलाफ जाकर सिंधु को पाठशाला भेजते थे । माँ का विरोध और घर की आर्थिक परिस्थितीयों की वजह से सिंधु की शिक्षा में बाधाये आती रही जब वे चौथी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण हुई तब आर्थिक परिस्थिती, घरकी जिम्मेदारियाँ और बालविवाह इन कई कारणों कि वजह से उन्हे पाठशाला छोडनी पड़ी ।

जब सिंधूताई १० साल की थी तब उनकी शादी ३० वर्षीय श्रीहरी सपकाळ से हुई । जब उनकी उम्र २० साल की थी तब वह ३ बच्चो कि माँ बनी थी । गाँववालो को उनकी मजुरी के पैसे ना देनेवाले गाँव के मुखियाँ कि शिकायत सिंधुताई ने जिला प्रशासन अधिकारी से की थी अपने इस अपमान का बदला लेने के लिए मुखियाने श्रीहरी (सिंधुताई के पती) को सिंधुताई को घर से बाहर निकालने के लिए पवृत्त किया जब वे ९ महिने की गर्भवती थी और उसी रात उन्होने गाय-भैसो के तबेले में एक बेटी को जन्म दिया । जब वे अपने माँ के घर गयी तब उनकी माँ ने उन्हे घर में रहने से इंकार कर दिया (उनके पिताजी का देहांत हुआ था वरना वे अवश्य अपनी बेटी को सहारा देते) ।

सिंधुताई अपनी बेटी के साथ रेल्वे स्टेशन पे रहने लगी थी । पेट भरने के लिये भीख माँगती और रात को खुद को और बेटी को सुरक्षित रखने के लिये शमशान में रहती । उनके इस संघर्षमयी काल में उन्होने यह अनुभव किया कि देश में कितने सारे अनाथ बच्चे है जिनको एक माँ की जरुरत है । तब से उन्होने निर्णय लिया जो भी अनाथ उनके पास आएगा वह उनकी माँ बनेंगी उन्होने अपनी खुद कि बेटी को श्री दगडूशेट हलवाई, पुणे महाराष्ट्र ट्रस्ट में गोद दे दिया ताकि वे सारे अनाथ बच्चो की माँ बन सके ।

सिंधुताई ने अपना पुरा जीवन अनाथ बच्चो के लिये समर्पित किया है । इसलिए उन्हे माई (माँ) कहा जाता है । उन्होने १०५० अनाथ बच्चो को गोद लिया है । उनके परिवार में आज २०७ दामाद और ३६ बहुएँ है १००० से भी ज्यादा पोते - पोतियाँ है । उनकी खुद की बेटी वकील है और उन्होने गोद लिए बहोत सारे बच्चे आज डॉक्टर, अभियंता, वकील है और उनमें से बहोत सारे खुद का अनाथ आश्रम भी चलाते है । सिंधुताई को कुल २७३ राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए है जिनमे 'आहिल्याबाई होळकर पुरस्कार' भी शामिल है । जो महाराष्ट्र राज्य द्वारा महिला एवं बच्चों के लिऐ काम करनेवाले समाजसेवकों को मिलता है । सिंधुताई उनको मिले हुऐ पुरस्कारो की धनराशी का उपयोग अपने आश्रम के लिए करती है । २०१० साल में सिंधुताई के जीवनपर आधारीत मराठी फिल्म भी बनाई गई थी उसका शिर्षक 'मी सिंधुताई सपकाळ' जो ५४ वे लंदन फिल्म मोहोत्सव के लिए भी चुनी गई थी ।

सिंधुताई के पती जब ८० साल के हो गये थे तब वे उनके साथ रहने के लिये आये थे । सिंधुताई ने अपने पति को एक बेटे के रुप में स्विकार किया ये कहते हुए कि अब वो सिर्फ एक माँ है । आज वे बड़े गर्व के साथ बताती है की

महिलाएं इस समाज की वास्तविक आर्किटेक्ट है ।

वो (उनके पति) उनका सबसे बडा बेटा है । सिंधुताई के अनाथ आश्रम पुणे, वर्धा, सासवड (महाराष्ट्र) मे स्थित है । जैसे सन्मती बाल निकेतन, भेल्हेकर वस्ति, हडपसर पुणे., ममता बाल सदन, कुम्हारवालन, सासवड., माई आश्रम, चिखलदरा जि. अमरावती. , अभिमान बाल भवन, वर्धा एवं सप्तसिंधु महिला आधार, बालसंगोपन एवं शिक्षण संस्था, पुणे.

सिंधुताई कविता भी लिखती है और उनकी कविताओ में जीवन का पुरा सार होता है । वे अपनी माँ का आभार व्यक्त करती है क्यों की वे कहती है अगर उनकी माँ ने उनको पती के घर से निकालने के बाद घर में सहारा दिया होता तो आज वो इतने सारे बच्चों की माँ नही बन पाती ।



बेटियाँ

माँ के आते ही ममता झलक जाती है ।
पत्नी के आते ही प्यार की झडी लग जाती है ।
बहन के आते ही उस पर प्यार उमड़ जाता है ।

फिर बेटी के आते ही
यह चेहरा फिका क्यो पड़ जाता है ।
बेटियाँ ही है जो घर को रोशन करती है ।
बेटियाँ ही है जो माँ, बहन, पत्नी
का फर्ज पुरा करती है ।
बेटियाँ ही है जो ससुराल को भी
अपना मान लेती है ।

बेटियाँ न हो तो माँ शब्द कहाँ से आएंगे ।
बेटियाँ न हो तो लड़का कुंवारा रह जाएगा ।
बेटियाँ न हो तो रक्षाबंधन पर हाथ सूना रह जायेगा ।
बेटी अभिशाप नहीं वरदान है ।
बेटी अच्छे कर्मो की पहचान है ।
बेटी है तो कल है ।
बेटी बचाओ । बेटी पढ़ाओ ।

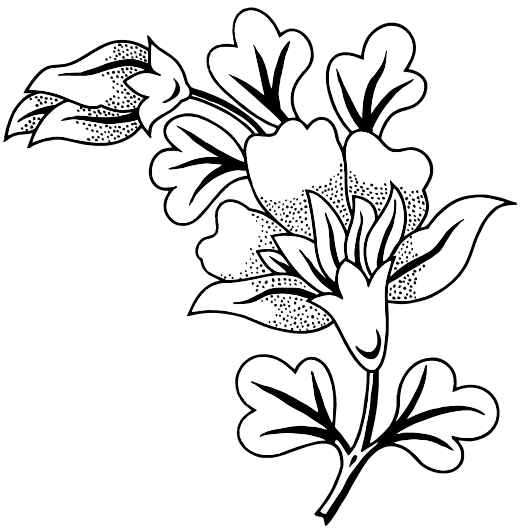

कु. नेहा दिनानाथ शुक्ला
बी.ए. द्वितीय वर्ष

आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत से असफलता को हराया जा सकता है ।
– डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

भारत की प्रथम शिक्षिका - सावित्रीबाई फुले

देश की प्रथम महिला अध्यापिका एवं नारीमुक्ती आंदोलन की पहिली नेता । एक ऐसी महिला जिन्होने उन्नीसवी सदी में छुआ-छुत, सतीप्रथा, बाल-विवाह एवं विधवा विवाह का निषेध किया एवं कुरितीयों के विरुध्द अपने पती के साथ मिलकर काम किया ।

सावित्रीबाई फुले देश की पहिली महिला अध्यापिका एवं नारी मुक्ती अभियान आंदोलन की पहली नेता थी, जिन्होने अपने पती ज्योतिबा फुले के सहयोग से देश में महिला शिक्षा की नीव रखी । सावित्रीबाई फुले एक दलित परिवार में जन्मी महिला थी, लेकीन उन्होने उन्नीसवी सदी में महिला शिक्षा की शुरुवात के रुप में घोर ब्राम्हणवाद के वर्चस्व को सिधी चुनौती देने का काम किया था । उन्नीसवी सदी में छुआ-छुत, सतीप्रथा, बाल-विवाह, जैसी कुरितीया बुरी तरह से व्याप्त थी । उक्त सामाजिक बुराईया किसी प्रदेश विशेष में ही सिमीत न होकर संपूर्ण भारत में फैल चुकी थी । महाराष्ट्र के महान समाज सुधारक, विधवा पुर्नविवाह आंदोलन के तथा स्त्री शिक्षा समानता के अनुयाई महात्मा ज्योतिबा फुले की धर्मपत्नी सावित्रीबाई ने अपने पति के सामाजिक कार्यो में न केवल हाथ बटाया बल्कि अनेक बार उनका मार्गदर्शन भी किया । सावित्रीबाई का जन्म महाराष्ट्र के सातारा जिले में नायगांव नामक छोटे से गाँव में हुआ ।

महात्मा फुले द्वारा अपने जीवन काल में किये गये कार्या में उनकी धर्मपत्नी सावित्रीबाई का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा । लेकीन फुले दंपति के कामों का सही लेखा-जोखा नहीं किया गया । भारत के पुरुष प्रधान समाज ने शुरु से ही इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया की नारी भी मानव है और पुरुष के समान उसमें भी बुद्धी है । एवं उसका भी अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व है । उन्नीसवी सदी में भी नारी गुलाम रहकर सामाजिक व्यवस्था की चक्की में ही पिसती रही । अज्ञानता के अंधकार, कर्मकांड, वर्णभेद, जात-पात, बाल विवाह, मुंडन तथा सतिप्रथा आदि कुप्रथाओं से संपूर्ण नारी जाती ही व्यथित थी । उसी समय महात्मा फुले ने समाज की रुढीवादी परम्पराओं से लोहा लेते हुये कन्या विद्यालय खोले ।

भारत मे नारी शिक्षा के लिये किय गये पहले प्रयास के रुप में महात्मा फुले ने अपने खेत में आम के वृक्ष के निचे विद्यालय शुरु किया । यही स्त्री शिक्षा की सबसे पहले प्रयोगशाला भी थी, जिसमें सगुणाबाई क्षीरसागर व सावित्रीबाई विद्यार्थी थी । उन्होने खेत की मिट्टी मे टहनियों की कलम बनाकर शिक्षा लेना प्रारंभ किया । सावित्रीबाई ने देश की पहली भारतीय स्त्री अध्यापिका बनने का ऐतिहासिक गौरव हासिल किया । धर्म-पंडितो ने उन्हे अश्लील गालियाँ दी, धर्म डुबोने वाली कहा तथा कई लांछन लगाये, यहा तक कि उनपर पत्थर एवं गोबर तक फेका गया । भारत में ज्योतिबा तथा सावित्रीबाई ने शुद्र एवम स्त्री शिक्षा का आरंभ करके नये युग की नीव रखी । इसलिये ये दोनो युगपुरुष और युगस्त्री का गौरव पाने के अधिकारी हुये । दोनो ने मिलकर 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की । इस संस्था की काफी ख्याती हुई और सावित्रीबाई स्कूल की मुख्य अध्यापिका के रुप में नियुक्त हुई । फुले दंपति ने १८५१ मे पुणे के रास्ता पेठ में लडकियों का दूसरा स्कूल खोला और १५ मार्च १८५२ मे बतालपेठ में लड़कियों का तीसरा स्कूल खोला ।

यदि कुछ प्राप्त करना चाहते हो, तो अर्पित करना सिखो ।

उनकी बनाई हुई संस्था 'सत्यशोधक समाज' ने १८७६ व १८७९ के अकाल में अन्न छत्र चलाये और अन्न इकठ्ठा करके आश्रम मे रहने वाले २००० बच्चे को खाना खिलाने की व्यवस्था की। २८ जूवरी १८५३ को बाल-हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की, जिसमें कई विधवाओ की प्रसूति हुई व बच्चो को बचाया गया। सावित्रीबाई द्वारा तब विधवा पुर्नविवाह सभा का आयोजन किया जाता था। जिसमें नारी सम्बंधी समस्याओ का समाधान भी किया जाता था। महात्मा ज्योतिबा फुले की मृत्यु सन १८९० में हुई। तब सावित्रीबाई ने उनके अधुरे कार्य को पूरा करने के लिये संकल्प किया। सावित्रीबाई की मृत्यु १० मार्च १८९७ को प्लेग के मरीजों की देखभाल करने के दौरान हुई।

कु. दिशा राजीव इटाले
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

बदलाव



रोज मजे से पैसे खर्च करती लड़की आज साग-सब्जी का भाव करना सीख गई। कल तक तेज रफ्तार से स्कूटी चलाती लड़की, आज मोटर साईकल पें पीछे बैठना सीख गई। कल तक तो तीन वक्त पूरा खाना खाती लड़की, आज ससुराल में तीन वक्त का खाना बनाना सीख गई।

कल तक तो मम्मी से काम करवाती लड़की आज सास के काम करना सीख गई। कल तक भाई-बहन के साथ झगड़ा करती लडकी, आज ननंद का मान करना सीख गई। कल तक भाभी के साथ मजाक करती लडकी, आज जेठानी का आदर करना सीख गई। पिता का खयाल रखने वाली बेटी आज ससुर का खयाल रखना सीख गई। फिर लोग कहते है कि बेटी ससुराल जाना सीख गई।

यह बलिदान केवल लड़की ही कर सकती है, ईसिलिए हमेशा लड़की की झोली प्यार से भरी रखना।

लड़कीयों को सम्मान देना।

कु. प्रिया मिश्रा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

ख्वाहिश भले छोटी सी हो लेकिन उसे पूरा करने के लिए दिल जिद्दी होना चाहिए।

The Educated Wife of to-day

There was a time when very few women received any proper education. But now girls are receiving the highest education. There are many advantages of being an educated wife. Being educated, she can manage her home more efficiently. She can look after work of servants. She can maintain accounts. Thus by keeping family budget, she helps the family in making the best of its income. She keeps her Kitchen in hygienic condition. In short, she is of definite help as a successful manager of the household.

An educated girl understands her duties well. She proves a source of great comfort to her husband in times of trouble. Besides this, as a mother also she can teach many things to her children. She gives them elementary education. She keeps them neat and clean. They become healthy.

Not only this, an educated wife can also help her husband in his office work. When an author writes a book she can help him in revising the script. She can work as a typist. By checking accounts, preparing draft and by her personal suggestions, she can help her husband in his business.

Ups and downs come in life. If the husband is out of employment his educated wife can be of great help to him. The husband may be ill or meet with some accident. In such emergencies an educated wife can find out some job for herself. An unfortunate widow, if she is educated, need not remain at the mercy of others. She can stand on her own legs. She can support herself and her children.

But this is only one side of the picture. A modern, educated wife due to her love for fashion and expensive habits, is often a financial burden. She likes to live in her own independent way. She does not like interference. Often she looks down upon the less educated or uneducated members of the family.

Only if a girl has been educated properly at home, she can remain unaffected by the evil effects of modern education. She can be a great asset to her husband and her family, if she is good natured and respects the traditions of the family.

Ku. Rani Pali, BA II Year

The Need of Female Education

Women have to play an important role in the development of the country. If we want to make democracy successful, women must be educated. They are the builders of happy homes. It is in their lap that the children receive their first lesson. As the mothers are, so will be the children. Moreover, certain professions are most suitable to the nature of women, women make the best nurses. Primary education can play a very important part. In a nutshell, the progress of the country depends upon female education. We must give up our conservative outlook.

The theory that women are inferior to men, physically, mentally, has been proved wrong. The deeds of bravery, courage and valour of Maharani LaxmiBai of Jhansi make the bravest of the brave bow their heads before her name. Every Indian takes pride in the Late Sarojini Naidu. Her sacrifices and her outstanding services to the motherland are a source of inspiration to all. In recent times, late Mrs. Indira Gandhi impressed all by her courage and determination. As a leader, she acquired an international status and today we see women everywhere on big posts globally.

Indeed, society runs on two wheels. Both the wheels must be equally strong to run it smoothly. Our Constitution has, therefore, given equal status to men and women. Women are being educated in increasing numbers. Let all of us give up our fears of, and prejudices against, female education. All the impediments must be removed from the way of their education. Let no girl remain without it.

Ku. Smita Gore
BA II Year

"For we women are not only deities of the household fire, but the flame of the soul it self."
- Rabindranath Tagore

Elizabeth Bennet : The Brilliant Creation of Jane Austen

It has been well said, “the most popular of Austen's novels has been *Pride and Prejudice* because of the brilliant creation of Elizabeth Bennet, a heroine as witty as she is charming”.

Besides her physical charms, she also has considerable beauty of character. It is the qualities of her mind and heart which make her such a fascinating personality. That is why she has been described as “The cleverest, and liveliest” of the creations of Jane Austen. The novelist himself regarded her, “as delightful a creature as ever appeared in print'. She is an accomplished lady, well versed in the fine arts, like music and dancing. She moves with grace in the best of company, and is not nervous at the sight of pomp and splendour born of wealth. She can keep her head in the highest society : she has the capacity to steal the limelight. It is her natural ease and grace of manners. She takes pleasure in many things. She is never impressed by mere compliments, as matter of fact, she is a keen student of human nature, its follies and foibles.

She rejects Collins because she knows that happiness of life does not depend upon good furniture or a comfortable income, but on mutual compatibility and a real appreciation of each other's characters. She knew that she could never be happy with a pompous, trivial and absurd person like Collins.

My aim in describing the character of Elizabeth is that the young girls should take inspiration and learn behaviour and values of life.

Ku. Rohini Jadhav
BA II Year

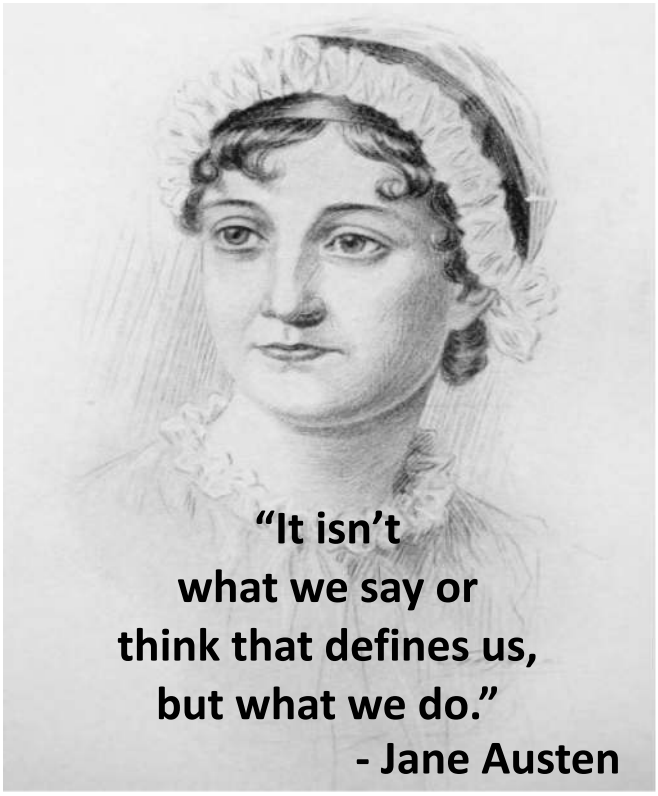

“One small positive thought in the morning can change your whole day.”

Eroding Family Values

An extremely humorous play, the Dear Departed by Stanley Houghton exposes the materialistic mentality of modern women. They have become insensitive. They live only for themselves. Mutual relations, love and compassion have no meaning for them. Blinded by greed, they ignore their responsibilities towards the elder generation. The two women characters are both very selfish and greedy which also represent the self-cantered women of today.

Mrs Amelia Slater, a greedy and materialistic (money-minded) woman who stoops down to any level to satisfy her greed. She is a dominating wife and has no regard for her father. Mrs Elizabeth Jordan, a very clever woman, like her sister, Mrs Amelia Slater, she too is very greedy and petty.

The drama exposes the false display of modern women. Mrs Amelia Slater discovers that her father is supposedly dead. Mrs Amelia Slater instructs her daughter, Victoria to put on her white frock with a black sash. She also asks her husband Henry to take the new slippers of grandfather. The Slater's fetch their father's bureau and clock downstairs from grandfather's room. Both sisters discuss the obituary announcement in the newspapers and the insurance premium payment. Victoria is asked to fetch the bunch of keys to the bureau to look for the insurance premium receipt.

The dead grandfather suddenly rises up and comes down. He is actually not dead. Grandfather comes down and is surprised to find the Jordons there. Grandfather comes to know how his daughters were in a hurry to divide his possessions between themselves. The drama highlights that both the sisters, Amelia and Elizabeth, did not respect their father, as they considered him a burden and were only bothered about his money and possessions.

Both the daughters try to outdo each other in showing that they were sad, whereas they were actually happy that their father has died and they could take his insurance money and belongings.The parent-child relationship, as exemplified by the two sisters' relationship with their father, is shown as a formality in his drama.The two sisters try to divide the possessions of their father among themselves even before his funeral, showing their materialistic attitude.

The modern women should learn family values because she has the ability and power to keep the family happy and together.

Ku. Ranu Poddar
BA I Year

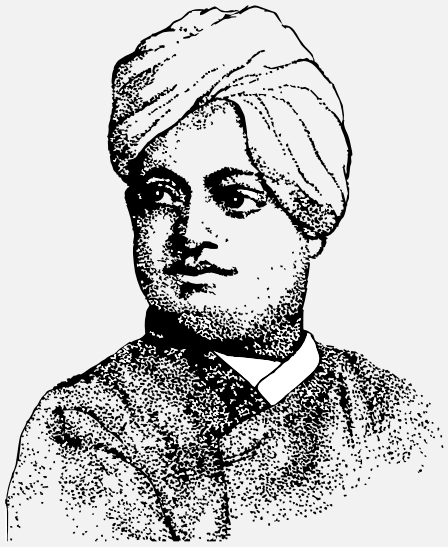

"There is no chance of the welfare of the world unless the condition of women is improved. It is not possible for a bird to fly on one wing."

- Swami Vivekand

The great aim of education is not knowledge, but action. - Herbert Spencer

Wangari Maathai - Great Godly Figure



Great godly figure Wangari Muta Maathai was the founder of the green Belt movement and 2004 Nobel Peace Prize Laureate. She was a Kenyan environmental Political Activist. In an interview Mathai said that when she was young the environment was very pristine, very beautiful and very green. The British Government then started clearing out the forests to plant pines and eucalyptus trees. There trees grew rapidly but these destroyed all the local biological diversity. So all vegetation vanished. As a result, forests which were a source of water were not able to contain the water. The rain water flew into the ocean. Rain patterns changed and rains became less. This damaged the environment.

That is why, at the very first United Nations Conference for women in Mexico in 1975 women were saying that they needed water, drinking water and fodder for animals. These things happened when she was a child. The environment changed and brought many problems for the women. She started the campaign to restore the vegetation, land and the forests.

Maathai told the African women how to plant trees as they didn't know. She told them that seeds for the trees were like the seeds of other vegetation. They needed to be put into the soil and then they would grow. When they would be seedlings they needed to be transplanted at other places. In the beginning, it was difficult but the women soon learnt how to sow seeds of the trees. Maathai called the women “Foresters without Diplomas.”

Maathai told that after planting trees the women were asked to look after them. They were told to take care of the trees in the form of management and environment. Doing so was their responsibility and not of the government. The changes were praiseworthy. The seedlings became big trees in five or ten years. These could provide them energy and income. This was empowerment..

The environment became beautiful again. About the impact of their efforts on the rest of Africa Matthai said that their efforts would inspire other people to stop wasting their resources. The rest of Africa would restore the environment and stop degrading it. For Maathai her greatest activity was to plant a tree. For her the tree was a wonderful symbol for the environment. When they planted a tree, they planted a hope for the future, for their children and for the birds.

Ku. Pragati Dhokane
BA I Year

Some beautiful paths can’t be discovered without getting lost. - Erol Ozan

Ideology Of Women Empowerment and How it can revolutionize the World

Women Empowerment can't be defined into a few sentences. It has several meanings & it's also not as simple as one might think. It bears a deep meaning into it. If you just see the words “women empowerment” superficially, the real meaning behind it can't be interpreted. It doesn't just mean empowering as in giving strength to women. No, because then wouldn't that mean empowering someone who's weak ? So, you see, it's not about that. Because, Women are already strong.

Women do so much & go through so much in their lives. The responsibilities & burdens they have in their lives are incredibly huge. But even though, they endure it all, they find a way in the toughest of situations & they solve them. They face various battles & they fight them, & they do win them. A woman plays many roles her life. A daughter, a sister, a wife, a mother and the list goes on. A household can barely survive and run smoothly without a woman & we all know the need & importance of her in it. But, even though she basically dedicates her entire life to her family, to others, sometimes the credit, the respect & the love she gets is much less & sometimes even nothing. But no matter what she faces, how hard life gets, what crisis she's in, how much pain she goes through, she never falls apart. She never stays broken. So, who's to say that women are weak ?

We don't have to tell a woman to be strong. Please, she's already all that, but what Women Empowerment holds the true meaning & aim behind it is this :

- Improving & increasing the social, political, legal & economic strength of women & ensuring equal rights to that of men.
- Letting them make their own decision & choices, living life on their own terms & freedom to make their own identity.
- Giving them the right to freely live their life with a sense of self-esteem, freedom, dignity, respect & self-worth.
- Letting them have a voice that should be heard & being able to speak up for themselves& against the oppression, exploitation & harassment they face, without having fear for what society will say or criticize about.

These are just a few things among tons. We can never fully state the whole meaning & the need for women empowerment. The list is never ending. But nevertheless, it needs to be acknowledged by everyone what it means & why is it so important. So, we must start taking a step & spread the word, educate & explain what it really is. If we do so, it'll not only help women, but also ultimately, the whole world.

The studies show that, women typically invest in their families & communities significantly more than men, thus spreading wealth & increasing the quality of life for themselves & their families. Thus, from this we can comprehend that, empowering women holds the key to the social, economic, political growth & transformation of not just a nation but the whole world. Also, without it, it's impossible to remove injustice gender bias, inequalities & discrimination. So, there must be a balance between the male & female forces of society. If we take the initiative & start prioritizing the need for women empowerment, we will surely one day make a violence free world for all womenkind. We will make a world where every woman will have the same chances, rights, respect, credits, opportunities, recognition & dignity as that of a man & which she truly deserves. And thus, ultimately women empowerment will help women discover their wings & they can finally soar high with their full potential,

Life and time are the two best teachers. Life teacher us to make good use of time and time teaches us the value of life.

without anyone holding them back.

A brief message for all the Strong Women out there :

- Women, always remember no one can make you feel inferior & less about yourself.
- You don't need to change who you are in order to fit in society's standards or to be accepted by society. Just always be righteous & stay true to yourself.
- Don't try to fit in the unrealistic standards of beauty defined by the society. You're perfect & beautiful just the way you are.
- Stand up for what you believe in. You are your own boss – speak up for yourself.
- Appreciate yourself more, take care of yourself, love yourself, don't hold back from your dreams, reach for them, don't be afraid of being yourself.
- Support all the women around you & rise up. We are stronger together. Stand up & take the lead.-

Ku. Isha Pradhan
B.A. II Year

।। सुक्तयः ।।

१. अति सर्वत्र वर्जयेत ।
२. शुभस्य शीघ्रम ।
३. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।
४. आहारशुध्दौ सत्वशुध्दिः ।
५. तक्रान्तं खलु भोजनम् ।
६. अजीर्ण भोजनं विषम् । (नीतीशतकम्)
७. अन्न न निन्द्यात्, अन्नं न परिचक्षीत ।
८. साहसे श्रीः प्रतिवसति । (मृच्छकटिकम्)
९. यः क्रियावान् स पण्डितः ।
१०. लोभः पापस्य कारणम् (हितोपदेश)
११. आचारः प्रथमो धर्मः ।
१२. जननी जन्मभुमिश्च स्वर्गादपि गरियसी ।
१३. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
१४. वसुधैव कुटुम्बकम् ।
१५. सत्यमेव जयते नानृतम् ।
१६. यतोधर्मस्ततोजयः ।
१७. सत्यं शिवं सुन्दरम् ।
१८. योगः कर्मसु कौशलम् । (गीता २.५०)
१९. विद्ययामृतमश्नुते । (ईश. ११)
२०. दैवयातं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम् ।
(वेणीसंहार : ३.३७)
२१. सहसा विदधीत क्रियाम् ।
(किरातार्जुनीयम् ११२.३)
२२. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।
२३. दुरतः पर्वताः रम्याः ।
२४. न भुतो न भविष्यति ।
२५. शीलं परं भुषणम् ।
२६. दीपः प्रवर्तते दिपात् ।
२७. न मातुः परं दैवतम् ।
२८. वयं राष्ट्रे जागृताय पुरोहिताः । (ऋग्वेद ९२२)
२९. जल न्बिन्दुनी पतिन क्रमशः पुर्भते घटः
३०. धर्मेण हिनाः पशुभिः समानाः ।
३१. महाजनो येत गतः स पन्थाः ।
३२. नास्ति विद्यासमं चक्षुः ।
(वेदव्यासः महाभारतस्थ शांन्तिपर्व – १७५–३५)
३३. विद्ययामृतमश्नुते । (उपनिशद)
३४. विद्या विनयेन शोभते ।
३५. ज्ञानं भारः क्रिया विना । (हितोपदेशः)
३६. सा विद्या या विमुक्तये । (विष्णुपुराणम् १.१६.४१)
३७. सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्माप्रमद् ।
पितृदेवो भव, मातृदेवा भव
आचार्या देवो भव, अतिथिदेवो भव ।

कु. दिक्षा शामस्कार
बी.ए. प्रथम वर्ष

लक्ष्मी तनीति वितनंति च दिक्षुकीर्तिम् । किं किं म साधयति कल्पलतेच विद्या ।।

सरस्वती देवी



ऋग्वेदे उल्लिखिता काचित् नदी एषा सरः (जलम्) अस्त्यस्याः इति सरस्वती । सरणशीला एषा । सरणशीला इत्यनेन साङ्केतिकरीत्या वाक् उक्ता भवति । संस्कृता वाग् यत्र तत्र ऐश्वर्य बुध्दिमत्ता च भवत्येव । सरस्वत्याः नामान्तराणि शारदा वागीश्वरी, ब्राहमी, महाविद्या इत्यादीनि । सृष्टिकर्तुः ब्रहमणः पत्नी एषा । सृष्टिकार्याय ज्ञानम् आवश्यकम् । ब्रहमणः सरस्वत्या विवाहः तस्य जज्ज्ञानप्राप्ति सूचयतीक । पदमे स्थिता एषा एकेन हस्तेन पुस्तक द्वितीयेन पदमम् अक्षमालांच धरति । तृतीयेन चतुर्थेन च वीणा वादयति च । पदम सत्यस्य द्योतकम् । अतः एषा सत्ये प्रतिष्ठिता । हस्ते गृहीतेन पद्मेन एषा 'मानवेन प्राप्तप्यम् आत्मज्ञानम्' इति सूचयति इव । अक्षमाला तपसः योग्यस्य जपस्य च द्योतिका भवति । एषा देवी सर्वस्य ज्ञानस्य, कलानां, विज्ञानस्य च मूर्त रुपम् उच्यते । अज्ञानम् अन्धकार इव कृष्णवर्णं ज्ञानं तु शक्लवर्णम् । ज्ञानदायिनी सरस्वती शुक्लवर्णा शुक्लवस्त्रधारिणी च । अस्याः वाहनद्वयं हंसः मयूरश्च । चित्रेण पिच्छकलापेन मयूरः विचित्राणि प्रापञ्चीकसुखानि मानव कथं मुक्तिपथात् दूरं विकृष्य अविद्यायाः कारणं भवेयुः इतिसूचयतीव । नीरक्षीरविवेकावान् हंसस्तु पर विद्यया एक मोक्षः इति वदतीव ।

कु.प्राजक्ता देशपांडे
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

झांसी लक्ष्मीबाई



झांसी राणी लक्ष्मीवर्या याः जन्म १८३५ तमे संवत्सरे नवेम्बर मासस्य १९ तमे दिनाङ्के अभवत् । सा १८५८ तमे वर्षे जून मासस्य १७ दिनाङ् के दिवङ्ग ता । लक्ष्मीबायी वारणास्याम् अजायता सा 'झान्सी की राणी' इति नाम्ना ख्यातम् अगात् । भारतस्य प्रथमे स्वातन्त्र्यसङ् ग्रामे तस्याः प्रमुख योगदानम् आसीत् लक्ष्मीबायी उत्तरभारत स्थितस्य झान्सीराज्यस्य राज्ञी आसीत् । सा आङ्लेयान् विरुध्द भारतस्य स्वातन्त्र्यसङ् ग्रामम् आरब्धवती । महाराज्ञी लक्ष्मीः इत्यस्याः विरांगनायाः जन्म महाराष्ट्रे राज्ये कृष्णानद्यास्तटे एकस्मिन् ग्रामे पञ्चत्रिंशदधिके अष्टादशशततमे वर्षे १८३५ समभूत्ा शैशवे अस्याः नाम् 'मनुबाई' इति अभूत् । अस्याः जनकः मोरोपन्तः तदानीं पेशवा बाजीरावस्य सेवायामसीत् । अस्याः जननी 'भागीरथी बाई' साध्वी ईशभक्ता च नारी आसीत् । उभावपि तां प्रियां सुतां सुतां मनुदेवीं स्नेहेन अपालयाताम् । तदा बाजीरावः कानपूर नगरस्य समीपस्थे बिठूर नामके स्थाने न्यवसत्, मनुदेव्याः शिक्षण तत्र अभवत । तत्र सा अचिरं शास्त्रविद्यां शास्त्रविद्यां च अलभत । सा तत्र नैपुण्यम् अवाप्नोत् । अश्वारोहणेऽपि मनुबाई अतीव कुशलिनी अभवत् ।

कु. ममता उ. अग्रवाल
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

गुणदोषों बुधो गृह्णन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वरः । शिरसा श्लाघते पूर्व परं कण्ठे वियच्छति ।।

मदर तेरेसा



मदर तेरेसा सुप्रसिध्दा समाजसेविका । रोमन् क्याथोलिक् सम्प्रदायस्य सन्यासिनी आसीत् । अस्याः पूर्वनाम 'अँग्निस गॉक शा वाजकीशयू' । एषा अल्बेनिया स्कॉपसे (युगोस्लाविया) देशीया, किन्तु भारतदेशस्य पौरत्वं प्राप्तवती । १९५० तमे संवस्तरे 'मिषनरीस् आफ् चारिटी' नामकसेवा सङ्घं भारतस्य कोलकतानगरे स्थापितवती । अस्याः संस्थायाः केन्द्राणि आभारते स्थापितवती । एतेषु केन्द्रेषु आयेभ्यः अस्वस्थेभ्यः दरिद्रेभ्यः च सर्वविधप्यवस्था कल्पिता अस्ति । ४५ वर्षाणाम् अनायेभा अधिककालम् एषा सेवां कृतीवती । दीनेषु एव देवं भावयन्ती सां सेवा कुर्वती च जीवितती । मदर तेरेसा युगोस्लाविया देशस्य 'स्कूपेज' ग्रामे १९१० तमे संवत्सरे अगष्ट्मासस्य २७ तमे दिनाङ्के अजायत । अस्याः पिता निकोलास् बोजाक्सिया, माता ड्रेन फिल् बेक्निल् ।

अस्याः सप्तमे वयसि पिता मृतवान् । अनन्तरं माता एव ताया पलितवती । एनां रोमन क्यॅथोलिक क्रैस्त देवालयस्य सेवावातावरणादिकं दृष्ट्वा एषा प्रभाविता जाता । मम जीवने अपि ईदृशसेवाकार्य करणीयम् इतिसा चिन्तितवती । तेपु दिनेषु मया सन्यासदीध्ता स्वीकर्तव्या इति सा सङ्कल्प कृतवती । तदर्थम् अष्टादशवयसि एव सा गृहात् निर्गता । मातरम्, सहोदरम् बान्धवान च त्यक्ता समाजसेवाकार्य निरता जाता ।

कु. ममता उ. अग्रवाल
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

पार्वती



लयकर्तुः परमशिवस्य शक्तिरुपा पार्वती । सैव तस्य पत्नीच । विघ्नेश्वरस्य गणपतेः स्कन्दस्य च माता सा । तस्या नामानि रुपाणि च अनेकानि । हैमवती, गिरिजा, दाक्षयिणी, इतीमानि नामनि । सा मिहवत पुत्री, जन्मान्तरे दक्षप्रजापतेश्च पुत्री आसीदिती वदन्ति । एवमेव शिवाणी, मुडानी, रुद्राणी, शर्वाणी इतीमनि तस्याः नामनि सा महादेवस्य रुद्रस्य महिषी इति कथयन्ति । केनोपनिषदि सा उमा हैमवती इति नामभ्यां कथ्यते । देवराज महेन्द्रं सा दक्षप्रजापतेः पुत्री सती यदा आसीत् तदा पितुर्यज्ञे जातां स्वपत्युः अवज्ञाम् असहमाना आत्मानाम् अग्नेराहुति कृतवती । तदनन्तरजन्मनि सा पर्वराजस्य हिमा मेनायाश्च पुत्री पार्वती जाता । कठिनं तपः कृत्वा सा पुनरपि परमशिवमेव पति लब्धवती । तपसि स्तिया निराहारया तथा पर्णान्यपि न अहियन्त इति कारणात् सा अपर्णा इतिनाम अलभत । देवी, शक्तिः इति नामनी यद्यपि सर्वाः स्त्री देवताः व्यपदिशतः तथापि ताभ्या सामान्यतया पार्वतीदेवी एव व्यपदिथ्यते । देव्याः शक्त्याः सौमयासौम्ये द्वे रुपेता सा सौम्य रुपं वहति । तदा तस्याः द्वौ हस्तौ एव । दक्षिणहस्तेन कुमुदं धरन्ती सर्वालङ्कार भूषिता पत्युः पाश्वे दृथ्यते सा । द्वाभ्यां हस्ताभ्यां कमलं कुमुदञ्च धरन्ती । अपराभ्यां वरदाभयमुद्रे प्रदर्शयति । शिवस्य अर्धाङ्गिनी सा अर्धनारीश्वरस्य तस्य देवस्य वामभागम् सा अलङ् करोति ।

कु. प्राजक्ता देशपांडे
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

ज हे प्रमाणं जानीहि भाषणे भोजने तथा । अत्यकिरतिभुक्तिश्च सत्यं प्राणापहारिणी ।।

सावित्रीबाई फुले



अस्माकं भारतदेशे नारीनां स्थानं महत्वपूर्ण मन्यते । नरःनारीच इति सृष्टिस्वरुपस्य भागद्वयम् । सृष्टौ यावान्ति चराचर सजीवनिर्जीव वस्तूनि विद्यन्ते सर्वत्र नरः नारीच अवश्यं भवति । दर्शनशास्त्रे 'प्रकृतिः' 'पुरुषश्च' इति हे सृष्टिबीजे स्तः । वेदान्ते तथैव ब्रहममाये इति द्वे स्तः । नरनार्यो सम्बंधः शाश्वतोऽस्ति । तसा एकाकी रमते द्वितीयनैच्छत् । नारी समाजस्य आधारशिला विद्यते । प्रत्येक सामाजिक संगठणे नारीणां स्थितिः समाजिक दशायाः परिचारकोऽस्ति उक्तमपि ।

यत्र नार्येस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रदेवताः ।
यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वा स्तत्राफलाः क्रिया ।।

अतः 'शिक्षयति यः सां शिक्षा शकतुं शकतो भवितुमिच्छा इयं शिक्षा यया नराणां हितसाधिका वर्तते तथैव नारीणामपि' यदि नरः तु विद्वान् स्यात् परन्तु भार्याचेत मुर्खाभवेत् तदा जीवनं सुखावहं न भवितुमहति । एतर्हि पुरुषशिक्षावत् स्त्रीशिक्षाप्या निवार्या आवश्यकी । एतद् विचारेन् प्रभावेन १८४८ तमे ख्रिस्ताब्दे पुणे नगरे सावित्री ज्योतिबा महोदयेन सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथम विद्यालयम् आरभत । तदानी सा केवल सप्तदशवर्षीया आसीत् । १८५१ तमे ख्रिस्ताब्दे अस्पृश्यत्वात् तिरस्कृतस्य समुदायस्य बालिकानां कृते पृथकतया तया अपरः विद्यालयः प्रारब्धः । सामाजिक कुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत् । एकदा सावित्र्यामार्गे दृष्टं यत् कूपंनिकषा शीर्णवस्त्रावृताः तथाकतिथाः निम्नजातियाः उपहासं कुर्वन्तः कूपात् जलेद्धरणं अवारयन् । सावित्री एतत् अपमानं सोढू ना शकलोत् ।

सा ताः स्त्रियः निजगृहं नीतवती । तडागं दर्शयित्वा अकथयत् च यत् यश्रेष्टं जलंतंयत । सार्वजनिकोऽयं तडागः । अस्मात् जलग्रहणे नास्ति जातिबन्धनम् । तया मनुष्याणां समानतायाः स्वतंत्रतायश्च पक्षः सर्वदा सर्वया समर्पित ।

महिला सेवामण्डल शिशुहत्या प्रतिबंधकगृह इत्यादिनां संस्थानां स्थापनाया फुले दम्पत्योः अवदानम् महत्वपूर्णम् । सत्यशोधक मण्डलस्य गति विधिक अपि सावित्री अतीव सक्रिया आसीत् । अस्य मण्डलस्य उद्देशम् आसीत् उत्पीडितानां समुदायानां स्वाधिकारन् प्रति जागरणम् इति सावित्री अनेकाः संस्थाः प्रशासन कौशलयेन सञ्चालितवति । दुर्भिक्षकाले, प्लेगकालेच सा पीडित जनानाम् अश्रान्तम् अविरतंन्च सेवाम् अकरोत् । महारोग प्रसारकाले सेवास्ता सा स्वयम् असाध्यरोगेण ग्रस्ता १८९७ तमे ख्रिस्ताब्दे निधनंगता । साहित्यरचनया अपि सावित्री महीयते । तस्याः काव्यसङ्कलनद्वयं वर्तते 'काव्यफुले', 'सुबोधरत्नाकर' चेति । भारतदेशेन्महिलोत्यानस्य गहनावबोधाय सावित्री महोदयायाः जीवनचरितम् अवश्यम् अध्येतव्यम् । पुणे विद्यापीठस्य नाम 'सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ' इति । यथा पुरुषाणांकृते शिक्षायाः अधिकारोऽस्ति तथैव स्त्रीणाकृतेडपि महद् गौरवम् अनुश्रूयते ।

कु. चित्रा एन. कोल्हे
एम.ए. संस्कृत, द्वितीय वर्ष

कः कालः कानि मिणाणी को देशः को व्ययागमोः ।
क स्याहं का च मे शक्तिरिति चित्यं मुहुर्मुहः ।।

शामस्य निष्कपटता

ऋग्वेदे शाम्यः शिक्षणार्थं दापोलिग्रामे वसतिस्म । सः एकदा स्वग्रामम आगतः । पठने तस्य इच्छा महती । किन्तु पुस्तकानि क्रेतुं धनं न आसीत् ।

एकदा शामस्य पितुः सुहृत बलवन्तरावनाम । कश्चन तद्गृहम् आगतः । श्यामः तस्य कोषात् पञ्च रुप्यकाणि चोरितवान् । एतेन धनेन पुस्तकं क्रेष्यामि । तत् पठित्वा पुण्यं सम्पादयिष्यामि इति तस्य उद्देशः आसीत् । बलवन्तरावः यदा कोषात् धनं निष्कास्य गणनम् आरब्धवान् तदा पञ्च रुप्यकाणि न्यूनानि आसन् ।

सः क्रीडन्तं श्यामम् अपृच्छम् 'श्याम । तव कोऽपि सुहृत अत्र आगतः आसीत् किम् ?' श्यामः अवदत् – न । अद्य अहमेव बहिः क्रीडितुं गतवान् आसम् ।

शामस्य पिता अवदत् 'श्याम, वद त्वया तु धनं न स्वीकृतं स्यात् ननु ?' इति ।

तदा सहिति शामस्य माता उक्तवती – 'मम श्यामः एताःदृश कार्य कदापि न करोति । यदि धनम् आवश्यंक स्यात तार्दि सः मामेव पृच्छति । अत्र अस्ति मम पूर्णः विश्वासः ।'

मातुः वचनं श्रुत्वा श्यामः चिन्तिवान् – 'मातुः मयि अहो, कियान् विश्वासः अस्ति । अहं कथं तस्याः विश्वासघातं कुर्याम् इति । मातुः विश्वासं स्मरतः तस्य नेत्रयोः अश्रुणि आगतानि ।

सः व्याकुलतया मातरम् उपसर्प्य उक्तवान् 'अम्ब! भवत्याः प्रियः पुत्रः श्यामः अहम् एव तत् धनं चोरितवान् । स्वीकरोतु तत् धनम् ।'

माता उक्तवती 'पुनः परजनस्य वस्तु न स्प्रष्टव्यम् । चौर्य च न करीयम् । इदम् एव अन्तिमं भवेत् । त्वं स्वदोषम् अङ्गीकृतवान् यत्, तत् साधु एव । अतः न दण्डयिष्यामि त्वाम् । इतः परम् एव मा कुरु ।'

श्यामेन धनस्वीकरणं स्वयमेव अङ्गीकृत यत् तत् ज्ञात्वा बलवन्तरावः पारितोषिकरुपेण तस्मै एकं रुप्यकं दत्तवान् ।

रात्रौ माता पृष्टवती – 'श्याम ! त्वं किमर्थ धनं चोरिवान ?' इति । श्यामः उक्तवान् – 'मातः ! पुस्तकानि पठित्वा ज्ञानी भवितुम् इच्छामि । मम समीपे पुस्तकानि क्रेतुं धनं नास्ति । पुस्तकपठनं पुण्यकार्यम् इति विचिन्त्य अहं चोरितवान् ।'

माता उक्तवती 'पाठशालायां त्वं किं पठितवान् ? चौर्य कदापि न करणीयम् इत्येतत् त्वं यदि न अवगतवान् तर्हि इतोऽपि पुस्तक पठनस्य का आवश्यकता ?'

चौर्य कदापि न करणीयम् इति श्यामः अनुभवद्वारा पठितवान् । अतः सः आजीवन तत् न विस्मृतवान् ।

कु. ममता अग्रवाल
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

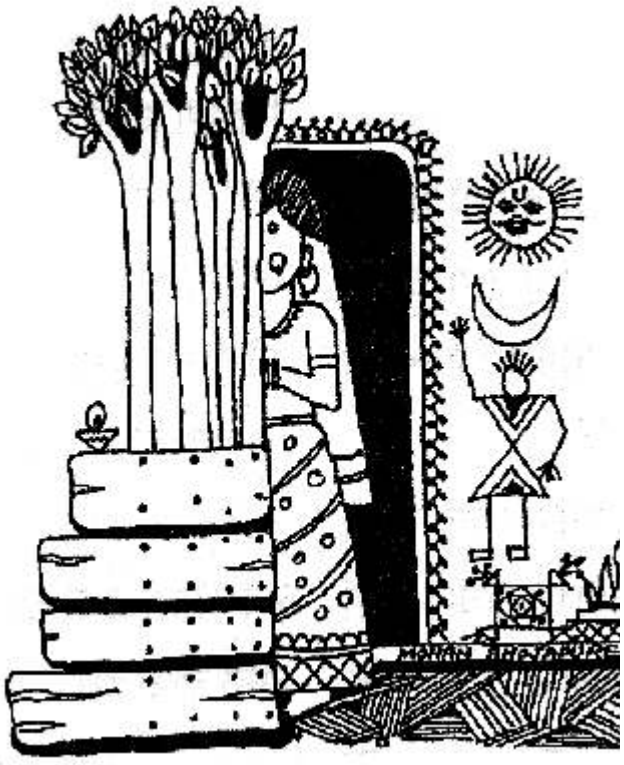

एकोदरसमुद्भूना एक नक्षत्र जानका ।
न भवन्नि समा शीले यथा बदरिकष्टकाः ।।

स्वर्गस्वरुपो भारतदेशः

स्वर्गस्वरुपो भारतदेशः ।
आनन्दश्च हि त्वत्र विशेषः ।।

रेवा वहति हि पुण्यपावनी
वेगवती सौभाग्यदायिनी ।
मञ्जुलानि ननु सुशोभितानि
मन्दिराणि त्वतिमनोहराणि
अत्र हि कथितः धर्मोऽशेषः ।
स्वर्गस्वरुपो भारतदेशः ।

सर्वजनान् जान्हवी पावयति ।
हिमालयो जलनिधिं स्त्रावयति ।
अवतारैश्च कृतं जागरणम्
मानवतापोषको विजेता ।
स्वर्गस्वरुपो भारतदेशः ।।

संयतभोग ? सम्यग्योगः ।
नास्त्यत्र शुभकर्मवियोगः ।
अत्र कामनानाञ्च न भारः ।
कर्मणि जनानां त्वधिकारः ।
'सत्यमेव जयते' सन्देशः
स्वर्गस्वरुपो भारतदेशः ।।

कु. ममता अग्रवाल
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष



जयतु भारतम्

जयतु भारतं सर्वदा भुवि
लसतु दिव्यता, कामना मम ।
जगति राजते या पुरा शुभा
गुरुपदावलि. साऽ धुना भवेत् ।।

सरल भाषिणः संस्कृताश्रिता
अभिनवा जनाः अत्र जायताम्
सरसिजावलिर्ज्ञानिनां मुदा
धवलतामयी वर्धयेत् सदा ।।

सुखदवृत्तिभिः संस्कृताः जनाः
सरसभावुकाः शोधतत्पराः
निगमगोचरास्तत्त्वदर्शिनः
मधुरतामयाः सन्तु सर्वदा ।

धनमयी विभा भातु भारते
कनकदा शुभा शालिनी भवेत् ।
हरित भूर्नवा राष्ट्रश्रीयुता
नभविहरिणी सुप्रभां सृजेत् ।।

कु. ममता अग्रवाल
एम.ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष

रुपयौपतसम्पत्रा विशालकुलसंभवाः ।
विघाहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका ।।

कामा महोदया (मॅडम कामा) (१८६१-१९३६)

मादाम कामा – महोदया स्त्री क्रान्तिकारिका किन्तु सा जन्मतः क्रान्तिकारिणी नासीत् । बाल्यावस्थायां सा हिंसावृत्ती विषये वार्ताडपि श्रोतुम असमर्था । विद्रोहस्य सा सदा एव विरोधं कृतवती । किन्तु आगःलसम्पर्के न भारतीयानाम् उपरि कृतम् अन्यायं दष्ट्वा तत् निराकर्तुम, प्रतिकारार्थ सा जनजागरणार्थम् क्रान्तिमार्गः स्वीकृतवती । तत् ज्वालारुपेण वृध्दिंगतम् । विदेशभूम्यां निवासं कृत्वाऽपि सा भारतीय जनानाम् कृते क्रान्तिजननी भूतवती ।

कामा महोदयायाः जन्मा मुम्बापुर्वा ख्रिस्ताब्दे २४ सप्टेंबरस्य १८६१ तमे दिनाङ्के अभवत् । 'सोराबजी फ्रामजी पटेल' महोदयः मुम्बापुर्याम् एक यशस्वी उद्योगपती तस्या पिता आसीत् । अलेक्झांड्रा – पारसी कन्या विद्यालये अस्याः शिक्षणस्य आरम्भः जातः । एषा बहु मेधाविनि छात्रा आसीत् । बाल्यवयामि अपि सा सर्वासु भाषासु नैपुण्य प्राप्तुं इष्टवती । आबाल्यात् तस्या मनसि स्वातंत्र्त्य संग्रामविषये आकर्षणम् आसीत् । किन्तु तस्याः पिता एतत् विषये चिन्तितः आसीत् । तर्हि एतस्याः स्वातंत्र्य संग्राम प्रतिरोधनार्थ एकः एव उपायः तेन चिन्तितः । तस्या विवाह सस्तम के.आर.कामा एतेन सह अभवत् । किन्तु पति आग्लनिष्ठानुसारि, पत्नी भारतीय निष्ठावादिनी यथा मीरा गिरिधर गोपालस्य भक्त्यां स्वपरिवारस्य सर्वसुखस्य त्यागं कृतवती तथा कामा महोदयापि आंग्लदास्य शृंखलायाः मुक्ति कारयितुम् पतिम् अपि विस्मृतवती ।

अत्रान्तरे मुम्बापुर्या प्लेगरोगस्थ उद्भवः जातः तदा सा तेषां पीडितानां सेवार्थम् तत्परा जाता । ख्रिस्ताब्दे १९०७ तमे वर्षे ऑगस्टमासे जर्मनी देशे स्टुअर्टमध्ये अन्तःराष्ट्रिय समाजवादी काँग्रेस सम्मेलने सा भारतीयांनां पीडा दुःस्थिती निवेदयितुम जागतिक प्रतिनिधीनाम् अग्रे उपस्थिता जाता । तत्रैव १००० सभासदा देशदेशान्तेभ्यः आगताः । तत्र सा उक्तवती – 'अस्माकं देशस्य दास्यात् मुक्तिः भवेयुः इत्यर्थे सर्वदेशानां सहाय्यं अपेक्षते । प्रतिवर्षम् आंग्लजनाः कोटित्रयः आंग्लजनाः भारतस्य अर्थव्यवस्थायाः शोषणं कुर्वन्ति । भाषणस्य अन्ते भारतीयं राष्ट्रध्वजं प्रतिष्ठाव्य सा पुनः उवतवती – भारतीयां एषः राष्ट्रध्वजः आस्ति । राष्ट्रस्यकृते बलिदानेन, तरुणानां रक्तेन एष ध्वजः परमपवित्रः अभवत् । अहं आवाहनं करोमि यत् सर्वे वयं उत्थाय स्वतंत्रभारतध्वजाय प्रणाम कुर्मः ।

अस्याः एतावता प्रभावशालिना । भाषणेन तु श्रोतृवृन्दः अपि उत्याय सम्मानपूर्वकं ध्वजाय अभिवादनं कृतवन्तः अत्रएव तस्याः वैशिष्टयम् यत् सा। समुपस्थितानां प्रतिनिधीनां समक्षं भारतध्वजं राष्ट्रध्वजं प्रथमवारम् आरोपितवती । सावरकर महोदयेनसह अन्यदेशभक्तैः ख्रिताब्दे १९०५ तमे वर्षे भारतीय राष्ट्रध्वजस्य, प्रारुपं त्रिवर्णात्मकस्यः निधितं कृतम् । ख्रिस्ताब्द्रस्य १८ ऑक्टोबर १९०७ तमे वर्षो वालडोर्फ हॉटेलस्थिते मिनर्व्हा क्लबमध्ये आयोजितायाः सभायां भाषणस्य कारणेन सा स्वातंत्रस्य अग्रदुतिका नाम्नेन प्रसिध्दा जाता । कामायाः मतानुसारेण मातृभूमेः कृते जीवनस्य समर्पणे एव जीवनस्य सार्थकता वर्तते ।' भारतीयजनेष्णु बन्धुभावना ह्रढा भवतु इति तस्याः प्रयासः । सा युवा शक्तेः उक्तवती – उपाधेः प्रदानेन यदि प्रलोभयन्ति आंग्लजनाः तर्हि तस्य उन्नतपदस्य स्वीकारं मा करोतु । जनाः स्वकर्तुत्वेन एव स्वजीनस्य मार्गक्रमणं कुर्वन्तु । इति । वंन्देमातरम् इति क्रान्तिकारि पत्रिकायाः निर्याण अभवत् । तत्रापि सा विविधकार्याणां अग्रणी आसीत् । इजिप्त देशे १९१० तमे ख्रिस्ताब्दे राष्ट्रीय सम्मेलने गतवती प्रथम महायुध्दस्य समये सा भारतीय-जनेभ्यः उपदेशं कृतवती । अदम्या आकांक्षाआसीन् । अस्याः वीरांगनायाः देहान्तः ख्रिस्ताब्दस्य १३ ऑगस्ट १९३६ तमे दिने अभवत् । तस्याः नमनं ।

कु. चैताली धनागरे
बी.ए. अंतिम वर्ष

साधुस्यस्ते निवर्नन्ते पुत्र मित्राणि बान्धवाः ।
ये च नैः सह गन्नारस्तद्वर्भात्सुकृतं कुलम् ।।

इन्दिरा गांधी

मानवी जीवनस्य किमपिक्षेत्र एतादृशं न विद्यते यास्मिन् स्त्रियाः सहयोगं न विद्यते । वैदिकयुगे नारी धार्मिक अध्यात्मिक, सामाजिक क्षेत्राणां नेतृत्वं करोतिस्म । सभ्यतायाः विकासे सा प्रयत्नशीला आसीत् । अधुना नारी पुरुषेण समं सर्वाधिकारेण सम्पन्ना दरीदृश्यते । सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, विजयालक्ष्मी, इन्दिरा गांधी प्रभृतिभिः स्त्रीभिः राजनीतौ उच्चपदम् अलङकृतम् । भारतीय् संस्कृतौ नारीणां पूज्यतमं स्थान विद्वत्भिः कथ्यत । श्रीमती इन्दिरागान्धिनः जन्म १९१७ तमे ख्रिस्ताब्दे नवम्बर मासस्य १९ तमे दिवसे प्रयागनगरे अभवत् । इयं अपरिमित यशोवतः श्रीमतः पण्डित प्रवर मोतीलाल नेहरु महोदयस्य पौत्री तथा भारतस्य प्रथम प्रधान मत्रिणः स्वनामधन्य पण्डित जवाहरलाल नेहरु महोदयस्य पुत्री आसीत् । माता कमला नेहरुः एका आदर्श महिला आसीत् । इमां बाल्यकालादेव इतिहास्य राजनीतेश्च व्यवाहारिकं ज्ञानम् अभवत् । अस्याः शिक्षा भारतदेशे इङ्ग्लैण्ड देशेच अभूत् । इत्थं शिक्षाग्रहणसमये एव भारतीय-पाश्चात्य-सभ्यातायां जीवनम् अयापयत् । अस्याः परिवारः एव भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामेसर्वात्मना सहयोगं कृतवान । महात्मनः गांधिनः प्रभावादस्याः अपि मनोराजनीतिक्षेत्रे अलगत् । पञ्चविंशति वर्षावस्थायां १९४२ ईसतीये अस्याः पाणिग्रहणसंस्कारः फिरोज गान्धिना सह सञ्जातः । अस्याः दौ पुत्रो राजीव संजय नामानौ अभूताम् । अस्याः श्रीमती इन्दिरा गाँधी महोदयायाः फिरोज गाँधिना सहविवाहेऽभूजा श्रीमती इन्दिरा गान्धी भारतदेशस्य प्रधानमन्त्रिणी भूत्वा सफलंशासन संचालनं कृत्वा १९८४ ईसव्यां दिसम्बर मासे देशद्रोही सिकख स्वपरिचारेकण भुशंड्यां पंचत्व प्रापिता ।

१९६५ ईसवीये पाकिस्थान आक्रमण काले देशसौनिकान् प्रोत्साहितान् अकरोत् । लालबहादुरशास्त्रि महोदयस्य निधनानन्तरमेव सा प्रधानमन्त्रिरुपेण भारतदेशस्य शासनसूत्रम् अग्रहीत् । सन् १९७१ ईसवीये भारत-पाक युध्दे भारतदेशः अदभुत साफल्य प्राप्तवान् । अस्य श्रेयः श्रीमती इन्दिरा गान्धिनः कुशलर्निर्देशनेन आसीत् । तस्या सहाय्येन एव धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्ररुपस्य बांगलादेशस्य अभुदयः जातः ।

श्रीमती गान्धिः प्रधानमन्त्रिपदम् अङ्गीकृत्य देशसेवायां सर्वभावेन संलग्ना दृश्यते बैंकेति प्रसिध्दानां कोशागाराणां राष्ट्रीयकरण, राज्ञः विशेषाधिकाराणाम् उन्मूलन, भूमिगृह सम्पत्यादीनां सीमानिर्धारणश्च इत्यादीनि कार्याणि तस्याः महत्वम् उद्ववयान्ति । सा अीव शान्तिप्रिया आसीत् । अत एव भारतमहाद्वीपे शान्तिस्थापनार्थ स्वहस्तगतं पाकप्रदेश पाकदेशाय दत्तम् । कभटकेनैव कप्टकम् इति नीतिवचनं स्वीकृत्य प्रधानमन्त्रिण्या तेषां समेषां देशद्रोहिणां विग्रहः कृतः आपात्कालिकीं स्थितिम् उद्घोष्य अनया घोषणया अद्य व्यक्तिगत जीवने, समाजे, व्यवहारे, अन्नपाना दिसम्बन्धि वस्तुमूल्येष न्यूनता, शारीरिकी, मानसिकीच शान्तिः लाम्भेता सज्जनैः ।

सा स्वस्थचितेन कठोरतमं दुष्करं निर्णय गुहीतम् अपिन शङ्कते । स्व निर्णयानुसारंच कार्य सम्पादयितुं प्राणार्पणेन चेष्टते । भारतीयारीषु आदर्शभूता इयं नारीणां जागरणाय बध्दपरिकरा आस्ति । अस्याः विंशतिसूत्रीयः कार्यक्रमः समस्त भारतस्य कल्यणाय भविता इति अस्माकम् मनीषा । राष्ट्रस्य शुभेच्छुभिः सर्वदा प्रधानमन्त्रिण्याः सहयोगः कर्तव्यः । येनतस्याः पदे पदे साहससमृध्दिः स्यात् । अतः एव साफलयम् अपि सदैव ताम् अनुगच्छति ।

कु. चित्रा एन. कोल्हे
एम.ए. संस्कृत, द्वितीय वर्ष

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पानकम् ।
मौतेन कलहो नास्ति जागृतस्य च न भयम् ।।

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या रा.से.यो. विद्यार्थीनी पथकाचे विशेष शिबीर

रुस्तमाबाद (आळंदा) ता. बार्शिटाकळी या ठिकाणी रा.से.यो. पथकाचे विशेष शिबीर दि. १० जानेवारी ते १६ जानेवारी २०१९ या दरम्याण घेण्यात आले. या शिबीराचे उद्घाटन महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास व जय बजरंग विद्यालयाचे आळंदा चे प्राचार्य श्री. शत्रृघ्न बिडकर ह्यांच्या हस्ते करण्यात आले.

शिबीरामध्ये बंधारा निर्मिती, स्वच्छता अभियान, भव्य रोग निदान शिबीर, माती परिक्षण, जनजागृती, शोष खड्डा निर्मिती वृक्षारोपन, जननी - २ चे व्याख्यान या सारखे कार्यक्रम घेण्यात आले. ह्याचबरोबर विद्यार्थीनी विवाहपूर्व समूपदेशन, स्पर्धात्मक, परिक्षेसाठी मार्गदर्शन, उद्योजकता विकासावर मार्गदर्शन, व्यक्तिमत्व विकास असे वैविध्यपुर्ण कार्यक्रम घेण्यात आले. शिबीराला क्षेत्रीय समन्वयक डॉ. येऊ ल, जिल्हा समन्वयक प्रा.डॉ. संजय तिडके यांनी सदिच्छा भेट दिली. या शिबीराच्या यशस्वी आयोजनाकरीता संस्थेचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका, सचिव मा.आलोककुमारजी गोयनका, उपाध्यक्ष रविकुमारजी गोयनका, प्राचार्य डॉ.देवेन्द्र व्यास यांनी या शिबीराचे आयोजक डॉ. उमेश पाटील व प्रा. सोनल कामे या कार्यक्रम अधिकाऱ्यांचे विशेष कौतुक केले.

एन.एस.एस (NSS) अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाचा सत्र २०१८-१९ चा वार्षिक अहवाल पुढील प्रमाणे :-

राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाने सत्र २०१८-१९ मध्ये विविध कार्यक्रम घेतले. यामध्ये प्रामुख्याने आंतरराष्ट्रीय योग दिवस, वन महोत्सव, स्वच्छता अभियान, भव्य रक्तदान शिबीर, पोकसो कार्यशाळा, मतदान नोंदणी व जागृती, सेल्फ डिफेन्स वर्कशॉप, रस्ता सुरक्षा आठवडा, मोर्णा महोत्सवात पथनाट्य व नृत्याचे सादरीकरण, जननी -२ ह्या उपक्रमात सक्रीय सहभाग, स्वास टिम मध्ये महिला कार्यक्रम अधिकारी व ३ रा.से.यो. च्या विद्यार्थीनींचे नाव समाविष्ट झाले. तसेच रा.से.यो. दिन, गाडगे महाराज जंयती, महात्मा गांधी जयंती, महापरिनिर्वाण दिन आदि महत्वाचे कार्यक्रम घेण्यात आले.





आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

एन.सी.सी. वार्षिक अहवाल

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या एन.सी.सी विभागाने वर्ष २०१८-१९ मध्ये केलेल्या विविध गतविधीचां अहवाल पुढील प्रमाणे :-

दिनांक ७ जुलै २०१८ ला महाविद्यालयामध्ये नोटीस बोर्डवर एन.सी.सी. मध्ये प्रवेश घेण्याकरीता नोटीस लावण्यात आली व दिनांक २९ जुलै २०१८ ला प्रात्यक्षिक परीक्षा घेवून नवीन ६१ मुलींची भरती एन.सी.सी. मध्ये करण्यात आली. यापूर्वीच्या 'बी' सर्टिफिकेटच्या ३२ मुली आहेत तर १ मुलगी 'सी' सर्टिफिकेटची आहे. एन.सी.सी. मध्ये एकून ९४ मुली प्रवेशित आहेत.

दिनांक २६/०८/२०१८ ते ५/९/२०१८ या कालावधीमध्ये एकून १५ मुलीनीं सी.टी.सी. प्रशिक्षण अमरावती येथे घेतले.

दिनांक ०६/०९/२०१८ ते १५/०९/२०१८ या कालावधीमध्ये एकून १३ मुलीनीं सी.टी.सी. प्रशिक्षण अमरावती येथे घेतले.

दिनांक २२/१२/२०१८ ते ०२/०९/२०१९ ला ई.बी.सी.बी. प्रशिक्षण केरळ या राज्यामध्ये पार पडला त्याकरीता कु. रीणा यादव व शिवाणी पाचपोर ह्या २ मुलींची निवड झाली होती.

या व्यतिरिक्त १५ ऑगस्ट, २६ जानेवारी, स्नेहसंमेलन, रक्तदान शिबीर, स्वच्छता अभियान, विविध रॅल्या अशा विविध कार्यक्रमांमध्ये एन.सी.सी. च्या मुलींचा सहभाग मोठ्या प्रमाणात होता. या वर्षी 'बी' परिक्षेकरीता एकून ३१ मुलींनी परिक्षा दिली व 'सी' परिक्षेकरीता १ मुलीने परिक्षा दिली व ११ मुली यावर्षी रिर्झव्हेशन मध्ये होत्या.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालयाच्या आरोग्य समितीचा अहवाल

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे शारीरिक, मानसिक व बौध्दिक आरोग्य चांगले असावे या हेतूने महाविद्यालयात आरोग्य समितीची स्थापना करण्यात आली.

आरोग्य समिती अंतर्गत २०१८-१९ चा वार्षिक अहवाल :-

१) दि. ०३.११.२०१८ रोजी आरोग्य आणि मार्गदर्शन केंद्राचे उद्घाटन मा.दिलीपराजजी गोयनका यांच्या हस्ते करण्यात आले. या आरोग्य केंद्रामध्ये महाविद्यालयातील शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी व विद्यार्थिनी यांनी इ.सी.जी व हिमोग्लोबीन याची चाचणी केली.

२) दि. २४.०९.२०१८ रोजी आरोग्य समिती व राष्ट्रीय सेवा योजना यांच्या संयुक्त विद्यमाने भव्य रक्तदान शिबीराचे आयोजन करण्यात आले. रक्तदान शिबीरामध्ये प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्यासह डॉ. शालिनी बंग, प्रा.सगणे, प्रा.आळशी, प्रा.विटे, डॉ.चव्हाण तसेच विद्यार्थीनींमध्ये पुजा वाकडे, जान्हवी देशमुख यांनी रक्तदान केले.

३) दि. ०७.१२.२०१८ रोजी डॉ. तिलक चांडक यांनी दातांचे आरोग्य कसे राखावे, त्यांची निगा कशी ठेवावी या बद्दल मार्गदर्शन केले.

४) दि. १४.०२.२०१९ रोजी डॉ. हर्षवर्धन मालोकार, स्त्री रोग तज्ञ यांनी जेंडर सेसेंटायजेशन च्या अंतर्गत 'बेसिक लर्निंग एन मेडिकल सोशल सायन्स' वर एक दिवसीय कार्यशाळा घेतली.

५) दि. २२.०२.२०१९ ला डॉ. गौरी नानोटी यांचे 'थायरॉईड जागृति' कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले.

६) दि. ०८.०३.२०१९ रोजी डॉ. आशिष गिऱ्हे व डॉ. अशोक राजवाडे सुप्रसिध्द स्त्री आरोग्य तज्ज्ञ यांचे 'प्रिव्हेन्शन ऑफ हार्ट ॲटक' हा कार्यक्रम संपन्न झाला.

तुमच्या १०० समस्या असल्या तरी फार चिंता करु नका.
त्यापैकी ९० आपोआपच सुटणार आहे.

Annual Report of Home Science Department Year 2018-19



The Department organized a program of Donation of Cloths by the students to inmates of Balikashram at Akola. They learnt principle of "giving to the needy". Authorities and the girls in Balikasram were very happy with the project.

National BPNI Week was organized to enhance awareness about Breast Feeding and Breast Cancer. Guest speaker Dr. Vandana Bagdi enlightened on the topics.

National Nutrition Week was observed by various activities. A. Nutritious Education Exhibition, with the theme - "Go Further With Food", was organized. Inaugurated by Hon. VC SGBAU Dr. Chandekar, the exhibition was keenly observed and highly appreciated by him as well as all the visitors.

Nutrition Education programme was conducted at Chatrachhaya Orphanage, Buldana.

The Department had the privilege and honour of getting a Ph. D. Research Center sanctioned by the University. 05 Ph. D. Scholars are presently doing research, 01 has submitted the Thesis and 01 student has been awarded Ph.D.

The Department has 06 published Research Papers to its credit during 2018-19.

The department strives to achieve Holistic Development of students. The students were actively encouraged and guided to undertake participation in Scientific Project Competion - Awishkar 2018. 4 Projects were presented. 1 Project won a trophy and was selected for the next level.

6 One day workshops were organized by the Department, for enhancing the quality of education to students.

The department has 02 faculty members, Dr. Anjali Rajwade and Dr. Kumudini Dhore, who are recongnized Ph. D. Supervisors as well as External Ph. D. Examiners in other Universities namely RTMU Nagpur, BAMU Aurangabad, Bundelkhand University Jhansi Etc.

Dr. Anjali Rajwade, HOD Home Science, is elected member of UG BOS, Nominated member of PG BOS at SGBAU and RRC Member of BAMU Aurangabad.

Innovative Teaching Practices are undertaken regularly. A Significant such activity was an innovative Bridge / Pouch Course of 60 Hours for students of all faculties. Approximately 30 varied topics, pertinent for students empowerment, were covered by various experts.

The Department is proud of Ms. Swati Barabde who bagged the 1st Merit Award in M.Sc., FSN by SGBAU in 2018-19.



He who binds to himself a joy
Does the winged life destroy
He who kisses the joy as it flies
Lives in eternity's sunrise...

- William Blake

Some people are going to reject you simply because you shine too bright for them. That's okey, keep shining.

क्रिडा विभाग अहवाल

सत्र २०१८-१९ मध्ये संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठस्तरीय आंतर महाविद्यालयीन विविध स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या. ज्यामध्ये श्रीमती रा.दे.गो महिला महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी आंतर महाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल, हॅन्डबॉल, खो-खो इत्यादी विविध खेळामध्ये उत्कृष्ठ सहभाग घेतला.

दिनांक : २९.०८.२०१८ रोजी मेजर ध्यानचंद यांची जयंती व क्रिडा दिवस साजरा करण्यात आला त्यामध्ये, विद्यार्थीनींनी आत्मस्वरंक्षण कसे करावे ? या विषयावर कार्यशाळा दैनिक भास्कर अकोला यांच्या संयूक्त विद्यमाने घेण्यात आली. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास होते तसेच सौ. वंदना पिंपळखरे यांनी आत्मस्वरंक्षणावर विद्यार्थीनींना प्रात्याक्षिक दिले.

आंतरविद्यापीठ हॅन्डबॉल स्पर्धेकरीता कु. राखी सागर आठवले हिने निवड चाचणी करीता श्री. शिवाजी कला व वाणिज्य महाविद्यालय अमरावती येथे सहभाग घेतला. तसेच आंतर विद्यापीठ खो-खो निवड चाचणीमध्ये कु. प्रियंका सिरसाट, कु.कोमल तायडे, कु. योगिता नेकवारे हिने निवड चाचणी करीता अमरावती येथे सहभाग घेतला. अमरावती विद्यापीठ अंतर्गत संपन्न झालेल्या आंतर महाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल स्पर्धेमध्ये १२ विद्यार्थीनींनी श्रीमती. साळूंकाबाई राउत महाविद्यालय, बनोजा येथे सहभाग घेतला. त्यामधील कु. कल्याणी देशमुख, कु. राधीका सावके, कु. शितल सापतकर, कु. निवेदीता राठोड, कु. रुचीता वाकोडे यांनी निवड चाचणी करीता नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा येथे सहभाग घेतला.

दरवर्षीप्रमाणे यावर्षी ही स्नेहसंमेलना निमित्त क्रिडा दिवसाचे आयोजन दि. १ आणि २ जानेवारी २०१९ मध्ये करण्यात आले. यामध्ये प्राध्यापक व विद्यार्थीनीं करीता टेबल टेनिस स्पर्धा, बॅडमिंटन स्पर्धा, मॅराथॉन, तीन पायाची शर्यत, पुस्तक दौड, संगीत खुर्ची इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले होते. यामध्ये प्राध्यापक वृंद व विद्यार्थीनींनी उत्फूर्त सहभाग घेतला. यास्पर्धेकरीता प्रथम, द्वितीय व तृतीय पारितोषिक प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास यांच्या हस्ते देण्यात आले व त्यांचे अमुल्य मार्गदर्शन मुलींना लाभले.

महाविद्यालयामध्ये गणतंत्र दिवस व प्रजासत्ताक दिनी ध्वजारोहनाच्या राष्ट्रीय कार्यक्रमामध्ये संस्थाध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांच्या हस्ते करण्यात आला. त्यावेळी कार्यकारीनी सदस्य, प्राचार्य, प्राध्यापकवृंद, शिक्षकेत्तर कर्मचारीवृंद व विद्यार्थीनी मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होत्या.

दिनांक ११.०१.२०१९ ते १५.०२.२०१९ पर्यंत वरिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे शारिरीक क्षमता चाचणी घेण्यात आली. चाचणीकरीता बाह्यपरिक्षक म्हणून प्रा.संजय काळे (श्री.शिवाजी महाविद्यालय, अकोला) व आंतरीक परिक्षक म्हणून प्रा.श्वेता पी. मेन्ढे व प्रा.सचिन बंडगर, श्री. सुगत बोधळे यांचे सहकार्य लाभले. शारिरीक क्षमता चाचणीचा अहवाल विद्यापीठात पाठविण्यात आला.

कनिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थीनी कु. काजल अजाबराव घूले हिने टुशू डिव्हीजन लेवल स्पर्धा अमरावती येथे गोल्ड मेडल मिळविले व राज्यस्तरीय टुशू स्पर्धा जालना येथे सहभाग घेतला. कुडो डिव्हीजन लेव्हल ज्युडो डिव्हीजन लेवल स्पर्धा अमरावती येथे अनुक्रमे गोल्ड व सिल्वर मेडल मिळविले. कु. निकिता अशोक घोडके हिने जिल्हास्तरीय कुस्ती फ्री स्टाईल स्पर्धा अकोला येथे गोल्ड मेडल मिळविले व राज्यस्तरीय कुस्ती स्पर्धा येथे सहभाग घेतला. कु. अंजली संजय अवस्थी हिने राज्यस्तरीय मिक्स बॉक्सिंग कोल्हापूर येथे सहभाग घेतला.

वरिल सर्व उपक्रम यशस्वीतेसाठी प्रा. श्वेता पी. मेन्ढे, प्रा.सचिन बंडगर, सौ. वंदना पिपंळखरे, डॉ. रविन्द्र मुन्द्रे व प्रा. विजय आळशी यांनी अथक परिश्रम घेतले.

विश्व ओळखावे आपणावरुन । आपणची विश्व घटक जाण ।
व्यक्तीपासून कुटूंब निर्माण । कुटूंबापुढे समाज आपुला ।।

Department of Commerce Annual Report 2018-19

Department of Commerce under takes various activities under Commerce Forum. This forum is established every year with the objective of enhancing the knowledge and skill of students along with improving their aptitude. The Commerce Forum body constitute of students representation working throughout the year. In the academic year 2018-19 various workshops. seminars and other academic activities were organized.

Details of extension and co-curricular activities.

Sr. No.	Name of the Event	Date of the Event	Type of the Event	Speaker
1.	Commerce Forum Inauguration	10/09/2018	Academic	Shri. Vaplavji Bajoriya (MLC)
2.	Workshop on Indian Post Bank	04/10/2018	Carrier Oriented	Mr. Umesh Patil (Br. Manager, IPPB)
3.	Seminar on G.S.T.	09/10/2018	Academic	Adv. Shital Jalamkar (Tax Professional)
4.	Workshop on E-Commerce Project Report	22/12/2018	Academic	Dr. Vandana K. Mishra (Asso. Prof.) Mrs.L.R.T. College, Akola.
5.	Seminar on MBA-CET Preparation	24/12/2018	Carrier Oriented	Shri. Amol Agrawal Director T.I.M.E., Akola Br.
6.	Seminar on Self Motivation- "Mai"	26/12/2018	Personality Development	Shri. Dilipraj Goenka President B.S.S.
7.	Seminar on Careers in E-Commerce	31/01/2019	Carrier	Dr. Deepak Tripathi Asso. Prof. (Kalinga University, C.G.)
8.	Seminar on Career Habits	22/02/2019	Professional Development	Dr. Prasad Khanzode Memeber BOS Asso. Prof. L.T. College Wani-Yevatmal.
9.	Workshop on Investment & Mutual Fund	28/02/2019	Carrier Oriented	Shri. Dilipraj Goenka President B.S.S. Franchisee Head Anand Rathi Investment, Mumbai.
10.	Workshop on Income Tax Return	18/03/2019	Academic	Shri. Bharat Vyas (C.A.)

The activities under taken by Commerce Forum provided a platform to the students to show their hidden talents and enhance the knowledge base. All the activities were held under the able guidance and leadership of Shri. Diliprajji Goenka, President BSS, Dr. D.N. Vyas, Principal, Dr. A.B. Pande, HOD Commerce, Mrs. H.S.Wadhone Convener Commerce Forum. Dr. V.B. Chavhan, Prof. Anup Sharma, and all teaching, non teaching staff and students of the department tried hard to make this forum a success.

There is only one happiness in this Life, to love and be loved. - George Sand.

Report
"Annual Gathering – "Uddan" 2018-19"



Smt. RDG College for Women, Akola, had organized Annual Gathering – "Uddan" 2019 on 5 & 6 January 2019. It comprised the celebration of Bharatiya Sewa Sadan's 77th Foundation Day, and 116th Birth Anniversary of Founder President honoura-ble Mataji Late Smt. Radhadevji Goenka. Annual Gathering of our college is not just entertainment, it is great work of extension serving multiple needs of students and society and aiming at versatile develop-ment of our students. It is theme-based event and this year, the theme is **"Kab Tak Rokoge"**. Highlights of the event is as follows;-

- First Day's Inaugural Guests are Hon'ble Collector, Akola District, Mr. Aastikkumar Pandey.
- Mr. Aastikkumar Pandey and in house guest felicitated meritorious students and Mr. Ravindrakumarji Goenka, Vice-President of BSS, declared and gave the prestigious award, "Late Vimladeviji Goenka Student of the Year" to Ms. Komal Bharadwaj.
- Mr. Aastikkumar Pandey motivated the students giving the message of "Atta Dip Bhava".
- Hon'ble President BSS, Mr. Diliprajji Goenka delivered his message of Empowerment of Women.
- Second Day was Prize Distribution Ceremony and Mr. M. Rakesh Kalasagar, Superintendent of Police, Akola and his renowned and well-versed wife, Mrs. Maanasa Kalasagar, Psychiatrist were the Chief Guest of the ceremony. Approxi-mately 83 Awards were given to 52 students including Preana Award to the student who is physically disabled and putting struggle against adverse circumstances.
- Various theme-based events such as Welcome classical dance by Ms. Rutuja Manbhekar and Awantika Bawiskar, dance performance by Ms. Neha Palhade, Ms. Divya Chouhan and her group, Ms.Renuka Girhe and her group, Ms.Vaishnavi Berde & group and drama Mai Udana Chahati Hu by Ms. Shivani Goud and other B.Com.III group and Swach Bharat Sunder Bharat etc are outstanding cultural events of the celebration.
- Fashion Show and RDG Idol – Beauty and Brain Competition were key event of the gathering. Ms. Priya Ninore of B.C.A.I was selected as a RDG Idol-2019.
- Some Competitions were organized before Annual Day such as Rangoli making competition, Mehandi competition, Salad Decoration, etc.
- Sports Day and Anand Mela were also organized.

Cleanliness from Inside and Outside, Health automatically resides both side.

Report of Debate, Elocution & Other Competition Committee

Composition – Dr. Vinod B. Khaire, Shri. Ram Baheti, Prof. Sandeep Wankhade, Prof. Swapnil Ingole

1. Meeting of the Committee held on 21 August 2018 for discuss the subject on organizing various competitions, workshop on elocution , training for the students , essay competition, elocution competition, quiz competition.

2. Elocution Training Workshop were organized for the UG students on 23 August 2018.Prof . Swapnil Ingole & Prof. Monika Sirsath gave guidance and lecture to the students for preparation of Elocution Skill. Dr Vinod Khaire gave Introductory Speech, Prof Ajay Shingade conducting the program and Prof Sanjay Vite proposed the vote of thanks.

3. Essay competition were organized on 22 September 2018 on the subject 'India is a Secular country'. 'Contribution of Youth in Nation Building'. Examiner of competition was Prof Avinash Sable .Pragati Raibole secured 1st place , Vaishali Gawande won 2nd Prize and Neha Ingle got 3rd position.

4. Fast writing competition were organized on 26 September 2018 . Prof Lalit Bhatti was evaluated the competition. Dhanshri Lunge bags 1st prize, Kiran Raut secured 2 nd rank and Vaishnavi More got 3rd position in competition.

5. Elocution Competition were organized on 25 September 2018 on 'Contribution of women in Development of India'. Prof Swapnil Ingole and Prof Deepa Deshmukh were examiners of competition. Vaishnavi Halwane got 1st prize, Kirti Chincholkar won 2 nd prize and Kajal Sirsath won 3rd prize of the competition.

6. Quiz competition was organized on 26 September 2018 .Prof Ajay Shingade was examine the contestants.Chandrani Khandare won 1st prize , Vaishali Gawande got 2nd prize and Dhanshri Lunge got 3rd prize of competition.

7. Elocution Competition was organized on 6th January 2019 on the subject- 'Kab tak Rokoge' and 'O Stree jarur padhana'. Prof Sanjay Vite and Prof Ajay Shingade were examine the contestants. Prof Swapnil Ingole conducting the program. Pranali Raut won 1st prize , Rohini Jadhav got 2nd prize and Ankita Ugale secured 3rd place in elocution competition.

Achievements of the Students in Various Competitions :-

1. Smurti Nareandra Dhoot won 1st prize of 2000/- Rs in Elocution Competition organized by Shivaji College , Akola.

2. Smurti Dhoot won 2nd prize in Elocution Competition organized by Jyoti Janolkar Vidyalaya, Akola.

3. Smurti Dhoot won 2nd Prize in Elocution Competition organized by Babuji Deshmukh Vachanalaya, Akola.

4. Rohini Jadhav and Pranali Raut were participated in Debate competition organized by Babuji Deshmukh Wachnalaya, Akola.

5. Rohini Jadhav and Sandhya Prajapati were participated in debate competition organized by G S College Khamgaon.

6. Rani Pali and Divya Chavan were participated in Youth Festival , Debate competition.

7. Smurti Dhoot won 1st State Level Elocution Competition organized by Maharashtra Government, Sports and Youth Department.

Convener

(Dr Vinod Khaire)

One best book is equal to hundred good friends but one good friend is equal to a library.

- Dr. APJ Abdul Kalam

There can be only one captain to a ship that's you. - Thomes Barnardo

स्पर्धा समिती अहवाल २०१८-१९





हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महाविद्यालय के स्नेह सम्मेलन के साथ-साथ स्पर्धा समिती ने विविध स्पर्धाओ का आयोजन किया, 'कब तक रोकोंगे' इस मूल विषय पर केन्द्रित स्नेह सम्मेलन के अनुसार हि विविध स्पधाऔ में भी कब तक रोकोंगे यह विषय केन्द्र में रहा जिसके अनुसार छात्राओं ने अपना कलात्मक प्रदर्शन किया ।

प्रतिस्पर्धा के युग में छात्राओं में व्याप्त कलात्मकता को बढ़ावा देने व उन्हे निखारने का कार्य स्पर्धा समिती करती है । इस वर्ष समिती ने मुख्यतः चार प्रकार के स्पर्धा का आयोजन किया ।

रंगोली स्पर्धा, मेंहदी स्पर्धा, सलाद डेकोरेशन स्पर्धा एवं हार बनाने की स्पर्धा

रंगोली स्पर्धा में १५ छात्राओ ने हिस्सा लिया । जिसमें कु. राधा प्रभाकर दम्बालकर, बी.ए. तृतीय की छात्रा ने प्रथम क्रमांक प्राप्त किया । द्वितीय क्रमांक - कु. सारिका रामदास वानखडे, एम.कॉम. द्वितीय, तृतीय क्रमांक - कु. शिवानी सचिन गौड़, बी.कॉम, द्वितीय एवं उत्तेजनार्थ - कु. पूजा सुरेश बायस्कर, एम.ए. प्रथम वर्ष.

मेंहदी स्पर्धा :- इस स्पर्धा में २० छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम स्थान पे रानी प्रल्हाद सनादिया, बी.ए. प्रथम वर्ष., द्वितीय स्थान पे राधा. पी. दम्बालकर, बी.ए. द्वितीय वर्ष, तृतीय स्थान पर शिवानी जी. वानखडे, बी.ए. द्वितीय वर्ष एवं अक्षता राजेश वानखडे बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा रही ।

सलाद डेकोरेशन - इस स्पर्धा में १५ छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम स्थान पे वैष्णवी ए. तेल्हारकर, बी.ए. प्रथम वर्ष., द्वितीय स्थान पे चैताली पी. खंडारे, बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा रही ।

हार बनाने की स्पर्धा :- इस स्पर्धा में ५ छात्राओं ने हिस्सा लिया जिसमें प्रथम सारिका रामदास वानखडे, एम.कॉम. प्रथम वर्ष.

उपरोक्त स्पर्धा में परिक्षक के रुप में प्रा. स्नेहा पाटिल, सौ. दिप्ती जोशी, सौ. सुषमा गोखले, प्रा. किरन मुळे, श्री. मनोहर गिऱ्हे ने कार्य किया । समिती सदस्या के रुप में प्रा. रुमाले, प्रा. वाजपेयी, प्रा. मुळे ने सहयोग किया । समन्वयक काय कार्य डॉ. निभा उपाध्याय पर रहा ।

डॉ. निभा उपाध्याय

समन्वयक

मंजिल चाहें कितनी भी ऊँची क्यों न हो, रास्ते हमेशा पैरों के नीचे ही होते है ।

Home Science Department's Bridge / Pouch Course – Soft & Life Skill Development Personality Empowerment Course

सुंदर आणि सक्षम मी होणार...



The Bridge / Pouch Course was planned, framed and implemented with the objectives of Soft & Life Skill Development Training for Women as well as Educational Extension Activity . The course was organized by Dr Anjali Rajwade , Professor & HOD Home Science and Team members Mrs Seema Agrawal, Mrs Zeenat Khan, Mrs Vrunda Bhagat ; in collaboration with Akhil Bhartiya Marwadi Mahila Sangathan, Akola. It was inaugurated on 12-02-2019 and continued till 11-03-2019 clocking more than 40 hours. Experts from various fields guided the students through Lectures, Power point presentations, Demonstrations, Field activity etc. The Valedictory function was organized and Certificates were distributed to the students.

The students' response and participation in the course was outstanding. They listened to the speakers in rapt attention, yet interacted with them enthusiastically. Students of diverse faculties took part in the course and many more are eagerly waiting for the next session of the course, due to restricted entries in the current course.

Experts from various fields of important aspects of life and health were invited to guide and encourage the students. Soft skill development, broadening of vision and thinking, boosting curiosity and channelizing right attitude among the students were some of the aims and gains of the Bridge course which had a deep and encouraging impact on the students.

It was planned to ascertain the impact of the course for the students, by analyzing the data obtained through students' feedback. Course students were instructed to rank their Knowledge Level and Satisfaction Level, regarding the Course Topics, from 1 to 10 respectively . The ranking was done 'Before' and 'After' the course. The feedback data was analyzed statistically. The analysis revealed that there was a statistically significant positive impact on the respondent students.

(Dr. Anjali A. Rajwade)

If you don't drive your business, you will be driven out of businee. - B.C. Forbes

गृहअर्थशास्त्र विभागात सत्र २०१८-१९ मध्ये 'भरतकाम शॉर्ट टर्म कार्यशाळेचे आयोजन'

दिनांक ८ जानेवारी २०१९ ते १५ फेब्रुवारी २०१९ या कालावधीत कौशल्यावर आधारीत भरतकाम कोर्सचे आयोजन करण्यात आले बी.ए. प्रथम वर्षाच्या ४० विद्यार्थीनींनी या कार्यशाळेत प्रवेश घेतला होता.

भारतीय संस्कृतीमध्ये भरतकामाला अतिशय महत्वाचे स्थान आहे. कपड्यांमध्ये आकर्षकता व सौदर्य निर्माण करण्याच्या दृष्टीने विविध टाक्यांचा उपयोग करुन सुंदर नमुने तयार केले जातात. ज्याचा सजावटीमध्ये उपयोग केला जातो.

या कोर्सचे मुख्य उद्देश : विद्यार्थ्यामध्ये कौशल्या निर्माण करणे, कौशाल्याच्या माध्यमातून शिकतांना कमवा म्हणजेच आर्थिक सक्षमीकरण करणे व पारांरीक भरतकाम बद्दल सतर्क करणे.

याकरीता दिनांक १३, १४, १५ फेब्रुवारी २०१९ मध्ये ३ दिवसांची कार्यशाळा आयोजीत करण्यात आली. आयोजक प्रा. किरण मुळे, डॉ. उज्वला बाजपेयी व तज्ञ मागदर्शक म्हणून प्रा. सपना इो यांची विशेष उपस्थिती होती. त्यांनी पारंपारीक भरतकाम यातील महत्वाच्या टाक्यांवर प्रशिक्षण दिले.

कौशल्य निर्माण करुन रोजगार प्राप्त करणे हा उद्देश साध्य करण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. त्यांच्याकडून नमुने तयार करुन घेण्यात आले. या प्रात्याक्षिक परिक्षेनंतर २३.०४.२०१९ ला प्रमाणपत्र देण्यात आले. यामध्ये गृहअर्थशास्त्र विभागाच्या डॉ. राधा सवजीयानी व प्रा. विद्या धृव यांचा सक्रीय सहभाग होता.

डॉ. उज्वला बाजपेयी

Add On Courses

English Dept.	:	English Speaking Courses, English Language Learning & Speaking.
मराठी विभाग	:	सुत्र संचालन – एक कौशल्य. अनुदिनी लेखन – एक कौशल्य.
मराठी व संगीत विभाग	:	महाराष्ट्रामधील समाजप्रबोधनपर लोककला – भारुड.

Our Laurels.....



Komal Bhardwaj **Tejal Nighot** **Priya Ninore** **Zanab Bora** **Swati Barabde**
Nita Nandane **Chaitali Rathod** **Prakruti Gupta** **Sharvari Dharaskar** **Namrita Kediya**

कला शाखा अहवाल २०१८-१९

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालयाच्या कला शाखेच्या वतीने शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ मध्ये कला विभाग प्रमुख डॉ. अर्चना अंभोरे आणि डॉ. विनोद खैरे यांच्या नेतृत्वाखाली आणि प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनाखाली विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक व मार्गदर्शनपर कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. त्याचे संक्षिप्त विवरण खालील प्रमाणे आहे.

१. महाविद्यालयाची ओळख कार्यक्रम २६ जुलै २०१८

२. कला शाखा कार्यशाळा २८ जुलै २०१८

३. वक्तृत्व आणि इंग्रजी संवाद कार्यशाळा १८ ऑगस्ट २०१८

४. गृह अर्थशास्त्र विभागाच्या वतीने गृह सप्ताह

५. समाज विज्ञान सप्ताहाचे आयोजन २२ सप्टेंबर ते २७ सप्टेंबर २०१८ प्रमुख पाहुणे डॉ. बी.एच.किर्तक व प्राध्यापक विश्वनाथ कांबळे

६. हिंदी विभागाच्या वतीने हिंदी भाषा सप्ताह.

७. भारतीय संविधानातील वैश्विक मूल्य आणि डॉक्टर आंबेडकर यावर विशेष व्याख्यान ७ डिसेंबर २०१८ प्रमुख वक्ते डॉ. सुभाष गवळी.

८. मतदाता जागृती मंचाची स्थापना १८ जानेवारी २०१९.

९. अकोला शहर पक्षी निवडणूक २४ जानेवारी २०१९.

१०. अर्थशास्त्र विभागाची अकोला अर्बन बँकेचे भेट १ फेब्रुवारी २०१९.

११. मराठी भाषा सप्ताह १४ फेब्रुवारी ते २१ फेब्रुवारी

१२. एडूटेनमेंट कार्यक्रम इंग्रजी विभाग २० फेब्रुवारी ते २८ फेब्रुवारी.

१३. पदवीदान समारंभ२० फेब्रुवारी २०१९.

१४. मराठी भाषा दिन २८ फेब्रुवारी.

१५. ब्लॉग लेखन कोर्सचा प्रारंभ १८ मार्च २०१९.

१६. इंडियन कॉन्सिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च नवी दिल्ली च्या वतीने तत्वज्ञान विभागाचे पेरायोडिकल लेक्चर १९ मार्च २०१९.

१७. इंग्रजी विभागाचा इंग्लिश संवा लेखन कार्यशाळा ३ मार्च २०१९.

१८. बी.ए. तृतीय वर्षाच्या विद्यार्थीनींना निरोप समारंभ ४ एप्रिल २०१९.

१९. संगीत विभागातर्फे 'स्वरमिलाप' कार्यशाळा - १५ ऑक्टोबर २०१८, गायत्री बालिकाश्रम, अकोला १२ मार्च २०१९. स्नेहमिलन दिवाळी संगीत मैफल - ३ नोव्हेंबर २०१८, स्व. किसनलालजी गोयनका स्मृतिदिनी संगती सभा २८ जानेवारी २०१९.

करिअर मंत्रा - संगीत विषयात करिअर - या सोबतच 'संगीत शास्त्र कार्यशाळा', पं. किशोरी आमोणकर चे संगीत - चर्चासत्र, संगीतज्ञांच्या जयंती - पुण्यतिथी समारोह, मासिक संगीत सभा ३ चे आयोजन.

वरील विविध कार्यक्रम विद्यार्थीनीच्या भाषिक वाचक मानसिक सक्षमीकरणासाठी आयोजित करण्यात आले होते. त्याच बरोबर विद्यार्थ्यांमध्ये वाचन, लेखन व संवाद कौशल्य विकसित करणे या हेतूने कला शाखेच्या वतीने इंग्रजी, मराठी, हिंदी, संगीत, राज्यशास्त्र, समाजशास्त्र, गृह अर्थशास्त्र, तत्वज्ञान, इतिहास, संस्कृत, अर्थशास्त्र, उर्दू, मानसशास्त्र इत्यादी विविध विभागाच्या वतीने अनेक शैक्षणिक कार्यक्रम राबविण्यात आले.

डॉ. विनोद खैरे
समन्वयक

स्वप्न ते नव्हे जे आपण झोपून बघतो, तर स्वप्न ते हवे जे तुमची झोप उडवेल.
- डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

चित्रकार की सुंदर अदाकारी....



















कु. तमन्ना मानधने, बी.ए. प्रथम वर्ष
कु. समिक्षा एच. दांदळे, बी.कॉम. तृतीय वर्ष
कु. वैष्णवी गजानन मोरे, बी.कॉम. तृतीय वर्ष



रंगीन पेपर से बनी कलाकृती
कु. महिमा ठाकूर
बी.ए. प्रथम वर्ष

कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के तत्व
और सौंदर्य का रंग भरता है । – डॉ. रामकुमार

शैक्षणिक सत्र २०१८-२०१९ मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी

Name : **Dr. Devendra Vyas (Principal)**

- RRC Member, Commerce & Management Dept. S.G.B.A.U.Amravati .
- Nominated Member - Board of Studies - Business Economics.
- Recognized P.G. Teacher - SGBAU., Amravati.

Name : **Dr. Anjali Rajwade**

- Elected Member of BOS, Home Science, SGBAU., Amravati.
- Nominated Member - Board of Post Graduate Education in College.
- In charge, Ph.D. Research Center Home Science.
- Nominated Subject Expert on the Research & Recognition Committee for the Board of Studies in Home Science by Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawada University, Aurangabad. ▸ Recognized P.G. Teacher - SGBAU., Amravati.

नाव : डॉ. अर्चना माधव अंभोरे

- संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ संगीत अभ्यास मंडळ, सदस्य. ▸ संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ अमरावती पदव्युत्तर शिक्षण मंडळ, सदस्य. ▸ महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे द्वारा पाठ्यपुस्तक लेखन मंडळ, सदस्य. ▸ नागपूर आकाशवाणीहून करिअर मंत्रा मालेत – संगीत या क्षेत्रात करिअरच्या संधी – मुलाखत प्रसारित.

Name : **Dr. Nibha Upadhyay**
Nominated Member - Board of Studies - Hindi - Humanities Dept.
Nominated Member - Board of Studies - Hindi Language - Commerce & Management.

Name : **Dr. Radha R. Sawjiyani**
Nominated Member - Board of Studies - Home Economics - Humanities Dept.

Name : **Dr. Dhanshri Mulaokar**
Nominated Member - Board of Studies - Music - Humanities Dept.

Name : **Dr. Ravindra Mundre**
D.Litt. by University of Asia, North Korea.

नाव : डॉ. अजय शिंगाडे

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे तत्त्वज्ञान अभ्यास मंडळावर तज्ज्ञ समिती सदस्य म्हणून निवड.

Ph.D. Supervisors

Name : **Dr. Umesh P. Patil**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in English by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Vinod B. Khaire**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Political Science by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Ambadas Pande**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Commerce by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Ravindra N. Mundre**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in History by S.G.B.A.University, Amravati.

Know the self, Know the enemy. A thousand battles, a thousand victories.
- Sun Tzu.

वृत्तपत्र प्रसार माध्यमांच्या नजरेतून आर.डी.जी. महाविद्यालय...

आरडीजी में महिला मतदाता पंजीयन एवं जागरूकता कार्यक्रम



'आविष्कार 2018 में आरडीजी की छात्राओं का सक्रिय सहभाग



ध्येय साध्य होईपर्यंत प्रयत्न करा- पोलीस अधीक्षक



विद्यार्थ्यांमध्ये सामाजिक जाणीव निर्माण व्हावी!



महिलांसाठी आरोग्य मार्गदर्शन कार्यक्रम



RDG College, Akola



One of the guests addressing the programme.

BHARTIYA Sewa Sadan (BSS) and Department of Philosophy of Smt Radhadevi Goenka College for Women, Akola, organised a periodical lecture series sponsored by Indian Council of Philosophical Research, New Delhi. The Key Note speaker were Dr Santosh Thakre, Principal of Gadge Maharaj College, Murtijapur, and Dr Ravindra Mundre, Senate Member, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati, and Dilipraj Goenka, President, BSS. Principal Dr Devendra Vyas, Prof Sanjay Vitte, IQAC Co-ordinator, were prominently on the occasion Prof Ajay Shingade Head of Philosophy Department delivered introductory remarks. Dr Santosh Thakre said "India has various ideologies like Vedic, Buddhist, Jainism and Charwak, each has some basic values and principles .There are common thing in these ideologies is 'humanity'. India has unity in diversity, which strengthens the nation-ality and nation building". Dr Mundre delivered speech on 'so-

आरडीजी महाविद्यालयात संचालन आणि ब्लॉग लेखन कोर्सचे उद्घाटन

आरडीजी छात्राओं ने लिया पीरियडिकल लेक्चर का लाभ



आरडीजी महाविद्यालय स्नेहसंमेलनाचे उद्घा









मराठी भाषा सप्ताह साजरा

आरडीजीमध्ये रस्ता सुरक्षा अभियान



अकोला ● श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय का उपक्रम

'सुंदर और सक्षम बनूंगी मैं' उपक्रम को छात्राओं का व्यापक प्रतिसाद



आरडीजी महिला महाविद्यालय में प्रथम दीक्षान्त समारोह



RDG College, Akola



Dignitaries awarding degree to a student.

आरडीजी महाविद्यालयामध्ये वक्तृत्व व इंग्लिश स्पीकिंग कार्यशाळा उत्साहा



SMT RADHADEVI Goenka Women's College (RDG), Akola, organised first degree distribution programme under the guidance of President Dilipraj Goenka and Principal Dr Devendra Vyas. Dr Ravindra Mundre and Dr Santosh Hushe were chief guests. Dr Vyas presided over the programme. Dr Anjali Rajwade, Dr Archana Ambhore and Dr Ambadas Pandey and IQAC Co-ordinator professor Sanjay Vitte were prominently present in the programme. First merit of MSc Swati Barabde, fifth merit of BA Neeta Nandane, 10 th merit of BCA Zainab Bohra, Aarti Agrawal , Khushboo Singh were felicitated by the dignitaries. Dr Ambhore and Dr Rajwade guided students. Students of BA, Bsc, BCom and PG and BCA 20 were awarded degrees. Professor Lalit Bharti conducted the proceedings and proposed a vote of thanks.



Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

NAAC Reaccredited Grade - B^{+} with CGPA - 2.71 (Certified Minority Institution)

Near Nehru Park, Murtizapur Road, Akola - 444 001(M.S.)

Phone & Fax : 0724-2450905 Website : www.rdgeducation.org

E-mail : rdgcollege@rdgeducation.org, info@rdgeducation.org

Design By : B.Suraj : 9923136443

सुरभि

वार्षिकांक
२०१९-२०२०



Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

NAAC Reaccredited Grade - B^{+} with CGPA - 2.71
(Certified Minority Institution)

Website : www.rdgakola.ac.in ▸ E-mail : rdgcollegeakola@gmail.com

भारतीय सेवा सदन, अकोला के उपक्रम

१) आर.डी.जी. पब्लिक स्कूल इंग्रजी माध्यम (C.B.S.E.)

२) विद्यामंदिर प्राथमिक शाळा (हिंदी व मराठी माध्यम)

३) श्रीमती राधादेवी गोयनका विद्यामंदिर बॉईज हायस्कूल (हिंदी व मराठी माध्यम)

४) विद्यामंदिर कन्या शाळा (हिंदी व मराठी माध्यम)

५) श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.

- **कनिष्ठ महाविद्यालय :** कला / वाणिज्य / विज्ञान / व्होकेशनल (अकाऊंटींग, फुड टेक्नॉलॉजी)
- **वरिष्ठ महाविद्यालय :** कला / वाणिज्य / गृहविज्ञान
- **पदव्युत्तर विभाग (विनाअनुदानित) :** कला / वाणिज्य / गृहविज्ञान
- **विनाअनुदानित अभ्यासक्रम (NGC) :** BBA, BCA, MCM, Fashion Designing, Communication Skill in English, Banking & Insurance.

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

Goals and Mission of the College

1] Inspired by National Freedom Movement the Society was founded in 1942 with a goal to inculcate the spirit of Nationalism,

2] To impart education to women in Vidarbha Region,

3] To attain Community and Social development through infrastructure and resources available at the college,

4] To provide platform to the students by giving them opportunity to face challenges of competitive world,

5] To ensure and inculcate discipline in terms of regularity, punctuality among students so that they can contribute to the society and nation,

6] To inspire students to participate in Sports, NSS, NCC and various cultural activities for their all round development,

7] To aim at overall personality development of students.

भारतीय सेवा सदन द्वारा संचालित

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय अकोला.

-: श्रद्धास्थान :-

आदरणीय माताजी स्व.श्रीमती राधादेवीजी गोयनका

संस्थापिका अध्यक्ष - भारतीय सेवा सदन, अकोला

संरक्षक

श्रीमान दिलीपराजजी गोयनका

अध्यक्ष, भारतीय सेवा सदन, अकोला.

मार्गदर्शक

डॉ.देवेन्द्र व्यास

प्राचार्य

मुख्य संपादक

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक मंडळ

▸ प्रा.डॉ.चारुशिला रुमाले ▸ डॉ.शालिनी बंग ▸ प्रा.प्रमिला बोरकर

संपादकीय विद्यार्थीनी

मराठी विभाग : कु. रुपाली पांडे, कु. कांचन गुढे, कु. सुवार्ता खरात, कु. प्रियंका चौव्हाण, कु. मनिषा चक्रदेवे, कु.रुपाली पांडे, कु. देवयानी हातवळणे, कु. निकीता तापसी, कु. शारदा साठे, कु. जान्हवी मांडळे, कु. कोमल ढोरे, कु. नेहा ढोरे, कु. पुजा गिरी.

हिंदी विभाग : कु. संध्या प्रजापति, कु.दिव्या चव्हाण, कु. प्रिया मिश्रा, कु. कोमल ढोरे, कु. साक्षी बजाज, कु. ईशा पांडे, कु. राखी चौहान, कु. नेहा ढोरे, कु. गायत्री कामळे.

संस्कृत विभाग : कु. अदिती देशपांडे, कु. सायली सुदामे, कु. जाई विद्यासागर, कु.माधुरी शुक्ला, कु.वृषाली जोशी, कु. ललिता सावरकर, कु. रेश्मा भोकरे, कु. रेणु जैस.

इंग्रजी विभाग : कु. शिवानी कराळे, कु. रोहिनी जाधव, कु. संध्या प्रजापति, कु. ईशा प्रधान, कु. निकीता नवले.

प्रकाशक

प्राचार्य, श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.

रुपरेखा : सुरज एन.भांगे, अकोला. मो. ९९२३१३६४४३

अंतरंग

- मराठी विभाग
- हिंदी विभाग
- इंग्रजी विभाग
- संस्कृत विभाग
- विविध अहवाल

।। हमारे श्रध्दास्थान ।।

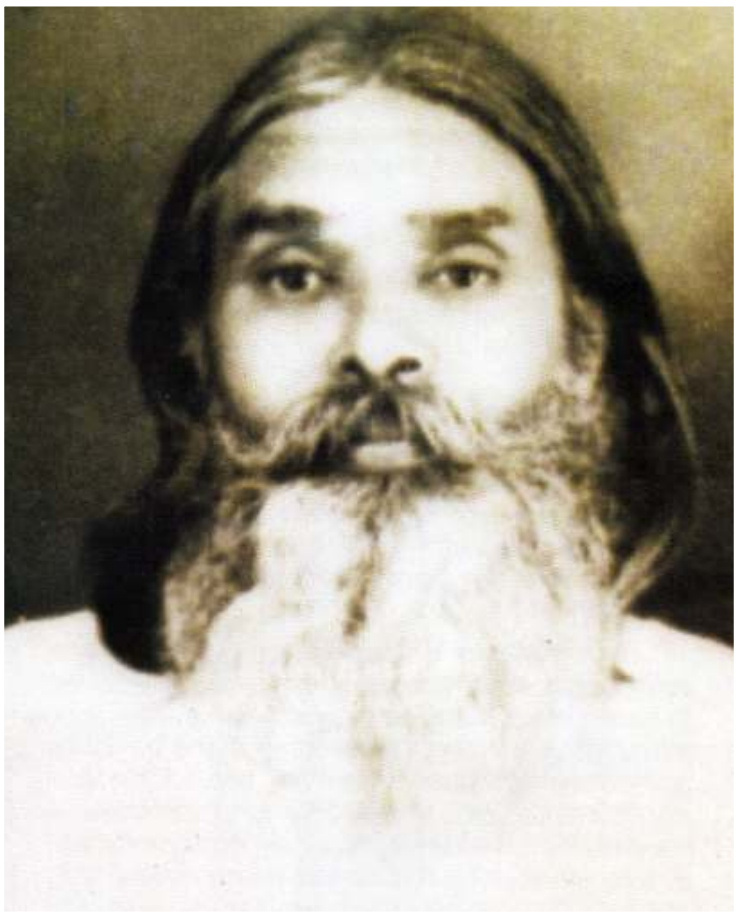

भारतीय सेवा सदन संस्था के आश्रयदाता

सेठ स्व.श्रीमान किसनलालजी गोयनका

।। प्रेरणा पाथेय ।।

श्रध्देय माताजी **स्व.राधादेवीजी गोयनका** के स्वर्गारोहण के पश्चात यद्यपी उनकी भौतिक उपस्थिती आज हमारे बीच नही है, किंतु उनके प्रेरणादायी विचारों का आलोक हमारे विकास पथ को आलोकित करता रहा और सदैव करता रहेगा ।

श्रध्देय माताजी द्वारा "**सुरभि**" २००९-१० में उनके द्वारा लिखे गए सारगर्भित अंतिम आशिर्वचन का अंश प्रस्तुत है ।

"मै चाहती हूँ आप सब खूब पढ़े । केवल पढ़े लिखे ही नहीं बल्कि स्वावलंबी व ज्ञानी और देश, समाज व संस्था का नाम उँचा करें ।"

आप सबको और कितने संदेश मै लिख पाऊंगी मै नही जानती हूँ । जीवन का संध्याकाल है । यात्रा अस्ताचंल की ओर है अतः मै अपने जीवन के अध्ययन तथा अनुभवों का निचोड आप तक पहुंचाना चाहती हूँ । हमारे पास जो भी है, विद्या, शक्ति तथा धन सबका उपयोग परहित में होना चाहिये । यही धर्म है । जो आप सब स्वयं के लिए होना पसंद नही करते वह दुसरों के साथ कभी न करें ।

जीवन सुख दुःख का मिश्रण है । दोनो में तटस्थ रहना चाहिए । कहना आसान है, करना कठिन है लेकिन असाध्य नहीं है । साधना जरुरी है । स्कूल, कॉलेजों की शिक्षा के अलावा संतो की अनूभूती और भी जरुरी है । इसके लिए मै आप सबसे गीता और रामायण नित्य पढ़ने का तथा उन्हे जीवन में उतारने का अनुरोध करती हूँ । अतः सुबह-शाम नियम से प्रतिदिन कम से कम बीस मिनट ध्यान करना चाहिए । यह मेरे अनुभव की बात है । केवल उपदेश नही है । भारतीय सेवा सदन व संस्थाओं में मेरे प्राण बसते है । इन्हे आप सबका सदैव सहयोग और स्नेह मिलता रहे ।

मैं आप सबको अनेकों शुभाशीर्वाद देती हूँ ।

सबका कल्याण एवम् मंगल हो ।

Source of Inspiration



The Founder President of Bharatiya Seva Sadan, Akola
Great Freedom Fighter

Late. Mataji
Smt. Radhadeviji Kisanlalji Goenka

VISION

Empowerment of Women Through Economic Independence for Betterment of Society

MISSION

"To impart holistic Education to the girl students in order to transform them into Empowered, Capable of Self-earning and Efficient Individuals, Family Members and Citizens in their Future Lives"

भारतीय सेवा सदन, अकोला के सम्माननीय पदाधिकारी



श्री. दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



आ.श्री. गोपीकिसनजी बाजोरिया
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



श्री. रविंद्रकुमारजी गोयनका
उपाध्यक्ष



श्री. आलोककुमारजी गोयनका
सचिव



श्री. प्रफुल्लजी संघवी
सह सचिव



श्री. दुर्गाप्रसादजी अग्रवाल
कोषाध्यक्ष



श्रीमती. मंजुदेवीजी गोयनका
सदस्या



श्री. संजयकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री. विनीतकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री. तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



श्री. हरमिंदरसिंह छटवाल
सदस्य



श्री.ॲड. रमेशचंद्रजी श्रावगी
सदस्य



श्री.ॲड. बी. के. गांधी
सदस्य



श्री. दिपककुमारजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. सुनीलजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. रणजीतबाबु गुप्ता
सदस्य



श्री. शिवप्रकाशजी रुहाटिया
सदस्य



श्री. भरतराजजी गोयनका
सदस्य



श्रीमती इंदुबालाजी चौधरी
सदस्य



श्री. राजकुमारजी रुंगटा
सदस्य



श्री. घनश्यामजी गोयनका
सदस्य



श्री. पवनजी माहेश्वरी
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



श्री. के. के. जोशी
सदस्य

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय,अकोला

शाळा समिती (कनिष्ठ महाविद्यालय)



श्री.दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



श्री.रविंद्रकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.आलोककुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य/पदसिध्द सचिव

President's Message



Dear Students,

It is my great pleasure to welcome you to RDG College for Women. The college is unique within the landscape of Vidarbha region of Maharashtra State because it is exclusively the first women college providing education from PG to PG under one campus. What you see in these pages provides only the snapshot and trailer of incredible and excellent work carried out at this college. The college is privileged to have well qualified & experienced staff & administration dedicated to academic excellence, diversity, integrity, community services, social engagement, student success & the environment that foster RDG Culture, critical thinking & self-determination and with the vision of

"EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH ECONOMIC INDEPENDENCE FOR BETTERMENT OF SOCIETY "

We would be delighted to host you for a campus visit to see for yourself the good work of RDG College community, where students thrive & progress towards the realization of their full potential in every field. We provide quality education to the students and take their every possible care.

I am pleased & proud to have the opportunity to lead this institution with earnest cooperation of my colleagues, Principal and all the teaching and non-teaching staff.

Education enables one to differentiate between the good & the bad. We at Bharatiya Seva Sadan believe that "If you make a mind educated automatically all the evils of the society will be taken care of."

Our Moto is "Quality Education at Affordable Cost."

Our endeavor is to create a world class educational facility where lives are shaped as per today's needs, where you learn to meet the challenges of tomorrow.

Being a social organization it is our mission to not only fulfill the educational needs of the population but also contribute towards its upliftment from all social entrapments.

With best wishes

Dilipraj Goenka
President
Bharatiya Seva Sadan, Akola.

प्राचार्य का मनोगत



वर्ष २०१९-२० के वार्षिक विशेषांक 'सुरभि' का प्रकाशन हो रहा है अत्यंत आनंद का विषय है ।

हमारी प्रेरणा पुंज स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सफल समाजसेविका, साहित्यकार, श्रध्देय माताजी की प्रेरणा का अभिरंग 'सुरभि' जिसके माध्यम से हमारी छात्राओं मे व्याप्त सुप्त गुणो को मुखरित होने का अवसर प्राप्त होता है । और माताजी के विचारों के आलोक के साथ ही भारतीय सेवा सदन के अध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका जी का विशेष मार्गदर्शन से हमारीं छात्राओं में सामाजिक दायित्व की भावना भी जागृत हो रही है और इसी भावना के परिणाम स्वरुप हमारी एन.एस.एस., एन.सी.सी. की छात्राएं कोरोना महामारी के समय जनसेवा का कार्य कर रही है । मिशन मास्क के अंतर्गत मास्क न लगाने वाले लोगों को मास्क लगाने की विनती कर रहे है और मास्क का महत्व भी समझा रहे है ऐसे ही कर्तव्य दक्ष युवा पीढ़ी की आज समाज को आवश्यकता है । साथ ही हमारे प्राध्यापक वर्ग की और से भी कोरोना महामारी के काल में कैसे स्वस्थ रहा जा सकता है, हमारा पोषण आहार कैसा होना चाहिए, इस संबंध में जनजागृती की जा रही है । इस हेतु अकोला जिल्हाधिकारी एवं जिला आरोग्य विभाग को एक निवेदन भी दिया गया है ।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है । भारतीय समाज और संस्कृति की विशेषताए हमें साहित्य में दिखाई देती है ।

महाविद्यालयीन जीवन यह विद्यार्थी जीवन का स्वर्णकाल कहा जाता है । इसी समय विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ जीवन के सर्वांगिण विकास का ध्येय लिये आगे बढ़ता है । अतः महाविद्यालय की छात्राओं को निरंतर आगे बढ़ाने की दृष्टि से उनके पंखो को नई उर्जा देने के लिए एवं उनके सपनों को साकार करने के लिए महाविद्यालय सदैव उनके साथ है ।

आज इस बदलते हुए परिवेश में हमें एक ऐसी ही युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारित हो, घर, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो, आर्थिक रुप से सक्षम होकर राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान करने के लिए दृढ संकल्प हो।

महिला सक्षमीकरण के इस दौर में महिलाओं की अहं भूमिका को देखते हुए हमारे महाविद्यालय में छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये हम सदैव प्रयत्नशील रहते है । साहित्य अभिमुख बनाने के लिए कहानी, कविता, नाटक, इत्यादि लेखन की प्रेरणा दी जाती है ।

आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग कर उद्योग क्षमता विकसीत करना, पर्यावरण सुरक्षा, मतदान जनजागृति, रक्तदान, अवयवदान का महत्व, नागरिक संरक्षण, स्वयंम रक्षण कार्यशाला, कानुन की जानकारी 'स्वस्थ राष्ट्र सशक्त राष्ट्र' को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सम्बंधि विविध कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है और प्रतीवर्ष महाविद्यालय से सभी क्षेत्र में प्रतिभावान छात्राओं में से स्टूडंट ऑफ द इयर, आर.डि.जी. ऑयडॉल का चयन किया जाता है एवं खेल जगत में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है । जिसकी सम्पूर्ण छवि 'सुरभि' में विद्यमान है ।

यह 'सुरभि' हमारे महाविद्यालय के अंतरंग की अभिव्यक्ति है ।

स्वर्णिम युग के सपने संजोये हमारी छात्राये निरंतर आगे बढ़े इसी विश्वास के साथ.....

डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य

संपादकीय...



'सुरभि' वार्षिक विशेषांक आपके हाथ सौपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है ।

साहित्य समाज का पथ प्रदर्शक माना जाता है, अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की दिशा दिखाता है । हर युग में ज्ञान-विज्ञान के सत्य को साहित्य ने उजागर किया है । हृदय और बुध्दि दोनो में समन्वय साधने की कला हमें साहित्य देता है ऐसे में आज की युवा पिढ़ी को साहित्य से जोडना आवश्यक है क्योकि वे ही महान देश का भविष्य है वैसे यह वर्ष कोरोना महामारी के कारण मानव जीवन के लिए संघर्ष का वर्ष बन गया है किंतु दृढ इच्छा शक्ती, सहयोग, सहकारिता की भावना के साथ हम इस संघर्ष भरे वर्ष को भी पार कर जायेंगे और फिर से नया सवेंरा होगा इस विश्वास के साथ हमें आगे बढना है ।

इस बार हम किसी विशेषांक से जुडे नहीं है बल्कि छात्राओं को लेखन की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है, जिससे वे अपने पसंद के विषय पर लिख सके और हुआ भी वैसा ही कि उन्हे जो अच्छा लगा उस पर उन्होने लिखा कहीं दोस्ती की यादे तो कहीं माता-पिता का स्नेह, कहीं परिवार की जिम्मेदारिया तो कहीं हास्य-व्यंग, कहीं देश भक्ति के स्वर तो कहीं सामाजिक - राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह तो, कहीं जीवन आनंद की रंगीन छटा इस 'सुरभि' में समाहित है ।

अपने नाम के अनुरुप यह पत्रिका विविध रंगी फुलों की सुगंध अपने आप में समेटे परिसर को सुवासित करने का प्रयास कर रही है । इस सन्दर्भ में कवि सुमित्रानंदन पंत की ये पंक्तियाँ याद आती है ।

"सुन्दर है विहंग, सुमन सुन्दर
मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम्
निर्मित सबकी तिल-सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम ।"

'सुरभि' में जहाँ एक ओर सप्तरंगी सुनहरी छटा है वहि दूसरी ओर अभ्यास पूरक कार्यो के अहवालो में महाविद्यालय की 'सुरभि' रच बस गयी है ।

विगत वर्ष हमने कैसे नियोजनबध्द कार्य किया है यह जानना हो तो पढ़िये हमारे विविध समितियों के अहवाल और जान लिजिए हमारी छात्राओ की निष्ठा और प्राध्यापको की कर्तव्य निष्ठा । राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक सशक्त पीढ़ी को तराशने में कोई कसर नहीं छोडी है । यह प्रेरणा हमें श्रध्देय माताजी के आशिष, वचनो से मिली है ।

माताजी के सपनो को साकार करने व छात्राओं के सर्वांगिण विकास के लिए अनमोल मार्गदर्शन हमारे संस्था के अध्यक्ष महोदय मा.दिलीपराजजी गोयनका सदैव करते है ।

इसके साथ ही समय-समय पर भारतीय सेवा सदन कार्यकारिणी सदस्यो के अनमोल मार्गदर्शन भी हमें मिलता रहता है, जिससे उनके बताये मार्गपर मा.प्राचार्य डॉ.देवेंद्रजी व्यास के साथ-साथ हम सभी एक जुट होकर कार्य करते है । जिससे सशक्त भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके । मा.प्राचार्य महोदय के प्रति श्रध्दा व्यक्त करते हुए, संपादक मंडल के सहयोगी प्राध्यापक जिन्होने मेरा बखुबी साथ निभाया अनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । मै उन सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण जिन्होने मुझे सहयोग दिया उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ । प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष सभी सहयोगी के प्रति कृतज्ञ हूँ एवं छात्राओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होने अपने लेखो से इस 'सुरभि' को सँवारा है । जीवन के विकासात्मक परिदृश्य को समावेशित 'सुरभि' को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए प्रकाशक सुरज एन. भांगे के अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देती हूँ।

सप्तरंगिनी भाव लहरी 'सुरभि' को सौप कर प्रसन्न हूँ, अगर कोई कमी रह गयी है तो उदार पाठक उसे सह लेंगे इस विश्वास के साथ...

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय
संपादक

महाविद्यालय मे हुए विविध उपक्रमों के क्षणचित्र....



मा. श्रीमती निलमताई गोरे, उप–सभापती, विधान परिषद यांना मानवंदना देतांना RDG NCC च्या विद्यार्थींनी



मा.अध्यक्ष श्री. दिलीपराज गोयनका व श्रीमती मधुजी गोयनका यांच्या हस्ते Fashion Designing Exhibition चे उद्घाटन.



मा.अध्यक्ष श्री. दिलीपराज गोयनका यांच्या हस्ते पु.ल.देशपांडे स्टॅड–अप कॉमेडी स्पर्धा २०१९ चे उद्घाटन संपन्न.



महाविद्यालयात २१ जून International Yoga Day कार्यक्रमाचे आयोजन



महाविद्यालयीन NCC Unit तर्फे घेण्यात आलेल्या रक्तदान शिबीरात प्राध्यापक वृंद व विद्यार्थींनी यांचा सहभाग.



महाविद्यालयाच्या स्नेह संमेलनात महाविद्यालयीन विद्यार्थींनी नृत्य सादर करतांना.



महाविद्यालयात पार पडलेल्या आंतर महाविद्यालयीन हॉली बॉल स्पर्धेत विजयी चमु समवेत प्राचार्य.



महाविद्यालयात SPARK Quiz Competition संपन्न झाला त्यात विजयी स्पर्धकांसमवेत प्राचार्य, शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी.

संजय धोत्रे
SANJAY DHOTRE

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी, संचार एवं
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार
Minister of State
Electronics & Information Technology,
Communiataions and
Human Resource Development
Government of India



शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाचा 'सुरभि' वार्षिकांक प्रकाशित होत आहे हे ऐकून मला आनंद वाटत आहे. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पीत वृत्तीने पूर्ण करता. या अंकामध्ये सुध्दा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौध्दिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचाराला विकासाचे पंख कसे फुटतील हे बघणे व त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अकांत आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या कला गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसित कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकिक वाढवाल अशी खात्री आहे. त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास शुभेच्छा देतो.

(संजय धोत्रे)

Digital India
Power To Empower

कार्यालय : इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, 6, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली–110003, दूरभाष : 011.24368757.58 फैक्स : 011.24360958
Office : Electronics Niketan , 6, C.G.O. Complex, New Delhi-110003, Tel. : 011-24368757-58, Fax : 011-24360958
Website : www.meity.gov.in





गोपीकिशन राधाकिसन बाजोरीया
(बी.एस्सी.,एल.एल.बी)
विधान परिषद सदस्य, महाराष्ट्र राज्य
विद्यापीठ कार्यकारी परिषद सदस्य : डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषी विद्यापीठ, अकोला ॥ संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाच्या वार्षिकांक 'सुरभि' प्रकाशित होत आहे. हे ऐकून मला अत्यंत आनंद वाटत आहे. श्रध्देय माताजी स्व. राधादेवीजी गोयनका यांनी सुरु केलेल्या या महाविद्यालयाची होणारी उत्तरोत्तर प्रगती पाहून मला अत्यंत अभिमान वाटतो. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पीत वृत्तीने पूर्ण करता या अंकामध्ये सुध्दा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौध्दिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचारांना विकासाचे पंख कसे फुटतील यावर लक्ष केंद्रीत करुन त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अंकात आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसीत कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकीक वाढवाल अशी खात्री आहे. त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास अनेक शुभेच्छा देतो.

(गोपीकिशन बाजोरीया)

कार्यालय : बाजोरीया चेम्बर्स, गांधी रोड, अकोला. फोन : ०७२४-२४३०७५७ • फॅक्स : २४२११००-२४३०७५७ • मुंबई : ०२२-२२८७४५४५
E-mail : amdarbajoria@gmail.com

शुभेच्छा संदेश

महाराष्ट्र विधानसभा

गोवर्धन शर्मा
विधानसभा सदस्य
अकोला पश्चिम विधानसभा

निवास : आळशी प्लॉट, गोरक्षण रोड, अकोला फोन नं.: (0724) 2437058 मो.: 9403113504



MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola is going to publish annual college magazine "Surbhi" having contents of which are contributed by the students of your college. I am sure that, by this activity, the skills and hidden potential of your students will be exhibited and a concise picture of the activities and achievement of your college will be projected.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

(Govardhan Sharma)

महाराष्ट्र विधानसभा

विधानसभा महाराष्ट्र

रणधीर सावरकर
विधानसभा सदस्य
अकोला (पूर्व)



MESSAGE

I am delighted to know that your well known education institution run by the Bhartiya Seva Sadan used to bring out hidden talents of the students every year, through its magazine "Surabhi".

First of all my heartiest Congratulations and Best Wishes to the students for their success in the recently held exams. for their brightest future.

The hard work and the dedication, honesty and integrity, confidence and self determination with which your institution has achieved the desired results since last so many decades, will be able to achieve success in all the phases of its life only by retaining these qualities.

I wish that all of you get lots of fame and achieve a greater distinction than what you have achieved today. and I hope that you all will make Akola and our country proud with your achievements in future too.

रणधीर सावरकर
विधानसभा सदस्य
अकोला (पूर्व)

पत्ता : राऊतवाडी, अकोला - ४४४ ००५ ⋆ दूरध्वनी : (०७२४) २४५६६०० (ऑ.), २४५०१८९ (नि.)
E-mail akolaemla@gmail.com

DR. MURLIDHAR CHANDEKAR
M.COM., M.Phil., Ph.D
VICE-CHANCELLOR

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI - 444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

NAAC Accredited at the 'A' level

Date : _____

Message

I am delighted to know that Smt.Radhadevi Goenka College for Women, Akola is bringing out the issue of their annual magazine "SURABHI " for this academic year. I congratulate the team comprising of Principal, editorial board.

The magazine is indeed a platform for the students to express their perception clearly and logically, which develops in them originality of thoughts. I am sure that students of this college will make the greatest use of this opportunity by contributing to the theme of the magazine and the readers will be benefitted from the knowledge contents.

I wish this college a very big success in all their endeavors and the magazine a dazzle future.

(Dr.Murlidhar Chandekar)

Dr. Devendra Vyas,
Principal
Smt.Radhadevi Goenka College for Women,
Akola.

Phone : Office - 0721 - 2662373, Resi. 0721 - 2662108, 2662093, Fax No. 0721 - 2662135, Gram : sgbamuni
E-mail : vc@sgbau.ac.in Website : www.sgbau.ac.in

DR. RAJESH S. JAIPURKAR
M.Sc. (Tech.), Ph.D.
PRO-VICE- CHANCELLOR

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI-444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

Accredited by NAAC at level 'A'

No.: SGBAU / PVC / /2020
Date : 20/09/2020

MESSAGE

With great pride, I would like to congratulate the Principal, Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola. & the entire team of Editors for bringing out this college Annual Magazine " Surbhi". The college has been achieving higher degree of success under the visionary leadership & dedicated staff. The Students of the college are offered serveral opportunities for all round development. The publication of College Annual Magazine "Surbhi" is an Unique step for bringing out Students talent of writing on a subject and will strengthen the academic activities of the college.

I congratulate all those efforts of whom have brought the magazine to on the distinct honour I wish the college a great Success in such future endeavors.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

Dr. Rajesh Jaipurkar,

Pro-Vice-Chancellor

Phone : Office - 0721-2551961 Resi. - 0721-2672702 Fax No. 0721-2662135 Gram : SGBAMUNI
Website : www.sgbau.ac.in E-mail : provc@sgbau.ac.in

मराठी विभाग

महात्मा गांधी काल आज उद्या

'सच्चाई का लेकर शस्त्र
और अहिंसा का ले अस्त्र
तुने अपना देश बचाया
गोरो को दूर भगाया'

मोहनदास करमचंद गांधी (ऑक्टोबर २, इ.स. १८६९ - जानेवारी ३० इ.स. १९४८) हे भारताच्या स्वातंत्र्य संग्रामातील प्रमुख नेते आणि तत्वज्ञ होते, महात्मा गांधी या नावाने ते ओळखले जातात. अहिंसात्मक, असहकार आंदोलने केली. गांधींनी भारताला स्वातंत्र मिळवून दिले. अहिंसात्मक मार्गांनी स्वातंत्र्य मिळवण्यासाठी त्यांनी संपूर्ण जगाला प्रेरित केले. रविंद्रनाथ टागोर यांनी सर्वप्रथम त्यांना 'महात्मा' म्हणजे महान आत्मा हि उपाधी दिली.

'मी माझ्या बांधवांना असं सांगेन की,
मला महात्मा म्हणतात म्हणून माझं
वचन प्रमाण आहे असं समजून कोणी
चालू नये. महात्माचे वचन देशातील
बुध्दीच्या कसोटीवर घासून घ्यावे.'

भारतातील लोक त्यांना प्रेमाने 'बापू' म्हणत आणि त्यांना अधिकृतपणे भारताचे राष्ट्रपिता म्हटले जाते. सुभाषचंद्र बोस यांनी इ.स. १९४४ मध्ये पहिल्यांदा त्यांना 'राष्ट्रपिता' असे संबोधले.

गांधीजींच्या महात्मात असे काय होत वा आहे, की ज्यांची संमोहिनी आईनस्टाईन पासून रिचर्ड ॲटेनबरो पर्यंत, रविंद्रनाथ टागोरांपासून विनोबा भावे पर्यंत, मार्टिन लुथर किंग पासून नेल्सन मंडेलांपर्यंत सर्वांना पडावी सर्वांचा आदर्श महात्मा गांधी का ?

गांधीजींच्या हत्येनंतर आपली प्रतिक्रिया देतांना अल्बर्ट आईनस्टाईन म्हणाले होते की, या भुतलावर असा एक माणूस होऊन गेला, असे पुढील पिढ्यांना कोणी सांगितले तर त्यावर त्यांचा विश्वास बसणार नाही. त्यांच्या काळात दूरचित्रवाणी नव्हती. आजच्या इतकी वर्तमानपत्रे, रंगीबिरंगी नियतकालिके नव्हती. गांधीजी मुख्यतः हिंदी, गुजराती आणि इंग्लिश या तीनच भाषांमध्ये बोलत, त्यांची लेखन किती लोक वाचनार कारण देशाची साक्षरता १० ते १५ टक्के होती.

विशेष म्हणजे सुशिक्षित, सधन वर्गापेक्षा गांधीजींना पाठिंबा होता तो निरक्षर, अडाणी, गरीब, अर्धपोटी सामान्य लोकांचा होता. गांधीजींनी कोणताही मुलभूत ग्रंथ लिहिला नव्हता की, ज्यात त्यांच्या तत्वज्ञानाची त्यांनी सविस्तर मांडणी केली नाही.

'वैष्णव जन तो तेने कहिये - पीड पराई जाने रे' यां गांधीजींनी लोकप्रिय केलेल्या ओळी संत नरसी मेहतांच्या.

गांधीजी प्रत्यक्ष सत्तेवर कधीच आले नाही. तसेच ते काँग्रेसचे चार आण्याचे सभासदही नव्हते. त्यांनी स्वतः गांधी टोपीही अगदी कमी वेळा परिधान केली.

गांधीजी सविनय सत्याग्रहाच्या कल्पनेचे जनक होते. त्यांनी २६ जानेवारी १९३० भारताचे स्वातंत्र्य जाहीर करुन घेतले. 'गांधीनीं आयुष्यभर सत्य, अहिंसा या तत्वांचा पुरस्कार केला.'

क्षमा मागितल्याने मनुष्य लहान होत नाही.

गांधीजींचे विचार आजही उपयुक्त आहे काय यावर नेहमीच प्रश्न उपस्थित केला जातो. विसाव्या शतकातले बापू आज कितपत रेलिव्हन्ट आहेत हे तपासून पहाणे यामागचा मुख्य उद्देश. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी मंत्रालया परिसरातील सदनिकेत नेहमी बोलत असतात. अधिकार पदाची झूल न बाळगणारे साधे घर, मोठेपणाची भाषा या घराला अमान्य. गांधी-विनोबांच्या मुर्तीसोबतच तीन माकडे घरात आवर्जून ठेवलेली. न्यायमुर्ती सांगू लागतात, मुळात गांधीजी आज, उद्याच नव्हे तर चिरंतन रेलिव्हन्ट आहेत. नव्या युगाने निर्माण केलेल्या वेगवेगळ्या समस्यांवर गांधीविचार हेच उत्तर आहे.

गांधीविचार सर्वश्रेष्ठ आहे हे समोर आणण्याच्या चळवळी सुरु झाल्या, युवक मोठ्या प्रमाणात समोर आले. 'वुई वाँट पीस, नॉट वॉर' हा या युवकांच्या चळवळीचा मंत्र. यावर न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी म्हणतात मी याचे वर्णन 'बुध्द हवा, युध्द नको' असे केले.

'अहिंसा' हा मुळात नकारात्मक शब्द नाही, 'अहिंसा' याचा अर्थ मी तर जगेनच पण दुसऱ्यालाही जगायला मदत करेन, असा होतो. गांधीविचार हे भारतातीलच नव्हे तर जगातील सर्व प्रश्नांच्या उत्तरांचा मार्ग दाखवतो. श्रमाला प्रतिष्ठा हे गांधीजींचे आवडते तत्व.

गांधीजींनी 'राजकारण' हा शब्द कधीही वापरला नाही ते म्हणत असत 'राष्ट्रकारण' सत्तेचे राजकारण नको देशाला पुढे नेणारे प्रयत्न हवेत. 'स्वातंत्र्य' हा आपण वापरात आणलेला शब्द, पण गांधीजींना भावणारा शब्द 'स्वराज्य', 'स्वातंत्र्य' आणि 'स्वराज्य' यातला नेमका फरक या महामानवाने ओळखला होता.

महात्मा गांधीजींचे विचार हे काल, आज नव्हेच तर उद्या सुध्दा उपयुक्त राहणार आहे, कारण त्यांनी सांगितलेली जी पण तत्वे आहेत ती कधीच नष्ट न होणारी आहेत.

'सत्य', 'अहिंसा' ही त्यांची तत्वे मानली जातात आणि या सोबतच ते त्यांच्यामध्ये प्रामाणिकपणा, सहनशिलता, धीर, शांती आणि समाधान हे सर्व त्यांच्यामध्ये होते आणि याच गोष्टींमुळे आजही त्यांची किर्ती तेवढीच अमर आहे आणि उद्या आणि नेहमीच राहणार आहे.

आज आपल्या भारत देशाला संरक्षणाची खूप गरज आहे याचे कारण हे पण असू शकते. आज काही व्यक्ती त्यांचे विचार बाजूला सोडून स्वतःचाच विचार करत आहे.

जगामध्ये जर शांतता, सुव्यवस्था आणि प्रगती जर पाहिजे असते तर त्यांच्या विचारांची म्हणजे 'महात्मा गांधीजींच्या' विचारांची खुप गरज आहे, आणि त्यांच्या तत्वांची सुध्दा कारण यामध्ये ऐवढे सामर्थ्य आहे की भविष्यात होणारे महायुध्द सुध्दा टळू शकते.

तसेही कोणत्याही व्यक्तीला आपण रागावून आणि भांडून जिंकूच नाही शकत, आपल्याला जिंकायचे असते ते बस 'शांती' च्या मार्गाने याचा अवलंब जर आपण केला तर भारताला किंवा जगातील कोणत्याही देशाला जेवढा खर्च सरंक्षण करावा लागतो तेवढा करावा लागणार नाही, आणि ह्याच पैसाचा देशातील प्रगती, शिक्षण, आरोग्य, सेवा या कार्यामध्ये उपयोग होणार आणि 'भारत' व त्या सोबत जगातील प्रत्येक देश विकसनशील

आपल्या खाद्यांला सोसणार नाही असे ओझे आपल्यावर ईश्वरही टाकत नाही.

नव्हे तर 'विकसीत' देश बनेल.

'सत्य आणि अहिंसा ही तत्वे तुम्हाला
आचारावयाची
असतील तर तुम्ही पुर्णपणे निर्भय बनले पाहिजे'

३० जानेवारी १९४८ ला दिल्लीच्या बिर्ला भवनाच्या बागेतून लोकांबरोबर फिरत असतांना गांधीजींची गोळी मारुन हत्या करण्यात आली.

'सत्य'

'सत्यापासून वेगळे असे
सौंदर्य असूच शकत नाही,
सत्य हेच सौंदर्य हे
मला मान्य आहे, परंतू सर्व सौंदर्य
सत्यारुप असते असे मात्र नव्हे'.

'अहिंसा'

'अहिंसा हा धर्म काही फक्त
ऋषी व साधुसंत यांच्यासाठी नाही,
तो बहुजन समाजाचाही धर्म आहे.
हिंसा हा जंगली पशूंचा धर्म असून, अहिंसा हा
मानवाचा धर्म आहे.फ

'महात्मा गांधी' हे आजही आपल्या बरोबरच आहेत कारण त्यांनी सांगितलेली अमूल्य तत्वे हे त्यांच्या जिवंतपणाची साक्षी आहे. गांधीजी होते, आहेत आणि नेहमीच राहणार कारण त्यांचे विचार हे 'अमूल्य' आहेत.

'बिन हथियार लढ़े हो
फिर भी हट गया शैतान
हे बापू तुमको मेरा प्रणाम
हे बापू तुमको मेरा प्रणाम.'

कांचन जनार्दन गुठे
बी.ए. प्रथम वर्ष

जगण्याचे गुपित कोडे

निघून जाते आयुष्य खिसे आपुले भरताना
वेळ जाते निघून दिवस रात्र धावतांना
हरवून गेले आहे सारे सुख विकत घेताना
क्षणभर हसणे सुध्दा महाग झाले लोकांना विसरलीत नातीगोती सारे जवळ असताना
धावपळीचे आयुष्य, निमूटपणे जगताना
आयुष्य आहे सुरेख कुणीच पाहत नाही नुसती दगदग सुरु वेळ कुणाजवळच नाही
बसून मित्रांसोबत आज कुणी बोलत नाही
सुखामागे धावताना, माणूस लागला आहे. आयुष्य काय आहे आज कुणालाच कळले नाही
जगण्याचे गुपित कोडे कुणालाच उमजले नाही.

मनिषा गो. चक्रदेवे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

स्त्री सक्षमीकरण

"Empowerment of Women
Through Economic Independence
for Betterment of Society"

श्रध्देया पूज्य माताजी श्रीमती राधादेवी गोयनका यांचे हेच जीवनध्येय.

२१ व्या शतकात महिलांनी कित्येक क्षेत्रात भरारी घेतलेली आहे. प्रशासन, शासन, विज्ञान, तंत्रज्ञान, कला, साहित्य या सर्वच क्षेत्रात स्त्रियांनी यशसंपादन केले आहे.

आपला देश विकसनशील देशाच्या यादी मध्ये येतो असे आपण अभिमानाने सांगतो आणि हा अभिमान असायलाच हवा. परंतू आपण विकसनशील का आहोत. विकसित का नाही हा प्रश्न अनेकांना पडत असेलही आणि याची कारणे सर्वांची वेगळी असणार पण या सर्व कारणांमध्ये एक आहे जे खूप महत्वाचे आहे. पण आपण सतत त्याकडे दुर्लक्ष करतो आणि आतापर्यंत दुर्लक्षच करत आलो आहोत.

ते कारण आहे 'स्त्री सक्षमीकरण'

भारत सरकारने २००१ हे वर्ष 'महिला सबळीकरण वर्ष' म्हणून जाहीर केले. त्यामुळे महिलांच्या आर्थिक व सामाजिक परिस्थितीचा आढावा घेतला गेला. त्यात काही सकारात्मक आणि नकारात्मक बाबी दिसून आल्या त्यामुळे भारतातील विविध क्षेत्रात कार्यरत असलेल्या महिलांनी केलेली प्रगती केंद्रस्थानी ठेऊन, तत्कालीन पंतप्रधानांनी 'स्त्री शक्ती पुरस्कार' सुरु केला. १९७५ हे वर्ष, संयुक्त राष्ट्रसंघाने 'अ' दर्जाचे स्थान असलेल्या, 'आंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष' म्हणून घोषित करण्यात आले. ८ मार्च हा दिवस जगभरात 'जागतिक महिला दिन' म्हणून दरवर्षी साजरा केला जातो. हे सर्व वर्ष, दिन साजरे करण्यामागे 'महिलांचे सबळीकरण' हा प्रमुख हेतु असल्याचे दिसते.

'महिला सक्षमीकरण' म्हणजे नेमके काय ? हा प्रश्न सतत मनाला भेडसावणारा असतो तेव्हा एक विचार समोर येतो.

'स्वयंविकासाबरोबरच समाजात समानतेने, बरोबरीने विकसित होण्यासाठी महिलांना स्वतंत्रपणे निर्णय घेण्याचा अधिकार असणे, स्त्रीचे व्यक्तिमत्व एक माणूस म्हणून, व्यक्ती म्हणून विकसित करणे आणि त्यांना समान संधी देणे, स्त्रीचं शारिरीक, शैक्षणिक सबळीकरण, आर्थिक सबळीकरण, वैचारिक, सामाजिक सशक्तीकरण या सगळ्या पैलूंनी स्त्री जेव्हा सशक्त होते आणि त्याचा उपयोग सकारात्मक दृष्टीने समाजासाठी केला जातो तेव्हाच खऱ्या अर्थाने स्त्रीचं सशक्तीकरण, सक्षमीकरण झालं असं म्हण्ता येईलं.'

समान मानव माना स्त्रीला
तीची अस्मिता खुडू नका ।
देवी म्हणूनी पूजू नका
वा दासी म्हणूनी पिटू नका ।।

वैदिक कालखंडापासून म्हणजे पूर्व वैदिक कालखंड सोडला तर उत्तर - वैदिक कालखंडा पासून स्त्रीयांना दुय्यम स्थान आहे. त्यांना नेहमी दुय्यमच समजलं जात असे.

स्त्रीचा जन्मच मुळात 'चुल आणि मुल' या दोन

मित्रांची निवड काळजीपूर्वक करा यावरुन तुमचे चारित्र्य कळते.

गोष्टीसाठी झाला असतो असा लोकांचा समज. उंबरठ्याच्या आत पाऊ ल एवढीच तिची मर्यादा होती.

हुंडा, सती, केशवपन, मुरळी, बालविवाह, देवदासी अशा कितीतरी दृष्ट प्रथा भारतात होत्या.

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, रमाबाई रानडे, महादेव गोविंद रानडे, अण्णासाहेब कर्वे, राजा राममोहन रॉय या सर्व समाज सुधारकांचे कार्य अनमोलचं, या सर्वांनी स्वतःच्या जीवाची पर्वा न करता समाजासाठी किती त्रास सहन केला की समाजाला एक नवी दिशा मिळावी. खऱ्या अर्थाने स्त्री-पुरुष यांच्या अधिकारांमध्ये समानता यावी हेच त्यांचे जीवनध्येय.

अशा थोर समाज सुधारकांची आठवण आपल्याला येते ती फक्त त्यांच्या स्मृतीदिवस आणि जन्मदिवस या दोनचं दिवशी इतर दिवशी तर हे अशक्यचं.

खरोखर जर त्यांच्यासाठी काही कराव असं आपल्याला वाटत असेल तर, आपण त्यांचे विचार, त्यांचे कार्य हे सतत चालू ठेवले पाहिजे.

त्यांना फुलांची माळ घातल्यानंतर त्यांच्या विचारांची माळ जर आपण घातली तर आपली आणि आपल्या देशाची प्रगती निश्चितचं होणार...

आपण म्हणतो आम्ही प्रगतीपथावर आहोत, प्रगती होत आहे आमची, विकसित होत आहे आम्ही, कशाला म्हणतात प्रगती होणे.

देशात पायाभूत सुविधा असणार, राष्ट्रीय उचल वाढत असेल, परकीय चलन साठा आपल्याकडे असेल. म्हणजे झाली का प्रगती, ही आपली प्रगती आहे पण फक्त आर्थिक प्रगती, मानसिक दृष्ट्या आपला देश आपल्या देशातील जनता किती सक्षम आहे याचा आढावा घेणे तितकेच महत्वाचे...

आजची जर स्थिती आपण बघीतली म्हटलो तर आज स्त्री अनेक क्षेत्रात प्रगती करीत आहे हे सर्वांना माहित आहे.

खंत आहे ती या गोष्टीची कि स्त्रीयांनी कितीही मेहनत केली आणि कितीही उंच शिखरावर ती पोहोचली तरी तिला स्थान दिल्या जाते ते दुय्यमच हे असे का आहे. हे सर्व कधी संपणार, कधी आमचे अधिकार आम्हाला मिळणार, खऱ्या अर्थाने 'समानता' कधी येणार...

आपले 'संविधान' यामध्ये आपल्या काही मूलभूत हक्क दिलेले आहेत यामध्ये 'कलम १४' 'समानतेचा हक्क' याचा समावेश आहे.

पण खरोखर ही समानता आहे का ? हा एक प्रश्नच. आपल्या देशाचे 'संविधान' हा एक सुंदर ग्रंथ आहे. देशाचा मुलभूत कायदा आहे. प्रत्येक गोष्ट ही जर संविधानानुसारच चालली तर आपली प्रगती ही सुनिश्चितचं होणार...

देशाला स्वातंत्र्य मिळून ७४ वर्षे झाली आहेत पण स्त्रियांना स्वातंत्र्य कधी मिळणार...

या ७४ वर्षांमध्ये आपण ह्या रुढी, प्रथा, परंपरा बदलु शकलो नाही. खंत आहे ती या गोष्टीची की ती बदलविण्याचा प्रयत्नही कुणी करत नाही.

मन शांत असेल तर आतला आवाज ऐकू येतो.

'स्त्री - सक्षमीकरण' ही अशी संकल्पना आहे ही ज्यावर विचार आणि कृती दोन्ही करायला हवी, पण अशी कुणाचीच मानसिकतचा नाही.

'स्त्री-सक्षमीकरण' हा एक चांगला विषय बनवून समाज यावर भाषणे, व्याख्याने आयोजित करतो, राजकारणासाठी प्रामुख्याने हा विषय वापरला जातो. बस एवढेच काय ते या संकल्पनेचे महत्व...

ग्रामीण भागातील स्त्रियांची स्थिती तर बिकटचं आहे. आपण म्हणतो अनिष्ट प्रथा बंद झाल्या आहेत पण वास्तवात हे असे नाही, काही प्रमाणात ह्या अजुनही सुरुच आहे आणि ह्या प्रथा संपल्या नाही तर नवीन प्रथा जन्माला आल्या.

जसे : अत्याचार, हिंसाचार, मानसिक आणि शारिरीक दृष्ट्या छळ, तिरस्कार.

आता ह्या प्रथा कधी बंद होणार कि ह्या संपायच्या आधी परत आपल्याला दुसऱ्या प्रथांना सामोरे जावे लागेल. हे कधी संपणार...

हे सर्व संपविण्यासाठी आपल्याला काहीतरी कृती करायला हवी 'स्त्री सक्षमीकरण' यावर फक्त बोलून आणि लिहून चालणार नाही. आपण किती सक्षम आहोत हे आपल्याला आपल्या कृतीमधून दाखवून द्यायला हवं.

काही वेगळं करायच म्हटलं की लोकं म्हणतात. तु एकटी काय करणार ? तु तर शेवटी मुलीची जात आणि आपणही हाच विचार करतो की मी तर मुलगीच...

पण लोकं हे विसरतात की,

हिच ती स्त्री जीला तुम्ही आदीमहाशक्ती मानता, देवी म्हणून दुर्गा, काली, चंडी, अंबा, लक्ष्मी, सरस्वती अशा स्त्री रुपांची पूजा करता आणि सुखःदुखात सावलीसारख्या सोबत असणाऱ्या गृहिणीचा मात्र छळ करता...

हा किती विरोधाभास आहे.

सर्वात वाईट तर तेव्हा वाटते जेव्हा एक स्त्रीचं दुसऱ्या स्त्रीचा छळ करते. स्त्रियांना गुलामगिरीच्या बेड्यात अडकवणारी विचारसरणी मोठ्या अर्थाने जोपासली जाते. अशिक्षीत, श्रमिक कुटूंबात तर स्त्रीची अवस्था गोठ्यातील गाईप्रमाणे दावणीला बांधलेली असते.

एकटी स्त्री काय करु शकते हा विचार जेव्हा मनात येतो तेव्हा आपण इतिहासाकडे बघावं... मातोश्री जिजाबाई, अहिल्याबाई होळकर, झांशीची राणी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, समाबाई रानडे, डॉ. आनंदीबाई जोशी अशी कितीतरी नावे आपल्याला घेता येतील की ज्यांनी स्त्रिला एका उंचीवर नेऊन ठेवले.

ह्या ही एकट्याच होत्या यांनी सुरुवात केली एका क्रांतीची आणि हळूहळू त्यांचे संघटन झाले त्यांच्याकडे काय होते, होता तो फक्त आत्मविश्वास. की मी बदल घडवून आणू शकते.

हा एक आत्मविश्वासच

'पुन्हा येऊ दे लक्ष्मीबाई
एक अहिल्या पोटी ।
पुन्हा होऊ दे रणरागिनीची
शौर्य कहानी ओठी ।
बाई विणा ही वैरान दुनिया
कशी होईल आखुन ।
पुन्हा एक सावित्री असेल
गर्भात श्वास रोखून...।'

ध्येय गाठण्यासाठी जिद्द, चिकाटी आणि परिश्रम यांची गरज असते.

ह्या थोर स्त्रिया होऊन गेल्यात पण सर्वांच्या स्मरणात त्या अजुनही आहेतच.

या थोर स्त्रियांचे जीवनध्यैर्य पुर्ण करणे हे आता आपले जीवन ध्यैर्य असले पाहिजे.

यांच्याकडे जो आत्मविश्वास होता तो आपणही आत्मसात करायला हवा...

जे बदल, जे अधिकार, जी समानता आपल्याला हवी आहे ती आपणच मिळवायला हवी...

अगदी तळागाळातील स्त्रियांपर्यंत ही समानता पोहोचायला हवीं...

क्रांती ही कधी आपोआप घडत नसते. ती घडवून आणावी लागत असते. ही करेल, ती करेल हा विचार बाळगण्यापेक्षा हे मलाच करायचे आहे असा जर निश्चय केला तर नक्की क्रांती घडणारच आणि हळू हळू संघटन ही तयार होईल.

स्त्री म्हणून जन्म घेतला आहे आता
तर हे उसने मी कसे फेडावे
माती जरी झाली माझी
तरी प्रत्येकाच्या स्मरणात मी राहावे

हे प्रत्येक स्त्रिला वाटले पाहिजे आणि कुठल्याही चांगल्या कामात कुणी सुरवात करत असेल तर तीला मागे न खेचता तीला सहकार्य केले पाहिजे.

'एकलीस गेली बाई मी
झाड काही हलले नाही
दुकलीस गेली बाई मी
झाड काही हलले नाही
तिकलीस गेली बाई मी
झाड काही हलले नाही
साऱ्याच जणी मिळून गेलो
झाड काही राहिलं नाही...'

आज दिनांक १९/०९/२०२० म्हणजे माझ्या आईचा जन्मदिवस...

माझ्या आईचे नाव : सौ. सुनिता जनार्दन गुढे

जी फक्त माझी आईचं नाही तर माझी मैत्रीण, माझी मार्गदर्शक , माझी गुरु, माझे सर्वच काही असे बहुआयामी नेतृत्व असणारी माझी आई...

जीच्यामुळे हा लेख लिहण्यासाठी मी प्रोत्साहीत झाले. त्यामुळे हा लेख माझ्या आईसाठी...

कांचन सुनिता जनार्दन गुढे
बी.ए. तृतीय वर्ष



वेडेपणा जपण्याकडे आपण प्रयत्नपूर्वक लक्ष दिले पाहिजे, कारण वेड असलेलीच माणसे जग बदलतात.

स्त्री (एक संघर्ष)

खरं तर स्त्री या विषयावर लिहायचे म्हटले की द्विधा मनस्थिती होते. पुरुषांच्या खांद्यानाखांद्या लावून जगात वावरणारी स्त्री की घराच्या संपूर्ण विश्व आदीशक्तीपुढे नतमस्तक व्हायचे ही आदीशक्ती कोण ? स्त्रीच ना ! मग या स्त्रीचे स्थान गेले तरी कुठे ? पुरुषांच्या धाडधिप्पाड शरीरयष्टीमागे किंवा कर्कश आवाजामागे दबले आहे की समोर येण्यासाठी झुंज देत आहे ? अर्थातच स्वतःची लायकी सिध्द करायला समाजाशी झुंज देत आहेत. श्री. सौदागर यांनी स्त्रीचे वर्णन अगदी यथार्थ केले.

पोराटोरा, घरचा आपला
बायलांट जास्ती वजा
टिकली तेची लावन संभाळतत
पुरुष प्रधान, ती राजा

श्री. विजय सौदागरांनी 'स्त्रीच' 'राजा' म्हणून अगदी योग्य वर्णन केल आहे.

स्त्री जर कुटूंबातील कणा आहे तर मग स्त्रीच का नको. घरात मुलगी जन्मली की सगळ्यांची तोंड लाल का होतात ? याच उत्तर शोधण्याची गरज नाही. 'चूल आणि मूल' या परंपरेतून स्त्री जरी बाहेर आली तरीही तिला संपूर्ण स्वातंत्र्य मिळालेले दिसत नाही. कारण एकच समाजाची मानसिकता. आजही आपल्या समाजाचा स्त्रीयांकडे भोगवस्तू म्हणून बघण्याचा दृष्टीकोन काही गेला नाही.

कुटूंबाचा पायाच जर स्त्री आहे आणि पायाच कमकुवत असेल तर वरचे चार मजले काय कामाचे ? तिच्या हक्कांची, स्वातंत्र्यांची, अब्रुची रक्षा आपण का करु नये ? घरातील मंडळींकडून सुध्दा तिची पिळवणूक होत असते. आजची स्त्री जर पंतप्रधान होऊन संपूर्ण देशावर अधिराज्य गाजवू शकते. तर ती कुटूंबाला सुध्दा धान्यावर आणू शकते. पण तिच्यात असलेले कुटूंबावरील प्रेम, आपुलकी, तिची सहनशिलता या गोष्टींमुळे ती परावृत्त होते.

ताराबाई शिंदे म्हणतात,

स्त्रियांचा जन्म नको देऊ सध्यातरी
रात्र ना दिवस परक्याची ताबेदारी
नाचण्याचा कोंडा नाही कशाचा काजकामा
नको देऊ स्त्रीचा जन्म रामा

स्त्री जर कुटूंबातील कणा आहे तर मग तिच्या हक्कांसाठी तिला संघर्ष का करावा लागतो ? का तिची वेळोवेळी परिक्षा घेण्यात येते ? चारित्र्य फक्त स्त्रीलाच असतं का ? पुरुषांना नाही ? चारित्र्य संशयावरुन सितेला का अग्नीपरिक्षा द्यावी लागली ? आजच्या काळातील स्त्री प्रसिध्द सामाजिक कार्यकर्ता सिंधुताई सपकाळ यांना चारित्र्य संशयावरुन का परितक्त्या म्हणून जगावे लागले ?

बदल घडवून आणण्यासाठी शिवराय, लोकमान्य, भगतसिंग यासारखे युगपुरुष जन्माला यावेत असे ओरडून सांगणारा समाजमात्र यांना जन्म देणारी स्त्रीच होती हे विसरत आहे.

स्वप्न ते नव्हे जे आपण झोपून बघतो. तर स्वप्न ते हवे जे तुमची झोप उडवेल. - डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

आपल्या आई-बहिणींची विटंबना होत असतांना एक दिवस गर्दी करुन मेणबत्ती जाळणे ऐवढेच काय ते चित्र आज दिसतयं.

स्त्रियांना नेहमी नाण्यासारखं जगावं लागतं जशा नाण्याच्या दोन बाजू असतात अगदी तसेच आई, बहीन, मैत्रीण असे अनेक भूमिका पार पाडाव्या लागतात पण हे करत असतांना हल्ली समाजाने नाण्यांच्या दोन्ही बाजू ह्या गुळगुळीत केल्या आहेत. स्त्रियांकडे आपल्या डोळ्यांना पूर्ण स्वातंत्र्य देऊन बघणारे पुरुष मात्र स्त्री स्वातंत्र्य ह्या विषयावर बोलण्याचे टाळतात. स्त्रियांचा आजही वापर करुन हवा तेवढा उपयोगी वस्तू म्हणून उपभोग घेतला जातो. समाजातील हा दोष नाहीसा व्हावा यासाठी प्रयत्न करणं गरजेचं झालयं.

'Me too' च्या माध्यमातून समोर येणाऱ्या स्त्रियांच्यापलीकडे सुध्दा अत्याचाराला बळी पडलेल्या या स्त्रीयांना बाहेर येणं गरजेचं आहे. तरच भारत प्रगतीपथावर पोहोचेल.

रुपाली भालचंद्र पांडे
बी.कॉम. अंतिम वर्ष

हरवलेले आनंदाचे क्षण

पाहता पाहता मोठे झालो, सगळेच गणित बदलत गेले,
छोट्या छोट्या आनंदाचे क्षण केव्हाच उडून गेले.

सागरगोट्या, लगोरी वगैरे सोबती सारे सोडून गेले
शनिवारच्या सकाळची आवरतांना धादंल होईल आणि
म्हणता म्हणता दंग्यामध्ये रविवार हळून निघून जाईल.

आता फक्त विकेंड आले त्यातले निरागसपण संपुण गेले
स्पर्धेच्या जगातले सर्वात पहिले दहाविचे वर्षे आले
पाहता पाहता सर्व संवगडी अभ्यासाच्या मागे लागले.

क्लासेस, कॉलेज, ट्यूशनच्या गडबडीत परीक्षा हेच उद्देश बनले
बालपणीचे सुंदर दिवस आयुष्याच्या डायरीत मागे पडले.

गुंफता गुंफता नात्यांचे बंध किस्से सारे आठवत गेले
आज थोडे मागे पाहतांना अश्रु माझे ओघळून गेले
असे ह्या छोट्या छोट्या आनंदाचे क्षण हरवुन गेले.

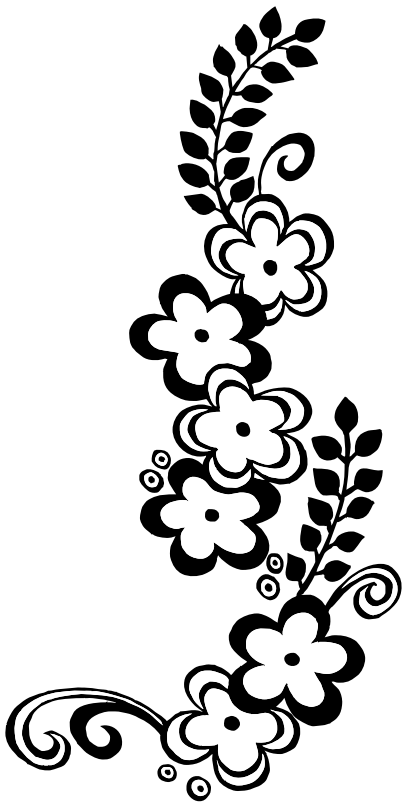

देवयानी हातवळणे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

आईची शिकवण हजार धर्मग्रंथांच्या शिकवणीपेक्षा श्रेष्ठ असते.

ज्वालामुखी

पेटला रक्तात ज्वालामुखी
तो आता विझनार नाही
अत्याचारांच्या वाहल्या पखाली
आता अन्याय सहन होणार नाही
पेटवली प्रगतीची मशाल
तिमिर आता होणार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो...

गेला स्त्रिचा पती म्हणून तीचे
केश मुंडन होणार नाही
आजची सिता पतीच्या चितेवर
सती जाणार नाही
हे कृष्णा येथे द्रौपदीच आता
चिरहरण होणार नाही
अंधत्व पत्करणारी पतीसाठी
गांधारी निर्माण होणार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो विझनार नाही...

डिवचला गेला स्त्रिचा स्वामीमान
तो डाचू देणार नाही
ज्ञानरुपी परिसाने झाले सोने
लोह आता होणार नाही
मनुस्मृतीची आठवण स्त्रिला येणार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो विझनार नाही...

भाग्यउदय झाला स्त्रिजन्मोन स्त्री आता
हिन समजली जानार नाही
कवेत घेतले आकाश आम्ही
पोकळी निर्माण होणार नाही
लेखनी ही सुवार्ताची अर्ध्यावर थांबनार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो आता विझनार नाही.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

फक्त तु खचू नकोस...

जन्माला संधी मिळेल तुलाही,
लगेच हिरमसु नकोस,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

प्रेम तुझ्यावर करणारे,
कितीतरी लोक आहेत,
तुझ्यासाठी जोडणारे,
खुप सारे हात आहेत,
अरे अशाच आपल्यांसाठी,
तू ही थोडं हसून बघ,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

उठ आणि उघडून डोळे,
पहा जरा जगाकडे,
प्रत्येकाच्या आयुष्यात,
काहितरी असतेच थोडे,
नाही नाही म्हणून,
उगाच कुढत तू बसू नकोस,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

सामर्थ्य आहे हातात जर,
स्वप्ने डोळ्यात घेऊन चल,
परिस्थितीशी भिडवून छाती,
दोन हात करत चल,
विजय तुझाच असेल,
तेव्हा मागे वळून बघू नकोस,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

निकीता वर्धमान तापसी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

प्रसन्नता ही एकाग्रतेची पहिली पायरी आहे.

बंधनात बांधु नका

जन्मता मिळाले स्वातंत्र्य हे बंधनात बांधु नका
जगु द्या आम्हा मुक्तपणे निर्बंध असे लादू नका
झेप घेत्या पक्षाला पखांपासून छाटू नका
जन्मता मिळाले स्वातंत्र्य हे...

बहरु द्या वसंताला, शिशिर त्यामध्ये बघु नका
अस्त झालेल्या सुर्याचा उद्य होतांनी रोखू नका
जन्मतः मिळेल स्वातंत्र्य हे...

कुठवर चालनार हुकूमशाही
स्त्री पण कशातच कमी नाही
नर-नारी मध्ये भेदभाव करु नका
जन्मतः मिळाले स्वातंत्र्य हे बंधनात...

नरनारायण तर नारी नारायणी
मर्दा संग लढली ती झाशीची मर्दानी
टाकाच नाण्याचे दोन पैलू
असे वेगळे फेकू नका
जन्मतः मिळाले स्वातंत्र्य हे बंधनात बांधु नका.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

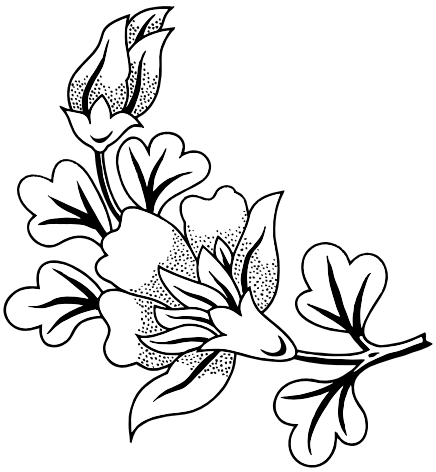

शपथ !!

गर्जा महाराष्ट्र माझा, त्याची मराठी मायबोली
सात समुद्र किर्ती तिची, करुणेची ती सावली

आज दिवस या मातेचा, ऐक गाथा या धरतीची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची

ज्ञानेश्वरांनी उपदेश केला, तुकोबांनी मंत्र दिला
महाराष्ट्राच्या हृदयामध्ये, मराठीचा अंश पेरला
हि आहे माय मराठी, दिव्य वाणी संतांची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

महाराष्ट्राच्या खो-यांमध्ये, टिळकांची दहाड गुंजते
आंबेडकरांच्या ज्ञानाची, गंगा येथेच वाहते
हिच माती साक्ष आहे, शिवबाच्या स्वराज्याची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

खंड मिळाले खंडांना, प्रगती आली जगात
माझी माय मराठी, राहिली काहींच्याच मनात
इंग्रजीचा जयघोष झाला, मराठीचा कणाच मोडला
काही भाषा राहिली केवळ,
इतिहासकारांच्या शब्दांची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

उठ मर्दा, जागा हो
मराठीच्या अस्मितेसाठी, सदैव तू उभा हो
आता गरज या आईला,
तुझ्या ध्येय आणि साथीची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

वैष्णवी धनंजय पोरे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

जीवनाला आकार द्यायचा असेल तर अहंकार बाजूला ठेवावा लागेल.

सांग तुला ग माये...

कुणी अशी केली किमया कुणास नाही कळते
सर्वगुण संपन्न हे व्यक्तिमत्त्व कोणी रेखाटले
सांग तुला ग माये कोण असे बनविते ।। धृ ।।

तु शक्ती तु बुध्दी तुच सागर करुणेचा
चुकले जरी मी कधी न तु मज फटकारते
सांगुनी प्रेमाने तु मज कवटाळते ।।१।।
सांग तुला ग माये.....

तव अंगात भरले चैतन्य संपूर्ण जगताचे
करुनी सगळ्यांची तु कामे, कधी न कोण दुखविते
चंदनापरी अंग झिजवुनी, तु सुगंध सगळ्यांना देते ।।२।।
सांग तुला ग माये .....

तुज काशी तुच विश्वेश्वर तुच आहे हिमालया
मग मी कशास जावू, तयास पाहावया
नतमस्तक होवूनी तुझ्या चरणांवर मज दर्शन होते जगताचे ।।३।।
सांग तुला ग माये .....

तुच धरती तुच आकाश तुच माझा निसर्ग
मग मी कशास विनाकारण करु तुझ्या संस्काराचा विसर्ग
कोठूनी आणीले हे ज्ञान जयाच्या प्राषणाने मज तु पुष्ट बनविते ।।४।।
सांग तुला ग माये.....

जान्हवी अ. मांडळे
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

'आई'

आई शब्द तुझ्या प्रेमाचे
अक्षर माझ्या पेनाचे
सतत आठवतात ते दिवस
मला तुझ्या शिकवणुकीचे
आईच्याच ममतेने माझ्या
यशाची आशा आहे
आई माझी सदा हसत रहावी
यातच माझे जीवन सुखी आहे.

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

मैत्री

श्वासातला श्वास असते मैत्री,
ओठातला घास असते मैत्री,
काळजाला काळजाची आस असते मैत्री,
कोणीही जवळ नसतांना
ईश्वराचा भास असते मैत्री...

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

नम्रतेच्या गुणाशिवाय कुणालाच काही शिकता येणार नाही.

मुलीची हाक

नऊ महिने नऊ दिवसानं, झाली जगमग घाई
या वंशाच्या दिव्यापाई, नको पणती विझवू आई ।।धृ।।

उद्या तुझ्या गर्भाची चाचणी होणार ग,
मुलगी आहे म्हणून सारे नाक मुरडणार ग,
माझ्या चिमुकल्या कानाला तुझी कुजबूज ऐकु येई ।।१।।

अधिकाराने तु माझा नको करु घात ग,
जन्मभर ठेवीन आई मी तुला सुखात ग
तुच माझं नशीब, तुच माझी पुण्याई गं ।।२।।

मुला समान मुलीला मिळो जन्माचा आनंद ग,
तुच भृण हत्येला या घाल पाया बंद ग,
तारण मारण सर्व तुझ्याच हाती आई गं ।।३।।

आई मारु नको ग मला, आई जन्म घेऊ दे ग,
आई नको सांभाळू मला तळहाताच्या फोडावाणी ग,
मला साभाळणारा आई तो विश्वाचा धनी गं ।।४।।

तुझ्या आईन तुझ्या वेळी केल असत अस,
आई होण्याच भाग्य तुला लाभल असत कस,
कुलस्वामीनी आहेस तु राक्षसी विचार गं,
सोडून दे आई मारु नको ग मला जन्म घेऊ दे आई ।।५।।

या वंशाच्या दिव्यापाई नको पणती विझवू आई
नको पणती विझवू आई.

कोमल किशोर ढोरे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



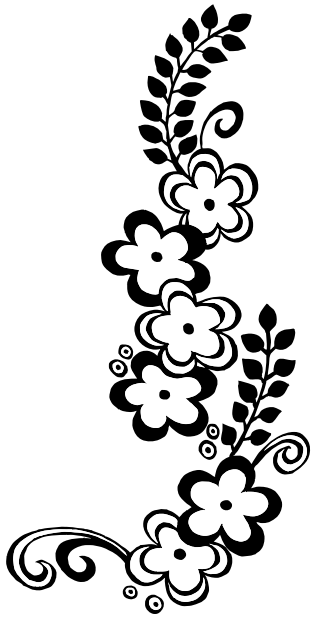

जीवनाचे सार

जन्माला आला आहेस
थोडं जगुन बघ
जीवनात दुःख खूप आहे
थोडं सोसून बघ
चिमूटभर दुःखाने कोसळू नकोस
दुःखाचे पहाड चढून बघ
यशाची चव चाखून बघ
अपयश येतं निरखून बघ
डाव मांडण सोपं असतं
थोडं खेळून बघ
घरटं बांधण सोपं असतं
थोडी मेहनत करुन बघ
जगणं कठीण मरणं सोप असतं
दोन्हितल्या वेदना झेलून बघ
जगणं मरणं एक कोड असतं
जाता-जाता एवढं सोडवून बघ.

निकीता वर्धमान तापसी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

कार्याचे यश हे साधनांवर नव्हे तर हिंमतीवर अवलंबून असते.

आठवणी...

काही व्यक्ती किती गोड असतात ना...
जवळ नसुनही नेहमी सोबत असतात
सुख देऊन जातात...
दु:ख घेऊन जातात...
त्यांनी मिठी मारल्यावर जग पायाखाली वाटत
त्यांची आठवण येताच मनात बरच काही दाटत
वाटत की सर्व सोडून त्यांच्या जवळ जावं...
त्यांना डोळ्यात भरुन पहावं
पण मनाला वाटत तस होत नसतं...
कारण...
ते इतके दूर गेलेले असतात की
त्यांना भेटण अशक्य असत
जेव्हा मनात त्यांच्या आठवणींच्या येता पुर
तेव्हा अश्रुंनी दाटून येतो उर...
अशा वेळी किती असह्य वाटत...
मनाला फार वेदना होतात, जस आकाश फाटत
ज्या वेळी आपल्याकडे सर्व काही असते
तरीही कुणाची तरी कमी भासते
त्यावेळी जीव होतो अगदी बावरा...
ऐकत नाही मन कितीही सावरा
म्हणून अशा व्यक्तिंना नेहमी हृदयात जपायच असतं
त्यांच्या आठवणींनी जीवन फुलवायच असत...
अशा व्यक्तिंना नेहमी हृदया जपायच असत...
हृदयात जपायच असत...

नेहा संजय ढोरे
बी.ए. - प्रथम वर्ष

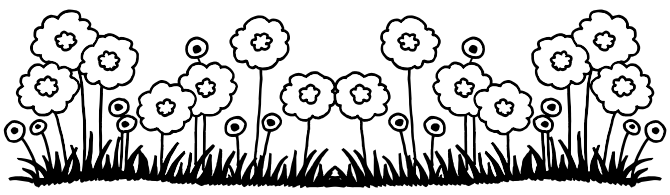

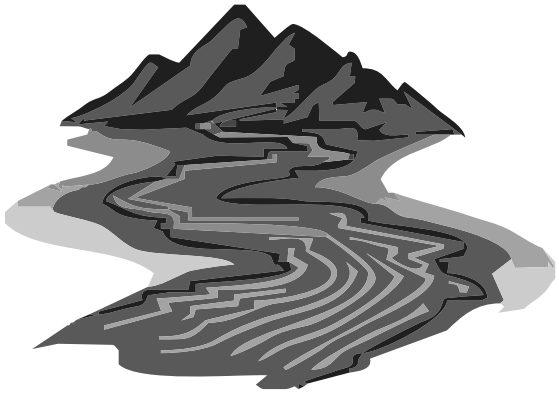

आपली मोर्णा

ना बोलते ना हसते
एकट्यांसाठी क्षणभराची साथी बनते
मिळेल ते घेऊन आणि असेल ते देऊन
सदैव आपली वाहत राहते
कधी उद्रेक करते
कधी मोकळीच बसते
कधी खळखळ हसते
तर कधी अचानकच कोसळते
ना दुर्गंधीची तक्रार
ना देण्याचा अधिकार गाजवते
वाट अडविली तिची तरी
आपली दुसरी वाट शोधून जाते
सदैव कार्यरत राहण्याचा बोध देते
फक्त घेण्याऐवजी थोडे देण्याचाही
संदेश खरा देऊन जाते.

संध्या रामकरन प्रजापति
बी.ए. - तृतीय वर्ष

लहान मुलांमध्ये आठळणारी चौकसवृत्ती म्हणजे ज्ञानाची भूक होय.

गरीबीच चित्र (वऱ्हाडी भाषा)



गरीबीच चित्र सखे माया डोयात पाय
काय सांगु तुले कसे दिवस काढत होती माई माय
तुरीच्या दाईले ढोमनभर पाणी करत होती माई माय
जवारीच्या पिठात अंबाडीची भाजी चुरत होती माई माय
गव्हाच्या दयनात तांदुळाच्या चूरा दयत होती माई माय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती माई माय
हायपाय दुखले की पायाले चिंध्या बांधत होती माई माय
दुखल्या कपायावर लसनाच्या पाकळ्या चोयत होती माई माय
आल्या गेल्याच हसल्या मुखान स्वागत करत होती माई माय
गरीबीवर अस झाकन आमच्या ठेवत होती माई माय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती...
संसारात गरीबीसंग भांडत होती माई माय
तिच्या वाट्याच जेवनही आम्हाले वाडत होती माई माय
उरल सुरल शिळ तुकड खात होती माई माय
जिवन तिच जाळून आमच सुख पायत होती माई माय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती...
मोडली पण आयुष्यात कुणापुढे झुकली नाही माई माय
दिव्या सारखी अखंड जळत रायली माई माय
अशी आहे सुवार्ताची कनखर माय
गरीबीच चित्र सखे माया डोयात पाय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती माई माय.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

मैत्री

निराशेचा अंत असते मैत्री
आशेचा एक किरण असते मैत्री
दोन मनांना जोडणारी रेशीमगाठ असते मैत्री
एकाकी जीवनात प्रेरणा असते मैत्री
हृदयाच्या पाना पानास एक नाव असते मैत्री
असंख्य पानातून साकारलेली एक कला असते मैत्री
चंद्राहुनही शितल असते मैत्री
सुर्याहुनी प्रखर असते मैत्री
पण सदैव जपाव या नात्याला
कारण काचाहूनही नाजूक असते मैत्री.

मनिषा गो. चक्रदेवे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

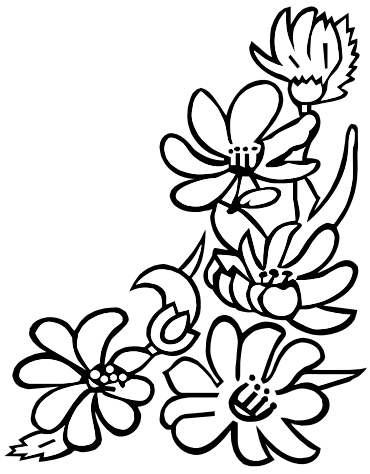

इतरांची वाट पहायची सवय ठेवाल, तर तुम्ही मागे पडाल.

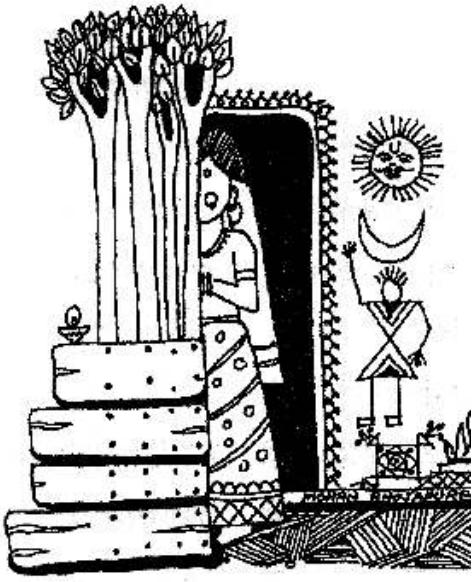

बाप

मुलीच्या लग्नापर्यंत कडक वाटणारा बाप
लग्नानंतर इतका हळवा कसा होतो ?
मुलीसाठी जितक करता येईल तितकं,
जिवाच रान करत राहतो.
घरात असताना जास्त न बोलणारा
लग्नानंतर फोन मॅसेज करुन चौकशी करत राहतो
आधी डोळे वटारुण पाहणारा,
आता डोळे भरुन निरोप देतो
मुलीच्या लग्नानंतर बाप इतका हळवा कसा होतो?
कधी कोणाला काही न बोलणारा
स्वतःवर अन्याय झाला तर वेळ मारुन नेणारा,
मुलीसाठी मात्र जगाविरुध्द उभा राहतो
मुलीच्या लग्नानंतर बाप इतका हळवा कसा होतो?
पाहुणे आले तर फारसा फरक न पडणारा
जावयाची मात्र खुप वाट पाहतो,
मुलीची पहिल्यापेक्षा जास्त काळजी घेतो
मुलीच्या लग्नानंतर बाप इतका हळवा कसा होतो ?

प्रियंका हितेन्द्र चौव्हाण
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

अर्धांगीनी

घर होत तुझ पण त्यावरील छप्पर मी होती
मार्ग होता तुझा पण मार्गदाता मी होती.
कुळ होत तुझ पण वंश वाढवणारी मी होती
संतान होती तुझी पण त्यांना घडवणारी मी होती.
मृग होता तु पण तुझी कस्तुरी मी होती
कपाळ होत तुझच पण त्यावरील ललाटरेषा मी होती.
सागरी शिंपला होतास तु पण
त्यामधील मोती मी होती
उभा तरु होता तु तुझी छाया मी होती
दिन होता तु पण तुझी रजिनी मी होती.
वादळ होतास तु पण तुला सामावून
घेणारी भूमी मी होती
या इहलोकीचा स्वर्ग होतास तु
त्या स्वर्गातील तुझ्या वाटेची वाटसरु मी होती.
आयुष्य होत तुझ पण तुझी अर्धांगीनी मी होती
शेवटी घर होत दोघांच पण सावरणारी मात्र मीच होती
सावरणारी मात्र मीच होती.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष



कुठलेही काम हलके नसते, ते नाकारणारा माणूस हलका असतो.

रांगोळी

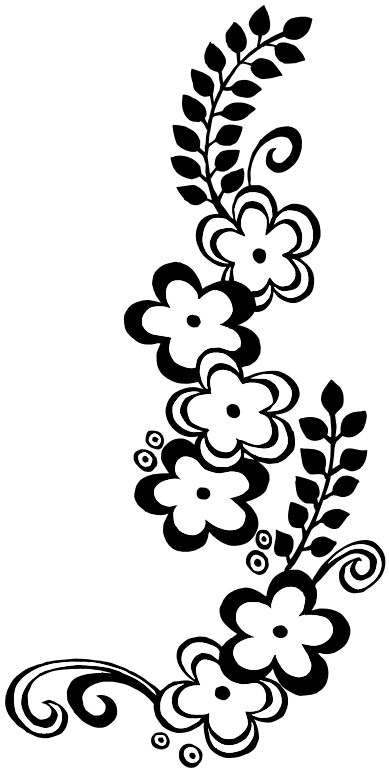

प्रत्येकाच्या घराला असते आंगण
आंगणात असते तुळशी नि भरपूर झाड
सर्वांच आहे आपापल महत्त्व खास
पण बिचारी रांगोळी आंगणातील कोपऱ्यात हळूच हसते खास
तिला नाही गर्व स्वतःच्या अस्तित्त्वाचा
परंतु ती नसली की आंगणाच अस्तित्व होते खल्लास
दररोज सकाळी सगळ्यांच्या आधी ती आंगणात वसते
ऊन असो, थंडी असो की असो वारा
सगळ्या ऋतुमध्ये ती हसते
घरात येणाऱ्या प्रत्येकाचे करते स्वागत ती सर्वप्रथम
प्रत्येकजन आंगणातील रांगोळी पाहूनच घरात करतात आगमणम्
कोणी तिला पुसल्याशिवाय होत नाही ती अधीर
खरच रांगोळी ताई किती हो तुम्ही खंबीर.

जान्हवी अ. मांडळे
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

वेळेचे महत्व

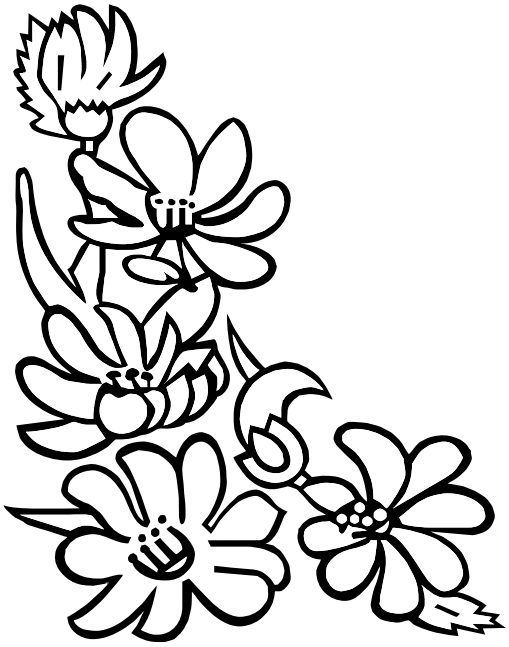

एका वर्षाचे महत्व काय असते हे
परीक्षेत नापास झालेल्या विद्यार्थ्यांना विचारा ।
एका महिन्याचे महत्व काय असते
हे बाळाला जन्म देणाऱ्या आईला विचारा ।
एका दिवसाचे महत्व काय असते
हे साप्तहिकाच्या संपादकाला विचारा ।
एका तासाचे महत्व काय असते
हे भेटीसाठी प्रतिक्षा करणाऱ्या प्रेमीकांना विचारा ।
एका मिनीटाचे महत्व काय असते
हे गाडी चुकलेल्या व्यक्तीला विचारा ।
एका सेकंदाचे महत्व काय असते
हे अपघातातून वाचलेल्या व्यक्तीला विचारा ।
एका मिली सेकंदाचे महत्व काय असते
हे ऑलिम्पीकमध्ये दुसऱ्या आलेल्या धावपटूला विचारा ।

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

ज्याच्या जवळ उमेद आहे तो कधीही हरु शकत नाही.

जगाच काय ते काहीही म्हणतील...

तुम्ही हसलासात तर ते जळतील,
तुम्ही रडलातर ते हसतील.

काही नवं केल तर पाप म्हणतील,
जुन्यात अडकून राहीलातर श्राप म्हणतील.

गमावल तर दरिद्री म्हणतील,
कमावल तर माज म्हणतील.

पुढे निघाला तर मागे ओढतील,
मागे राहिला तर तुडवतील.

तुम्ही हात दिला तर साथी म्हणतील,
तुम्ही तुमचा विचार केला तर स्वार्थी म्हणतील.

कौतुक केलं तर वाह म्हणतील,
उणीव दाखवली तर जा म्हणतील.

काही केल तर.... काय केल ?? म्हणतील,
नाही केल तर ... काय केल ?? म्हणतील.

म्हणनूच...
तुम्ही जगा तुम्हाला हवं तस
जगाच काय ? ते काहीही म्हणतील.

पुजा शंकर गिरी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

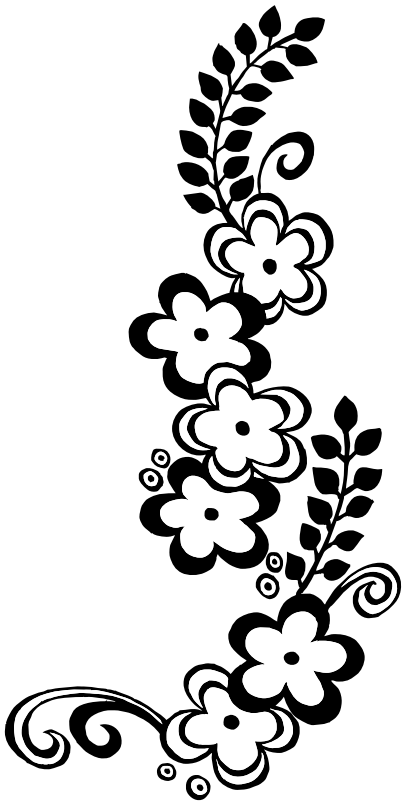

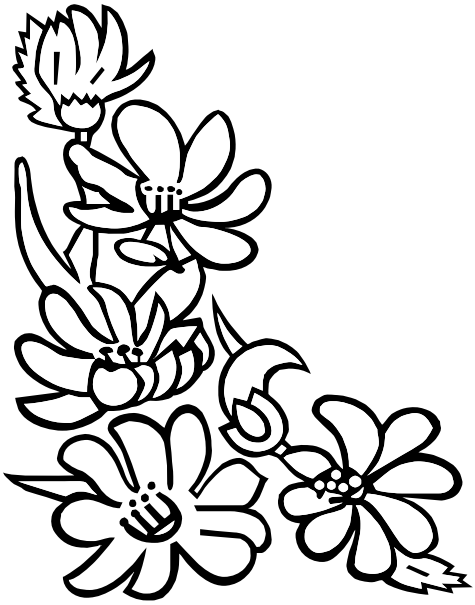

मैत्री

आहात तुम्ही सावरायला म्हणून पडायला आवडते,
आहात तुम्ही हसवायला म्हणून रडायला आवडते,
आहात तुम्ही समजावयला म्हणून चुकायला आवडते,
माझ्या आयुष्यात आहेत तुमच्यासारखी मैत्री
म्हणून मला जगायला आवडते.

पुजा शंकर. गिरी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

स्त्री चे हृदय हे जगातील सर्व तत्वज्ञानाचे माहेरघर आहे. - श्रीमती रुझवेल्ट

हिंदी विभाग

नारी एक शक्ति

मैंने सुना है, नारी का मन बड़ा चंचल होता है । नारी दयालु, शांत और सुंदर होती है । लेकिन हमारी संस्कृति ने नारी को बंधन मे रखा है । जैसे नारी को घर के सारे काम करने पडते है । उसके कपड़े साधे, उसका रहन -सहन एकदम सीधा होना चाहिए । ऐसी सबकी अपेक्षा होती है । नारी के स्वभाव की दुर्बलता की वजह से वह अपनी आवाज नहीं उठा पाती । वह एक सादा नियम भी नहीं समझ सकती कि दुनिया में रहनेवाले सारे प्राणी, नर-नारी सब एक दूसरों पर निर्भर होते हैं । फिर यह भेदभाव क्यों ?

लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल रही है । नर को अपनी शक्ति का परिचय दिलाने और अपनी प्रगति का प्रयत्न वह कर रही है । आज की नारी अपने हक, अधिकारों के प्रति काफी सजग हुई है । नारी ने साबित किया है कि वह भी कुछ कम नहीं, जो नर कर सकते है उनसे कई गुना बेहतर वह भी कर सकती है । जीवन के अनेक क्षेत्रों में वह आगे बढ़ रही है ।

नारी का स्वभाव, उसकी सुंदरता अपने आप में ही एक अदभुत शक्ति है । इस सृष्टि में गौर से देखा जाए तो अनेक प्राणियों में नारी ज्यादा सुंदर होती है । परंतु ईश्वर ने आदमियों मे ऐसा नही किया । उसने नारी को सुंदर बनाया क्यों ? क्यों कि शायद सहिष्णुता, मितभाषिता, सहनशिलता जैसे आत्मिक गुणों का भरमार है । इन्हीं गुणों के कारण वह संसार में सम्माननीय है ।

नारी संसार मे पहले 'माँ' बनकर आई, वह हमें जन्म देकर, हमारा लालन -पालन करती है । हमें बड़ा करने के लिए बहुत कष्ट उठाती है । हम पर अच्छे संस्कार हो इसका भी खयाल रखती है । अगर दुनिया में नारी नहीं होती तो हम भी नहीं होते । हम भी सफल इन्सान नहीं बनते । चाहे वह हमारी बहन हो या बेटी वह प्यार लेकर ही हमारी जिंदगी में आती है । अपनी चंचलता का अनुभव पत्नी बनती है तब वह अपना स्वाभिमान, अपनी शक्ति और साथ ही अपने प्यार का परिचय देती है । अपने बच्चों के लिए आदर्श माता बनती है, काम घर का हो या ऑफिस का बड़ी लगन से, पूरी कार्यशक्ति से उसे वह पुर्ण करती है । वह एक पतिव्रता भी है, वह किसी को धोखा देना नही चाहती । वह कभी-कभी हमारे जीवन में अलग-अलग रुप लेकर आती है । कभी शिक्षीका, कभी परिचारिका, कभी दोस्त । इन विविध रुपों मे उसके स्वभाव के अनेक पहलुओं का परिचय हमें होता है । पंरतु उसका हर रुप हमारा मन मोह लेता है ।

स्त्रियों की संख्या कम होती जा रही है । यह बात हमारे देश, हमारी संस्कृति के लिए हानिकारक है । स्त्री ही तो वह शक्ति है जो संस्कृति का प्रमुख आधार है । उसकी रक्षक है । संसार में समानता लाने का वह प्रयास करती है । अतः मुझे लगता है कि 'नारी' एक अद्भुत शक्ति है ।

साक्षी अनिल बजाज
बी.कॉम. - प्रथम वर्ष

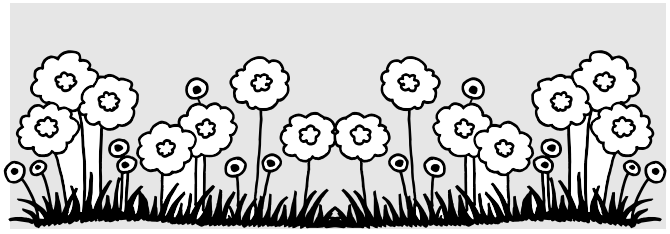

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है । असंभव से भी आगे निकल जाना... - स्वामी विवेकानंद

कोरोना की महामारी पशु, पक्षी को मिली अपनी जिंदगानी

देश में कोरोना महामारी के चलते ६ महिने से अधिक समय लॉकडाऊन चल रहा है। जिसकी वजह से सभी कामकाज ठप पडे हैं ना तो कारखाने खुले है और ना ही गाडियों की आवाजाही है लेकिन इन सबके बीच एक अच्छी खबर ये है की इस लॉकडॉउन का पर्यावरण पर काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है लॉकडाऊन के चलते जल, वायु और ध्वनि प्रदुषण मे भारी कमी आई है।

जिस सड़क पे इंसान, कार, सायकल, स्कूटर, आदी दिखाई देते थे आज उस सड़क पर इंसान की परछाई भी दिखाई नही दे रही। क्यो की कोरोना जैसी महामारी ने सबके जीवन का अंदाज ही बदल दिया है। जो इंसान २४ घंटो तक अपने-अपने काम काज में व्यस्त रहता था आज व ह अपने घर की चार दिवारो में कैद हो के बैठा है। जिस इंसान को लगता था कि बस दुनिया और सडको पर उसका हक है आज असे पता चल गया है की इन सडको पे उससे कही जादा किसी और का हक है।

इस धरती पै सबसे सुन्दर अगर कुछ हो तो वह है पर्यावरण ॠतु जिसे हम एक सुंदर चित्र भी बना सकते है इस धरती पर पर्यावरण जैसी सुंदरता किसी मे नही। इस पर्यावरण को अगर किसी ने बदला होंगा तो वह सिर्फ और सिर्फ कोरोना ने .... कहने को ये एक महामारी है। लेकीन ... जीवन मे हर एक बात का अंदाज इस महामारी से ही बदला है।

जिस सडक पे इंसान दिखाई देते थे आज उस सडक पे पशु - पक्षी दिखाई देते है। जैसे प्रतित होता है ये शहर, ये धरती, ये सडक हमारी न होके पशु पक्षी की ही है। जिस सडक पे हम आजादी से घुमते थे आज इस सड़को पे इस सब का राज है। ईश्वर ने ये धरती सभी के लिये बनाई है लेकीन इस धरती पर हम अपना ही हक दिखाते थे लेकीन ये वक्त और ये सोच सिर्फ और सिर्फ कोरोना ने ही बदली है। भी इस महामारी से सभी पीड़ीत है। फिर भी इस विकट स्थिती में हमे इस महामारी ने अच्छा सबक सिकलाया।

जिन नदियों मे चारो तरफ सिर्फ कुडा कचरा दिखाई देता था आज उन नदियों में कांच के समान बहता सुंदर नीर दिखता है। सड़को पे जिस तरह २४ घंटो गाड़ीया और उनका धुंआ दिखाई देता था आज उस सड़क पे ऑक्सिजन मिल रहा है। सच में इस कोरोना के विकट स्थिती में हमने इस धरती को बदलते देखा अपने जीवन के साथ पर्यावरण का भी कितना ख्याल रखना चाहिये ये सिर्फ आज हमे इस महामारी ने ही सिखाया।

कोरोना की महामारी
पशु - पक्षी को मिली अपनी जिंदगानी

दिव्या राजेश चव्हाण

बारिश

यह बारीश भी कहर लाती है...
एक और हिज्र...
एक और वस्त की बदली छाती है...
बीते लम्हों की भी याद दिलाती...
पुराने जख्मों को सुलगाती है ...
यह बारिश कहाँ रोज आती है...
मेरे लब्ज़ों को रफ्तार दे जाती है।

गायत्री थोरात

जीवन में मन की शांति का मूल्य संपत्ति और स्वास्थ से कहीं ज्यादा होता है। - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

चार सिंपीयों का मूल्य...



एक ५ वर्ष का लडका अपनी ३ वर्ष की छोटी बहन के साथ बाजार से जा रहा था। अचानक से उसे लगा की, उसकी बहन पिछे रह गयी है। वह रुका, पिछे मुडकर देखा तो जाना कि, उसकी बहन एक खिलौने के दुकान के सामने खडी कोई चीज निहार रही है। लडका पिछे आता है और बहन से पुछता है, 'कुछ चाहिये तुम्हे ?' लडकी एक गुड़िया की तरफ उंगली उठाकर दिखाती है। बहन बहुत खुश हो गयी इै। दुकान दार यह सब देख रहा था, बच्चे का व्यवहार देखकर आश्चर्यचकीत भी हुआ... अब वह बच्चा बहन के साथ काउंटर पर आया और दुकानदार से पुछा, 'कितनी किमत है इस गुड़ीया की ?'

दुकानदार एक शांत व्यक्ती है, उसने जीवन के कई उतार चढाव देखे होते है। उन्होने बडे प्यार और अपनत्व से बच्चे से पुछा, 'बताओ बेटे, आप क्या दे सकते हो ?' बच्चा अपनी जेब से वो सारी सीपें बाहर निकालकर दुकानदार को देता है जो उसने थोडी देर पहले बहन के साथ समुंदर किनारे से चुन चुन लायी थी।

दुकानदार वो सब लेके युं गिनता है जैसे पैसे गिन रहा हो। सीपें गिनकर वो बच्चे की तरफ देखने लगा तो बच्चा बोला, 'कुछ कम है क्या ?'

दुकानदार : 'नही नही, ये तो इस गुड़ीया की किमत से ज्यादा है, ज्यादा मै वापिस देता हूं' यह कहकर उसने ४ सीपें रख ली और बाकी की बच्चे को वापिस दे दी।

बच्चा बडी खुशी से वो सीपें जेब मे रखकर बहन को साथ लेकर चला गया।

यह सब उस दुकान का नौकर देख रहा था, उसने आश्चर्य से मालिक से पुछा, 'मालिक ! इतनी महंगी गुड़ीया आपने केवल ४ सिपों के बदले मे दे दी ?'

दुकानदार हंसते हुए बोला, 'हमारे लिये ये केवल सीप है पर उस ६ साल के बच्चे के लिए अतिशय मुल्यवान है। और अब इस उम्र मे वो नही जानता की पैसे क्या होते है ?'

पर जब वह बडा होगा ना...

और जब उसे याद आयेगा कि उसने सिपों के बदले बहन को गुड़ीया खरीदकर दी थी, तब उसे मेरी याद जरुर आयेगी, वह सोचेगा कि... 'यह विश्व अच्छे मनुष्यों से भरा हुआ है।'

यही बात उसके अंदर सकारात्मक दृष्टीकोन बढाने मे मदद करेगी और वो भी अच्छा इंन्सान बनने के लिए प्रेरित होगा।

संध्या रामकरन प्रजापति
बी.ए. (भाग ३)

आपकी अच्छाई आपके मार्ग में, बाधक है। इसलिएए आंखों को क्रोध में लाल होने दिजिए। अन्याय का मजबूती से सामना किजिए। - सरदार पटेल

अपनी तुलना दुसरो से नहीं करना चाहिए...

एक बार की बात है किसी जंगल मे एक कौवा रहता था, वो बहुत ही खुश था, क्यो कि उसकी ज्यादा इच्छाये नहीं थी व अपनी जिंदगी से संतुष्ट था। लेकीन एक बार उसने जंगल में किसी हंस को देख लिया और उसे देखते ही सोचने लगा कि ये प्राणी कितना सुन्दर है, ऐसा प्राणी तो मैने पहले कभी नहीं देखा, इतना साफ और सफेद इतना सुन्दर, इसलिए यह प्राणी बहुत ही खुश रहता है। इस पर तोते ने कहा, हॉ मै तब तक खुश था जब तक मैने मोर को नहीं देखा था। मेरे पास वो दो ही रंग लेकिन मोर के शरीर पर तो कई तरह के रंग है।

अब कौवे ने सोचा सबसे ज्यादा खुश कौन है। यह तो मै पता करके ही रहूंगा इसलिए उस मोर से मिलता ही पडेगा। कौवे ने मोर को जंगल में ढूंढा लेकिन उसे पूरे जंगल ने एक भी नही मिला और मोर ढूढते ढंढूते व चिड़ीयाघर में पहुंच गया, तो देखा मोर को देखने बहुत से लोग आए हुए है और उसके आसपास अच्छी खासी भीड़ है। सब लोगो के जाने के बाद कौवे ने मोर से पुछा पुरी दुनिया मे सबसे सुन्दर प्राणी तुम हो और रंगबिरंगी हो तुम्हारे साथ लोग फोटो खिंच रहे थे तुम्हे तो बहुत अच्छा लगता होगा। इस पर मोर बहुत उदास होते हुए कहाँ भाई अगर सुन्दर हुँ तो भी क्या फर्क पडता है। मुझे चिड़ीयाघर में कैद करके रखा है। मुझे तो मेरे मर्जी से संतुष्टी से जंगल में खुश रहना है। और मुझे आजाद होना है। कौवा यह सुनकर हैरान हो गया, की जंगल का सबसे सुन्दर प्राणी होने के बाद वह सुखी नहीं है। इसलिये दुसरों के साथ अपनी तुलना कभी नहीं करनी चाहिए। बल्की अपने अंदर के गुणों को और अपने खुशी को सभी के साथ मिलजुलकर संतुष्टी के साथ बाटंना चाहिए।

प्रिया शिवप्रकाश मिश्रा
बी.ए. (भाग ३)

किसी विद्यार्थी की सबसे जरूरी एवम् महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि प्रश्न पूछना।

इसलिए विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



सज्जनों को क्रोध जल पर खिंची गई रेखा के समान है, जो शीघ्र ही विलुप्त हो जाता है। - रामकृष्ण परमहंस

प्राणीयों की भावना

सभी प्राणी लगभग बहुत भावुक रहते है । उन में से अधिक भावूक कुत्ता है । अगर आप उसे दो तीन दिन खान खिलायेंगे तो वह कई साल तक हमें नहीं भूलते । पर शर्म की बात है भी इंसान को खाना खिलाये तो वह एक दिन बाद भुल जाएगा ।

प्राणी यो को प्रेम की भाषा समझती है पर वह दुःख की बात है की प्राणी उनकी भावना मुख से बोल नहीं पाते । वह हमारी भाषा अच्छे से समझ पाते है । प्राणी यों को आप अगर प्रेम दो तो वह आपसे दुगना प्यार करेंगा ।

एक आदमी एक कुत्ते को पालता था । वह उस कुत्ते को इंसान से भी ज्यादा प्रेम करता था । अगर आदमी को घर पर देर हो जाए तो कुत्ता उसके मालिक का इंतजार करता था । अगर मालिक कभी दुःखी हो और जब तक उसका मालिक खाना न खाए तब तक वह कुत्ता भी खाना नहीं खाता था ।

पर एक शाम एसे आती है मानो किसी की नजर लगी हो, मालिक का घर को लौटते समय में अचानक एक दुर्घटना हो जाती है और मालिक की मौत हो जाती है । और कुत्ता मालिक के घर लौटनें का इंतजार करता है। और कुछ देर बाद कुत्ता मालिक को ढूढंने के लिये उसके ऑफिस के और जाने लगता है और रास्ते में उसको मालिक की दुर्घटना हुई कार नजर आती है । यह देखकर कुत्ता आस पास के लोगो की मदद मागंने की कोशिश करता है पर बेजुबान होने की वजह से उसकी तकलीफ लोंगो के समझ में नहीं आती । और वह दुःखी होकर अपने मालिक के पास बैठ जाता है । और धीरे धीरे अपने मालिक की जिस जगह पर दुर्घटना में मौत हुई उसी जगह पर वह बीना खाये पिये पडा रहतो है और कुछ दिनों के बाद उस कुत्ते की भी मौत हो जाती है ।

इस कहानी से यह सिख मिलती है की कोई भी प्राणी से आप अगर दिलो जान से प्यार करो तो वह भी उतने दिलो जान से आपके प्रति अपनी भावना व्यक्त करता है ।

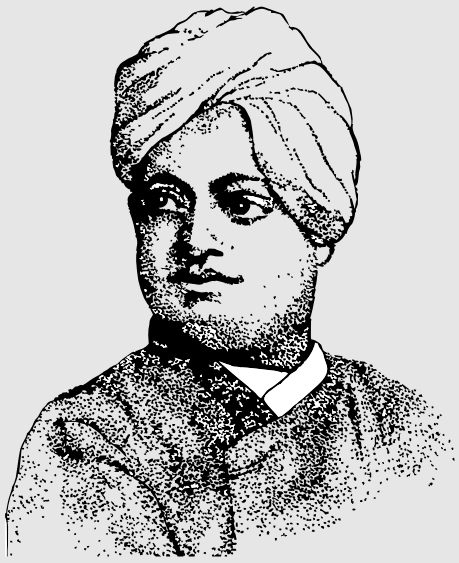

जीवन में
जबतक जीना है
तक तक सीखना है
अनुभव ही जीवन का
सर्वोत्तम शिक्षक है ।

- स्वामी विवेकानंद

कर्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता, कर्तव्य पालन ही चिन्त की शांति का मूलमंत्र है । - प्रेमचंद

पैसा

अगर मेरा नाम पैसा है कोई ना मेरे जैसा है...
कोई कहता डॉलर मुझको
कोई कहता पाऊंड मुझको
कोई कहता युरो मुझको
कोई कहता रुपया है
सच कहूँ ऐ दुनिया वालों
कोई ना मेरे जैसा है
मेरा नाम पैसा है...
में हुँ तो जीवन मे बहार है
वरना सब बेकार है
मुझसे ही दुनिया का आकार है
मुझसे ही हर सपना साकार है
मेरा नाम पैसा है कोई ना मेरे जेसा है...



मे हु तो बेगाने भी अपने है,
मै नहीं तो अपने भी बेगाने है
दुनिया के हर मोड़ पर नजर आते है मेरे ही दिवाने है
मेरा नाम पैसा है, कोई ना मेरे जैसा है...
मेरे कई रुप है, मेरे कई रंग है,
मेरे लिये दुनियावाले छेडते कई जंग है
मै हुँ तो यह जमाना तेरे संग है,
वरना यह तु जान ले, यह दुनिया तेरी बेरंग है ।

दिव्या राजेश चव्हाण

पल

हर पल को जी भर के जी ले
कल मौका मिले ना मिले
आज को जी भर के जीले
मरते तो वो है जो मर मर के जीते है
जीना उसी का जीना
जो जिंदगी को दाता की
सौगात समझ कर जीले
जीना उसी का जीना जो
जी भर के जीले
हर ग़म को खुशी समझ कर पी ले ।

राखी दुर्गासिंह चौहान

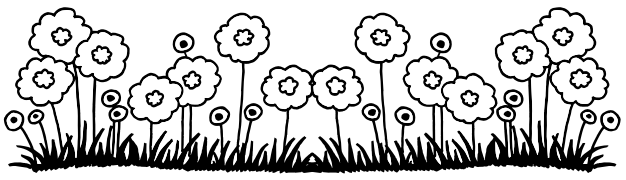

वक्त

हर वक्त को ना आँख दिखा,
वक्त तेरे बस में नहीं ।
वक्त से हर कोई आत है,
वक्त से हर कोई जाता है ।
वक्त ही दाता है,
वक्त ही विधाता है ।
वक्त तेरे साथ है,
तो दुनिया तेरे हाथ है ।
वक्त को तू नमन कर,
तेरा वक्त ही तेरी औक़ात है ।

ईशा पांडे

**विचार से कर्म की उत्पत्ति होती है, कर्म से आदत की, आदत से चरित्र की,
चरित्र से आपके प्रारब्ध की उत्पत्ति होती है । महात्मा बुध्द**

उनके घर भी दीवाली है...

दीवाली का त्योहार धुम-धाम से मना के,
घर मे जगह-जगह दीये जला के
हर जगह रोशनी हमने फैलाई है
पर जरा उनके बारे मे भी सोचो
जो दीवाली की रात तक दीये बेचते रहे
क्यो की हमारे ही नही उनके घर भी दीवाली है

कीतना अच्छा लगता है जब मॉल मे
शॉपिंग करके पाच-दस हजार का बिल लेते हो
पर कभी रास्ते पे दीये बेचने वालो को
एक रुपया भी ज्यादा देते हो ?

वाह ! खुदा क्या दुनिया बनाई है तुने भी...
तेरा एक बंदा आलीशान चैन की जिंदगी जीता है
और एक जिने के लिए दीन रात मरता है ।

दीय बेचकर जब रात को वो घर पोहचता है,
बच्चा उसका भी पटाखो के लिए रोता है
उसकी बच्ची कहती है भाई से
अरे पगले चल बाहर जो मजा पटाखे
फुटते हुए देखने मे है, वो पटाखे फोडने में कहा ।

बच्ची के शब्द उसकी आँखो में आसु लाते है
इसिलिए साहब बे वजह कभी खरीद लिया करो
क्योकी हमारे ही नहीं उनके घर भी दीवाली है...

उनके घर भी दीवाली है...

नेहा संजय ढोरे
बी.ए. - प्रथम वर्ष

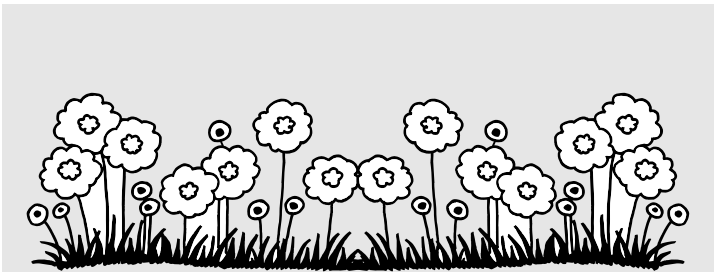

अगर यहीं के हो !

अगर यहीं के हो,
तो इतना 'डर' कैसे,
मगर चोरी से घुसे हो,
तो ये तुम्हारा 'घर' कैसे ?

अगर तुम 'अमनपसंद' हो,
तो इतनी 'गदर' कैसे ?
जिसे खुद 'खाक' कर रहे हो,
वो तुम्हारा 'शहर' कैसे ?

कल तक सिर्फ कोहरा था,
मेरे शहर कि फ़िजा में,
आज नफरत का धुआं है,
तो सुहानी 'शहर' कैसे ?

इज़हार ए नाराजी करो,
संविधान की ज़द में,
मगर गली कूँचों मे,
इतनी 'मज़हबी लहर' कैसे ?

सिर्फ लहजा सख्त होता,
तो हम चुप भी रह लेते,
मगर तुम्हारे लफ्जों और नारों में,
'जिहादी' जहर कैसे ?

सियासत से ख़िलाफत करो,
हमें कोई गिला नही है,
रियासत से दंगल होगी,
तो हम करें 'सबर' कैसे ?

अगर यहीं के हो,
तो इतना 'डर' कैसे,
मगर चोरी से घुसे हो,
तो ये तुम्हारा 'घर' कैसे ?

जय हिंद !

संध्या रामकरन प्रजापति
बी.ए. - तृतीय वर्ष

किसी के गुणों की तारीफ करने में समय जाया करने की बजाए उन्हें अपनाने की कोशिश करों । - कार्ल मार्क्स

जरूरी तो नही...

हर किसी के लिये ये दिल धडके जरुरी तो नही...
लेकीन ये दिल धडकना छोड दे ये जरुरी तो नही...

हर ख्वाब मुकम्मल हो ये जरुरी तो नही
लेकीन ख्वाब देखना ही छोड दे ये जरुरी तो नही...

हर मुस्कान के पिछे कोई वजह हो जरुरी तो नही
लेकीन हम मुस्कुराना ही छोड दे ये जरुरी तो नही

हमारा हर कोई दोस्त हो ये जरुरी तो नही
लेकीन हम दोस्त करना छोड दे ये जरुरी तो नही ।

कोमल किशोर ढोरे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

ऐसा कुछ करो...

बात ऐसी करो, कि दिल किसी का ना जले
काम ऐसा करो, किसी की भी ना खले ।

जिन्दगी ऐसी बनाओ, सदा नेकी की राह चले
इरादे इस तरह रखो,
कि हर अच्छे काम में कामयाबी मिले ।

इंसानी रिश्ते ऐसे बनाओ,
जहा बस प्यार ही प्यार पले ।

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

जिंदगी

समय चला, पर कैसे चला,
पता ही नहीं चला...

जिंदगी की आपाधापी में
कब निकली उम्र हमारी, पता ही नहीं चला...

कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे,
कब कंधे तक आ गए, पता ही नहीं चला

किराये के घर से शुरु हुआ सफर अपना
कब अपने घर तक आ गए
पता ही नहीं चला...

साईकिल के पैडल मारते हुए
हांफते थे उस वक्त,
कब कारो में घुमने लगे है
पता ही नहीं चला...

कभी थे जिम्मेदारी हम माँ-बाप की
कब बच्चो के लिए हुए जिम्मेदार हम
पता ही नहीं चला...

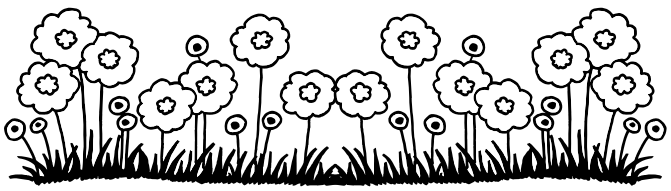

जिन काले घने बालों पर इतराते थे कभी हम
कब सफेद होना शुरु हो गए
पता ही नहीं चला...

दर दर भटके नौकरी के खातिर
कब रिटायर्ड हो गए हम
समय का पता ही नहीं चला...

बच्चों के लिए कमाने, बचाने में इतने
मशगुल हुए हम, कब बच्चें हमसे हुए दूर
पता ही नहीं चला...

भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे हम
अपने भाई-बहनों पर गुमान था
उन सब का साथ छुट गया
कब परिवार हम दो पर सिमट गया
पता ही नहीं चला...

अब सोच रहे थे अपने लिए भी कुछ करे
पर शरीर ने साथ देना बंद कर दिया
पता ही नहीं चला
जीवन की सच्चाई ।

संध्या रामकरण प्रजापति
बी.ए. - भाग ३

गुरु बिना ज्ञान नहीं मिलता, गुरु का सदैव आदर करें ।

चाहा था क्या और, क्या तुने दियाँ...

ऐ जिंदगी अब तूही कुछ बता,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ।।

खुशियाँ पलभर, उम्रभर का तरसना,
कैसे करु शिकवा, कोई नहीं अपना,
बाजार मे खुशियाँ है सजी,
हमने निलाम खुद को कियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ।।

एक मुस्कान, दो बोल प्यारभरे,
कैसे क्याँ कहुँ, गुंगी बहरी दिवारे,
लूट ली खुशियाँ सारी, दर्द से दिल भर दियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ।।

एक हमराह जो, कुछ दूर साथ चले,
हर खुशी हर गम, मिलकर बाँट ले,
उम्र बाकी और भी थी,
साथी मगर छिन लियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ।।

कुछ न चाहिये, दिल तुझसे उब गयाँ,
दर्द के सहारे, जीना दिल ने सिख लियाँ,
अब न आँस रही, न कोई गम,
जिंदगी हमने तुझे माफ कियाँ,
जिंदगी हमने तुझे माफ कियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ।।

निकीता वर्धमान तापसी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



मेरी प्यारी दो गुड़ीयाँ...

मेरी दुनिया एक दुनिया है छोटी
एक मै, एक मेरी अँजल और एक परी मोटी...
सुलाया एक को गोद में एक कंधे पे सर रख सोयी है...
ऐक रुठी कभी है मुझसे
कभी एक गले लगाकर रोयी है
ना ख्वाईश है चांद-तारो की
ना मोती ना नजारो की
एक छोटासा पपी चाहिये मॅडम को
जिन्हे वो कहानी सुनाये दूर नदियों की उंचे पहाडो की
ना कभी कहाँ कुछ ना गुस्सा हुआ कभी
लेकीन रुठे एक दिन इस के हमनें भी ठान लिया था
ना रुठने देंगे, ना होगा रोने का कोई भी बहाना
बस हसतें रहने और मुझें भुल ना जाना
क्या लिखु मै तुम्हपर मेरा प्यार शब्दों मैं जताऊं कैसे...
मुझमें बसते हो तुम मै कहकर बताऊं कैसे
बस एक चाहत है की
अगले जनम मै तुम अपना भाई मुझे चुनों
सिर्फ इस बार क्या हर जनम मै
तुम मेरी बहन बनो
क्यो की मेरी एक दुनियाँ एक दुनियाँ है छोटीसी
एक मै और मेरी अँजल और एक परी मोटीसी...

राखी चव्हाण

सच यही है की इतिहास में कभी विचार-विमर्श से कोई वास्तविक परिवर्तन हासिल नहीं हुआ है । - सुभाषचंद्र बोस

हकीकत

अगर आपको किसी की परवाह है,
तो जिते जी उसकी कदर करो
मरने के बाद नहीं...
अगर आप किसी को पसंद करते हो
तो उसकी वर्तमान में उपस्थित रहो
अतित में नहीं...
अगर आपको किसी पर विश्वास रखना हो
तो अपने लोगो पर रखो
आपके कान भरने वालो पर नहीं...
अगर आप किसी को अपना मानते हो
तो उसे प्रथम स्थान पर रखो पर्याय में नहीं...
किसी को प्रेम करते हो
तो उसकी कदर, इज्जत अभी करो
दिवार पर तसवीर लग जाने के बाद नहीं...

गायत्री कामळे
बी.ए. - अंतिम वर्ष

मुसिबते

मुसिबते आएगी तुझे डराने के लिए
मुश्किले आएगी तुझे रुलाने के लिए
बाधांए आएगी तुझे झुकाने के लिए
पर तु कभी हारना मत, तु कभी डरना मत
मुश्किलो को लोगो को खुद दिखा देना
तुम वो मोमबत्ती नही जो
युही फुंक मारी और बुझ जाये
तुम वो मोमबत्ती हो, जो मॅजिक कि तरह
कभी न बुझ पाये
तुम दिखा देना मुसिबतो को
बाधाओं को लोगो को
तुम मुस्करा सकते हो
तुम निखर सकते हो ।

गायत्री कामळे
बी.ए. - अंतिम वर्ष

यारीयाँ

यार तो देखे बहुत, पर तुम से नही,
यारीयां तो देखी बहुत, पर हम सी नही ।

प्यार करके निभाना आसान है,
पर सच्ची दोस्ती करके नीभाना कठीन ।

चाहे हम इधर हो उधर,
दुआ है बस हम रहे संग-संग,
क्यो कि देखना है दुनिया के हर रंग संग-संग ।

यारी में तो ना कोई चिज मेरी होती है,
ना तेरी होती है, बस हम सब की होती है ।

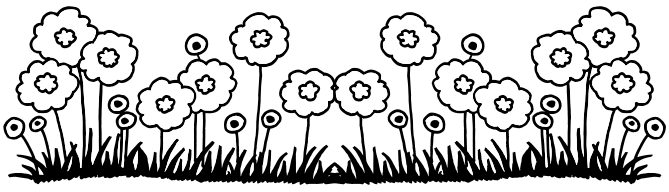

यार तो देखे बहुत,
पर तुमसा ना मिला कोई कही ।

यारी में तो हर चिज मेरी, तेरी होती है
और तेरी मेरी होती है ।

और बस कहुँगी इतना ही कहते है ना
जिना यहा, मरना यहाँ, उसके सिवा जाना कहाँ

पर यार करते है प्यार यहाँ, मस्ती यहाँ
पर हमारी जैसी यारी कहाँ ।

पुजा शंकर गिरी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

अपने कार्य में दिलचस्पी लेकर काम करनेवाले को ही सुयश मिलता है ।

English Dept.

The Struggles of Our Life

Once upon a time a daughter complained to her father that her life was miserable and that she didn't know, how she was going to make it.

She was tired of fighting and struggling all the time. It seemed just as one problem was solved, another one soon followed.

Her father, a chef, took her to the kitchen. He filled three pots with water and placed each an a high fire.

Once the three pots began to boil, he placed potatoes in one pot, eggs in the second pot and ground coffee beans in third pot. He then let them sit and boil, without saying a word to his daughter.

The daughter, moaned and impatiently waited, wondering what he was doing. After twenty minutes he turned off the burners.

He took the potatoes out of the pot and placed them in a bowl. He pulled the eggs out and placed them in a bowl. He then ladled the coffee out and placed it in a cup.

Turning to her, he asked, "daughter, what do you see ? "

"Potatoes, eggs and coffee," she hastily replied.

"Look closer" he said, "and touch the potatoes." she did and noted, that they were soft.

He then asked her to take an egg and break it. After pulling off the shell, she observed the hard - boiled egg. Finally he asked her to sip the coffee. It's rich aroma brought a smile to her face.

"Father, what does this mean ?" she asked.

He then explained that the potatoes, the eggs and coffee beans had each faced the same adversity - the boiling water. However, each one reacted differently. The potato went in strong hard and unrelenting, but in boiling water, it become soft and week.

The eggs was fragile, with the thin, outer shell protecting its liquid interior until it was put in the boiling water. Then the inside of the egg become hard.

However, the ground coffee beans were unique. After they were exposed to the boiling water, they changed the water and created something new.

"Which one are you ? he asked his daughter.

"When adversity knocks on your door, how do you respond ? Are you a potato, an egg, or a coffee bean ?

Moral of the story :-

In life, things happen around us, things happen to us, but the only thing that truly matters is how you choose to react to it and what you make out of it. Life is all about leaning, adopting and converting all the struggles that we experience into something positive.

Shivani G. Karale
B.Com. - II Year

"If at first the idea is not absurd, then there is no hope for it."

Respecting Relationships

We Indians are always being recognized for our manners and customs. We have the glorious past, energetic present and bright future ahead. But today in the dawn of the third decade of 21st century we are experiencing the globalized manner of being. We are fascinated by the western world and its customs and manners. Definitely, nothing is wrong with that. But I think while adapting with those manners we need to preserve our own. India is developing. Although today in the time of pandemic the whole world is in the danger of invisible opposed. Where the world is appreciating the Indian manner of greetings '*namastey*'. India is leading the charge of a warrier, helping other nations. It is our culture to help the needy. India is constantly conveying its readiness and consent of help for the world. It will strengthen India's international relationships. Though India is facing the consequence of pandemic, and power of our prestigious culture and custom which is enabling us to not only sustain ourselves but also accomplishing our duty for the entire humanity.

Rohini Jadhav
(B.A. III)

SUCCESS

"Confidence and Hard work
is the best medicine to kill
the disease called failure.
It will make you successful Person"
"Some of the brightest
minds in the country
Can be found on the last
benches of the classroom"
"Difficulties in your life do not
come to destroy you, but to help you
realize your hidden potential and power,
Let difficulties know
that you too are difficult"
"My message, especially to young people
is to have courage to think differently,
courage to invent,
to travel the unexplaeed path,
courage to discover the impossible
and to conquer the problems and succeed.
These are great qualities
that they must work towards.
This is my message to the young people."
"Don't read success stories,
you will get only message...
"Read failure stories,
You will get some
ideas to get success...!!
Learning gives creativity,
Creativity leads to thinking,
thinking provides knowledge,
Knowledge makes you great.

Sandhya R. Prajapati
B.A. - III Year

"Reality is an illustion albent a very presistent one."

Meditation for Concentration : How It Helps to Maintain a Healthy & Positive Lifestyle

In today's tough times of the pandemic it is very usual that we get stressed and anxious. It is obvious that such dangerous conditions and everything that is happening around the world because of it, may affect our mental and emotional health. Surely fears arise but it's necessary that we should not let them overwhelm us. It's really essential to be calm and deal with any situation with a peaceful and clear mind.

It's known everywhere how meditation is beneficial for us. It's origin can be traced back to around 5000 to 3500 BC. Meditation can be defined as 'a habitual process of training your mind to focus and redirect your thoughts.

Whether you're a student who's trying to focus on studies or a working adult who's trying to focus on your job, sometimes it might get difficult to concentrate regarding today's situation and everything that's going on. Many students can relate to not being able to concentrate on whatever they're studying and if there's no concentration it's almost impossible to grasp anything that you're reading and trying to understand or memorize. That happens because our mind can only imbibe something when it's relaxed, but sometimes we have way too many thoughts on our mind and it's then that we're unable to focus. So if we want to relax our mind what can help is meditation, as it improves concentration and attention. Some studies showed that even a few weeks of meditation training helped people's focus and memory. It improves your cognitive skills. Not only that but it can also help in keeping a positive mood and outlook.

We often take care care of our physical health but sometimes forget that our mental health is just as important too. It means that we should make sure that we're not falling into depression and anxiety. To do that meditation is an easy and convenient way, as it helps in stress reduction, controls anxiety, helps in maintaining a positive mood thus improving depression. Not only that but the focus that we gain through regular meditation increases memory and mental clarity, which for adults, can also help age related memory loss and dementia.

Meditation doesn't need any special equipments or memberships but anyone can practice it anywhere. We just need to take some time out and do it and just like that we can improve our quality of life. How ? Well first of all because our mind gains peace and relaxation, stress reduces and we start being in a positive and happy mood and thus, our overall health gets better. So, if we want to make our life more joyful and peaceful why not meditate everyday and see how we get to discover just how amazing it's benefits are for us.

Isha Pradhan
B.A. Final Year

"If opportunity doesn't knock, build a door".

Values Taught in our Culture

India is a country rich in diversity and culture, the culture moulds the person and his well being. Culture is a essential part of a community not only to shape ones personality but to shape the community and how we live in it. Values taught in our culture are shaped by the community to maintain harmony among the society. Culture is basically a blueprint or a Basic framework which teaches us how to live and strive in the society. There are different types of people around us but isn't it amazing they all follow the same type of things , be it a rich or poor. The culture basically trains people to co-operate with each other and build unity among everyone.

Let take the most recent example , after the outbreak of the corona virus the government imposed self-lockdown, now self-lockdown is not essential to follow or has any compulsion but because of our values we decide to self-isolate ourselves to prevent the virus from spreading forward and also to be safe too. Now a lot of things are taught by our culture and community which we treat as norms and its always in our sub-consious mind and we follow those norms without questioning. Somewhere or another these norms help us as a person and shape the person we are.

But when and how these values were made?who made these?how it became so important for the society today? The answers to all the questions is present in our religious texts. From Bhagwad Geeta to Ramayna or be it any other culture like Christianity which has Bible or Muslim which has Quran. No matter what the religion is you will notice that the teachings, the norms, the values taught are the same. These values which we learn Today have been inculcated by our ancestors , these were made and developed with the society as it was developed. Long time ago people strongly believed in God or they strongly feared the god , whatever it might me once anything was associated with god it became a norm or a compulsion , that might be the reason why we get maximum of the values from our religious texts. However nobody can deny the fact that these values develop us and make the society a better place to live.

One best book is equal to hundred good friends but one good friend is equal to a library.

- Dr. APJ Abdul Kalam

Failure is the condiment that gives success its flavor.

Making Our City Clean & Green : Thoughts and Action Plan

"Members of a family will keep their house clean, but they will not be interested in the neighbor's."

- M.K. Gandhi

Earth is our mother and environment is a part of earth. So, it's our duty to keep clean and green our Motherland. Clean India and Green India are the two sides of same coin. Both are important for environment. Modernizations and urbanization both are important for development of country but for the sake of modernization we neglect our environment. Increased urbanization has led to the deforestation. Clearing of the forest had resulted in the loss of trees which in turn increased pollution level of environment. From throwing out garbage opon roads, cutting of trees, using of plastic and non-degradable garbage. crating water pollution, inadequate sanitation, open dumping of waste, loss of forest cover, we have always given least importance to make our city clean and green in our lives.

"The Clean India, Green India"

The Clean India Green India slogan states that if we try to keep our country clean, it will become green by cleaning our environment and surroundings then only we all will be able to get a good surrounding of greenery. The Father of Nation, Mahatma Gandhi rightly said, "Sanitation is more important than independence." "Cleanliness is Goldiness" is the mantra of Bapu. Swachh Bharat Abhiyan was launched by the honorable PM Narendra Modi on 2nd October 2014 to solve the problem of sanitation and waste management in India by ensuring hygiene across the country. As a success he received Global Goalkeeper Award for this mission given by Bill and Melinda Gates Foundation.

"Cleanliness becomes more important when godliness is unlikely."

- P.J. O'Rourke

Thoughts and Action Plan :

Here we some tips to keep our surrounding clean and make it green. For making our city clean and green we should start from our home. All we have to do is to buy three dustbins and use then to dump our waste in it, every time. Using three bins instead of one helps to segregate the waste and make it easier to recycle them or turn into compost manure. Avoid the use of plastic. A recycled paper bag would be great. Use it to throw in little pieces of trach instead of always having to rush to the dustbin. People should strictly follow rules and instructions framed by the government about cleanliness. We should collect and separate out our food scrap before we head for the garbage. We should find a compost collection site in our area and take our scrap

"Luck is dividend of sweat. The more you sweat, the tackier you get."

पृष्ठ क्रं. २९

there weekly or just utilize it for our plant. It creates the greenery at a very low cost. We should avoid the use of non-bioegradable garbage.

Drainage system **in the city make unclean to the are and also harmful for health.** We should crate alternative for open drainage system in the city and make our city ***plant city***. The setting of manufacturing industries has worsened the problem. ***Proper management of industrial garbage*** can reduce the problem of cleanliness.

Clearing of forest has resulted in the loss of trees which in turn increased pollution level of the environment. Papers are made from trees. To make papers we have to cut the trees. ***Ethical consumption of paper*** and creating alternative for this by ***adopting the electronic and digital system*** will help to save paper and save trees. Promise yourself that you will ***plant and grow*** at least one free every year instead of cutting it.

"If you cut a tree, you kill a life
If you save a tree, you save a life
If you plant a tree, you plant a life".

Dr. A.P.J. Abdul Kalam

"Don't take rest after your
first victory because if you fail
in second, more lips are waiting
to say that your first victory was just luck."

"Be more dedicated to making
solid achievements than in running after
swift but synthetic happiness."

"All of us do not have equal talent.
But, all of us have an equal
opportunity to develop our talents."

LIFE and TIME are the
world's best teachers
LIFE teaches us to make
good use of TIME
and TIME teaches us
the value of LIFE

Dreams are not those which comes
While we are sleeping, but
dreams are those when you
don't sleep before fulfilling them.

Thinking is the capital,
Enterprises is the way, and
Hard work is the solution."

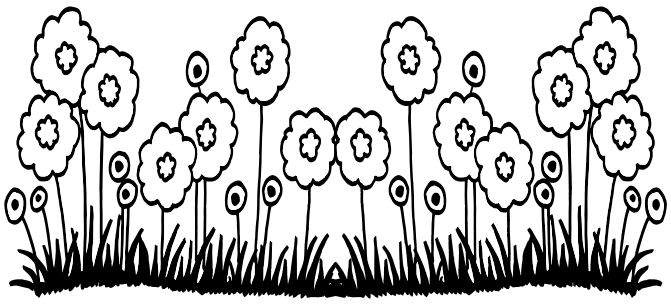

Sandhya R. Prajapati
B.A. - III Year

"Management is doing things right; leadership is doing the right things."

Prosperous Indian Culture

Due to the pandemic called Covid-19 whole world is facing me serious situation. After getting some knowledge about this situation it's possible to be critical for economical growth but at other side this state of human behaviour getting beneficial for our environment and motherland. After knowing this I insisted to think that some days of this life style state making that much deference then, how life did our ancestors lived when they were totally attached to our culture.

To learn the greatness of our pristine culture, we must learn what is happened in this land for long time, what the people of this land did for and from a long time.

Our Indian culture is totally enriched in Medical Science, Arts, Spirituality, Heritage, Sculptures, Sages Etc.

If we talk about medical science the first surgery in world has been done by Sushruta in India.

This land also gave birth to great mathematicians and scientist like Aryabhatta, Bhaskara and Ramanujan. Also our therapy of "Ayurveda" is well known for treatment by natural elements instead of drugs. For that we use herbs like Ashwagandha, Aamla, Behda, Shatavari, Giloy etc. that found on our mother land.

Our Indian culture teaches our spirituality towards soul, dignity, spiritism and towards sages taught us Art of living, Yog Abhyasa, Meditation etc. When others get depressed in calamity or helplessness worry and anxity our mother "Bhagwad Gita" taught us "Mamaivansho Jivloke" that means I exist (God) in all living things also in you by this our culture brightens our life. It teaches to love and respect relation by showing the unconditional love between "Ram' and 'Bharata'.

But now a day our idea of success become purely economic. We are forgetting our culture, intelligence, wisdom, respect, beauty, love that we valued. We are just blindly following western culture, instead of knowing esthetics of our culture. Someone said "They don't know yoga but they know coco-cola" then how will you get that golden days back.

We will have to re-write our past when people were satisfied about life. We will have to learn Science behind our culture instead of tagging them and our rituals and customs as superstitious and meaningless and we should learn that 'Being modern does not meant to be western.' and be proud to be heritor of this prosperous culture. Because 'Duralabham Bharate Janma'. It is a rare opportunity to be born in India.

Nikita A. Navale
B.A. Part - I Year

"It's not whether you get knoehed down, it's whether you get up."

संस्कृत विभाग

'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'मानवताः'

केनचित् कविना उक्तम् अयं निजो परोवेति गणना लघुतेचसाम् । उदारचरितानन्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

अस्मिन जगति जनाः द्विविधाः सन्ति । येषां चेतः विशालं भवति ते कोऽपि-भेदः न मानयन्ति । किन्तु लघुचेतमानवा, भेदभावं कुर्वन्ति । यदि वयं सर्वे एकस्य परमात्मानः पुत्राः तर्हि भेदभावस्य किं कारणम् ? इदं मम् इदं परस्य इति भावना एवं दुःखाय, क्लेशाय भवति । सर्वेषां हृदये यदि एकत्व भावना स्यात् तर्हि सर्वे परस्परस्नेहे वसन्ति ।

यदि मनुष्य हृदये स्वार्थभावना भवति तर्हि सः श्रेष्ठकार्य कर्तु कदापि न शक्नोति । ये स्वार्थं परित्यज्य परोपकाराय स्वजीवनं यापयन्ति तेषां जीवनं सफलं भवति ।

यथापरिवारे माता सर्वेषु पुत्रेषु स्निह्यति तथा समाने अपि सर्वेषां प्रति स्नेहभावः आचरित्व्यः । उदारपुरुषाः सर्वं विश्वं स्वपरिवारवत् मानयन्ति । तेषां जीवनं नित्यं परहिताय, परकल्याणाय भवति । सर्वविश्व स्वकुटूम्बं मन्यमानाः ते कदापि उन्मार्ग सेविन न भवन्ति ।

अदिती देशपांडे
एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'विश्व कल्याण भावना'

यथा परिवारे माता सर्वेषु पुत्रेषु स्निह्यति तथा समाने अपि सर्वेषां प्रति स्नेहभावः आचरितव्यः उदारपुरुषाः सर्व विश्वं स्वपरिवारात् मानयन्ति । तेषां जीवनं नित्यं परहिताय, परकल्याणाय भवति । सर्वविश्वं स्वकुटुम्बं मन्यमानाः ते कदापि उन्मार्ग सेविन न भवन्ति । नितिमार्गं न परित्यजन्ति । ते स्वार्थं परित्यज्य सततं लोकसेवां कुर्वन्ति । परदुःखेन दुःखिताः भवन्ति । अस्माकं प्राचीनेषु ग्रन्थेषु एतदेव कथित यत् संसारे भेदभावः न कर्तव्यः स्वार्थभावना विनाशं प्रति गच्छति ।

विश्वकल्याण भावनया मानवः गौरवं लभते । वसुधैव कुटुम्बकम् इति विशाल भवनाम् आश्रित्य अस्माकं जीवनं सफलं करणीयम् । सर्व कल्याण भावना, सर्वहित कामना सुभाषितेषु अपि कथिता यत् ।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुं मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ।।

अतःउच्यते गौरवप्राप्त्यर्थ, सम्मान-प्राप्त्यर्थ स्वार्थभावना त्याज्या, तथा वसुधैव कुटुम्बकम् इयं भावना स्वीकरणीया ।

सायली सुदामे
एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

लक्ष्मी तनीति वितनांति च दिक्षुकीर्तिम् । किं किं म साधयति कल्पलतेच विद्या ।।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'विश्व कुटुम्बकम्:'

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत ।

प्राचीन भारतीयानां मनसि विश्वस्य सर्वेषां जनानां कृते कल्याण भावना आसीत् । अतः वसुधैव कुटुम्बकम् एव ते मन्यन्ते स्म ।

अद्यापि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति भावना जगर्ति इति सर्वेः मनुष्येः अंगीकर्तव्या ।

महाजनाः विश्वस्य सर्वेषां जनानां उन्नतये पुष्टये तुष्हयेच चिन्तनं कुर्वन्ति । भारतीयाः महर्षयः महात्मानः या प्राचीनकाले स्वज्ञानैः द्वीपान्तगणि देशान्तराणि वा उपकृतवन्त इति सर्वेषां विदितमेव ।

भारतस्य महान् सम्राटं अशोकः विश्वजनानाम् अभयुदयाय भगवतः बुध्दस्य सत्य-अहिंसयोः प्राचारार्थ चीन-लंकादयेषु विदेशेषु एव कुटुम्बकम् मन्यन्ते ते जनाः साधनः सन्ति । सत्यं आचरन्ति ।

वृषाली जोशी
एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

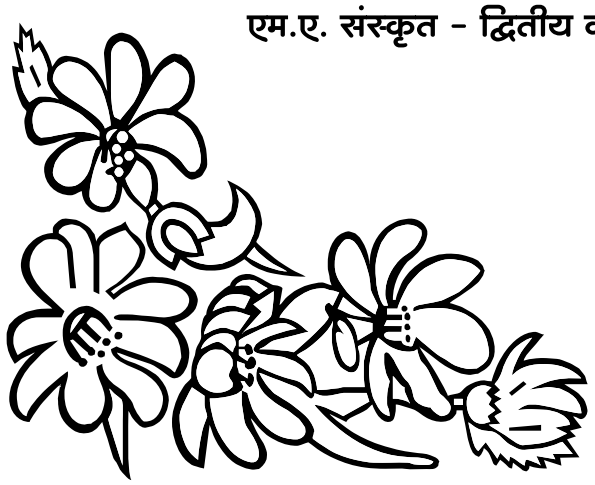

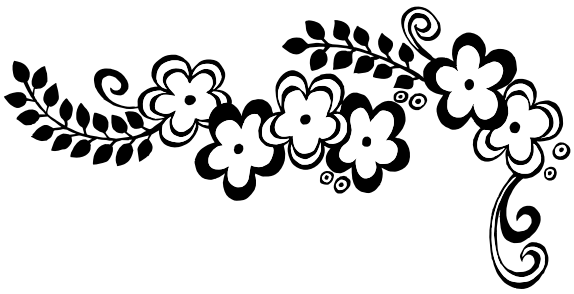

'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'स्वजीवनम्'

यथा अयं निजः परो वेति
गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु
वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

लघुचेताः जनाः सर्वदा स्वखुस्य एव चिन्तनं कुर्वन्ति । किंत उदारचरिताः जनाः सर्वे जनाः सुखिनः भवन्तु इति भावनया संयुक्ता भवन्ति । सर्वान् जनान् सुखी कर्तुम् एव स्वजीवनस्य परम् उद्देश्यं स्वकर्तव्यं मन्यन्ते । तेभ्यः संपूर्ण वसुधा एवं तेषप्म् कुटुम्बं सन्ति । यथा -

परोपकारायः फलन्ति वृक्षाः ।
परोपकारायः वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः ।
परोपकारार्थम् इदं शरीरम् ।

अतः वसुधायां स्थिता सर्वे जनाः मम सन्ति । एतद् विचारः यः करोति, तेभ्य एव वसुधैव कुटुम्बकम् ।

ललिता सावरकर
एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

गुणदोषों गृहन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वरः । शिरसा श्लाघते पूर्व परं कण्ठे वियच्छति ।।

'सर्वे देशाः वसुधैव कुटुम्बकम्'

ब्रिटन देशे यूवां हृदयं सन्तप्णय अस्ति । तत्कारणतः सर्वकारनीते : विरोधिन्वेत ते सघर्षम् आरबधवन्तः सम्तिः । अल्येपु अपि देशेषु एषा स्थितिः भवितुम् अहीति इति प्राज्ञाः वदान्ति । एतादृशानां घटनानां प्रभावः अपि भारते दृश्येत एवं ।

वयं सुस्याः स्याम् चेत् वयं सृदुढा भवेय चेच्च न पर्याप्तम् । अस्यप्रति वेशिनः राष्ट्रे विद्यमानाः सर्वे देशाः च सुस्या शान्तिसम्पन्नाः च भवेयुः । तु एव अस्यदीयं जीवंन निरातऽस्याण् । 'सर्वे देशाः सुखिनः भवन्तु' इति प्रार्थना करणीया अस्ति अघ । सा प्रार्थना तु न तेषां हितस्य कायनया, अपि तु अस्मद्विताकाङ्या ।

एतदघं अनिवार्यम् ।

माधूरी ज. शुक्ला
एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष

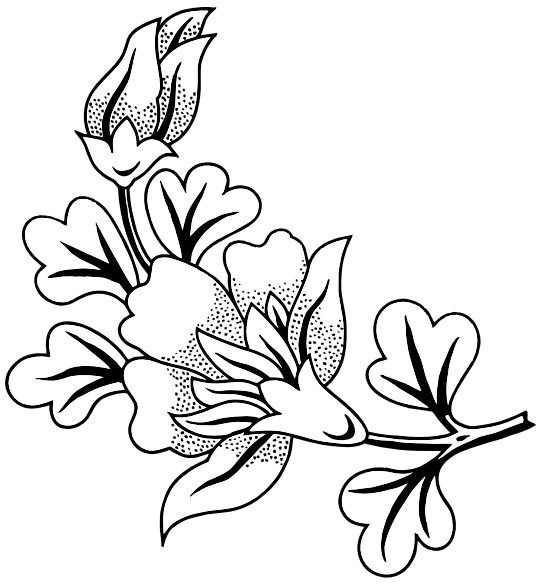

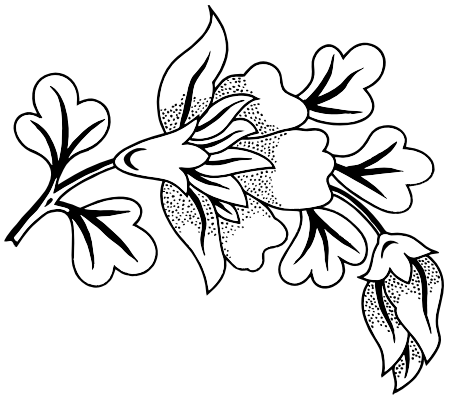

'वसुधैव कुटुम्बकम्'

वस्तुतः अुयत्वे भारतस्य अर्थस्थितिः तृप्तिकरी एव आसीत् (अथवा चिन्ता जनिका न आसीत्) किन्तु अमेरिकी यार्थास्थितौ जातस्य परिवर्तनस्य कारणतः भारते अन्यत्र च महान्तः कल्लोलाः ।

गृहे स्त्रीशिशो जन्म यदि भवेत् तर्हि बदुत्र विषादः प्रदर्श्यते - 'अहो पुत्री जाता । इति । किन्तु ईंस्य अपवाद रुपेण अस्ति 'धरहर' ग्रामः यश्व बिहारराज्ये अस्ति । एतस्मिन् ग्राये यदि स्त्रीशिशुः जायेत तर्हि ग्रहजनाः तन्निमित्ती कृत्ये ग्रांमे ससन्तोष सस्यारोपण इदानो प्रायः विशति सहकाधिकानी (२०,000) स्थानि सन्ति । एतद्विपरीत तया समीपस्था भासन्ते' प्रतिस्त्रीशिशु दश सस्थानि अरोपयानि इति ग्रामे परस्परा तस्य कारणान् एव ग्राये हरित्समृध्दि आर्थिकत्वाभः च ।

ग्रामस्य एत्त वैशिष्ट्ये श्रुत्वा सन्तुष्ट मुख्यमन्त्री नितिशुकमारवर्य एत ग्रामप्रति द्विवारम आगतः आसीत् । 'स्त्रीशिशु वयं लक्ष्मीस्वरुपां मन्याम है ' इति वदति ग्रामप्रमुखः मन्नासिइवर्य ।

जाई विद्यासागर
एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष

एकोदरसमुद्भूना एक नक्षत्र जानका । न भवन्नि शीले यथा बदरिकण्टकाः ।।

'सर्वे देशाः वसुधैव कुटुम्बकम्'
'मानवताः'

विश्वस्य सर्वेऽपि प्राणिनः एकस्यैव परमपिता परमेश्वरस्य पुत्राः सन्ति । एकमेव सर्वे परस्पणे भातृत्वस्य वन्धनेन निगडिताः विद्यते । ते सर्वे एकस्य एव परिवारस्य सदस्याः इव वर्तन्ते । अतः एव सर्वेः सह स्वकुटुम्बि जनामिव व्यवहारं कर्तव्यम् ।

मानवेताः प्राणिनस्तु स्वकुटुंम्बमेव संसारः इति मन्यन्ते । प्रविनिरेष मनुस्याणां सर्वेः आदिकालादेव प्रतीयते । एकमेव सागरे निमज्जनस्य आकाशात् पतनस्य भयमगणयित्वा तै दूरमपि भूप्रदेश मन्निस्य का जलयानेन, वायुयानेन, लोहशक्त्या वा गत्वा वसति निर्माय च कुटुम्बीकृता वसुधा ।

'अथ कथयते
रविधन्द्रो धना वृक्षाः
नदी गावश्च सज्जनाः
एते परोपकाराय लोके
देवेन निर्मिताः ।।
यथाः निसर्गः अस्ति तथैव
अपि वसुधैव कुटुम्बकम्'
इति जगर्ति इति कर्तव्या'।

रेश्मा भोकरे
एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष

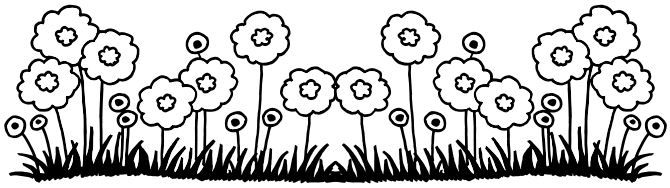

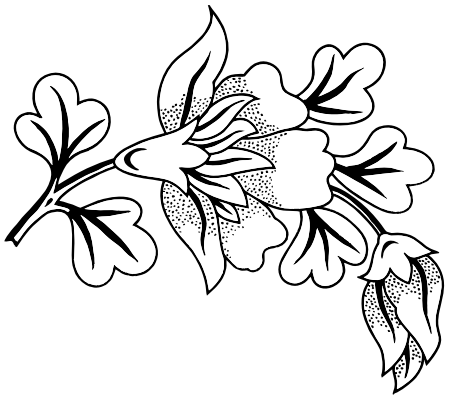

'वसुधैव कुटुम्बकम्'
'मानवताः'

यथा बहवः भणयः सूत्रेण बध्दा सन्त मालारुपेण तिष्णन्ति तथा देशा सन्ति अुया स्वतश्राणामी तेषा संम्बध तु अस्ति एव । माऱ्या या सम्बन्धसूत्रम् एकमेव भवेता । किन्तु देशांना मध्ये भवन्ति सम्बन्धतन्तवः बहवः । छेत्वुम अशक्याः तन्तवः गुढगत्व्यः तन्ववः अनूध्य परिणामाः तन्तवः । अतः एवं एकस्थ अन्येषु बहुषु देशेषु प्रभाव जनायति ।

एषु दिनेषु जागतिकस्तरे शेर क्षेत्रे दृष्टव अस्थिरता, अनुपात-हास च अस्थ प्रत्यक्ष उदाहरणमा अमेरिका देशस्य काचित् अर्थनिति अस्ति । तत्र तरुडाः ये उत्पन्ना तस्य परिणामतः जगति एव अुक्षेत्रे अस्थिरता दृष्टवा ।

यद्यपि ततस्थ देशस्य अर्थनितीः पार्थक्येन अस्ति । तथपि पर प्रभावनियन्व्रणे सा असमर्था भवति ।

रेणु प्रकाश जैस
एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष

उपसर्गेऽन्यचक्रे च दुर्भिश्रेच भयावहे । असाधुजनसम्पर्के पलायनि स जीवनि ।।

Bridge / Pouch Courses: 2019-20 (Home Science Department)

The Home Science department has organized two Bridge / Pouch Courses during 2019-20, as continuation of sustainable activity of 2018-19. The courses are as under –

1. **"Skill Empowerment for Self: Development, Reliance & Earning" 28th Feb – 13th March 2020**

   कौशल्य सक्षमते द्वारे
   स्वविकास, स्वालंबन व स्वअर्थाजन

2. **"Self Empowerment ". 6th - 14th March 2020**

Two Interdisciplinary Pouch / Bridge courses were successfully organized . The main focus was on confidence boosting of the students through career / professional enrichment as well as their personal / physical / psychological empowerment. The primary objectives of **Skill Development, Self Empowerment and Career & Entrepreneurial Enhancement were to be achieved.**

1. **Aims & Objectives**:

- To enhance knowledge base & capabilities of students.
- To create awareness about various aspects of self reliance.
- To create felt need about self earning and financial management.
- To imbibe & enhance skills related to self development.
- Skill development culminating in gains in personal life and future career.
- To achieve long term empowerment through enhancement in knowledge & skills.













2. **Responsibilities Allotted for the Course**

- Dr. Anjali Rajwade, Professor and HOD Home Science, was the Organizer.
- Mr Pavan Mahajan, Asst Professor and Mrs. Seema Agarwal, Mrs. Zeenat Khan, Mrs. Vrunda Bhagat & Mrs Mukta Bagadiya, CHB Asst Professors, were Coordinators.
- Expert Guest Speakers were invited
- Collaboration was established with ABMMS, Akola.

3. **Course Outcome**

- Important & coherent program linked to fulfilment of Vision of the college.
- Boosted various skills and self

One machine can do the work of fifty ordinary men.
No machine can do the work of one extraordinary man.



empowerment of students.

- Self employability as well as career options got enhanced.
- Skill based enrichment in students' lives at Personal, Family, Social & National levels

4. Course Highlights

- E-Communication.
- E-Banking & Payments.
- Recycling & renovation of clothing.
- Laying of Dining Table.
- Table manners & etiquettes.
- Menu Planning.
- Pot Making & Uses.
- Household Kitchen Garden.
- House hold vermi - compost.
- Food Adulteration Detection.
- Women Empowerment.
- Self Grooming.
- Health Awareness & HB Checkup.
- Yoga, Meditation & Aerobics.

Both the courses were very successful in terms of response – 48 & 71students in the courses respectively. The beneficiaries gave positive feedback & expressed desire for more such courses in the coming years.

(Dr Anjali Rajwade)
HOD Home Science

Humanity is acquiring all the right technology for all the wrong reasons.

Home Science Department – At a Glance

Home Science is Science of life in community. It has a wider horizon beyond the classes, for the benefit of masses. Educational reforms were implemented by modifying & upgrading the Teaching – Learning Practices including advanced ICT techniques, for effective curricular delivery & achieving target of optimum outcome. Students' participation in the field projects for educating & counseling their peers of other streams & the public was undertaken. Engagement of students in Research Activities in varied fields was organized, encouraged & guided through effective Student – Teacher rapport. The department has 08 Ph. D Research Students working under the able guidance of Research Supervisors.

Continuous Internal Evaluation process was implemented in an effective manner. Mentor – Mentee relationship practices worked effectively for Slow & Advanced Learners, yielding additional benefits in Student Progression. Meritorious positions in University Examinations were achieved by Komal P Murumkar : 2nd Merit & Musfera Teherim MS : 3rd merit in B.Sc. Home Science. Naina B Turkar, Aamrapali M Dongre & Kiran M Jade bagged 1st, 2nd & 3rd merit position respectively in M.Sc Human Development





while Aasma N Deshmukh was 2nd merit in M.Sc Food Science & Nutrition. The department is proud of the 6 Merit achievers and overall excellent results.

Workshops enhancing entrepreneurial skills, Communication skills & Empowerment among the students were organized. 'TRENDS Exhibition & Sale', imparting practical training & skill enhancement to more than 100 students was organized under Fashion Designing Course. “National Competition on Illustrations & Embroidery” was organized. Two value added interdisciplinary Bridge / Pouch Courses titled “Skill Empowerment for Self: Development, Reliance & Earning” and “Self Empowerment” were organized for holistic benefits.

Extension field activities with active involvement of students & teachers, in the fields of Community Health, NCDs like Diabetes Mellitus, Breast Cancer, Women's Health etc were undertaken for inculcating various skills & imparting Field Training to the students & creating awareness and behavioral change in members of public.

Technology is a word that describes something that doesn't work yet.



"PARAMEDICON" – a one day Workshop for Paramedical persons & public was organized in collaboration with IMA Akola & MODEM Organization, Akola**. Guest lectures, seminars, workshops, flipped classes, educational visit etc were appropriately planned and implemented in order to give boost to curriculum implementation and extracurricular skills.**

The department has Ten (10) Research Papers, published in Journals and an e – Book to its credit. Active participation by teachers was done in Faculty Development Programs & SWAYAM / MOOC Courses. The faculty has participated in 57 International, National & State level Conferences, Seminars & Webinars.

Dr. Anjali Rajwade, Professor and HOD, has been Nominated by SGBAU as Member Faculty, SGBAU and Member - Sub-Committee for preparing programme-wise "Scheme of Teaching & Learning and Examination &Evaluation.She was conferred 'Urjita Award' as Best Female Lecturer & had the honor of being a Resource Person in 4 National Webinars. Ms. Sonal Kame, Asstt. Prof., judged the District level Poster Competition and was appointed as Selection Committee Member at ITI, Akola. Mr Pawan Mahajan, Asstt. Prof., published an e-Book for public awareness during the Pandemic. Non Teaching staff also worked effectively. Mrs Vandana Pimpalkhare, has been very active in cooking, boxing, Hapkido competitions and was honored with 'गुणवंत क्रिडा कार्यकर्ता संघटक पुरस्कार २०१९-२०', by Govt. of Maharashtra and 'Jeewan Gauraw Puraskar', by Health Dept. ZP Akola . Kiran Sharma participated in online webinars.

Academic Calendar was being implemented very earnestly but the unforeseen and out of control situation of COVID – 19 Pandemic extensively disturbed the plans. TLP was continued online. It was decided that the department will strive to fulfill its responsibility towards students & society. The major endeavors were –

1. Scientific Poster on Immunity Boosting was developed & published.
2. Scientific poster on Health for public awareness published
3. e-Book "Understanding Kitchen & Personal Hygiene through Self Learning Material during Pandemic COVID-19" was published
4. National Webinar on – "Relevance of Nutrition & Food Safety during & after COVID19 Pandemic" was conducted.
5. Teaching & Non Teaching staff members in the department participated in Knowledge & Life Skills Enhancing online courses / lectures during the Pandemic.
6. Work from Home was appropriately done by all departmental stakeholders.

Dr Anjali Rajwade
Professor & HOD Home Science

The human spirit must prevail over technology.

Gathering Report - 2019-2020



1) Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola had organized Annual Gathering "*Uddan"* 2020 on 11th and 12th of January 2020. This grand event comprised the celebration of Bharatiya Seva Sadan, the parent institution's 78th Foundation Day as well as Birth Anniversary of the Founder President honourable Mataji Late Smt. Radhadevi Goenka.

2) The theme of Gathering was Unity in Diversity which in Indian Philosophy is called as ***Vasudhav Kutumbkum***.

3) Honourable Ms. Neelam Gorhe, Deputy Chairperson Maharashtra Legislative Council and honourable Mr. Gopikisanji Bajoria, MLC Akola and Buldhana & Vice-President, Bharatiya Seva Sadan, Akola were the inaugural guests.

4) Theme-based events, performances and programmes were organized such as Singing Star RDG, Dancing Star RDG, RDG Idol, Fashion Show, Elocution Competition, and various cultural expressions.

5) Eighty-three prizes were distributed among fifty-one students in Prize Distribution Ceremony. Staff members were also felicitated for their various achievements and recognitions. This year's "Vimladevi - Student of the Year Award" was given to Ms. Divya Chavan, B.A.III and Ms.Rani Pali, B.A.III and Ms. Sakshi Pande, B.Sc III were the runners up.

6) Entrepreneur Fair was organised and Ms. Ranu Potdar's group was selected for Young Entrepreneur Award.

7) Sports Day was also organized for Staff and Students.

An investment in KNOWLEDGE always pay the best INTEREST

-Pen Franklin

The great myth of your times is that technology is communication.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय
सत्र - २०१९-२० चा कला शाखेचा अहवाल

महाविद्यालयात कला विभागाची स्थापना करण्यात आली या विभागाने वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विविध उपक्रम तसेच कार्यक्रम घेतले. या उपक्रमांचा तसेच कार्यक्रमांचा थोडक्यात वृत्तांत अहवालाच्या स्वरुपात पुढील प्रमाणे :

२१ जून २०१९ रोजी आंतरराष्ट्रीय योग दिवस या कार्यक्रमामध्ये कला शाखेतील प्राध्यापकांनी तसेच महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी विशेष सहभाग नोंदविला.

१९ जुलै २०१९ रोजी राज्यस्तरीय स्टँड अप कॉमेडी स्पर्धा महाराष्ट्रशासन व सोनी मराठी वाहिनी आणि मराठी भाषा संचालनालय च्या वतीने मराठी विभागाच्या सहकार्याने घेण्यात आली. या कार्यक्रमामध्ये सौ. अलका तेलंग, चित्रा खासनविस, डॉ. मिर्झा बेग, ॲड. अनंत खेळकर, श्री. शंशाक येवले, डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. चारुशीला रुमाले, डॉ. निभा उपाध्याय यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

२२ जुलै २०१९ रोजी वृक्षारोपन कार्यक्रम श्री. दिलीपराजजी गोयनका, डॉ. देवेंद्र व्यास आणि कलाशाखेतील संपुर्ण प्राध्यापक यांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.

१ ऑगस्ट २०१९ रोजी केवायसी बद्दल माहिती देण्याचा कार्यक्रम घेण्यात आला त्यामध्ये डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. अर्चना भोरे, डॉ. विनोद खैरे, प्राध्यापक संजय विटे यांची प्रमुख उपस्थिती होती नवप्रवेशीत विद्यार्थीनींना या कार्यक्रमामध्ये केवायसी सदर्भात माहिती देण्यात आली.

१ ते ७ ऑगस्ट २०१९ मध्ये गृह अुशास्त्र विभागा द्वारे जागतिक स्तनपान सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला डॉ. उर्मिला देशमुख, डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. राधा सावजी यांनी विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमाला डॉ. विद्या धृव, डॉ. अंजली राजवाडे, डॉ. अंबादास पांडे, प्राध्यापक संजय विटे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

१० ऑगस्ट २०१९ हार्मोनियमचे अंतरंग या कार्यक्रमाचे संगीत विभागाद्वारे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमात महाविद्यालयीन विद्यार्थीनीं तसेच डॉ. अर्चना अंभोरे, डॉ. सुपळकर, प्रा. निबांळकर, प्रा. चापके. प्रा. बंडगर, प्रा. आळशी, प्रा. सगणे, डॉ. निभा उपाध्याय यांचा सहभाग होता.

३ सप्टेंबर २०१९ मराठी अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन करण्यात आले या कार्यक्रमात प्रमुख पाहूणे म्हणून डॉ. कैलास वानखेडे होते तर प्रमुख उपस्थिती डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. संध्या कांबळे, प्रा. संजय विटे, प्रा. स्वप्नील इंगोले, प्रा. मीना दातकर यांची उपस्थिती होती.

३ सप्टेंबर २०१९ गृह अर्थशास्त्र विभागाद्वारे राष्ट्रीय पोषण सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे डॉ. संगीता खेरडे, यांनी मार्गदर्शन केले तर प्राचार्य देवेंद्र व्यास, डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. सावजी, प्रा.संजय विटे

यांची उपस्थिती होती.

७ ते १४ सप्टेंबर २०१९ पर्यंत हिंदी विभागाद्वारे हिंदी सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये विविध स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. स्वरचीत कविता, कहानी, चित्र पाहून कथा लिहणे, पाहिलेल्या हिंदी सिनेमाचे समीक्षण करणे निबंध लेखन इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. प्रथम, द्वितीय व तृतीय क्रमांक प्राप्त विद्यार्थीनींना प्रमाणपत्र देण्यात आले. या कार्यक्रमाच्या यशस्वीते करीता हिंदी विभागाच्या प्राध्यापक आणि विद्यार्थीनींनी आपला उत्स्फुर्त सहभाग दिला.

१६ सप्टेंबर २०१९ पोलीस भरती प्रशिक्षण कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. या कार्यशाळेला प्रमुख पाहूणे म्हणून श्री. रामेश्वर चव्हाण, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, भाग्यश्री मेसरे, रिना बुंदेले, डॉ.विनोद खैरे, प्रा. संजय विटे, प्रा. श्वेता मेंढे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

२ ऑक्टोबर २०१९ ला डॉ. उमेश पाटील, प्रा. विनोद खैरे यांच्या उपस्थितीत स्वच्छता अभियान राबविण्यात आले. या कार्यक्रमात प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांनी महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींना स्वच्छता अभियान या विषयावर मार्गदर्शन केले.

७ ऑक्टोबर २०१९ रोजी शारदा उत्सवाचे आयोजन करण्यात आले या कार्यक्रमाला श्रीमती उमा बाजोरिया प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते तर श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांची प्रमुख उपस्थिती होती. सर्व कला शाखा विभागातील प्राध्यपकांनी आपला सहभाग दिला.

१९ ऑक्टोबर २०१९ रोजी इंग्रजी विभागाद्वारे इंग्लिश कम्युनिकेशन स्कील ह्या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. या कार्यक्रमाचे प्रमुख अतिथी प्रा. मेघराज घाडगे होते डॉ. शालीनी बंग, तर प्रा. ललित भट्टी, प्रा. संजय विटे, डॉ. अंबादास पांडे, प्रा. राधिका माहुरकर यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

१९ ऑक्टोबर २०१९ रोजी राज्यशास्त्र विभागाद्वारे मतदान जागृती कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुने म्हणून मा. श्री. राजेश खवले, उप-जिल्हाधिकारी होते. त्यांनी महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींना मतदान करण्याचे महत्व विषद केले. तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. विनोद खैरे, डॉ. आशिष मुठे, प्रा. सोनल कामे, प्रा. श्वेता मेंढे यांची उपस्थिती होती.

२८ नोव्हेंबर २०१९ रोजी संविधान दिनाचे आयोजन करण्यात आले. या दिवशी महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींना संविधानाचे महत्व विषद करुन सांगण्यात आले. या कार्यक्रमाला डॉ. धनश्री पांडे, डॉ. विनोद खैरे, डॉ. प्रा. अंबादास पांडे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

१० डिसेंबर २०१९ रोजी राज्यशास्त्र विभागाद्वारे मानवी हक्क दिनाचे आयोजन करण्यात आले हेतो. या कार्यक्रमाच्या यशस्वीतेसाठी डॉ. विनोद खैरे, डॉ. आशिष मुठे व इतर कर्मचारीवर्गाने अथक परिश्रम घेतले.

१८ डिसेंबर २०१९ रोजी महाविद्यालयीन गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार सोहळ्याचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे म्हणून भारतीय सेवा सदनचे अध्यक्ष आदरणीय मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका होते. त्यांच्या

आपण आनंदी नसलो तर दुसऱ्यांना आनंद देणार कसा.

हस्ते संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठात बी.ए. भाग ३ मध्ये कु. जाई नागेश विद्यासागर, सातवी मेरीट, एम.ए. संस्कृत मध्ये कु. प्राजक्ता भास्करराव देशपांडे, पहिली मेरीट, एम. ए. राज्यशास्त्र मध्ये कु. दिपाली सहदेव अकरते, दुसरी मेरीट, एम. ए. इंग्रजी मध्ये कु. बुशरा अंजू अब्दुल सय्यद, चौथी मेरीट यांचा सत्कार करण्यात आला. या कार्यक्रमाला महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. विनोद खैरे, प्रा. संजय विटे तसेच महाविद्यालयीन विद्यार्थींनी व महाविद्यालयातील सर्व विभागातील प्राध्यापकांची प्रमुख उपस्थिती होती.

२४ डिसेंबर २०१९ रोजी भ्रष्ट्राचार विरोधी दिन या कार्यक्रमाचे आयोजन समाजशास्त्र विभागाद्वारे करण्यात आले. या कार्यक्रमाचे प्रमुख पाहुणे डॉ. नितीन चौधरी होते तर प्रा. सुमती देवर तसेच इतर प्राध्यापकांची उपस्थिती होती.

१ जानेवारी २०२० रोजी कला शाखे द्वारे 'मै' या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले या कार्यक्रमाला अध्यक्ष म्हणून मा. श्री. दिलीपराजजी गोयनका तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अर्चना अंभोरे, डॉ. विनोद खैरे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

३ जानेवारी २०२० रोजी क्रिडा दिवसाचे आयोजन करण्यात आले या आयोजनात विविध विभागाच्या प्राध्यापक वर्गाने आपला सहभाग नोंदविला.

५ जानेवारी २०२० रोजी 'रेडिओ जॉकी' या कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे म्हणून डॉ. गणेश बोरकर म्हणून उपस्थित होते. प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, प्रा. संजय विटे, प्रा. स्वप्नील इंगोले, प्रा. आशिष मुठे, प्रा. सुमती देवर, प्रा. नितीन चौधरी यांची उपस्थिती व सहभाग होता.

६ जानेवारी २०२० रोजी 'समय स्फुरत व्याख्यान' या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला डॉ. निभा शर्मा, डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. विद्या धृव, प्रा. संजय विटे, डॉ. नितीन चौधरी यांची उपस्थिती होती.

६ जानेवारी २०२० रोजी मराठी भाषा संवर्धन पंधरवाड्याचे आयोजन करण्यात आले. या आयोजनाचे उद्घाटन प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या हस्ते झाले. तर डॉ. चारुशिला रुमाले, प्रा. स्वप्नील इंगोले, डॉ. संध्या कांबळे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

७ जानेवारी २०२० रोजी मेंहदी व रांगोळी स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. त्यामध्ये महाविद्यालयीन विद्यार्थींनींनी मोठ्या प्रमाणात आपला सहभाग नोंदविला. या स्पर्धेच्या यशस्वीतेसाठी डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. निभा शर्मा, डॉ. चारुशिला रुमाले, प्रा. सुमती देवर यांचा सहभाग होता.

२९ जानेवारी २०२० रोजी अर्थशास्त्र विभागाद्वारे लोकसंख्येचे स्थलांतर या विषयावर डॉ. प्रदीप ताकतोडे यांनी विद्यार्थींनींना मार्गदर्शन केले तर डॉ. नितीन चौधरी, प्रा. संजय विटे यांचा सहभाग होता.

१ फेब्रुवारी २०२० मराठी विभागाची मराठी साहित्य संमेलनास भेट. डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. कांबळे, प्रा. स्वप्नील इंगोले यांचा सहभाग होता.

६ फेब्रुवारी २०२० रोजी राष्ट्रीय खुली सुगम संगीत स्पर्धेचे संगीत विभागद्वारे आयोजन करण्यात आले. या स्पर्धेला प्रमुख पाहुणे डॉ. किशोर देशमुख, डॉ. कौमदी बर्डे, डॉ. अभय गद्रे, डॉ. चंद्रकिरण घाटे, डॉ. भाग्यश्री मोकासदार उपस्थित होते तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अर्चना अंभोरे आणि संगीत विभागतील सर्व प्राध्यापक वर्गाचा सहभाग होता.

प्रश्नांचे उत्तर उलट प्रश्नात देऊन अर्थ काय.

१५ फेब्रुवारी २०२० रोजी गृहशास्त्र विभागाद्वारे 'उंबरठा ओलांडताना' आरोग्य विषयावर व्याख्यान ठेवण्यात आले. या व्याख्यानाचे प्रमुख पाहुणे डॉ. हर्षवर्धन मालोकार, होते तर डॉ. वाजपेयी, डॉ. सावजी आणि डॉ. ध्रुव यांचा सहभाग होता.

२४ फेब्रुवारी २०२० रोजी मराठी विभागाद्वारे आंतरराष्ट्रीय भाषा दिवसाचे आयोजन करण्यात आले यामध्ये महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात आपली उपस्थिती नोंदविली तर डॉ. अंजली राजवाडे, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. धनश्री पांडे यांचा सहभाग होता.

६ मार्च २०२० रोजी राज्यशास्त्र विभागाद्वारे प्रश्नमंजुषा स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. या स्पर्धेत महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला. या स्पर्धेकरीता डॉ. विनोद खैरे, डॉ. आशिष मुठे यांनी अथक परिश्रम घेतले.

१४ मार्च २०२० रोजी राज्यशासन विभागाद्वारे 'स्त्री-पुरुष समानता' या विषयावर चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले या आयोजनात महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी सहभाग घेतला तर कला शाखा विभाग प्रमुख डॉ. अर्चना अंभोरे व कला शाखा उप-विभाग प्रमुख यांनी अथक परिश्रम घेतले.

या अहवालातील प्रत्येक आयोजना महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी आपला सहभाग नोंदविला तसेच प्रत्येक शाखेच्या विभागातील प्राध्यापक तसेच शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्गानी अथक परिश्रम घेतले.

ग्रंथालय विभागाचा वार्षिक अहवाल

उच्च शिक्षणाचा महत्वाचा कणा म्हणजे ग्रंथालय होय. आमच्या महाविद्यालयाचे ग्रंथालय समृध्द व संगणकीकृत असून ग्रंथालयात विविध ३३२३७ पुस्तके वाचनासाठी उपलब्ध आहेत. संशोधन वृत्ती वाचकांमध्ये निर्माण व्हावी या दृष्टिकोनातून विविध विषयावरील नियतकालिके उपलब्ध करुन दिले जातात. वाचकांच्या सोयीसाठी सुसज्ज असे वाचनकक्ष उपलब्ध असून याचा उपयोग विद्यार्थीनींनी भरपूर प्रमाणात घेत असतात. विद्यार्थीनींना ग्रंथालयातील साहित्याची माहिती व्हावी या करिता ग्रंथालयाची ओळख हा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. ग्रंथालय आणि माहिती शास्त्राचे जनक डॉ.एस.आर.रंगनाथन यांची जयंती व पुण्यतिथी उत्साहात साजरी करण्यात आली. यावर्षी ग्रंथालयाद्वारे पुस्तक प्रदर्शनीचे आयोजन करण्यात आले. भारताचे माजी राष्ट्रपती 'मिसाईल मॅन' डॉ.ए.पी.जे.अब्दूल कलाम यांची जयंती, वाचन प्रेरणा दिवस म्हणून साजरी करण्यात आली. यामध्ये विद्यार्थीनी व प्राध्यापकांचा सक्रीय सहभाग होता. ग्रंथालयाद्वारे देवाण-घेवाण, रोजगार मार्गदर्शन, संदर्भ सेवा, इंटरनेट सेवा, झेरॉक्स सेवा विद्यार्थीनींना देण्यात आल्या. विद्यार्थीनींना वादविवाद स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा, निबंध स्पर्धा या सारख्या विविध स्पर्धासाठी वेळोवेळी मार्गदर्शन व पुस्तके उपलब्ध करुन देण्यात आले. वाणिज्य व ग्रंथालय विभागाच्या संयुक्त विद्यमाने विद्यापीठ स्तरीय 'स्पार्क' प्रश्नमंजुषा स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. या सर्व सेवा व कार्यक्रमांमध्ये महाविद्यालयातील शिक्षक ग्रंथालय कर्मचारी व शिक्षकेत्तर कर्मचारी यांचे विशेष योगदान लाभले.

प्रा. राम बाहेती
समन्वयक

सेवा जग फुलविते, पण प्रीती मन फुलविते.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० चा क्रिडा विभागाचा अहवाल

सत्र २०१९-२० मध्ये संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ आंतर महाविद्यालयीन विविध खेळ स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या. ज्यामध्ये श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी विविध आंतर महाविद्यालयीन स्पर्धेत सहभाग घेतला होता ज्यामध्ये क्रिकेट, खो-खो, कबड्डी, एथलेटिक, ज्युडो, कुस्ती, बॉक्सिंग, व्हॉलीबॉल, फुटबॉल, हॅन्डबॉल, बैडमिंटन, तायक्वॉंडो, बेसबॉल, टेबल टेनिस, बॉल बैडमिंटन इत्यादी खेळांचा सहभाग होता.

यावर्षी महाविद्यालयातील क्रिकेट टिम, बैडमिंटन टीम व खो-खो टिमने आंतर महाविद्यालयीन स्पर्धेत झोनल फायनल मध्ये द्वितीय क्रमांक प्राप्त करुन पारितोषिक मिळविले.

यावर्षी महाविद्यालयामध्ये प्रथमच आंतर महाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल खेळाचे आयोजन शारिरीक शिक्षण विभागाद्वारे करण्यात आले होते. या आंतर महाविद्यालयीन महिला व्हॉलीबॉल स्पर्धेचे उद्घाटन विद्यापीठ व्यवस्था परिषद सदस्य डॉ. प्रदीपजी खेडेकर यांच्या हस्ते पार पडला. या व्हॉलीबॉल स्पर्धेत अमरावती जिल्ह्यातील एकून १५ महाविद्यालयातील संघानी व त्यांच्या प्रशिक्षकांनी सहभाग घेतला होता. या स्पर्धेत अंतिम सामन्यात डिग्री कॉलेज ऑफ फिजीकल एज्युकेशन, अमरावती यांनी विजेते पद मिळविले. तर कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुऱ्हा संघानी उपविजेते पद प्राप्त केले. तसेच सतत तीन दिवसीय व्हॉलीबॉल महिला स्पर्धेची निवड चाचणी पण महाविद्यालयाचे संस्थाध्यक्ष मा. श्री. दिलीपराजजी गोयनका व प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या हस्ते विजयी संघाला पारितोषिक देण्यात आले. यावेळी विविध महाविद्यालयातील शारिरीक शिक्षक उपस्थित होते. संपूर्ण आयोजनाच्या यशस्वीतेसाठी विद्यालयातील प्राध्यापकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांचे सहकार्य लाभले.

दरवर्षी प्रमाणे या वर्षीही अमरावती विद्यापीठस्तरीय आंतर महाविद्यालयीन बॉक्सिंग स्पर्धेत कु. रिया प्रकाश ताराम हिने वजन गट ६९ ते ७५ मध्ये सलग चौथांदा सुवर्णपदक प्राप्त केले व तिचे चयन ऑल इंडिया बॉक्सिंग टुर्नामेंट उत्तरप्रदेश, मेरठ येथे करण्यात आले होते. कु. सायली विजय धानोरकर हिने ५४ ते ६० वजनगट मध्ये रौप्यपदक प्राप्त केले. तीची स्टॅन्डबॉय खेळाडू म्हणून विद्यापीठाच्या टिममध्ये निवड करण्यात आली होती. तसेच कु. काजल अजाबराव घुले व प्रियंका सहदेव टाले दोघांनी बॉक्सिंग स्पर्धेत कांस्य पदक प्राप्त केले.

याचप्रकारे हॅन्डबॉल या खेळामध्ये कु. राणी सागर आढे हिची विद्यापीठाच्या हॅन्डबॉल संघामध्ये निवड करण्यात आली व यावर्षी पहिल्यांदा विद्यापीठाची हॅन्डबॉल टिमही आंतर विद्यापीठ स्पर्धेत तृतीय क्रमांक मिळवून ऑल इंडिया हॅन्डबॉल स्पर्धेत पेरियर विद्यपीठ, सालेन तामिळनाडू येथे दि. १४ ते १६ फेब्रुवारी २०२० रोजी स्पर्धेत कांस्य प्रदक प्राप्त केले. सोबतच सोलापूर येथे आयोजित अरुमेघ स्पर्धेत तृतीय क्रमांक मिळवून अमरावती विद्यापीठाचे नाव लौकिक केले.

यावर्षी पहिल्यांदा योगासन स्पर्धेत कु. मयुरी अनंत इंगळे हिने ३८ वी बृहन महाराष्ट्र योगासन स्पर्धा उत्तरप्रदेश वाराणसी येथे दिनांक १२ ते १५ जानेवारी २०२० रोजी सहभाग घेतला व अमरावती विद्यापीठाच्या योगासन टिममध्ये स्टॅण्डबॉल खेळाडू म्हणून तिची निवड करण्यात आली होती. याचप्रकारे राष्ट्रीय बॉल बैडमिंटन स्पर्ध बिहार मध्ये मोतिहार येथे दिनांक २२ ते २८ जानेवारी २०२० पर्यंत संपन्न झाली. यामध्ये कु. दुर्गेश्वरी शिवाजी गावंडे हिने सहभाग घेतला होता.

ज्याच्या जवळ उमेद आहे तो कधीही हरु शकत नाही.

अमरावती विद्यापीठाच्या फुटबॉल टिममध्ये यावर्षी कु. शिवाणी कृष्णन कोपूल हिचे स्टॅण्डबॉय खेळाडू म्हणून निवड झाली. तर कु. विजया गौरख दामोदर हिने डिव्हीजन व जिल्हास्तरीय बॉक्सिंग स्पर्धेत सुवर्ण पदक प्राप्त केले यवतमाळ येथे राज्यस्तरीय बॉक्सिंग स्पर्धेत सहभाग घेतला आहे.

महाविद्यालयात स्नेहसंमेलनाचे निमित्ताने ३ दिवसीय क्रिडा स्पर्धांचे आयोजन शारिरीक शिक्षण विभागाद्वारे करण्यात आले. या स्पर्धांचे उद्घाटन संस्थाध्यक्ष श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांनी केले.

वरिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींची शारिरीक क्षमता चाचणी घेण्यात आली. या चाचणी करीता बाह्य परिक्षक म्हणून डॉ. संगीता लोहपूर संचालक, शारिरीक शिक्षण धाबेकर कला महाविद्यालय, खडकी व आंतरीक परिक्षक म्हणून प्रा. श्वेता मेंढे व श्री. अशोक दिक्षीत यांचा सहभाग होता.

२१ जून २०१९ रोजी आंतरराष्ट्रीय 'योग दिवस' शारिरीक शिक्षण विभागाद्वारे साजरा करण्यात आला यामध्ये विद्यालयातील विद्यार्थीनी, प्राध्यापकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्गाने मोठ्या प्रमाणात सहभाग नोंदविला. हा कार्यक्रम एन.सी.सी. व एन.एस.एस यांच्या संयुक्त विद्यमाने घेण्यात आला.

दि. २९ ऑगस्ट २०१९ रोजी हॉकीचे जादूगर मेजर ध्यानचंद यांचा जन्मदिवस राष्ट्रीय क्रिडा दिवस म्हणून साजरा करण्यात आला. यावेळी शिवछत्रपती पुरस्काराने सन्मानित राष्ट्रीय व्हॉलीबॉल खेळाचे पंच, अखिल भारतीय संघटनेचे सदस्य श्री. साहेबराव ठाकरे उद्घाटक म्हणून लाभले त्यांनी राष्ट्रीय क्रिडा दिवसाचे महत्व विद्यार्थीनींना विषद केले. कार्यक्रमाचे सुत्रसंचालन व आभार प्रदर्शन रोहिनी जाधव व स्मिता गोरे यांनी केले.

३० ऑगस्ट २०२० रोजी सकाळी 'फिट इंडिया मुव्हमेंट' अंतर्गत पायदळ रॅली काढण्यात आली. या कार्यक्रमाला उद्घाटक म्हणून राष्ट्रीय फुटबॉल खेळाडू श्री. रवि संगेकर व सचिन यांची उपस्थिती होती. पायदळ रॅली नंतर स्वच्छता अभियानतंर्गत परिसराची स्वच्छता करण्यात आली.

शारिरीक शिक्षण विभागद्वारे ५ ते ७ फेब्रुवारी २०२० या कालावधीत सायंकाळी ७ ते ८ या वेळेत योगा व एरोबिक्स कोर्स महाविद्यालया मध्ये घेण्यात आला यामध्ये प्रा. श्वेता मेंढे यांनी विद्यार्थीनींना प्रशिक्षण दिले तर डॉ. राजेश चंदवशी आर.एल.टी महाविद्यालय यांनी विद्यार्थीनींना सेल्फ डिफेन्स व स्ट्रेचिंग व्यायामाचे प्रशिक्ष दिले. डॉ. संगीता लोहपूरे, धाबेकर कला महा विद्यालय यांनी योगावर प्रशिक्षणपर मार्गदर्शन केले. मयुरी इंगळे या विद्यार्थीनीने शुध्दीक्रीयाचे मार्गदर्शन प्रात्याक्षिक दिले. प्रा. हर्षदा वाधोने यांनी विद्यार्थीनींना योगाचे महत्व सांगितले.

या सर्व उपक्रमांना तसेच अमरावती विद्यापीठाच्या झालेल्या विविध क्रिडा स्पर्धांमध्ये मिळविलेल्या यशाबद्दल महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांनी अभिनंदन केले तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास व प्रा. श्वेता मेंढे यांच्या मार्गदर्शन लाभले. हे सर्व उपक्रम राबविण्याकरीता लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेंढे यांनी अथक परिश्रम घेतले व डॉ. विद्या धृव, डॉ. स्मीता देवर, डॉ. विनोद खैरे, डॉ. विनोद चव्हाण, डॉ. नितीन चौधरी, डॉ. रविंद्र मुंद्रे, प्रा. अनिल निंबाळकर, प्रा. सचिन बंडगर, प्रा. विवेक चापके, प्रा. अजय सुराणा, प्रा.तृप्ती धूत, श्री. योगेश पडगील, श्री. योगेश बानाईत, श्री. अशोक दिक्षीत, विष्णू ढोणे, सौरभ इंगळे यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

समन्वयक
लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेंढे
संचालक, शारिरीक शिक्षण

कधी कधी स्मितहास्य हे वाळवंटातील पाण्याच्या थेंबासारखे उपयोगी पडू शकते.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० च्या राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचा विशेष शिबीर अहवाल





श्रीमती आर.डी.जी महिला महाविद्यालय अकोला यांच्या राष्ट्रीय सेवा योना पथकाने सत्र २०१९-२० मध्ये विशेष शिबीराचे आयोजन दि. १५ जानेवारी २०२० ते २२ जानेवारी २०२० या दरम्यान दत्तक ग्राम रुस्तमाबाद (आळंदा) ता. बार्शीटाकळी, जि. अकोला या ठिकाणी घेण्यात आला.

या शिबीरात श्रमदानातून बंधारा निर्मिती, ग्रामस्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, उन्नत भारत



अभियाना अंतर्गत ग्राम सर्वेक्षण, मृदा आरोग्य पत्रिका सर्वेक्षण, इत्यादी कार्यक्रम राबविण्यात आले. शिबीराला संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठाचे कुलगुरु डॉ. मुरलीधर चांदेकर, जिल्हा समन्वयक डॉ. संजय तिडके, क्षेत्रीय समन्वयक प्रा. रतन येऊल यांनी सदिच्छा भेटी दिल्या. दरवर्षी प्रमाणे भव्य रोग निदान शिबीराचा लाभ ग्रामस्थांनी घेतला.

शिबीराचे आयोजन संस्थेचे अध्यक्ष मा.



श्री. दिलीपराजजी गोयनका, सचिव, अलोक कुमारजी गोयनका, उपाध्यक्ष रविकुमारजी गोयनका, सदस्य श्री. विनीतकुमारजी गोयनका, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनात करण्यात आले. शिबीराच्या यशस्वीतेसाठी कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमेश पाटील, महिला कार्यक्रम अधिकारी प्रा. कु. सोनल टी. कामे, सहाय्यक कार्यक्रम अधिकारी प्रा. कु स्मिता देवर, प्रा. डॉ. आशिष मुव्वे , श्री नंदुभाऊ साबळे तसेच शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्गानी अथक परिश्रम घेतले.

जो काळानुसार बदलतो तोच नेहमी प्रगती करतो.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० च्या राष्ट्रीय सेवा योजना नियमित कार्यक्रम अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० या कालावधीमध्ये राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाद्वारे विविध नियमित कार्यक्रम घेण्यात आले. यामध्ये प्रामुख्याने आंतरराष्ट्रीय योग दिन, ३३ कोटी वृक्षारोपन कार्यक्रमाअंतर्गत वृक्षारोपन, तंबाखु विरोधी शपथ, देशभक्तीपर 'उरी' या चित्रपटाचे रसग्रहण, दत्तकग्राम मध्ये एकून ७० वृक्षांची लागवड, स्वातंत्र्य दिनाच्या दिवशी नॅशनल इंटिग्रीटी मिश्न अकोला यांच्या सहाय्याने स्वयं सेवकांनी दिड किलो मीटर लांबीच्या राष्ट्रध्वज रॅली मध्ये सहभाग, गांधी जयंतीच्या पर्वावर स्वच्छता अभियान राबविण्यात आले.

राष्ट्रीय सेवा योजना दिनाचे औचित्य साधून रक्तदान शिबीराचे आयोजन दि. ३० सप्टेंबर २०१९ रोजी करण्यात आले. या आयोजनात प्राचार्य देवेंद्र व्यास, प्रा. अजय शिंगाडे, प्रा. अनिल निबांळकर, प्रा. सचिन बंडगर, प्रा. संजय विटे, डॉ. नितीन चौधरी, कु. समिक्षा ढोंबरे, कु. राणु पोदार, कु. स्मिता गोरे, कु. सिध्दी ओवे, कु. रिना यादव, कु. अंकिता भुजबले, कु. श्रध्दा उमाळे, कु. रश्मी लहुटे, कु. प्रियंका पुरोहीत यांनी रक्तदान केले.

३० जुलै २०१९ रोजी युवा प्रशिक्षण शिबीरामध्ये कु. विनीता शेगोकार, कु. वैष्णवी कोटरवार यांनी भाग घेतला.

३० व ३१ ऑगस्ट २०१९ दरम्यान झालेल्या गणतंत्र दिन पथसंचालन या राज्यस्तरीय निवड चाचणी शिबीरामध्ये वैष्णवी कोटरवार व दिक्षा पहुरकर यांनी सहभाग घेतला.

१६ ते २१ सप्टेंबर २०१९ या दरम्यान झज्ञलेल्या गांधी विचार परिषद, वर्धा येथे निकीता रेवाळे, वैष्णवी उपरीकर यांनी सहभाग घेतला.

२६ नोव्हेंबर रोजी संविधान दिनाचे आयोजन करण्यात आले यामध्ये उद्देश प्रत्रिकेचे वाचन करण्यात आले. यावेळी डॉ. विनोद खैरे यांचे मार्गदर्शन लाभले.

२० डिसेंबर २०१९ रोजी संत गाडगेबाबा पुण्यतिथी निमित्त अभिवादनाचा कार्यक्रम घेण्यात आला. यावेळी प्रा. स्वप्निल इंगोले यांनी त्यांच्या जीवन कार्यावर प्रकाश टाकला.

दि. २६ जानेवारी २०२० रोजी उप-प्रादेशिक परिवहन अधिकारी कार्यालय अकोला व रासेयो यांच्या संयुक्त विद्यमाने रस्ता सुरक्षा अभियानाचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी श्री. जिचकार साहेब, वारोकार साहे यांनी रस्ता सुरक्षा या विषयावर विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले तर कार्यक्रमाला प्रा. शेव्ता मेंढे, डॉ. उमेश पाटील, प्रा. सोनल कामे, प्रा. स्मिता देवर, डॉ. आशिष मुव्रे उपस्थित होते.

२३ फेब्रुवारी २०२० रोजी गाडगे बाबा यांच्या जयंती निमित्त स्वच्छता अभियानाचे आयोजन करण्यात आले. यात महाविद्यालयाचे प्रांगण, कॅंटीग व इतर परिसर स्वच्छ करण्यात आला व गाडगेबाबांना आदरांजली वाहण्यात आली.

२० फेबुवारी रोजी जागतिक मातृभाषा दिन साजरा करण्यात आला. यावेळी प्रा. इंगोल यांनी मातृभाषेचे महत्व विषद केले.

कोवीड - १९ च्या संदर्भात महाविद्यालयाने जनजागृती करण्याचे दायित्व निभावले. ई-पोस्टर्स, विविध व्हिडिओ निर्मिती, निबंध स्पर्धा, वस्तुनिष्ठ परिक्षा, आरोग्य सेतु ॲपचे महत्व इ. कार्यक्रम घेण्यात आले.

नियमित कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यासाठी संस्थेचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका, उपाध्यक्ष रविकुमारजी गोयनका, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांचे मार्गदर्शन लाभले. तर या सर्व कार्यक्रमांच्या यशस्वीतेसाठी कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमेश पाटील, महिला कार्यक्रम अधिकारी कु. सोनल कामे, प्रा. कु. स्मिता देवर, प्रा.डॉ. आशिष मुव्रे यांनी प्रयत्न केले.

चांगले लोक आणि चांगले विचार आपल्या बरोबर असतील तर जगात कुणीही तुमचा पराभव करु शकत नाही...

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० च्या वादविवाद, वक्तृत्व व इतर स्पर्धांचा अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० या कालावधीमध्ये विविध विभागांच्या वतीने आयोजित करण्यात आलेल्या स्पर्धांचा लेखाजोखा दिलेला आहे. विद्यार्थीनींच्या कलागुणांना वाव देण्यासाठी तसेच त्यांच्या अंगीभूत कौशल्यांचा विकास करण्यासाठी या स्पर्धांचा आयोजनाचा हेतू आहे. तसेच या स्पर्धांच्या माध्यमातून विद्यार्थीनींन मधील कौशल्या विकसीत करणे आणि त्यांना एक व्यासपीठ उपलब्ध करुन देणे हा त्यामागे उद्देश आहे. यामध्ये वक्तृत्व स्पर्धा, गायण स्पर्धा, वादविवाद स्पर्धा, पाककृती स्पर्धा, रांगोळी स्पर्धा, प्रश्नमंजूषा स्पर्धा या आणि अशाप्रकारच्या अनेक स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले होते. अनेक विभागांनी या स्पर्धांमध्ये सक्रिय सहभाग नोंदविला आहे. प्रस्तुत स्पर्धांमध्ये काही राज्यस्तरीय स्पर्धा, काही विद्यापीठस्तरीय स्पर्धा तर काही महाविद्यालयीन स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या या सर्व स्पर्धांना उत्तम प्रतिसाद लाभला आहे याच स्पर्धांचा थोडक्यात पुढील अहवाल आपल्या समोर मांडण्यात येत आहे.

सत्र २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विविध स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. इंग्रजी विभागाद्वारा ५ मार्च २०२० ला विद्यापीठ स्तरीय निबंध स्पर्धेचे आयोजन केले. या स्पर्धेचा विषय **"Making yyour City Clean, Green thought and Action Plan'** या स्पर्धेला महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात आपला सहभाग नोंदविला.

मराठी विभागाने २६ जून २०१९ ला पु.ल. देशपांडे यांच्या जन्मशताब्दी वर्षानिमित्त सांस्कृतिक मंत्रालय महाराष्ट्र राज्य आणि मराठी विभागाद्वारे जिल्हास्तरीय एकपात्री **Standup Comedy** स्पर्धा घेतली. या मध्ये जिल्ह्यातील ३१ कलाकारांनी सहभाग घेतला. २६.०२.२०२० या दिवशी कथाकथन स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. २०.०२.२०२० ला मराठी विभागाने जिल्हा काँग्रेस कमिटी द्वारे आयोजित निबंध स्पर्धेला महाविद्यालयातर्फे ११ विद्यार्थीनींनी सहभाग नोदंविला.

मराठी भाषा संवर्धन पंधरवाडा अंतर्गत, चारोळी लेखन स्पर्धा, चित्रपट समिक्षा स्पर्धा, जाहिरात सादरीकरण स्पर्धा घेण्यात आल्या. १ जानेवारी २०२० ते १५ जानेवारी २०२० या कालावधीत समयस्फूर्त भाषण स्पर्धा घेण्यात आली.

११ जानेवारी २०२० 'स्त्री काल, आज, उद्या' व 'वसुदैव कुटुंबकम्' या विषयावर वक्तृत्व स्पर्धा घेतली.

राज्यशास्त्र विभागाने ६ मार्च ला प्रश्नमंजुषा स्पर्धेचे आयोजन केले त्यामध्ये ७२ विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला.

हिंदी विभागाने हिंदी सप्ताहा अंतर्गत ४ ते १२ सप्टेंबर २०१९ या कालावधीमध्ये निबंध, काव्य, कहानी व कथा स्पर्धा तसेच समाचार लेखन, जाहिरात लेखन, चित्रपट समिक्षा या विविध स्पर्धांचे आयोजन केले ज्यामध्ये महाविद्यालयातील बहुतांश विद्यार्थीनींनी सहभाग नोंदविला.

जगाला शांतीची कला शिकविणे हे स्त्रियांचे दैवी कार्य आहे. - हंट

गृहविज्ञान विभागाद्वारे २० ऑगस्ट २०१९ ला मेहंदी स्पर्धा व रांगोळी स्पर्धा तसेच ९ ऑगस्ट २०१९ ला पोस्टर स्पर्धा घेण्यात आली.

महाविद्यालयामधील अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, समाजशास्त्र व मराठी विभागाच्या सयुक्त विद्यमाने 'ऑनलाईन' प्रश्नमंजुषेचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये विविध महाविद्यालयीन ३३० स्पर्धकांनी आपला सहभाग नोंदविला. विजयी स्पर्धकांना पारितोषिके देण्यात आली.

गृह अर्थशास्त्र विभागाने ११.०९.२०१९ ला **'Rich Protein Recipes'** स्पर्धा ०२.०८.२०१९ पोस्टर स्पर्धा, २०.०९.२०१९ ला **'Business Plan Competition' PPT** व ३०.०९.२०१९ ला **'Slogan Competition'** घेण्यात आली.

स्नेह संमेलना अंतर्गत रांगोळी, मेहंदी व वक्तृत्व स्पर्धेचे आयोजन केले या स्पर्धेला बहुसंख्य विद्यार्थीनींनी सहभाग घेतला. संगीत विभागाद्वारा राष्ट्रीय सुगम संगीत स्पर्धेचे आयोजन केले. त्यामध्ये विविध महाविद्यालया मधील ८५ स्पर्धकांनी आपली कला सादर केली तसेच **'Singing Star Competition'** सुध्दा घेतली महाविद्यालयातील विद्यार्थिनींनी उत्स्फूर्त प्रतिसाद दिला.

वार्षिक स्नेहसंमेलना अंतर्गत आर.डी.जी आयडॉल या स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते त्यामध्ये कु. निशा डोंगरे हिने प्रयत्न पुर्वक आर.डी.जी आयडॉल हा सन्मान मिळविला. ५० हुन अधिक विद्यार्थीनींनी सहभाग नोंदविला वार्षिक स्नेहसंमेलनाअंतर्गत 'डान्सिंग स्टार ऑफ आर. डी. जी.' या नृत्य स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. दि. १० जानेवारी २०२० ला प्राथमिक फेरी घेण्यात आली या मध्ये शास्त्रीय कथक नृत्य, लोकनृत्य, इत्यादी प्रकारचे नृत्य विद्यार्थीनींनी सादर केले. प्रथम पारितोषिक वैष्णवी बर्डे, द्वितीय पारितोषिक ऋतुजा दिवेकर तसेच तृतीय पारितोषिक चंचल गुप्ता यांना प्रदान करण्यात आले या स्पर्धेमध्ये एकून दहा स्पर्धकांची अंतिम फेरीसाठी निवड करण्यात आली होती.

हा सर्व अहवाल बनविण्याकरीता डॉ. चारुशिला रुमाले, प्रा. स्वप्नील इंगोले, डॉ. आशिष मुठे, प्रा. राम बाहेती, प्रा. निभा शर्मा तसेच इर समितीच्या सदस्यांनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व त्याकरीता मोठ्या प्रमाणात शिक्षकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांनी आपले सहकार्य दिले.

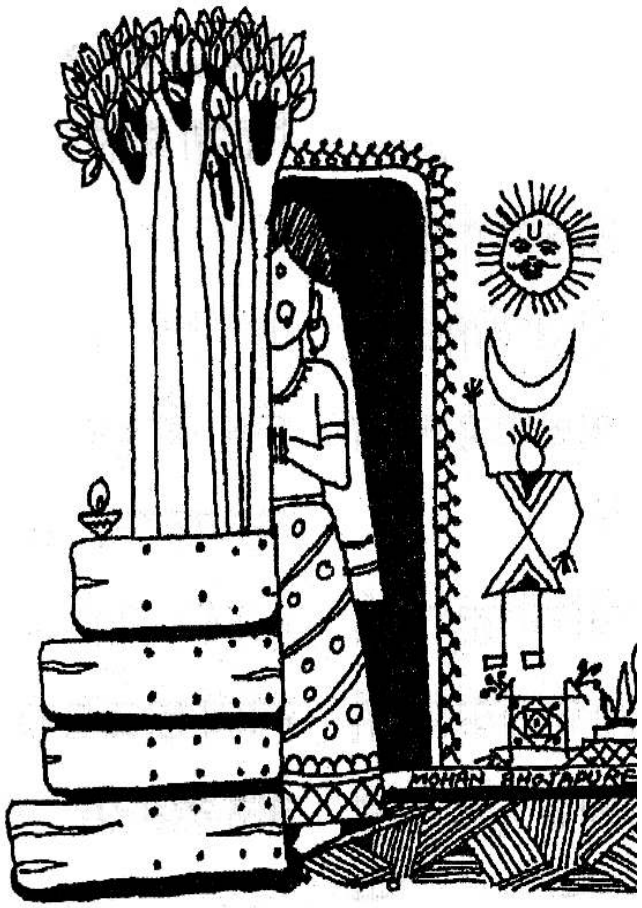

आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय
स्वच्छता व आरोग्य समितीचा अहवाल

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे शारिरीक, मानसिक व बौध्दीक आरोग्य चांगले असावे या हेतून महाविद्यालयात आरोग्य समितीची स्थापना करण्यात आली.

या आरोग्य समितीने वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थीनींन करीता विविध उपक्रम तसेच कार्यक्रम घेण्यात आले. या उपक्रमांचा तसेच कार्यक्रमांचा थोडक्यात वृत्तांत अहवालाच्या स्वरुपात पुढील प्रमाणे :

दि. ३० ऑगस्ट २०१९ रोजी स्वच्छता व आरोग्य समिती व शारिरिक शिक्षण विभागाच्या संयुक्त विद्यमाने 'फिट इंडिया' या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. या आयोजनात विद्यार्थीनींनी आपले आरोग्य तसेच मजबूत शरीर ठेवण्या करीता कशा प्रकारचा आहार घ्यावा तसेच कुठल्या प्रकारचे व्यायाम करावे यावर मार्गदर्शन करण्यात आले.

दि. १७ सप्टेंबर २०१९ रोजी डॉ. सौ. अंजली राजवाडे यांचे 'आहारातून आरोग्याकडे' या चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले. या चर्चासत्रात, आपल्या रोजच्या दिनचर्येमध्ये विद्यार्थीनींनी कुठल्या प्रकारच्या आहाराचे सेवन करावे तसेच कोणत्या आहारातून किती प्रमाणात आपल्याला प्रोटीन, विटामीन तसेच इतर फायदे होतात यावर डॉ. अंजली राजवाडे यांनी मार्गदशन केले.

दि. १८ सप्टेंबर २०१९ रोजी डॉ. जूगल चिराणीया यांचे 'मधूमेह, उच्चरक्तदाब व लठ्ठपणा' या विषयावर भाषण ठेवण्यात आले. यामध्ये त्यांनी विद्यार्थीनींना, मधूमेह कसा होतो ?, उच्चरक्तदाब कशाप्रकारे निर्माण होतो ? तसेच लठ्ठपणा कसा येतो व या तिन्ही आजारांवर मात कशी करावयाची यावर माहिती दिली.

दि. २७ सप्टेंबर २०१९ रोजी कॉमर्स विभाग व स्वच्छता व आरोग्य समिती यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'स्वच्छता अभियान' राबविण्यात आला. या मध्ये महाविद्यालयातील परिसर स्वच्छ करण्यात आला तसेच स्वच्छतेचे महत्व देखील विद्यार्थीनींना देण्यात आले.

दि. १२ फेब्रुवारी २०२० रोजी स्त्रीरोग तज्ज्ञ डॉ. हर्षवर्धन मालोकार यांचे 'उंबरठा ओलांडतांना' या विषयावर महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींन करीता चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये त्यांनी, स्त्रीयांनी तसेच विद्यार्थीनींने नोकरी साठी अथवा शिक्षणासाठी घराबाहेर पडतांना आपल्या आरोग्याची कुठल्या प्रकारची काळजी घेतली पाहिजे यावर मार्गदर्शन केले.

दि. २४ फेब्रुवारी २०२० रोजी संत गाडगेबाबा यांच्या जयंतीच्या निमित्ताने महा-विद्यालयीन परिसर तसेच महाविद्यालयाच्या आजूबाजूचा परिसर स्वच्छ करण्याची मोहीम राबविली.

या सर्व आयोजनांमध्ये स्वच्छता व आरोग्य समिती सोबत इतर समितीच्या सदस्यांनी तसेच विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व त्याकरीता मोठ्या प्रमाणात शिक्षकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांनी आपले सहकार्य दिले.

विश्व ओळखावे आपणावरुन । आपणची विश्व घटक जाण ।
व्यक्तीपासून कुटूंब निर्माण । कुटूंबापुढे समाज आपुला ।।

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय
वाणिज्य विभागाचा अहवाल

महाविद्यालयात वाणिज्य विभागाची स्थापना करण्यात आली या विभागाने वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थीनींन करीता विविध उपक्रम तसेच कार्यक्रम घेण्यात आले. या उपक्रमांचा तसेच कार्यक्रमांचा थोडक्यात वृत्तांत अहवालाच्या स्वरुपात पुढील प्रमाणे :

दि. २३ ऑगस्ट २०१९ रोजी महाविद्यालयात प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनाखाली 'प्रभावी संवाद कौशल्य' या चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले. या आयोजनामध्ये प्रमुख मार्गदर्शक म्हणून डॉ. सपना शर्मा, सेंट थॉमस कॉलेज, भिलाई यांनी 'प्रभावी संवाद' कसा करावा यावर विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन दिले.

दि. २६ डिसेंबर २०१९ रोजी वाणिज्य विभागाच्या वतीने 'सायबर सिक्यूरीटी आणि ॲडव्हॉन्स टेक्नॉलॉजी' या विषयावर मार्गदर्शक म्हणून श्री. राहूल टाले व दिपक शोधनानी यांनी महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले.

दि. ७ जानेवारी २०२० रोजी भारतीय सेवा सदनचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका यांचे '**Self Determination**' म्हणजे 'मै' या विषयावर व्याख्यान झाले त्यामध्ये त्यांनी विद्यार्थीनींना 'मै' या विषयावर मार्गदर्शन केले.

दि. १८ जानेवारी २०२० रोजी एम.सी. डावरे यांनी 'ई कॉमर्स प्रोजेक्ट व पर्सनॅलिटी' या विषयावर विद्यार्थीनींना मार्गदशन केले व प्रोजेक्ट संबंधी माहिती दिली.

दि. ८ जानेवारी २०२० रोजी प्रतुश भास्कर यांचे 'आर्थिक विपणनं जागरुकता' या विषयावर विशेष व्याख्यान झाले यामध्ये त्यांनी विद्यार्थीनींना 'आर्थिक विपनन' कसे करावे यावर मार्गदर्शन केले. या व्याख्यानाला कॉमर्स मध्ये शिक्षण घेणाऱ्या महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात आपला सहभाग नोंदविला.

दि. ५ फेब्रुवारी २०२० रोजी 'ई-फायलिंग' या विषयावर सनदी लेखापाल मा. श्री. भरत व्यास यांचे व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले होते. या व्याख्यानाचा कॉमर्स विषयात महाविद्यालयात शिकणाऱ्या विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व 'ई-फायलिंग' करतांना येणाऱ्या अडचणी व त्यावर कसे मात करावयाचे यावर मा.श्री. भरत व्यास यांच्याकडून मार्गदर्शन घेतले.

दि. १० फेब्रुवारी २०२० ला महाविद्यालयात 'स्पार्क' विद्यापीठस्तरीय प्रश्नमंजूषेचे आयोजन करण्यात आले होते. या स्पर्धेत विविध महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी आपला सहभाग नोंदविला व त्यामुळे या स्पर्धेला भरपुर प्रतिसाद मिळाला व या स्पर्धेचे प्रमुख आयोजक महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास हे होते.

या सर्व आयोजनांमध्ये कॉमर्स विभाग समितीच्या सदस्यांनी तसेच विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व त्याकरीता मोठ्या प्रमाणात शिक्षकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांनी आपले सहकार्य दिले.

तुमच्या १०० समस्या असल्या तरी फार चिंता करु नका.
त्यापैकी ९० आपोआपच सुटणार आहे.









रांगोळी आणि मेहंदी स्पर्धेची काही क्षणचित्रे...

चित्रकार की सुंदर अदाकारी...





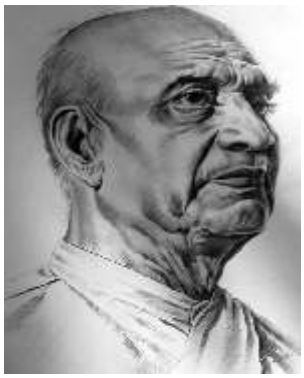



कु. तमन्ना मानधने,
बी.ए. द्वितीय वर्ष

शैक्षणिक सत्र २०१९-२०२० मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी

Name : **Dr. Devendra Vyas (Principal)**
- Business Economics Board of Studies Chairman.
- RRC Member. ▸ Academic Council Member.
- Faculty Member.

Name : **Dr. Anjali Rajwade (Professor & HOD Home Science)**
- Nominated Member on Faculty, SGBAU.
- Nominated Member - Sub-Committee for preparing programme-wise "Scheme of Teaching & Learning and Examination &Evaluation, SGBAU.
- Honored with 'Urjita 2020 - Award for Best Female Lecturer'

Ph.D. Supervisors

Name : **Dr. Nibha Upadhyay**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Hindi by S.G.B.A.University, Amravati.
University Magzine Committee Member.

Name : **Dr. Anup G. Sharma**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Commerce by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Vinod Chavhan**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Commerce by S.G.B.A.University, Amravati.

Other Award & Ph.D. Awarded

Name : **Dr. Ravindra Mundre**
Achievement : Awarded by Global Teacher Award.

Name : **Dr. Vidya Dhruv**
Achievement : Awarded Ph.D. in Home Economics by S.G.B.A.University, Amravati.

Name : **Dr. Vijay Aalsi**
Achievement : Awarded Ph.D. in Music by R.S.T. M. University, Nagpur.

Our Laurels.....



-: Students of the Year :-

University Toppers ▸ Naina Turkar ▸ Pragati Deshmukh ▸ Aasma Deshmukh ▸ Bushara Anjum Sayyad ▸ Prajakta Deshpande ▸ Kiran Jade ▸ Komal Marumkar ▸ Musfera Taherim Salim ▸ Jaie Vidyasagar ▸ Apurva Charhate ▸ Aamrapali Dongare ▸ Deepali Akarte.

वृत्तपत्र प्रसार माध्यमांच्या नजरेतून
श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय...

मुख्यमंत्री सहायता निधि में एक दिन का वेतन

• महिला महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों की पेशकश



आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये प्रश्नमंजूषा स्पर्धेला प्रतिसाद



छात्राओं के लिए आरोग्य विषयक व्याख्यान



छात्राओं ने जाना साहित्य का महत्व



आजची आधुनिक स्त्री ही सक्षम, सबला: प्रा. संजय विटे



शोधकर्ता के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार अधिनियम की जानकारी जरूरी

इंटर डिस्ट्रिक्ट फुटबाल महिला टीम जलगांव रवाना



राष्ट्रीय खुल्या सुगम संगीत स्पर्धेला उत्स्फूर्त प्रतिसाद



एनसीसी व आरएसपीच्य



पल्स पोलियो अभियान में एनसीसी कैडेट्स का सहभाग



आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये योगा अभ्यासक्रमाचा उत्साहात समारोप



अभिव्यक्ति कौशल्य पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ

दोन राष्ट्रीय वेबिनारचे यशस्वी आयोजन



सफल रही आरडीजी की नैशनल सुगम संगीत स्पर्धा





छात्राओं ने सीखे कचरे से कंपोस्ट खाद बनाने के गुर

आरडीजी महाविद्यालयात मातृभाषा दिन

आरडीजी महाविद्यालयाची 'ऑनलाइन' ज्ञानसाधना!

महिला महाविद्यालय में एजुटेनमेंट वीक

सफल रही आरडीजी की क्विज कॉम्पिटीशन



महाविद्यालय मे हुए विविध उपक्रमो के क्षणचित्र...





Bharatiya Seva Sadan's

Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

NAAC Reaccredited Grade - B+ with CGPA - 2.71 (Certified Minority Institution)

Near Nehru Park, Murtizapur Road, Akola - 444 001(M.S.)

Phone & Fax : 0724-2450905 Website : www.rdgakola.ac.in

E-mail : rdgcollegeakola@gmail.com

Design By : B.Suraj : 9923136443